VEDIC
JYOTISH SUTRAM

ANUPAM MOHANTA

(Maa Kamakhya Wale Tantrik Jyotishi)

A Book By:

ASTRO DIVINES PUBLICATION

E-mail: publication@astrodivines.com

www.astrodivines.com

Book Title: Vedic Jyotish Sutram
Book Author: Anupam Mohanta
Published By: Astro Divines Publication
Languse: Hindi - (1st Section)
First Edition: 2025

ISBN: 978-93-342-7806-4

Copyright: © Anupam Mohanta

Anupam Mohanta asserts the moral right to be identified as the author of this work. However, most of the pictures used in the text for symbolic purposes have been taken from various online platforms such as Wikipedia, freepik etc.

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in or introduced into a retrieval system, or transmitted, in any form, or by any means (electrical, mechanical, photocopying, recording or otherwise) without the prior written permission of the author. Any person who does any unauthorized act in relation to this publication may be liable to criminal prosecution and civil claims for damages.

दो शव्द

वैदिक ज्योतिष, भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसका इतिहास हजारों साल पुराना है और यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना प्राचीन काल में था। वैदिक ज्योतिष का सबसे पुराना उल्लेख वेदों में मिलता है, विशेष रूप से ऋग्वेद और अथर्ववेद में नक्षत्रों और ग्रहों का वर्णन मिलता है। यह प्रारंभिक युग था जब खगोलशास्त्र और ज्योतिष एक ही विषय के दो पहलू थे। वेदांग ज्योतिष, वेदों का एक उपवेद विशेष है, जो खगोल शास्त्र और ज्योतिषीय गणनाओं पर केंद्रित है। यह समय की गणना और पंचांग निर्माण के लिए आवश्यक नियमों का वर्णन करता है।

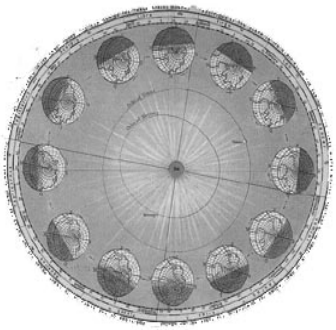

ज्योतिष, जिसे अक्सर अंधविश्वास के रूप में गलत समझा जाता है, परन्तु यह एक प्रमाणिक और सिद्धान्तिक विषय है जो सदियों से विकसित हुआ है। अंधविश्वास के विपरीत ज्योतिष एक विज्ञानं है, जो खगोलीय पिंडों और मानव अनुभवों के बीच संबंधों की व्याख्या करता है।

जो प्रतीकवाद, गणितीय सटीकता और सांस्कृतिक विरासत को मिलाकर एक महान शास्त्रों के रूप परिप्रेक्षित होता है, एवं पारंपरिक अतिवादी वैज्ञानिक मानदंडों को चुनौती देता है। ज्योतिष की गहन ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ों को पहचानना अंधविश्वास के सतही लेबल से परे एक अधिक सूक्ष्म समझ को आमंत्रित करता है।

i. **ज्योतिष को समझना**:- अपने मूल में, ज्योतिष इस आधार पर आधारित है, कि किसी व्यक्ति के जन्म के दौरान आकाशीय पिंडों की स्थिति और उनके व्यक्तित्व लक्षणों, व्यवहारों और जीवन की घटनाओं के बीच एक संबंध मौजूद है। और इसकी विशेषता सावधानीपूर्वक गणनाओं और व्याख्याओं में निहित है।

ii. **प्रतीकात्मक भाषा**:- ज्योतिष ग्रहों, राशियों और नक्षत्रो से जुड़े गुणों और ऊर्जाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक प्रतीकात्मक शब्दावली का उपयोग करता है। यह प्रतीकवाद मनमाना नहीं है, यह सदियों के अवलोकन और सहसंबंधों से प्राप्त होता है।

iii. **व्यक्तिगत अंतर्दृष्टि**:- ज्योतिषीय चार्ट, जिन्हें आमतौर पर जन्म कुंडली के रूप में जाना जाता है, यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होते हैं। वे किसी व्यक्ति के जन्म के सटीक क्षण में ग्रहों के संरेखण और ज्योतिषीय तत्वों का एक व्यक्तिगत स्नैपशॉट प्रदान करते हैं।

iv. **मनोवैज्ञानिक ढांचा:-** ज्योतिष को अक्सर एक नियतिवादी विज्ञान के बजाय एक मनोवैज्ञानिक ढांचे के रूप में देखा जाता है। यह व्यक्तित्व लक्षणों, शक्तियों और संभावित चुनौतियों के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो आत्मनिरीक्षण और व्यक्तिगत विकास के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करता है।

v. **सीमाएँ और नैतिक विचार:-** जबकि ज्योतिष मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है, यह भविष्य की भविष्यवाणी करने वाली क्रिस्टल बॉल नहीं है। नैतिक ज्योतिषी किसी के भाग्य को आकार देने में स्वतंत्र इच्छा और व्यक्तिगत जिम्मेदारी के महत्व पर जोर देते हैं।

vi. **सांस्कृतिक महत्व:-** ज्योतिष ने कला, साहित्य और यहां तक कि वैज्ञानिक प्रगति को प्रभावित करते हुए विभिन्न संस्कृतियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैज्ञानिकों सहित कई ऐतिहासिक हस्तियों ने इसके सांस्कृतिक महत्व को स्वीकार किया है।

vii. **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:-** ज्योतिष पारंपरिक वैज्ञानिक पद्धति से अलग है, और और इसके महत्व को पूरी तरह से समझा नहीं गया है। हालाँकि, ज्योतिष खगोलीय विन्यास और मानव अस्तित्व के बीच जटिल संबंधों को सरल बनाता है। इसलिए इसे पूरी तरह से खारिज करना समीचीन नहीं है।

viii. **व्यक्तिगत विश्वास और विकल्प:-** व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं के आधार पर ज्योतिष को अपनाने या अस्वीकार करने के लिए स्वतंत्र हैं। ज्योतिष को खुले दिमाग से समझना ज़रूरी है, यह समझते हुए कि व्याख्याएँ अलग-अलग हो सकती हैं।

ज्योतिष वास्तव में एक ऐसी विद्या है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व, स्वभाव, गुण, स्वास्थ्य, आय, धनसम्पत्ति, साहस, सहोदर, माता–पिता, सुख–दुख, विद्या, संतति, स्पर्धा, शत्रु, रोग, जीवनसाथी, व्यापार के भागीदार, संघर्ष, कठिनाइयां, विरासत, भाग्य, धर्म, कर्मक्षेत्र–व्यवसाय, हानि–लाभ, मित्र–समाज, मोक्ष, मृत्यु आदि जीवन के अनेकानेक पहलुओं को उदघाटित करती है।

ज्योतिष का मुख्य उद्देश्य दैनिक जीवन की समस्याओ का समाधान करना, भविष्य में घटने वाली घटनाओ की जानकारी देना व उन घटनाओ का समय ग्रह नक्षत्रो आदि के माध्यम से निश्चित करने में व्यक्ति को सहायता करना है। हां इतना अवश्य है, कि दो–चार किताबें पढ़कर, ज्योतिष शास्त्र की शब्दावली का उपयोग करके कोई अर्धज्ञानी लोगों से पैसे ऐंठे, तो ऐसे में उस अर्धज्ञानी ब्यक्ति के ज्ञान पर प्रश्न उठाने की बजाय ज्योतिष शास्त्र की सच्चाई पर प्रश्नचिन्ह लगाना इस दिव्य विद्या के प्रति अपमान होता है।

वैदिक ज्योतिष सुत्रम

ज्योतिष शास्त्र प्राचीन भारतीय ज्ञान और विज्ञान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका उद्देश्य मनुष्यों के जीवन को समझने और मार्गदर्शन देने में सहायक होना है। ज्योतिष शास्त्र एक व्यापक और गहन विषय है, जो व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। यह एक ऐसा विज्ञान है, जो आत्म अनुसंधान और आत्म समझ को प्रोत्साहित करता है। भारतीय समाज और संस्कृति में ज्योतिष शास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। विवाह, नामकरण, गृह प्रवेश और अन्य महत्वपूर्ण संस्कारों में इसका व्यापक रूप से उपयोग होता है।

====✂====

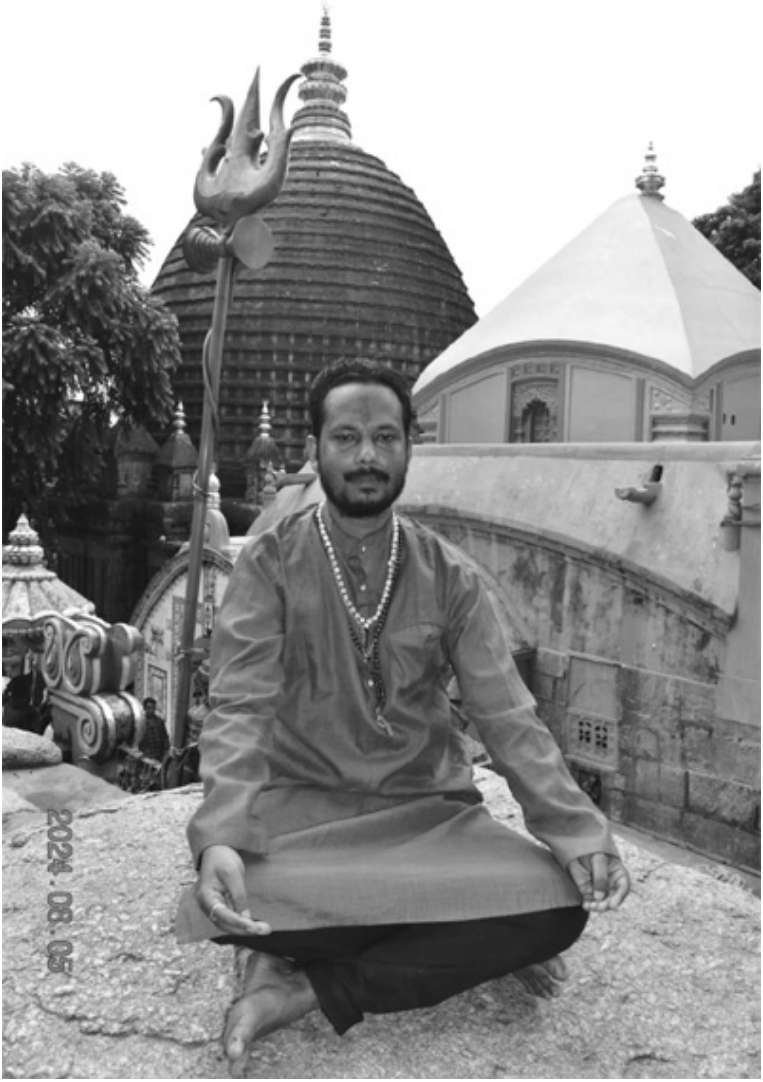

धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षित: ।
तस्माद् धर्मं न त्यजामि मा नो धर्मो हतोऽवधीत् ॥
जो व्यक्ति धर्म का नाश करता है, उसका नाश धर्म कर देता है। धर्म की रक्षा करने वाले व्यक्ति की कभी पराजय नही होती है।

ग्रन्थ परिचय

वैदिक ज्योतिष सूत्रम एक अद्वितीय ग्रन्थ है, जो प्राचीन वैदिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करती है। वैदिक ज्योतिष, जिसे वैदिक ज्योतिष शास्त्र के नाम से भी जाना जाता है, भारत की प्राचीनतम विद्याओं में से एक है। यह ज्ञान सदियों से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता आ रहा है और आज भी इसकी प्रासंगिकता में कोई कमी नहीं है। "वैदिक ज्योतिष सूत्रम" इस महान ज्ञान को समर्पित एक ऐसा पुस्तक है, जो न केवल ज्योतिष प्रेमियों के लिए बल्कि उन सभी के लिए महत्वपूर्ण है, जो भारतीय ज्योतिष को सीखना चाहते हैं। आशा है कि यह पुस्तक आपके जीवन में ज्ञान और प्रकाश का स्रोत बनेगी। "वैदिक ज्योतिष सूत्रम" पुस्तक में वैदिक ज्योतिष के सभी महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे ग्रह, राशि, नक्षत्र, योग और दशा को समाहित किया गया हैं। यह व्यापक संयोजन विद्यार्थियों को एक संपूर्ण और गहन ज्ञान प्रदान करेगा।

❖ वैदिक ज्योतिष सूत्रम ″ग्रन्थ की प्रमुख विशेषताएँ: –

i. **ग्रहों का विस्तृत वर्णन:** वैदिक ज्योतिष सूत्रम ग्रन्थ में प्रत्येक ग्रह का विस्तृत विवरण दिया गया है। इसमें ग्रहों के गुण, प्रभाव और विभिन्न भावों में उनकी स्थिति के आधार पर प्रभावों का वर्णन शामिल है।

ii. **राशियों का वर्णन:** पुस्तक में बारह राशियों के स्वभाव, गुण और उनके जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभाव को विस्तार से बताया गया हैं। प्रत्येक राशि के लिए विशेष गुण और दोष का वर्णन भी शामिल है।

iii. **नक्षत्रों का गूढ़ ज्ञान:** नक्षत्रों का वैदिक ज्योतिष में महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक ज्योतिष सूत्रम″ में २७ नक्षत्रों के गुण, प्रभाव और उनके विभिन्न जीवन क्षेत्रों में महत्व का विस्तार से वर्णन किया गया है।

iv. **योगों का विश्लेषण:** योग वैदिक ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो विभिन्न ग्रहों के संयोजन और उनके प्रभाव को दर्शाता है। पुस्तक में विभिन्न योगों के प्रभाव और उनकी भविष्यवाणी में उपयोगिता को विस्तार से बताती हैं।

v. **दशा प्रणाली का विवेचन:** दशा प्रणाली वैदिक ज्योतिष की एक महत्वपूर्ण अंग है, जो जीवन के विभिन्न कालखंडों में ग्रहों के प्रभाव का विश्लेषण करती है। वैदिक ज्योतिष सूत्रम″ में विभिन्न दशा प्रणालियों का विस्तार से वर्णन किया गया है।

❖ पुस्तक की अन्य विशेषताएँ:

i. **सरल और सुबोध भाषा:** वैदिक ज्योतिष सूत्रम" पुस्तक सरल और सुबोध भाषा में लिखी गई हैं, जिससे शिक्षक और छात्र दोनों ही जटिल विषयों को आसानी से समझ सकते हैं। यह विशेषता विद्यार्थियों के अध्ययन को सहज और प्रभावी बनाती है।

ii. **संगठित अध्याय:** पुस्तक को विभिन्न अध्यायों में विभाजित किया गया है, जो छात्रों को विषय को चरणबद्ध तरीके से समझने में मदद करता है। हर अध्याय एक विशेष विषय पर केंद्रित होता है, जिससे विषय को गहराई से समझा जा सकता है।

iii. **पाठ्यक्रम के अनुरूप सामग्री:** वैदिक ज्योतिष सूत्रम" पुस्तक ज्योतिष संस्थानों के पाठ्यक्रम के अनुसार व्यवस्थित की गई हैं, जिससे शिक्षकों और छात्रों को एक समग्र और संगठित ढंग से अध्ययन करने में सहायता मिलती है।

iv. **प्रमाणिकता और विश्वसनीयता:** प्राचीन ग्रंथों और शास्त्रों पर आधारित यह पुस्तकें प्रामाणिक और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करती हैं, जिससे सटीक और विश्वसनीय जानकारी प्राप्त होती है, जो शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

v. **चित्रों और चार्ट:** पुस्तक में विभिन्न प्रकार के चित्र और चार्ट शामिल किए गए हैं, जो अध्ययन को और अधिक रोचक और समझने में आसान बनाते हैं। ये चित्र और चार्ट पाठकों को ज्योतिषीय गणनाओं और भविष्यवाणियों को समझने में मदद करते हैं।

vi. **गहन शोध और अध्ययन:** वैदिक ज्योतिष सूत्रम" पुस्तक को लिखने में लेखक ने अत्यंत गहन शोध और अध्ययन का सहारा लिया है। यह पुस्तक प्राचीन ग्रंथों और शास्त्रों के अध्ययन पर आधारित है, जिससे पाठक को प्रामाणिक, सटीक और मुलभुत जानकारी प्राप्त होती है।

vii. **मौलिक सिद्धांतों की स्पष्टता:** वैदिक ज्योतिष सूत्रम" पुस्तक वैदिक ज्योतिष के मौलिक सिद्धांतों को सरल और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करती हैं। यह छात्रों को ज्योतिष के मूलभूत सिद्धांतों को गहराई से समझने में मदद करती हैं।

"वैदिक ज्योतिष सूत्रम"वैदिक ज्योतिष का एक मूल्यवान ग्रंथ:

भारत के जाने–माने तांत्रिक ज्योतिषी अनुपम मोहंत जी द्वारा लिखित वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक वैदिक ज्योतिष के क्षेत्र में एक अतुलनीय योगदान हैं। वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक वैदिक ज्योतिष का एक अमूल्य ग्रंथ हैं, जो इस प्राचीन विद्या के गूढ़ सिद्धांतों और उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों को समाहित करती हैं।

वैदिक ज्योतिष सुत्रम

वैदिक ज्योतिष सूत्रम ग्रन्थ के लेखक अनुपम मोहन्त जी आप एक अनुभवी ज्योतिषी हैं, जिन्होंने अपने जीवन का अधिकांश हिस्सा ज्योतिष के अध्ययन और अध्यापन में बिताया है। उनकी प्रचेष्टा इस पुस्तक के माध्यम से वैदिक ज्योतिष को जन–जन तक पहुंचाने का है। उनका मानना है कि, सही ज्योतिषीय ज्ञान से व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर दिशा में मोड़ सकता है और विभिन्न समस्याओं का समाधान कर सकता है।

अनुपम मोहंता जी ने वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक लिखकर वैदिक ज्योतिष के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके द्वारा लिखित यह महान ग्रन्थ वैदिक ज्योतिष सूत्रम न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि शिक्षण और अध्ययन के लिए एक अमूल्य संसाधन भी हैं।

❖ विद्यार्थियों के लिए भी एक अमूल्य संसाधन:

वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक वैदिक ज्योतिष सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए अत्यंत मददगार साबित होंगी। वैदिक ज्योतिष भारत की प्राचीनतम महत्वपूर्ण विद्याओं में से एक है, जिसे समझना और सीखना एक चुनौती पूर्ण कार्य होता है। लकिन वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक इस ज्ञान को अत्यंत सुलभ और सुगम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह पुस्तक विशेष रूप से उन्ह विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं, जो ज्योतिष के गूढ़ सिद्धांतों और उनके अनुप्रयोग को आसानी से समझना चाहते हैं।

वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक सम्पूर्ण वैदिक ज्योतिष का एक सरलीकरण संग्रह है। जो वैदिक ज्योतिष के हर पहलू को समाहित करती हैं, जैसे कि ग्रह, राशि, नक्षत्र, योग, दशा और पंचांग की सारगर्भित जानकारियाँ आदि। वैदिक ज्योतिष एक विस्तृत और जटिल विद्या है, जिसमें अनेक पहलू शामिल होता हैं। परन्तु वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक इन सभी पहलुओं को गहनता से समझाती हैं, जिससे यह पुस्तक ज्योतिष प्रेमियों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होती हैं।

वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक वैदिक ज्योतिष के हर पहलू को गहनता से समझाती हैं। चाहे आप एक विद्यार्थी हों या एक अनुभवी ज्योतिषी, ये ग्रन्थ आपको वैदिक ज्योतिष के व्यापक और गूढ़ ज्ञान को समझने में मदद करेंगी। ग्रह, राशि, नक्षत्र, योग और दशा के विस्तृत विवरण के साथ यह पुस्तकें वैदिक ज्योतिष के अध्ययन और अनुप्रयोग को सरल और प्रभावी बनाती हैं।

यह पुस्तकें न केवल विद्यार्थी के शैक्षिक विकास में सहायक हैं, बल्कि उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन को भी समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायगी। विद्यार्थियों को इस अद्वितीय पुस्तक श्रृंखला के माध्यम से वैदिक ज्योतिष के गहरे और व्यापक ज्ञान को

प्राप्त करने का अवसर मिलता है, जो उन्हें एक सफल ज्योतिषी बनने के मार्ग पर अग्रसर करता है।

❖ ज्योतिष संस्थानों के लिए भी यह एक आदर्श पुस्तक है:

वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक ज्योतिष संस्थानों की शिक्षण प्रणाली के लिए भी अनुकूल साबित होगी। क्यौकी वैदिक ज्योतिष एक गूढ़ और विस्तृत विज्ञान है, जिसे सही दिशा–निर्देश और प्रामाणिक स्रोतों के माध्यम से ही गहराई से समझा जा सकता है।

वैदिक ज्योतिष सिखाने और सीखने के लिए एक व्यवस्थित और सटीक पाठ्यक्रम की भी आवश्यकता होती है। वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक विशेष रूप से इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए लिखी गई हैं, ताकि वे संस्थानों के सिलेबस के अनुरूप हों और शिक्षण प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बना सकें। जिससे यह संस्थानों की शिक्षण प्रणाली में अत्यंत मददगार साबित होगी।

वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तक विद्यार्थियों और शिक्षण संस्थानों के लिए अत्यंत मूल्यवान संसाधन हैं, जो न केवल ज्योतिष के सिद्धांतों को स्पष्ट रूप से समझाती हैं, बल्कि उनके व्यावहारिक अनुप्रयोगों पर भी विस्तृत जानकारी प्रदान करती हैं। यह पुस्तकें न केवल सिलेबस के अनुरूप हैं, बल्कि शिक्षण प्रणाली को भी अधिक प्रभावी और संगठित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

ज्योतिष संस्थानों में इन पुस्तकों का उपयोग छात्रों को वैदिक ज्योतिष के गूढ़ और व्यापक ज्ञान को गहराई से समझने में मदद करता है, जिससे विद्यार्थी भविष्य में एक सफल ज्योतिषी बन सकें। वैदिक ज्योतिष शिक्षण संस्थाने इस पुस्तकों को अपने अध्ययन सामग्री में शामिल करके, संस्थान अपनी शिक्षण गुणवत्ता को आसानी से बढ़ा सकते हैं और विद्यार्थियों को एक गहन और व्यापक ज्ञान प्रदान कर सकते हैं।

यह पुस्तक न केवल ज्योतिष प्रेमियों के लिए बल्कि उन सभी के लिए अनमोल धरोहर है जो वैदिक ज्योतिष के सीखना और समझना चाहते हैं। इस पुस्तक के माध्यम से पाठक न केवल ज्योतिषीय ज्ञान प्राप्त करेंगे, बल्कि वैदिक ज्योतिष शास्त्र के प्रति एक नई दृष्टि और समझ भी विकसित करेंगे। ज्योतिष आचार्य अनुपम मोहंता जी द्वारा लिखित यह पुस्तकें न केवल आपके ज्ञान को बढ़ाएंगी, बल्कि आपको एक सफल ज्योतिषी बनने की दिशा में मार्गदर्शन भी करेगी।

====✂====

लेखक के बारे में

अनुपम मोहंता जी असम के सर्वश्रेष्ठ तांत्रिक ज्योतिषियों में से एक हैं। वैदिक ज्योतिष, अंक ज्योतिष, लाल किताब, वास्तु, तंत्र और वैदिक कर्मकांड में अपने दशकों के अनुभव के साथ, आप न केवल असम में बल्कि पूरे भारत और विदेशों में भी एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व हैं। अनुपम मोहंता जी भारत में सबसे अधिक मांग वाले ज्योतिषियों में से एक है, जिन्होंने योनि साधना और अंक ज्योतिष, वास्तु शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, तंत्र–मंत्र के साथ साथ ज्योतिष के कई अन्य शाखाओ में भी महारत हासिल की है।

अनुपम मोहंता जी **पंचानन ज्योतिष और तांत्रिक कार्यालय** एवं **एस्ट्रोडिवाइनस** ऑनलाइन ज्योतिषीय प्लटफार्म के संस्थापक और निदेशक भी हैं। करियर काउंसलिंग, प्रेम संबंध परामर्श, व्यवसाय परामर्श, शिक्षा परामर्श सहित सभी प्रकार की ज्योतिष–संबंधी सेवाओं के साथ साथ ऑनलाइन ज्योतिष, तंत्र और वास्तु शास्त्रादि सीखाते भी है।

वे अपनी सेवाओ के माध्यम से भारत सहित पूरी दुनिया में फैले ज्योतिष प्रेमियों के बीच अपना नाम और प्रसिद्धि हासिल कर रहे हैं। उनके सेलिब्रिटी क्लाइंट में सामाजिक कार्यकर्ता, व्यवसायी, सरकारी अधिकारी और कॉर्पोरेट क्षेत्र के साथ–साथ खेल जगत की हस्तियां और राजनेता भी शामिल हैं।

अनुपम मोहंता जी को वैदिक ज्योतिष और वास्तु परामर्श का गहरा अनुभव है। पिछले कई वर्षों से कुंडली और हस्तरेखा विज्ञान के आधार पर सटीक भविष्यवाणियों के प्रति उनके समर्पण ने उन्हें एक महान ज्योतिषी बनाता हैं। उनकी विशेषज्ञता केवल वैदिक ज्योतिष तक ही सीमित नहीं है।

वे तंत्रमंत्र, फेंगशुई, समुद्रशास्त्र, वैदिक अनुष्ठान, तांत्रिक गुप्त साधना में भी समान पारंगत हैं। उनकी महत्वपूर्ण लेख सोशल मीडिया, न्यूज़ पोर्टल जैसे विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर अक्सर प्रकाशित होती रहती हैं।

====✂====

प्रथम खंड : प्रथम संस्करण

❖ अनुपम मोहंता जी के द्वारा लिखित ग्रन्थ श्रृंखलाएं:-

ग्रंथो का नाम	भाषाएँ
● वैदिक ज्योतिष सुत्रम (१म खंड)	हिंदी, इंग्लिश, बंगला
● वैदिक ज्योतिष सुत्रम (२य खंड)	हिंदी, इंग्लिश, बंगला
● वैदिक ज्योतिष सुत्रम (३य खंड)	हिंदी, इंग्लिश, बंगला
● ज्योतिष तत्वम / प्रवेशिका	हिंदी
● तंत्र कौमुदी	हिंदी, बंगला
● सामुद्रिक तत्व निधि	हिंदी
● विवाह विमर्श (व्यावहारिक खंड)	हिंदी
● विवाह विमर्श (मेलापक मीमांसा)	हिंदी
● सम्भोग सुखम	हिंदी
● योनी कल्पद्रुम	हिंदी
● योनी तरंगिनी	हिंदी
● लिंग तन्त्रम	हिंदी
● तांत्रिक पूजा विधि	हिंदी
● योनी साधना	हिंदी
● तांत्रिक सेक्स	हिंदी
● स्वरचित गान	बंगला
● काम तन्त्रम	हिंदी
● गर्भधानम तंत्र	हिंदी

====✂====

अनुक्रमणिका

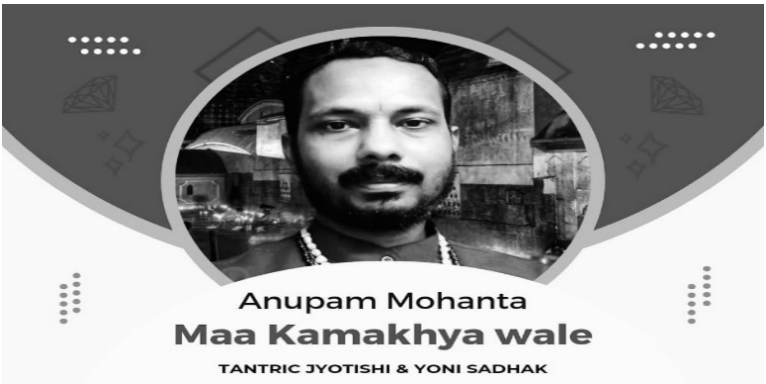

विषय	पृष्ट
• प्रथम अध्याय (ज्योतिष तत्व)	01 – 34
• द्वितीय अध्याय (पंचांग तत्व)	35 - 100
• तृतीय अध्याय (ग्रह तत्व)	101 - 182
• चतुर्थ अध्याय (नक्षत्र तत्व)	183 - 220
• पंचम अध्याय (राशि तत्व)	221 - 254
• षष्ठ अध्याय (भाव तत्व)	255 - 296
• सप्तम अध्याय (गोचर तत्व)	297 - 320
• अष्टम अध्याय (दशा तत्व)	321 - 342
• नवम अध्याय (विविध तत्व)	343 - 351

====✂====

"यदि आप वैदिक ज्योतिष को सरल और व्यवस्थित तरीके से सीखना चाहते हैं, तो **वेदिक ज्योतिष सूत्रम** एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। यह पुस्तक ग्रह, नक्षत्र, शुभ–अशुभ योग, दशा और गोचर जैसे गूढ़ विषयों को आसान भाषा में समझाती है। चाहे आप ज्योतिष के विद्यार्थी हों या एक अनुभवी ज्योतिषी, यह ग्रंथ आपके ज्ञान को गहरा करने में सहायक होगा। हालाँकि ग्रन्थ कोई भी हो उसको एकबार पड़ने से ही ग्रन्थ में निहित ज्ञान को आत्मसात करना सबके लिए संभव नहीं है। इसलिए हम विशेष रूप से ज्योतिष विद्यार्थियों से अनुरोध करते है, इस ग्रन्थ को पुन्खानुपुन्ख अवश्य पड़े, इससे ग्रन्थ में निहित ज्ञान को आप आत्मसात जरुर कर पाएंगे"।

====✂====

वैदिक ज्योतिष सुत्रम

प्रथम अध्याय

ज्योतिष तत्व

मंगलाचरण

गुरू ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः । गुरूर्साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामलं गुरोः पदम । मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम । तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ।।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं, द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूत, भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरूं तं नमामि ।।

ज्योतिष के अधिकारी व अनाधिकारी व्यक्ति

शांत चित्त वाले, गुरु के प्रति भक्ति भाव से युक्त, सत्यवादी, आस्तिक
शिष्य को ही यह शास्त्र सिखाना चाहिए, इसी से कल्याण होता है ।

दूसरे के शिष्य, नास्तिक, शठ (कुटिल विचारों वाला) शिष्य को इस
शास्त्र का ज्ञान देने से सदैव दुःख ही प्राप्त होता है ।।
जो मनुष्य शास्त्र को बिना जाने व पढ़े, इसकी निंदा करता है, वह रोग
व नरक भोगकर पुनः जन्मा होने पर अँधा होता है ।।।

- ✓ **ज्योतिष के अधिकारी और अनाधिकारी का विचार वैदिक ज्योतिष में महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन व्यक्तियों को अलग करता है जो ज्योतिष का अध्ययन और अभ्यास करने के योग्य हैं और जो नहीं हैं। जो लोग योग्य है केवल उन्हें ही ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन करना चाहिए।**

- ➢ **अधिकारी (योग्य व्यक्ति):**

  i. **शास्त्र ज्ञान:** अधिकारी व्यक्ति वह होता है, जिसके पास वैदिक ज्योतिष शास्त्रों का गहरा ज्ञान हो। उसे वेद, पुराण और ज्योतिषीय ग्रंथों का अध्ययन किया हुआ होना चाहिए।

  ii. **अनुभव:** व्यक्ति को ज्योतिष के क्षेत्र में पर्याप्त अनुभव होना चाहिए। अनुभवहीन व्यक्ति ज्योतिषीय निष्कर्ष निकालने में गलती कर सकता है।

iii. **सदाचार और नैतिकता:** अधिकारी व्यक्ति को नैतिक और सदाचारी होना चाहिए। उसकी नीयत और कार्य शैली सही होनी चाहिए, ताकि वह अपनी विद्या का सही उपयोग कर सके।

iv. **संवेदनशीलता और सहानुभूति:** ज्योतिष को मानवीय संवेदनाओं और समस्याओं को समझने में सक्षम होना चाहिए। उसे दूसरों की मदद करने और उनकी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ने की इच्छा होनी चाहिए।

v. **विनम्रता:** अधिकारी व्यक्ति को अपने ज्ञान और विद्या के प्रति विनम्र होना चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि ज्योतिष एक सेवा है, न कि शक्ति का प्रदर्शन।

आज ज्योतिष शास्त्रों का जितना अपमान हो रहा है एवं लोग ठगा हुआ महसूस कर रहे है वो केवल अनधिकृत अयोग्य व्यक्तियों के कारण हो रहा है। इन्ह अनधिकृत अयोग्य व्यक्तिओ ज्योतिष शास्त्रों को मझाक बनाकर रखा है और ज्योतिष शास्त्रों के नाम पर अपना धंधा चला रहे है।

जिस बजाए से आज बहुत लोग ज्योतिष शास्त्रों के ऊपर विश्वास नहीं रखते है। उनके नजर में ज्योतिष शास्त्र नेहात ही एक अन्धविश्वास है, और कोई मौका नहीं गवाते है ज्योतिष शास्त्रों का उपहास उड़ाने में इसलिए अनधिकृत व्यक्तिओ को कभी ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन या अनुशीलन नहीं करनी चाहिए।

➢ अनाधिकारी (अयोग्य व्यक्ति):

i. **अल्प ज्ञान:** वह व्यक्ति जिसने ज्योतिष का पर्याप्त अध्ययन नहीं किया है और जिसके पास शास्त्रों का ज्ञान नहीं है, वह अनाधिकारी होता है।

ii. **भ्रम और धूर्तता:** अनाधिकारी व्यक्ति वह है जो ज्योतिष का उपयोग लोगों को भ्रमित करने और अपने निजी स्वार्थ के लिए करता है। वह अज्ञानता और धूर्तता से लोगों को ठगता है।

iii. **अनैतिकता:** अनैतिक और असदाचारी व्यक्ति जो नैतिकता का पालन नहीं करता और ज्योतिष का दुरुपयोग करता है, वह अनाधिकारी होता है।

iv. **असंवेदनशीलता:** वह व्यक्ति जो दूसरों की समस्याओं और भावनाओं को नहीं समझता और केवल अपने लाभ के लिए ज्योतिष का प्रयोग करता है, वह अनाधिकारी होता है।

v. **अहंकार:** जो व्यक्ति अपने ज्ञान का अहंकार करता है और दूसरों को नीचा दिखाने के लिए ज्योतिष का प्रयोग करता है, वह अनाधिकारी होता है।

वैदिक ज्योतिष में अधिकारी और अनाधिकारी का यह विभाजन इसलिए महत्वपूर्ण है ताकि इस प्राचीन विद्या का सही और सार्थक उपयोग हो सके, और समाज में ज्योतिष के प्रति सम्मान और विश्वास बना रहे। ज्योतिष शास्त्र एक विज्ञान है जिसमें सितारों की चाल, उनके संबंध एवं मनुष्य पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।

जैसे ही एक मनुष्य जन्म लेता है, एक निश्चित तारीख, समय व स्थान पर, तो उस समय के ग्रहों की स्थिति का प्रभाव उस पर पड़ता है। इससे उसका स्वभाव, शारीरिक बनाव, रहन–सहन, दृष्टिकोण, करियर, धन इत्यादि सभी प्रभावित होते हैं। व्यक्ति जीवन में पड़ने वाले ग्रहो का असर कितना प्रभावी होगा इसका मार्गदर्शन हमे वैदिक ज्योतिष शास्त्रों से प्राप्त होता है। और इसी के आधार पर लोगो का कल्याण करना ही वैदिक ज्योतिष का मुख्य उद्देश्य हमेशा रहा है।

कर्म और भाग्य का सिद्धांत

भारतीय दर्शन के कर्म सिद्धांत भी यही कहता है, कि मनुष्य जैसा करेगा उसे वैसा ही फल प्राप्त होता है। शुभ कर्मों का फल शुभ तथा अशुभ कर्मों का फल अशुभ होता है। भारतीय दर्शन यह भी कहता है कि जो कर्म किए गए हैं उसके फल अवश्य प्राप्त होंगे लेकिन जो कर्म नहीं किए गए उसके फल प्राप्त नहीं हो सकते है।

कर्म के सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति के कार्यों, विचारों और शब्दों का व्यक्ति के भविष्य पर प्रभाव माना जाता है। माना जाता है कि अच्छे कर्म, विचार और शब्द सकारात्मक परिणाम देते हैं; जबकि बुरे कर्म, विचार और शब्द नकारात्मक परिणाम देते हैं। इस अवधारणा को अक्सर यह समझाने के तरीके के रूप में देखा जाता है कि किसी व्यक्ति के जीवन में कुछ घटनाएं क्यों होती हैं और लोग दुख या खुशी का अनुभव क्यों करते हैं।

व्यक्ति के कर्म ही उसके भाग्य का सृजन करते हैं। श्रीमद् भगवदगीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कर्मयोग का संदेश दिया, जिसमें कहा गया है कि कर्म करना आवश्यक है, लेकिन फल की इच्छा नहीं रखनी चाहिए। कर्म के सिद्धांत के अनुसार, हर कर्म का फल अवश्य मिलता है। अच्छे कर्म (पुण्य) और बुरे कर्म (पाप) दोनों का फल अलग–अलग होता है।

वैदिक ज्योतिष को कर्म के लेखा–जोखे का एक महत्वपूर्ण शास्त्र माना जाता है। प्राचीन काल से ही इसका उपयोग कर्म और उसके फल के प्रकार को समझने के लिए उपयोग किया जा रहा है। कई वैदिक पद्धतियाँ हैं जिनके माध्यम से इस जन्म और पूर्व जन्म के कर्मों का निष्कर्ष भी निकाला जा सकता है।

इसके अलावा, वैदिक ज्योतिष जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति के आधार पर भविष्य का सही अनुमान लगाने में मदद करता है। यह ग्रहों और दशाओं की व्याख्या करता है, जिससे

जीवन के अनुकूल और प्रतिकूल चरणों का पूर्वानुमान किया जा सकता है। इस प्रकार, वैदिक ज्योतिष न केवल कर्मों की समझ प्रदान करता है, बल्कि आने वाले समय की दिशा को भी स्पष्ट करता है।

❖ कर्म का महत्व:

i. **कर्म का फल:** वैदिक ज्योतिष के अनुसार, व्यक्ति के पिछले जन्मों के कर्म इस जन्म के अनुभवों और परिस्थितियों को निर्धारित करते हैं। अच्छे कर्मों का फल अच्छे अनुभव और सुख प्रदान करता है, जबकि बुरे कर्म दुख और कठिनाइयों का कारण बनते हैं।

ii. **स्वतंत्रता और जिम्मेदारी:** व्यक्ति को अपने कर्मों का फल भोगने का अधिकार है। इसलिए, व्यक्ति को अपनी कार्यप्रणाली के प्रति जागरूक रहना चाहिए क्योंकि इससे उसके भविष्य का निर्धारण होता है।

❖ भाग्य का महत्व:

i. **कुंडली और ग्रहों का प्रभाव:** वैदिक ज्योतिष में जन्म कुंडली ग्रहों की स्थिति और उनकी चाल को दर्शाती है, जो व्यक्ति के भाग्य का निर्धारण करती है। यह माना जाता है कि ग्रहों की स्थिति से व्यक्ति के जीवन में घटनाएँ और परिस्थितियाँ प्रभावित होती हैं।

ii. **नियति:** भाग्य को एक प्रकार की नियति माना जा सकता है, जिसमें कुछ चीजें पूर्वनिर्धारित होती हैं, जैसे कि जन्म स्थान परिवार और कुछ परिस्थितियाँ।

❖ कर्म और भाग्य का संतुलन:

i. **स्वनिर्मित भाग्य:** वैदिक ज्योतिष में यह विश्वास किया जाता है, कि व्यक्ति अपने कर्मों के माध्यम से अपने भाग्य को बदल सकता है। अच्छे कर्म करने से न केवल वर्तमान में सुख मिलता है, बल्कि भविष्य में भी अच्छे फल मिलते हैं।

ii. **ज्योतिषीय उपाय:** वैदिक ज्योतिष में उपाय भी बताए जाते हैं, जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने ग्रहों की स्थिति को सुधार सकता है और अपने भाग्य में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

कर्म और भाग्य का सिद्धांत वैदिक ज्योतिष में एक दूसरे के पूरक हैं। जहां कर्म हमें अपने कार्यों का फल भोगने के लिए प्रेरित करता है, वहीं भाग्य हमें उन परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करता है जो हमारे कर्मों से प्रभावित होती हैं।

====✂====

ज्योतिष क्या है ?

ज्योति का अर्थ होता है प्रकाश और ज्योतिष का अर्थ होता है, ज्योति पिण्डों का अध्ययन करना

अथवा प्रकाश वाले पिण्डों की गतिविधियों को बताने वाला शास्त्र। अर्थात ज्योतिष शास्त्र या विज्ञानं के माध्यम से उन ब्रह्मांडीय तत्वों का अध्ययन किया जाता है जिनका सीधा प्रभाव मनुष्य जीवन तथा प्रकृति के उपर पड़ता है । ज्योतिष विज्ञान के द्वारा तीनों काल खण्डों (भूत, वर्तमान और भविष्य) के बारे में जाना जा सकता है। किसी जातक विशेष का फलादेश उसके कर्मों पर आधारित होता है। अच्छे कर्मों का फल सदैव अच्छा होता है जबकि बुरे कर्म के कारण जातक को उसके नकारात्मक परिणाम प्राप्त होते हैं। भूतकाल के अनुभवों तथा व्यक्ति के पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर भविष्यफल तैयार होता है।

मनुष्य जीवन में साधारणत षोडश वर्ष तक स्त्री ग्रह अनिष्ट करने का प्रयास करता है, एवं षोडश वर्ष के पश्चात् पुरुष ग्रह अनिष्ट करने के लिए ज्यादा तत्पर होता है। इतना ही नहीं जो मनुष्य नींद में देवताओ को देखते है और उन्मत्त होते है, इन्ह पर देवग्रहों का ज्यादा प्रभाव है यह समझना चाहिए। ठीक इसी तरह नींद में बार बार पितरो को देखना पितृ ग्रहों का प्रभाव दर्शाता है, जो लोग स्वप्नों के आवेश में बात करते रहते है उन्ह पर सिद्ध ग्रहों का प्रभाव होता है एवं जो लोग नींद में बहुत डराबना स्वप्न देखते है उन्ह पर राक्षस ग्रहों का प्रभाव ज्यादा है यह समझना चाहिए।

ज्योतिष के त्रिस्कंध हैं यानी इसके ३ प्रमुख स्तम्भ बताये गए हैं– १) गणित (होरा), २) संहिता और ३) फलित। भविष्य बताने वाली विद्या को फलित ज्योतिष कहा जाता है, जिसमे आकाशीय पिंडों की स्थिति और उनके प्रभाव के आधार पर मानव जीवन के बारे में भविष्यवाणी करने की विधि मिलता है। ज्योतिष शास्त्र को परिभाषित किया जाए तो यह कहा जा सकता है, यह एक ऐसा विज्ञान या शास्त्र है, जो आकाश मंडल में विचरने वाले ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध के साथ बारहों राशियों एवं नक्षत्रों का अध्ययन करता है और इन आकाशीय तत्वों से पृथ्वी एवं पृथ्वी पर रहने वाले लोग किस प्रकार प्रभावित होते हैं उनका विश्लेषण करता है। जो किसी व्यक्ति के जीवन, घटनाओं और संभावनाओं को समझने में मदद करता है। ज्योतिष शास्त्र के प्रयोग से भविष्य के बारे में एक परिकल्पना प्राप्त होती है।

✓ **ज्योतिष शास्त्र के बारे में कुछ खास बातें:**

- ज्योतिष शास्त्र के ज़रिए किसी व्यक्ति के जीवन में होने वाली घटनाओं का पता लगाया जाता है।
- ज्योतिष शास्त्र से व्यक्ति के जीवन के अच्छे और बुरे समय का पता चलता है।
- ज्योतिष शास्त्र से व्यक्ति के स्वभाव और व्यवहार का पता चलता है।
- ज्योतिष शास्त्र से स्वास्थ्य, धन, विवाह, करियर जैसे विषयों में मार्गदर्शन मिलती है।

वैदिक ज्योतिष का परिचय

वैदिक ज्योतिष, जिसे हिंदू ज्योतिष के नाम से भी जाना जाता है। यह एक प्राचीन भारतीय ज्योतिष प्रणाली है जो ग्रहों, नक्षत्रों और राशियों के अध्ययन पर आधारित है। भारतीय वैदिक ज्योतिष की उत्पत्ति वैदिक काल से माना जाता है, विशेष रूप से ऋग्वेद और यजुर्वेद में इसका उल्लेख मिलता है।

ऋग्वेद में ज्योतिष से सम्बंधित ३० श्लोक हैं, यजुर्वेद में ४४ तथा अथर्ववेद में १६२ श्लोक जयोतिष शास्त्र के उपर निवंध हैं। वेदों के उक्त श्लोकों पर आधारित ज्योतिष शास्त्र फलित ज्योतिष के रूप में जनमानस में ज्यादा प्रचलित हुआ है। वेदों के छह प्रमुख अंगो में से एक अंग ज्योतिष होने के कारण वैदिक ज्योतिष शास्त्र को वेदांत या वेदांग ज्योतिष के नाम से भी जाना जाता है। वर्तमान समय में वेदांग ज्योतिष के नाम से तीन प्रमुख ग्रन्थ हैं; १.ऋग्वेदाङ्गज्योतिष, २.यजुर्वेदाङ्गज्योतिष और ३.अथर्ववेदाङ्गज्योतिष।

'ज्योतिषम् नेत्रमुच्यते' इसका अर्थ होता है कि वेद को समझने के लिए, सृष्टि को समझने के लिए 'ज्योतिष शास्त्र' को जानना आवश्यक होता है। वेदों के अर्थ ज्ञान में सहायक शास्त्रों को वेदांग के रूप में जाना जाता है। यह कुल छह शास्त्र है: १) शिक्षा, २) कल्प, ३) व्याकरण, ४) निरुक्त, ५) छंद और ६) ज्योतिष। इनमे से छंद को वेदों का पाद, कल्प को हाथ, ज्योतिष को नेत्र, निरूक्त को कान, शिक्षा को नाक, व्याकरण को मुख कहा गया है।

वैदिक ज्योतिष को परिभाषित किया जाए तो कहना होगा वैदिक ज्योतिष ऐसा विज्ञान या शास्त्र है जो आकाश मंडल में विचरने वाले ग्रहों जैसे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध के साथ राशियों एवं नक्षत्रों का अध्ययन करता है और इन आकाशीय तत्वों से पृथ्वी एवं पृथ्वी पर रहने वाले लोग किस प्रकार प्रभावित होते हैं उनका विश्लेषण करता है। वैदिक ज्योतिष में गणना के क्रम में राशिचक्र, नवग्रह, जन्म राशि को महत्वपूर्ण तत्व के रूप में देखा जाता है। हिन्दू धर्म कर्मप्रधान धर्म है, भाग्य प्रधान नहीं है; वेद, उपनिषद और गीता कर्म की शिक्षा देते हैं। प्राचीनकाल से

ही ज्योतिष विद्या का उपयोग घर, आश्रम, मठ–मंदिर या गुरुकुल बनाने के लिए ज्योतिष विद्या की सहायता ली जाती रही है।

❖ **कुछ मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है:**

- **ग्राह्यताएँ:** वैदिक ज्योतिष में मुख्य ग्रह सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु होते हैं। प्रत्येक ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर विशेष प्रभाव होता है।
- **राशियाँ:** वैदिक ज्योतिष में १२ राशियाँ होती हैं (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन) जो व्यक्ति की जन्म कुंडली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- **नक्षत्र:** २७ नक्षत्र होते हैं, जो चंद्रमा की गति के अनुसार निर्धारित होते हैं। प्रत्येक नक्षत्र का एक विशेष अर्थ और प्रभाव होता है।
- **कुंडली:** व्यक्ति की जन्म कुंडली (जनरल चार्ट) को ग्रहों की स्थिति और नक्षत्रों के आधार पर तैयार किया जाता है, जो उसकी विशेषताओं और संभावनाओं को दर्शाती है।
- **दशाएँ:** वैदिक ज्योतिष में दशा प्रणाली (जैसे महादशा और अंतर्दशा) का उपयोग किया जाता है, जो जीवन के विभिन्न चरणों का अध्ययन करने में सहायक होती है।
- **मुहूर्त:** वैदिक ज्योतिष में मुहूर्त का महत्व होता है, और यह जानने का प्रयास किया जाता है कि किस समय कोई कार्य करना सबसे शुभ होगा।

वैदिक ज्योतिष एक समृद्ध विषय है, जो व्यक्ति के जीवन को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह न केवल भविष्य की घटनाओं का अनुमान लगाने में मदद करती है, बल्कि व्यक्ति के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को संतुलित करने का प्रयास भी करती है। वैदिक ज्योतिष विश्वास करता है कि हमारा कर्म, भाग्य और व्यक्तिगत गुणधर्म ग्रहों और नक्षत्रों के संयोजन के आधार पर प्रभावित होते हैं। ज्योतिष गुरुओं और ज्योतिषियों के द्वारा व्यक्तिगत सलाह और पूर्वानुमान प्रदान किया जाता है ताकि व्यक्ति अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में सफलता प्राप्त कर सकें।

वैदिक ज्योतिष का इतिहास

भारतीय संस्कृति का आधार वेद को माना जाता है। वेद धार्मिक ग्रंथ ही नहीं है बल्कि विज्ञान की पहली पुस्तक है, जिसमें चिकित्सा विज्ञान, भौतिक विज्ञान, रसायन और खगोल विज्ञान का भी विस्तृत वर्णन मिलता है। भारतीय ज्योतिष विद्या का जन्म भी वेद से हुआ है, वेद से जन्म

लेने के कारण इसे वैदिक ज्योतिष के नाम से जाना जाता है। वैदिक संस्कृति अत्यंत प्राचीन है, इस महान संस्कृति का अपना अनूठा धर्मशास्त्र, दर्शन, कला, विज्ञान और साहित्य है जो आज तक मौजूद है।

वैदिक ज्योतिष इस संस्कृति का ही एक अभिन्न अंग है और प्राचीन काल से ही इस शास्त्र का अभ्यास किया जाता रहा है। भारत के सबसे पवित्र ग्रंथ वेदादि शास्त्रों में ज्योतिषीय परंपराओं की झलक दिखाई देती है। भारतीय वैदिक ज्योतिष अत्यंत प्राचीन एवं प्राचीनतम ज्योतिष पद्धति है। पौराणिक काल और पुरातत्व अभिलेख के अनुमान के अनुसार भारतीय

वैदिक ज्योतिष का काल लगभग ५००० ईसा पूर्व है। हजारों वर्षों तक कई ऋषियों ने वेदों के समानांतर वैदिक ज्योतिष की परंपरा को बनाए रखा है। वैदिक ज्ञान के बल पर भारत में एक से बढ़कर एक खगोलशास्त्री या ज्योतिषी हुए हुए हैं। इनमें गर्ग, आर्यभट्ट, भृगु, बृहस्पति, कश्यप, पाराशर, वराह, मिहिर, पित्रायुस, बैद्यनाथ आदि प्रमुख हैं। उस काल में खगोलशास्त्र ज्योतिष विद्या का ही एक अंग हुआ करता था।

वैदिक ज्योतिष भारतीय संस्कृति और सनातन हिन्दू धर्म का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह ज्योतिष विद्या है जिसमें ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों और उनके स्थितियों का अध्ययन किया जाता है। और इसका उपयोग भविष्य की पूर्वानुमान, व्यक्तिगत जीवन, स्वास्थ्य, कर्म, धार्मिक अनुष्ठान और अन्य दिनचर्या की गणना और पूर्वानुमान के लिए किया जाता है।

वशिष्ठ, भृगु और गर्ग जैसे कई ऋषि ज्योतिष के स्वामी थे और गुरु परंपरा में अपने शिष्यों को इसकी शिक्षा देते थे। महर्षि पराशर भी वैदिक युग के महान ऋषियों में से एक थे, उनके बाद यह मनुष्य ही थे जिन्होंने वैदिक ज्योतिष की परंपरा को संरक्षित किया है। उनमें से उल्लेखनीय थे सत्याचार्य और विशेष रूप से वराह मिहिर, जिन्होंने ज्योतिष पर कई महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। उनके बाद कई अन्य ग्रंथों की रचना की गई जिन्हें वैदिक ज्योतिष का एक प्रमुख ग्रन्थ के रूप में माना जाता है, जैसे सारावली, जातक पारिजात, सर्वार्थ चिंतामणि और होरासार आदि।

वैदिक ज्योतिष के प्रमुख अठारह ऋषियों के नाम

१. सूर्य	७. कश्यप	१३. रोमक
२.. ब्रह्मा	८. नारद	१४. पुलस्त्य
३. व्यास	९. गर्ग	१५. च्यवन
४. वसिष्ठ	१०. मरीचि	१६. यवन
५. अत्रि	११. मनु	१७. भृगु
६. पराशर	१२. अंगिरस	१८. शौनक

वैदिक ज्योतिष का अर्थ भारतीय ज्योतिष पद्ति से भी हैं, यह एक सनातन हिन्दू परम्पराओं की सबसे प्राचीन विज्ञान है। शास्त्रों में ज्योतिष शास्त्रों को रश्मि विज्ञान नाम से उदभासित किया गया है, इसका अर्थ यह है, जो हमें अँधेरे से प्रकाश की और ले जाए, ज्योतिष हमे अज्ञानता के अँधेरे से ज्ञान के प्रकाश में ले जाता है। वर्तमान भूत और भविष्य साथ ही समय और स्थान के अनुसार ग्रहों की स्थिति का ज्ञान और आकाश और पृथ्वी की घटनाओं के बीच संबंध स्थापित करना ही ज्योतिष विज्ञान है।

ज्योतिष दो शब्दों ज्योति + ईशः से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है ज्योति अर्थात प्रकाश देने वाला जिस विद्या से समस्त जगत को प्रकाश अर्थात एक नई दिशा मिलती है उसे ज्योतिष विज्ञान कहते है। शास्त्रानुसार वैदिक ज्योतिष शास्त्रों के प्रवर्त्तक सूर्य, पितामह, व्यास, वशिष्ट, अत्रि, पाराशर, कश्यप, नारद, गर्ग, मरीचि, मनु, अंगिरा, लोमेश, पौलिश, च्यवन, यवन, भृगु एवं शौनक इन्ह १८ ऋषियों को माना गया है।

कालक्रम में भारतीय वैदिक ज्योतिष ने एक लम्बी यात्रा तय करके फारसी, बेबीलोन, यूनान, रोमान, मिस्र और दूसरे पश्चिमी देशो में पाश्चात्य (पश्चिमी) ज्योतिष के रूप में विकशित हुआ है। इसलिए वैदिक ज्योतिष पद्धति की तुलना में पश्चिमी ज्योतिष अपेक्षाकृत नया है एवं गणना पद्धति भी स्थूल है।

❖ पाश्चात्य ज्योतिष और वैदिक ज्योतिष में क्या अंतर है?

वैदिक ज्योतिष और पश्चिमी ज्योतिष के बीच अंतर गणना की पद्धति में है। वैदिक ज्योतिष एक निश्चित राशि चक्र का उपयोग करता है, पश्चिमी प्रणाली गतिशील राशि चक्र का अर्थात विषुव पर आधारित सायन प्रणाली का उपयोग करता है। पश्चिमी ज्योतिष में ग्रहों की स्थिति तारों के संबंध में बदलती रहती हैं, दूसरी ओर वैदिक प्रणाली स्थिर या निरयण प्रणाली का उपयोग करती है।

पश्चिमी ज्योतिष राशि चक्र का प्रारंभिक बिंदु तय करने के लिए चल राशि का उपयोग करता है। जहां ग्रहों की गति को वसंत विषुव पर सूर्य की स्थिति के विरुद्ध मापा जाता है।

पश्चिमी ज्योतिष उष्णकटिबंधीय राशि चक्र का उपयोग करता है, जो पृथ्वी को केंद्र और खगोलीय पिंडों को इसके चारों ओर घूमने वाला मानता है।

पश्चिमी ज्योतिष का मेष हर ७२ साल में १ डिग्री की दर से वैदिक ज्योतिष के मेष बिंदु से दूर बहता रहता है। वर्तमान में, यह अंतर पिछले २०० वर्षों में लगभग २४ डिग्री तक बढ़ गया है। पश्चिमी ज्योतिष प्रणाली की तुलना में, वैदिक ज्योतिष को अधिक तर्कसंगत और विश्वसनीय माना जाता है। भारतीय वैदिक ज्योतिष की गणना शास्त्रानुसार आधारित खगोलीय सिद्धांतों पर किया जाता है, एवं भविष्यवाणियाँ विभिन्न गणनात्मक दृष्टिकोणों पर आधारित होती हैं।

वैदिक ज्योतिषी न केवल नटल चार्ट बल्कि दशाओं का भी आंकलन करता हैं, विभिन्न ग्रहों की अवधि अलग–अलग राशियों से होकर गुजरती है और वास्तविक समय में उनका प्रभाव होता है। इसलिए वैदिक ज्योतिष की गणना तुलनामत्मक पश्चिमी ज्योतिष से अति सूक्ष्म, अधिक सटीक एवं प्रामाणिक होती है।

- **कुछ मुख्य विन्दु इस प्रकार:**

i. **आधार और उत्पत्ति:** वेदिक ज्योतिष को हिन्दू ज्योतिष के नाम से भी जाना जाता है। यह प्राचीन भारत की एक पद्धति है, जो वेदों पर आधारित है, और लगभग ५००० वर्षों से प्रचलित है। यह ज्योतिष पद्धति भारतीय संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं के साथ गहरे जुड़ी हुई है। पश्चिमी या पाश्चात्य ज्योतिष पद्धति पश्चिमी देशों में विकसित हुई है, जो ग्रीक, रोमन और बेबीलोनियाई सभ्यताओं के ज्योतिष ज्ञान पर आधारित है। यह ज्योतिष मुख्य रूप से सूर्य राशियों पर केंद्रित है और लगभग २००० वर्षों से प्रचलित है।

ii. **ज्योतिषीय प्रणाली:** वैदिक ज्योतिष में ग्रहों की स्थिति नक्षत्रों और राशियों के वास्तविक स्थिर सितारों के सापेक्ष अर्थात शास्त्रोक्त निरयन प्रणाली में होती है। इसमें पंचांग का उपयोग करके गणना की जाती है, जिसमें तिथी, नक्षत्र, योग और करण शामिल होते हैं। कुंडली के निर्माण में जन्म का समय, स्थान और तिथि का विशेष ध्यान रखा जाता है। पाश्चात्य ज्योतिष में ग्रहों की स्थिति विषुवों के आधार पर अर्थात सायन प्रणाली में गणना की जाती है। इसमें कुंडली के निर्माण में सूर्य का स्थान महत्वपूर्ण होता है एवं गणना के लिए ग्रहों की स्थिति का अध्ययन प्रमुख होता है।

iii. **राशि चक्र:** वैदिक ज्योतिष में २७ नक्षत्रों और १२ राशियों का उपयोग किया जाता है। नक्षत्रों का महत्व अधिक होता है और इनका उपयोग अधिक सटीक भविष्यवाणी के लिए किया जाता है। पाश्चात्य ज्योतिष में १२ राशियों का उपयोग किया जाता है, जो वसंत विषुव से शुरू होती हैं। कुंडली की व्याख्या करने के लिए पश्चिमी प्रणाली केवल इच्छित ग्रहों के बीच कोणीय दूरी का उपयोग करती है। कोण १२० डिग्री और ६० डिग्री को

अच्छा माना जाता है जबकि ९० और ४५ डिग्री के कोणों को नकारात्मक माना जाता है ।

iv. **कुंडली निर्माण**: वैदिक ज्योतिष में कुंडली *(जन्म चार्ट)* बनाने के लिए जन्म समय, स्थान और तिथि का उपयोग किया जाता है। इसमें सभी ग्रहों की स्थिति और दशाओं का महत्व होता है। पाश्चात्य ज्योतिष में भी कुंडली निर्माण के लिए भी जन्म समय, स्थान और तिथि का उपयोग किया जाता है, परन्तु कुंडली गणना में इसमें सूर्य और चंद्रमा के स्थान का अधिक महत्व होता है। वैदिक ज्योतिष में कुंडली विभिन्न शैली में बनाया जाता है, जैसे: पूर्व भारतीय शैली, दक्षिण भारतीय शैली एवं पूर्व भारतीय शैली। पाश्चात्य ज्योतिष में वृत्ताकार कुंडली बनाने का प्रचलन है, लग्न स्पष्ट को प्रथम भाव का आरंभ मानकर पर कुंडली बारह भावों में बंटी होती है।

v. **कुंडली का विश्लेषण:** वेदिक ज्योतिष में कुंडली के १२ भावों, नक्षत्रों, ग्रहों की स्थिति, दशा और गोचर का गहन विश्लेषण किया जाता है। जन्म कुंडली के साथ-साथ चंद्र कुंडली और नवमांश कुंडली का भी महत्व होता है। पश्चिमी ज्योतिष में सूर्य राशियों के आधार पर विश्लेषण किया जाता है, जिसमें ग्रहों की स्थिति और एस्पेक्ट्स का अध्ययन किया जाता है।

vi. **ग्रहों का महत्व**: वैदिक ज्योतिष में ९ ग्रहों सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु का उपयोग किया जाता है। राहु और केतु छाया ग्रह माने जाते हैं और इन्हें बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। पाश्चात्य ज्योतिष में १० ग्रहों सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, यूरेनस, नेपच्यून, प्लूटो का उपयोग किया जाता है।

vii. **दशा प्रणाली**: वैदिक ज्योतिष में विभिन्न दशा प्रणाली का उपयोग किया जाता है, जैसे कि विनशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा जो ग्रहों के प्रभाव और समयावधि को दर्शाती है। पाश्चात्य ज्योतिष में ट्रांजिट और प्रोग्रेशन का उपयोग किया जाता है, जो ग्रहों की वर्तमान स्थिति और उनकी गति के आधार पर भविष्यवाणी किया जाता हैं।

viii. **भविष्यवाणी की विधियाँ**: वैदिक ज्योतिष में अधिक विस्तृत और गहन भविष्यवाणियों के लिए विभिन्न विधियों का उपयोग किया जाता है, जैसे कि प्रश्न कुंडली, नक्षत्रों का अध्ययन, और विभिन्न योगों का विश्लेषण। पाश्चात्य ज्योतिष में अधिकतर सूर्य राशि के आधार पर भविष्यवाणियाँ की जाती हैं, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व और जीवन की सामान्य प्रवृत्तियों को दर्शाती हैं।

ix. **आध्यात्मिक और धार्मिक संदर्भ**: वैदिक ज्योतिष भारतीय धर्म और संस्कृति के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है और इसमें आध्यात्मिक साधना और कर्मकांडों का भी महत्व होता

है। परन्तु पाश्चात्य ज्योतिष अधिकतर व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर केंद्रित होता है, और इसका धार्मिक संदर्भ कम होता है।

x. **प्रवृत्ति और सिद्धांत:** वेदिक ज्योतिष में कर्म सिद्धांत, पुनर्जन्म, और भाग्य का महत्व होता है। यह पद्धति जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित करती है, जैसे शिक्षा, विवाह, करियर, स्वास्थ्य आदि। पश्चिमी ज्योतिष में व्यक्ति की व्यक्तित्व, मनोविज्ञान और आत्मविकास पर अधिक ध्यान दिया जाता है। यह पद्धति व्यक्ति के आत्मनिरीक्षण और जीवन के उद्देश्यों को समझने में सहायक होती है।

xi. **उपचार और उपाय:** वेदिक ज्योतिष में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों, मंत्रों, रत्नों और पूजा विधियों का उपयोग किया जाता है। जातक के ग्रह दोषों को दूर करने के लिए विशेष पूजा, यंत्र और तांत्रिक उपाय भी किए जाते हैं। पश्चिमी ज्योतिष में उपचार के लिए ज्यादातर मनोवैज्ञानिक और आत्मनिरीक्षण विधियों का उपयोग किया जाता है। उपचारों में मैडिटेशन, क्रिस्टल हीलिंग और जीवनशैली में बदलाव को प्राथमिकता दी जाती है।

वैदिक ज्योतिष की मुख्य शाखाएँ

वैदिक ज्योतिष एक बृहद शास्त्रों का समूह है एवं इसकी बहुत सी शाखाएं भी है। जैसे पाराशरी, जैमिनी, नाड़ी, मुहूर्त आदि। वैदिक ज्योतिष को एक त्रिस्कन्ध या पंचस्कन्ध शास्त्र भी कहा जाता है; जिसमे सिद्धान्त, संहिता, होरा, प्रश्न और शकुन या निमित्त शास्त्र नाम के पांच स्कन्ध है। मूलत वैदिक ज्योतिष शास्त्रों को दो भागों में बाँटा गया है १) गणित (सिद्धांत) और २) फलित।

गणित (सिद्धांत) ज्योतिष: यह विषय खगोल विज्ञान से संबंधित है। गणित भाग से ज्योतिष की सभी खगोलीय गणनाएँ की जाती है, जैसे ग्रहों के स्फुट, गति, वल आदि। आज जितनी भी ग्रह, नक्षत्र, सौरजगत समन्धित पाठ्यक्रम स्कूल कॉलेज में पढ़ाई जाती है वह सब ही सिद्धांत ज्योतिष का ही एक हिस्सा है। वैदिक काल में ज्योतिष के दो भाग सिद्धांत एवं फलित एक ही था।

फलित ज्योतिष: फलित ज्योतिष के माध्यम से ग्रहो - नक्षत्रों के फल कहे जाते है, की कोई ग्रह किसी राशि में किसी भाव में हो और दुसरे ग्रह के साथ या उससे दृष्ट हो तो क्या फल होगा आदि। फलित ज्योतिष के दो भाग होते है, १) संहिता एवं २) होरा (फलित)।

संहिता ज्योतिष: यह मुख्य रूप से राष्ट्र, संस्कृति, समुदाय और समाज जैसे सामूहिकता से संबंधित है। इसमे भूगोल, मौसम, राष्ट्र, वैश्विक महामारी, राजनीतिक नेताओं, व्यापारिक संस्थाओं आदि की नियति की भविष्यवाणी और पूर्ण विश्व मे होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का फल कथन किया जाता है।

होरा (फलित) ज्योतिष: होरा अर्थात फलित भाग को जातक शास्त्र भी कहाँ जाता है। यह व्यक्तिगत भाग्य से संबंधित है। इसमे एक व्यक्ति विशेष का विचार उसके जन्म कुंडली बनाना और जीवन में भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करना शामिल है। फलित ज्योतिष के अंतर्गत ही जन्म कुंडली, प्रश्न कुंडली, स्वर विज्ञान, सामुद्रिक शास्त्र, अंक शास्त्र सभी आते हैं। वास्तव में, यह ज्योतिष शास्त्र का एक छोटा सा हिस्सा है, परन्तु यह ज्योतिष का सबसे आम और लोकप्रिय रूप है। गणना के आधार पर कालक्रम में फलित ज्योतिष का बहु शाखा–उपशाखाय बना है।

- **कुछ महत्वपूर्ण शाखाएँ निम्नलिखित हैं:**

i. **होरारी ज्योतिष:** यह शाखा विशेष समय पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने के लिए ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करती है।

ii. **मुहूर्त ज्योतिष:** यह शाखा शुभ और अशुभ समय का निर्धारण करती है। इसमें विवाह, यात्रा, गृह प्रवेश आदि के लिए शुभ मुहूर्त का चयन किया जाता है। मुहूर्त ज्योतिष अपने आप में अलग एवं बृहद शास्त्र है, हमारे १६ संस्कार इसी शास्त्र पर ही आधारित हैं।

iii. **नाड़ी ज्योतिष:** यह एक विशेष प्रकार की ज्योतिष है। इसमें व्यक्ति की जीवन घटनाओं की भविष्यवाणी की जाती है।

iv. **प्रश्न ज्योतिष:** प्रश्न ज्योतिष वैदिक ज्योतिष की एक बहुत ही रोचक शाखा है। इसमें किसी विशेष प्रश्न के उत्तर के लिए वर्तमान ग्रह स्थिति का अध्ययन किया जाता है। यह होरारी ज्योतिष से मिलता–जुलता शाखा है। जिस क्षण कोई विचार या मुद्दा किसी के मन में प्रवेश करता है उसे गर्भधारण का क्षण माना जाता है। इसी तरह गर्भाधान अवधि वह समय है जिसे मन में किसी विचार के विभिन्न गुणों और अवगुणों पर बहस करने में बितते हैं। जिस क्षण किसी के दोवारा प्रश्न पूछा जाता हैं, वह जन्म का समय होता है। इसीलिए प्रश्न ज्योतिष में सवाल पूछने का समय ही भविष्यवाणी करने का आधार बन जाता है।

v. **ताजिक ज्योतिष:** यह ज्योतिष पद्धति मुख्य रूप से वार्षिक कुंडली बनाने पर आधारित है। इसमें वर्ष के आधार पर विभिन्न घटनाओं की भविष्यवाणी की जाती है।

vi. **जैमिनी ज्योतिष:** यह पद्धति ऋषि जैमिनी द्वारा प्रतिपादित है। और इसमें विभिन्न प्रकार की कुंडलियों और विशेष तकनीकों का प्रयोग किया जाता है, जैसे कि अर्घा, करकांश और उपपदा आदि।

vii. **कृष्णमूर्ति पद्धति:** यह आधुनिक ज्योतिष पद्धति प्रोफेसर के.एस. कृष्णमूर्ति द्वारा विकसित की गई है। इसमें सटीक भविष्यवाणी के लिए ग्रहों के सूक्ष्म अध्ययन का महत्व है।

viii. **लाल किताब:** यह एक विशेष प्रकार की ज्योतिष पद्धति है जो मूल रूप से पंजाब क्षेत्र में विकसित हुई, इसमें ज्योतिषीय उपचार और उपायों का व्यापक वर्णन है।

ix. **मेडिकल ज्योतिष:** यह शाखा चिकित्सा ज्योतिष के नाम से भी परिचित है। आम तौर पर किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य और बीमारियों के बारे में भविष्यवाणी करती है। इसमें विभिन्न ग्रहों और राशियों के स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। उपचार कब शुरू करना है, सर्जरी कब निर्धारित करनी है, इत्यादि निर्धारित करने के लिए जन्म कुंडली और अन्य कारकों का अध्ययन होता हैं।

x. **मानसिक ज्योतिष:** यह पद्धति व्यक्ति के मानसिक और भावनात्मक पहलुओं का अध्ययन करती है। इसमें व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक स्थिति और मानसिक स्वास्थ्य पर ग्रहों के प्रभाव का विश्लेषण किया जाता है।

xi. **वास्तु ज्योतिष:** यह वास्तुकला और ज्योतिष का समन्वय है। इसमें भवन निर्माण, घर की दिशा, और वास्तु दोषों का निवारण ज्योतिषीय दृष्टिकोण से किया जाता है।

xii. **द्रिक सिद्धांत:** यह ज्योतिषीय गणनाओं और सिद्धांतों का विस्तृत अध्ययन है, जिसमें ग्रहों के गति और उनके सटीक गणनाओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

xiii. **यवना ज्योतिष:** यह पद्धति ग्रीक और भारतीय ज्योतिष के मिश्रण से विकसित हुई है और इसमें यवन सूत्रों का अध्ययन किया जाता है।

xiv. **निमित्त शास्त्र:** यह प्रणाली शकुन *(संकेत)* और अपशकुन के आधार पर भविष्यवाणी करती है। इसमें प्राकृतिक और मानव निर्मित घटनाओं का विश्लेषण किया जाता है। महाभारत, रामायण में शकुन शास्त्र या लक्षण *(ज्योतिष)* की अनेक स्थानों पर चर्चा की गयी है।

xv. **स्वर शास्त्र:** नाम और ध्वनियों पर आधारित भविष्यवाणियाँ की जाती है।

वैदिक ज्योतिष के प्रमुख शास्त्रीय ग्रंथ

वैदिक ज्योतिष गणित और खगोल विज्ञान पर आधारित एक विशाल और जटिल विषय है। ज्योतिषियों को भविष्यवाणी करने से पहले उन्हें जटिल गणनाएँ और विश्लेषण करना पड़ता है। एक उच्च प्रशिक्षित और अनुभवी ज्योतिषी भविष्यवाणियाँ करने में बहुत सटीक हो सकता है।

इसलिए वैदिक ज्योतिष का कुछ प्रमुख शास्त्रीय ग्रंथ के नाम उल्लेख कर रहे है। वैदिक ज्योतिष में पारंगत हासिल करने के लिए ज्योतिष शिक्षार्थियो को इन्ह ग्रंथो का अध्यन जरूर करना चाहिए।

❖ वैदिक ज्योतिष की सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथो की सूची:

i. महर्षि पाराशर द्वारा लिखित **बृहत् पाराशर होरा शास्त्र** यह वैदिक ज्योतिष में सबसे प्रतिष्ठित और आधारभूत ग्रंथों में से एक है, जिसमें ज्योतिषीय सिद्धांतों का विस्तृत विवरण दिया गया है।

ii. मंत्रेश्वर द्वारा लिखित **फलदीपिका** एक अन्य शास्त्रीय ग्रंथ, इसमें ग्रहों के प्रभाव, भावों के संकेत और भविष्यसूचक पद्धति सहित ज्योतिषीय विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

iii. कल्याण वर्मा द्वारा लिखित **सारावली** वैदिक ज्योतिष पर एक व्यापक ग्रंथ, यह कुंडली विश्लेषण के विभिन्न पहलुओं में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

iv. वैद्यनाथ दीक्षित द्वारा लिखित **जातक पारिजात** यह पुस्तक जन्म कुंडली के सिद्धांतों पर प्रकाश डालती है और कुंडली की व्याख्या करने के लिए दिशानिर्देश प्रदान करती है।

v. नारायण भट्ट द्वारा लिखित **नारायण दशा** घटनाओं के समय की नारायण दशा प्रणाली पर केंद्रित है।

vi. रामानुजाचार्य द्वारा लिखित **भावार्थ रत्नाकर** यह पुस्तक विभिन्न भावों में ग्रहों की व्याख्या और उनके प्रभावों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती है।

vii. महादेव द्वारा लिखित **जातक तत्व** एक क्लासिक कृति जो ग्रहों के संयोजन और उनके परिणामों सहित भविष्यसूचक ज्योतिष के विभिन्न पहलुओं को उल्लेख करती है।

viii. वराहमिहिर द्वारा लिखित **बृहत् संहिता** ज्योतिष के विभिन्न पहलुओं और खगोल विज्ञान, वास्तुकला और मौसम की भविष्यवाणी जैसे विषयों पर यह एक व्यापक ग्रंथ है।

ix. बी.वी. रमन द्वारा लिखित **हिंदू भविष्यसूचक ज्योतिष** एक व्यापक मार्गदर्शिका जो शास्त्रीय सिद्धांतों को आधुनिक अनुप्रयोगों के साथ जोड़ती है।

x. धुंडीराज द्वारा लिखित **जातक भरणम** विभिन्न राशियों और घरों में ग्रहों के प्रभावों को उल्लेख करने वाला एक सुप्रसिद्ध ग्रंथ।

xi. महर्षि पाराशर द्वारा लिखित **लघु पाराशरी** बृहत पाराशर होरा शास्त्र का एक छोटा संस्करण जो आवश्यक भविष्यवाणी सिद्धांत पर केंद्रित है।

xii. रामदयालु द्वारा लिखित **संकेत निधि** राशि-आधारित भविष्यवाणियों और ग्रहों के प्रभावों पर केंद्रित एक ज्योतिषीय क्लासिक ग्रन्थ।

xiii. वेंकटेश द्वारा लिखित **सर्वार्थ चिंतामणि** विभिन्न ग्रहों की स्थिति और पहलुओं की व्याख्या करने के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका है।

xiv. भट्ट नारायण द्वारा लिखित **होराशास्त्र** कुंडली पर केंद्रित एक और महत्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ।

xv. नीलकंठ द्वारा लिखित **उत्पत्ति प्रकरणम** ज्योतिष की उत्पत्ति और बुनियादी बातों पर चर्चा है।

xvi. रामदयालु द्वारा लिखित **कल्प लता** मुहूर्त पर केंद्रित है, ज्योतिष की वह शाखा जो शुभ समय से संबंधित है।

xvii. वराहमिहिर द्वारा लिखित **ग्रहपिंडध्याय** ग्रहों के भौतिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं पर चर्चा करता है।

xviii. वराहमिहिर द्वारा लिखित **पंचसिद्धांतिका** खगोल विज्ञान और ज्योतिष पर पाँच प्रमुख ग्रंथों पर चर्चा करता है।

xix. वेंकटेश द्वारा लिखित **जातक चंद्रिका** कुंडली पढ़ने की मूल बातों पर ध्यान केंद्रित करता है।

xx. नीलकंठ द्वारा लिखित **प्रश्न तंत्र** होरारी ज्योतिष से संबंधित है, जो पूछे जाने वाले समय के आधार पर विशिष्ट प्रश्नों का उत्तर देता है।

xxi. एस. गणपति शास्त्री द्वारा लिखित **मण्डूक दशा** समय की भविष्यवाणी के लिए एक विशिष्ट दशा प्रणाली को शामिल करता है।

xxii. देवकृष्ण द्वारा लिखित **चन्द्र कला नाड़ी** चंद्रमा की स्थिति के आधार पर विस्तृत भविष्यवाणियाँ प्रदान करने वाला एक शास्त्रीय ग्रन्थ।

वैदिक ज्योतिष के कुछ अतिरिक्त ग्रंथ सूची यहां दिए गए हैं:

• स्कंद होरा	• होरा रत्न	• मानसागरी
• बृहत् प्रजापत्य	• चमत्कार चिंतामणि	• जातक तत्वम्
• लघु प्रजापत्य	• कश्यप होरा	• सिद्धान्तशिरोमणि
• वशिष्ठ होरा	• (पूर्वा) कालामृतम	• मुहूर्त चिंतामणि
• गर्ग होरा	• उत्तर कालामृतम्	• सूर्य सिद्धान्त
• कौशिका होरा	• ताजिका नीलकंठि	• ताजिक नीलकंठी
• सौनाका होरा	• प्रसन्न रत्न	• आर्य भाट्टीयम्
• लोमसा संहिता	• प्रसन्न मार्ग	• माया होरा
• भृगु सूत्र	• प्रसन्ना रीति	• बृहत जातक
• ऋग् वेदांग ज्योतिष	• दैवज्ञ वल्लभ	• होरा सारा
• यजुर वेदांग ज्योतिष	• कलाप्रकाशिका	• भृगु संहिता
• साम वेदांग ज्योतिष	• दशध्यायी	• श्रुतकीर्ति होरा
• अथर्व वेदांग ज्योतिष	• गार्गीय-ज्योतिष	• सिद्धसेना होरा
• यवनेश्वर होरा	• गर्ग-संहिता	• जातकापारिजात
• स्फुजिध्वज होरा	• गर्ग होरा	• बृहद् संहिता
• विष्णुगुप्त होरा	• जैमिनी सूत्र	• सत्याचार्य होरा

वैदिक ज्योतिष प्रशंसा

वैदिक ज्योतिष एक बृहद शास्त्रों का समूह है, एवं इसकी बहुत सी शाखाएं है। जैसे पाराशर, जैमिनी, नाड़ी आदि। उस समय के ऋषियों ने न केवल ग्रहों, नक्षत्रों, राशियों को वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जिससे उनकी गति, आकार, परिभ्रमण पथ आदि का पता चला, बल्कि उनका मानव जीवन पर भौगोलिक और मानसिक असर पर भी शोध करके ज्योतिष शास्त्र में समाहित किया गया है। प्राचीन भारत में और यहां तक कि आधुनिक

काल तक, स्कूलों और विश्वविद्यालयों में छात्रों को ज्योतिष पढ़ाया जाता था। हाल ही में भारत सरकार ने फिर से विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में ज्योतिष पढ़ाने की नीति शुरू की है।

ज्योतिष एक खगोलीय विज्ञान हैं, जिसमें अध्ययन के कई अलग-अलग अनुशासन हैं। आकाशीय स्थित ग्रह नक्षत्रो के प्रभाव मानब जीवन पर कैसा प्रभाव डाल रहा है, एक विद्यान ज्योतिषी फलित के माध्यम से ये समझने की एवं समाधान देने की काम करते है। ज्योतिष ज्ञान को सबसे पहले शिव ने नंदी को दिया नंदी ने मां जगदम्बे को बताया फिर परम पिता ब्रह्मा, नारद मुनि, सप्त ऋषियों को और आगे जाकर त्रिकाल दर्शियों ने इस विद्या के रहस्यों की खोज किए है। इसीलिए ये कोई अंधविश्वास नहीं है और न ही कोई पाखंड है। ज्योतिष शास्त्र के प्रणेता स्वयं भगवान शिव हैं।

जन्म कुंडली की संरचना

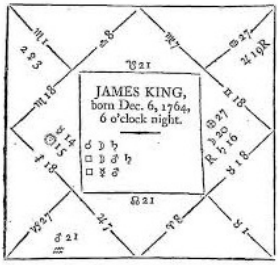

जन्म कुंडली जिसे जन्म पत्रिका भी कहा जाता है, यह एक चार्ट है जो व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति को दर्शाता है, अर्थात जन्म के समय आकाशीय ग्रहों का नक्शा ही कुंडली कहलाता हैं। यह कुंडली व्यक्ति के जीवन में ग्रहों के प्रभाव को समझने में सहायता करती है। कुंडली की संरचना में विभिन्न तत्व शामिल होते हैं, जैसे कि राशियाँ, भाव, ग्रह, और नक्षत्र जो मिलकर व्यक्ति के व्यक्तित्व, जीवन के क्षेत्र और भविष्य की घटनाओं का संकेत देते हैं।

कुंडली में बारह राशियाँ होती हैं, जो आकाश के बारह भागों का प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रत्येक राशि का एक विशेष गुण और प्रभाव होता है, जो जन्म के समय ग्रहों की स्थिति के अनुसार बदलता है। राशियाँ केवल व्यक्ति के स्वभाव को नहीं दर्शातीं, बल्कि ये उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि करियर, परिवार, स्वास्थ्य और संबंधों पर भी गहरा प्रभाव डालती हैं। इसलिए एक ज्योतिषी को राशियों की गहन समझ होनी चाहिए ताकि वे सही भविष्यवाणियाँ कर सकें।

भावों की संख्या भी बारह होती है और प्रत्येक भाव जीवन के एक विशेष क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। पहले भाव से लेकर बारहवें भाव व्यक्ति के जीवन के विभिन्न चरणों और अनुभवों का संकेत देते हैं। उदाहरण के लिए, तीसरा भाव संचार और भाई–बहनों से संबंधित है, जबकि चतुर्थ भाव माता और गृहस्थ जीवन का संकेत देता है। इन भावों के अध्ययन से ज्योतिषी यह समझ सकते हैं कि व्यक्ति के जीवन में कौन से क्षेत्र प्रमुख होंगे और कहाँ चुनौतियाँ आ सकती हैं। ग्रहों की स्थिति और उनकी चाल का जन्म कुंडली पर गहरा प्रभाव होता है।

ग्रहों के गोचर से जन्म कुंडली में परिवर्तन आते हैं, जो व्यक्ति के जीवन में विभिन्न अवसर और बाधाएँ ला सकते हैं। जैसे–जैसे ग्रह अपनी कक्षाओं में चलते हैं, वे जन्म कुंडली के भावों और राशियों पर विभिन्न प्रभाव डालते हैं। इसीलिए, ज्योतिषियों के लिए ग्रहों के गोचर का भी अध्ययन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे अपने ग्राहकों को सही सलाह दे सकें।

ग्रहों की स्थिति और उनकी भूमिका भी जन्म कुंडली के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण तत्व है। प्रत्येक ग्रह की स्थिति व्यक्ति के जीवन में विभिन्न घटनाओं और अनुभवों को प्रभावित करती है। जब हम जन्म कुंडली का विश्लेषण करते हैं, तो यह आवश्यक होता है कि हम ग्रहों के स्थान और उनकी आपसी संबंधों को समझें। ग्रहों का स्थान और स्थिति किसी व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। जब ग्रह एक राशि से दूसरी राशि में जाते हैं, तो यह परिवर्तन जीवन में नई चुनौतियों और अवसरों का संकेत देता है।

उदाहरण के लिए, जब शनि का गोचर किसी व्यक्ति की कुंडली में लाभ स्थान में होता है, तो यह व्यक्ति के करियर और वित्तीय स्थिति में सुधार का संकेत दे सकता है। इसी प्रकार, बृहस्पति का गोचर भी व्यक्ति के शिक्षा, धन और संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसलिए, ग्रहों की स्थिति और उनके गोचर के फल को समझना आवश्यक है ताकि सही समय पर उचित सलाह दी जा सके।

ग्रहों की स्थिति के साथ–साथ उनकी आपसी संबंध भी महत्वपूर्ण होते हैं। जब ग्रह एक–दूसरे के साथ संबंध बनाते हैं, तो वे एक–दूसरे की ऊर्जा को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, जब मंगल और राहु एक साथ होते हैं, तो यह व्यक्ति के जीवन में संघर्ष और तनाव का संकेत दे सकता है।

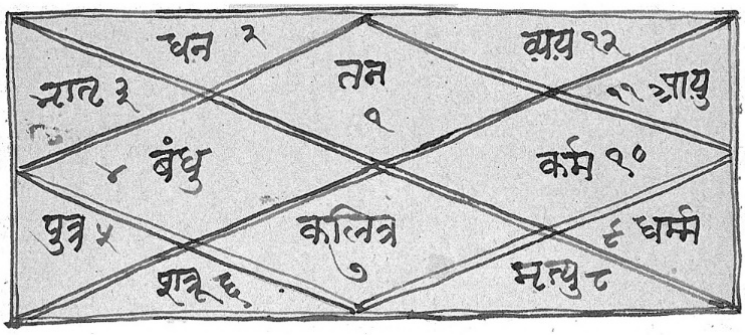

इसी तरह, शुक्र और चंद्रमा का संबंध प्रेम और भावनात्मक संतुलन का प्रतीक होता है। ऐसे संबंधों को समझकर ज्योतिषी यह निर्धारित कर सकते हैं, कि किसी व्यक्ति के लिए कौन सा समय सबसे अनुकूल है और कौन सा समय चुनौतीपूर्ण हो सकता है। ग्रहों की स्थिति और उनकी भूमिका का गहन अध्ययन ज्योतिषी के लिए एक अनिवार्य कौशल है। यह न केवल

उन्हें जन्म कुंडली के माध्यम से व्यक्ति की संभावनाओं को समझने में मदद करता है, बल्कि उन्हें यह भी सिखाता है कि कैसे ग्रहों के गोचर के फल को सही तरीके से व्याख्यायित किया जाए।

राशि और नक्षत्र का महत्व भारतीय ज्योतिषशास्त्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। राशि, जो कि बारह भागों में विभाजित होती है, व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति का संकेत देती है। प्रत्येक राशि अपने विशेष गुण से जातक के व्यक्तित्व और जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करती हैं। ठीक इसी तरह नक्षत्रों का अध्ययन जन्म कुंडली में गहराई लाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

प्रत्येक नक्षत्र का अपना एक अनोखा प्रभाव होता है, जो व्यक्ति के जीवन में विशेष घटनाओं को परिभाषित करता है। नक्षत्रों की स्थिति से यह भी निर्धारित होता है कि व्यक्ति के विचार, भावनाएँ और कार्यशैली कैसे विकसित होगी। जब हम किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली का विश्लेषण करते हैं, तो यह देखना जरूरी होता है कि उसकी राशि और नक्षत्र का मिलन कैसे हो रहा है।

क्या व्यक्ति के नक्षत्र की ऊर्जा उसकी राशि के गुणों को प्रबल करती है या उसे कमजोर बनाती है ? इस संदर्भ में, नक्षत्रों के दशा और अंतर्दशा का अध्ययन करना भी आवश्यक है, जिससे समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को समझा जा सके।

इस प्रकार, जन्म कुंडली का अध्ययन न केवल ज्योतिषी के ज्ञान में वृद्धि करता है, बल्कि यह उन्हें अपने क्लाइंट के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में भी मार्गदर्शन करता है। इस ज्ञान के माध्यम से वे अपने ग्राहकों को उनके जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय लेने में मदद कर सकते हैं, जो अंततः उनकी समग्र भलाई और सफलता के लिए आवश्यक है।

वैदिक ज्योतिष के कुंडली शैली

वैदिक ज्योतिष में जन्मकुंडली या जन्मचार्ट का चित्रण विभिन्न भारतीय शैलियों में किया जाता है। भारत के अलग– अलग क्षेत्रों में जन्मपत्री के विभिन्न रुपों में बनाया जाता है। ये शैलियाँ प्राचीन परंपराओं और सांस्कृतिक भिन्नताओं के आधार पर विकसित हुई हैं। आमतौर पर तीन प्रमुख शैलियाँ देखी जाती हैं: **१)उत्तर भारतीय, २)दक्षिण भारतीय, और ३)पूर्व भारतीय।**

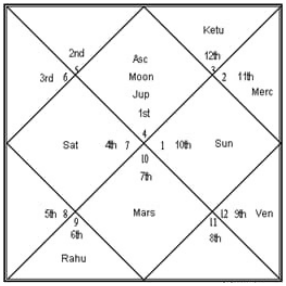

❖ **उत्तर भारतीय शैली:** उत्तर भारतीय कुंडली चार्ट उत्तर भारत में अधिक लोकप्रिय हैं, और कुंडली का चित्रण एक आयताकार ग्रिड के रूप में किया जाता

है। कुंडली में द्वादश भावो को एक निश्चित स्थिति में दर्शाया जाता है, जिसमें लग्न कुंडली के प्रथम भाव में सबसे उपरी घर में परिलक्षित होता है। एवं लग्न उदय के साथ अन्य राशियाँ घड़ी की विपरीत दिशा में बाएं से दाएं तरफ बदलती रहती है।

❖ **दक्षिण भारतीय शैली:** दक्षिण भारतीय शैली में कुंडली का प्रारूप वर्गाकार होती है। कुंडली के प्रारुप घड़ी के क्रम की दिशा में अर्थात दक्षिनवर्त्ति लिखा जाता है। दक्षिण भारतीय पद्धति में प्रचलित कुंडली में राशियाँ स्थिर रहती है और भाव बदलते रहते हैं। जिस भाव में लग्न राशि आती है उसे दो तिरछी रेखाएँ खींचकर चिन्हित कर दिया जाता है। लग्न को पहला भाव मानकर बाकी भाव दाईं ओर आते हैं एवं अन्य सभी ग्रहों को उनकी स्थिति के अनुसार राशियों में दर्शाया जाता है।

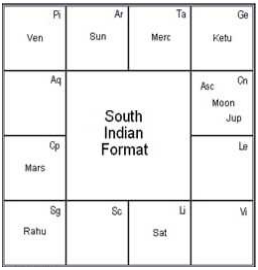

❖ **पूर्व भारतीय शैली:** पूर्व भारतीय शैली देश के पूर्वी भागों में विशेष रूप से बंगाल में प्रचलित है। पूर्व भारतीय कुंडली चार्ट के आकार को परिभाषित करने के लिए कोई सीमा नहीं है, इसका चित्रण एक वृत्त या वर्गाकृति के रूप में भी किया जाता है। कुंडली की संरचना अधिक पारंपरिक होती है और ज्योतिषीय नियमों के अनुसार ग्रहों का चित्रण किया जाता है,। जन्मसमय जो लग्न स्पष्ट राशि होती है, उस पर लग्न का निशान लगा दिया जाता है। जन्म समय ग्रह स्पष्ट सारणी से ग्रहों की जो स्थिति होती है वे राशि में दर्शाया जाता है। पूर्व भारतीय शैली की कुंडली में राशियाँ स्थिर होती हैं, लकिन भाव योजना लग्नानुसार बदलती रहती है। राशियों को हमेशा क्रम से अर्थात उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार बाईं ओर से लिखा जाता है।

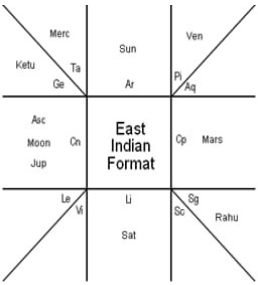

हालांकि इन तीन शैलियों में भिन्नताएँ होते हुए भी सभी का उद्देश्य ग्रहों और राशियों की स्थिति को समझना और उनके प्रभाव को जीवन पर विश्लेषित करना है। उत्तर भारत की कुण्डली आयताकार होती है, जबकि दक्षिण भारत की कुण्डली वर्गाकार होती है। पूर्व भारतीय कुंडली में चार्ट के आकार को परिभाषित करने के लिए कोई सीमा नहीं है, वर्त्तुलाकार या चौकार किसी भी रूप में चित्रण किया जाता है। उत्तर भारतीय चार्ट में, घर अर्थात भाव निश्चित होती हैं, हमेशा कुंडली के पहला घर लग्न का होता है। जबकि दक्षिण भारतीय एवं पूर्व भारतीय कुण्डली में

भाव नहीं, राशियाँ निश्चित होती हैं। उत्तर भारतीय चार्ट और पूर्व भारतीय चार्ट को वामावर्त पढ़ा जाता है, जबकि दक्षिण भारतीय चार्ट को दक्षिणावर्त दिशा में पढ़ा जाता है।

सायन और निरयन पद्धति

ज्योतिष में सायन और निरयाण पद्धतियां आकाशीय पिंडों की स्थिति मापने की दो अलग–अलग प्रणालियों को संदर्भित करती हैं। क्यौकी सूर्य की गतियों के दो आधार हैं सायन पद्धति और निरयण पद्धति। भारतीय वैदिक ज्योतिष पद्धति निरयण के सिद्धांत को मानती है। जबकि पाश्चात्य ज्योतिष सायन पर आधारित होती है। सायन सौर गणना भू–पृष्ठीय आधारित होती है, जबकि निरयण गणना सूर्य सिद्धांत के मत से भूकेन्द्रीय आधारित होती है। इन दोनों गणना में २३ अंशों का अंतर होता है। निरयन गणना में वर्षमान ३६५ दिन, ६ घण्टा, ९ मिनट, १० सैकण्ड अर्थात् ३६५.२६६३६ दिन के होते है। जवकि सायन गणना में वर्षमान ३६५ दिन, ५ घण्टा, ४८ मिनट, ४६ सैकण्ड अर्थात् ३६५.२४२२ दिन के होते है।

❖ **सायन पद्धति (सायन प्रणाली):** सायन पद्धति जिसे "सयान" या "उष्णकटिबंधीय" प्रणाली के रूप में भी जाना जाता है, पृथ्वी से देखे गए आकाशीय पिंडों की वास्तविक स्थिति पर आधारित है। यह विधि स्थिर तारों की पृष्ठभूमि के विरुद्ध ग्रहों की स्थिति को मापती है, विशेष रूप से राशि चक्र की शुरुआत के लिए संदर्भ बिंदु के रूप में वसंत विषुव का उपयोग करती है। पृथ्वी की धुरी की गति को अयन कहा जाता है।

भचक्र मे देशांश नापने के लिए सन्दर्भ बिंदु उत्तरी ध्रुव से ९० अंश है। सायन प्रणाली में यह संदर्भ बिंदु अयन की गति अनुसार बदलता रहता है। इसमे मेष का प्रथम बिन्दु वसंत सम्पात होता है। इसकी गति वक्र ५०.३" प्रति वर्ष है। यह गति पृथ्वी के भूमध्य रेखा उन्नत भाग पर सूर्य और चन्द्रमा के आकर्षण के कारण है।

सूर्य की वार्षिक गति के साथ प्रतिवर्ष यह सम्पात बिंदु विपरीत दिशा मे मंद गति से घूमता है। इसमे किसी भी आकाशीय पिंड की वसंत सम्पात बिंदु से गणना का देशांश सायन देशांश कहलाता है। इसमे १२ राशियो (प्रत्येक ३० अंश) का प्रारम्भ वसंत सम्पात से होता है, जो समयानुसार तारा समूह का एक राशि मे बदलाव होता रहता है।

❖ **निरयन पद्धति (निरयन प्रणाली):** निरयन पद्धति, जिसे "निरयन" या "साइडरियल" प्रणाली के रूप में भी जाना जाता है, स्थिर तारों के विरुद्ध आकाशीय पिंडों की वास्तविक स्थिति पर आधारित है। इसमे मेष राशि का प्रथम बिन्दु हमेशा चित्रा नक्षत्र से १८० अंश के कोण पर स्थायी रहता है। क्रांति वृत्त पर इस स्थयी बिंदु से नापे गये देशांश को निरयण देशांश कहते है।

इस प्रणाली में सन्दर्भ बिंदु स्थिर रहता है, यह अयन के परिवर्तन से परिवर्तित नही होता है। अतः भचक्र का जो भाग जिस राशि के लिए निश्चित है वह हमेशा वही रहता है। इसलिए एक

संकेत के लिए राशि चक्र के आवंटन को नही बदला गया है। इसमे सूर्य से ग्रह की गति व दूरी पृथ्वी की धुरी की गति से स्वतंत्र है। प्राचीन खगोल गणना के ग्रंथ सूर्य सिद्धांत आर्य भटीय तथा ब्रह्म सिद्धांत के आधार पर ही निरयन पद्धति के गणना किया जाता है, इसलिए निरयन पद्धति को शास्त्रीय पद्धति कहा जाता है।

अयनांश प्रकरण

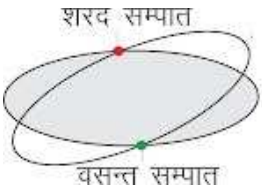

आकाश मध्य मे एक कल्पित रेखा जिसे आकाशीय विषुव वृत्त या नाड़ी वृत्त कहते है। सूर्य इस नाड़ी वृत्त पर नही घूमता है। वह हमेशा क्रांति वृत्त पर घूमता है। दोनो वृत्त २३.३० अंश का कोण बनाते हुए दो स्थानो पर एक दूसरे को काटते है, इन्हे ही सम्पात बिन्दु या अयन बिन्दु कहते है। इनकी गति वक्र है यही गति अयन चलन या विषुव क्रांति या वलयपात कहलाती है। इनका पीछे हटना ही अयन के अंश अर्थात अयनांश कहलाता है। सम्पात का एक चक्र २५८६८ वर्ष मे पूर्ण होता है, अतः औसत अयन बिन्दुओ को एक अंश चलने मे ७२ वर्ष लगते है। इसकी मध्यम गति ५०"१५'' प्रति वर्ष है।

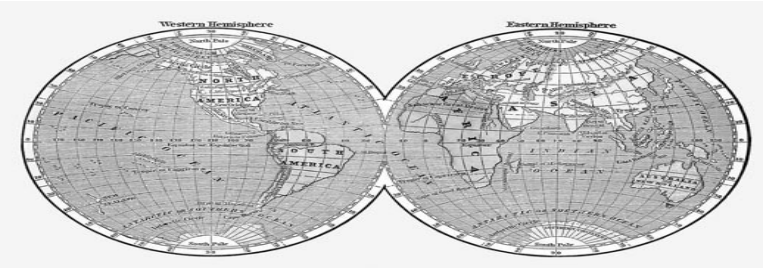

अयनांश, संस्कृत के शब्द 'अयन' (गति) और 'अंश'(घटक) से मिलकर बना है। यह हिंदू ज्योतिष में विषुवों की पूर्वता के लिए इस्तेमाल की जाने वाली प्रणालियों में से एक है। अयनांश नक्षत्र राशि चिन्हों (निरयण) और उष्णकटिबंधीय राशि चिन्हों (सयाण) के बीच के कोण की गणना करता है। स्थायी(निरयन) मेष के प्रथम बिन्दु और चलायमान (सायन)मेष के प्रथम बिन्दु की कोणीय दूरी ही अयनांश है, दूसरे शब्दो मे जिस समय सायन और निरयण भचक्र सम्पाती (समान) थे वहा से वसंत सम्पात की पीछे की ओर कोणीय दूरी अयनांश है।

विषुभदत्त व् क्रांतिवृत्त जिस स्थान में मिलन होता है उसको क्रन्तिपता या सम्पात कंहा जाता है। यह क्रन्तिपात जिस गति से मेष राशि के आदि विन्दु से क्रमशः दूरवर्ती होता हिया उसको ही अयन गति कहा जाता है। सूर्यसिद्धांत के अनुसार वार्षिक अयनगति ५४ विकला

है माना गया है। मेष राशि के आदिविन्दु से क्रन्तिपात या संपात का जो दूरियां है उसी को अयनांश कहते है। जिस वर्ष में मेष राशि के आदि विन्दु में संपात हुआ था उस वर्ष अयनांश शून्य था एवं ३० चैत्र व् ३० आश्विन को दिन रात समान ही होता था, परन्तु जैसे जैसे अयनांश का मान बड़ते रहेगा क्रमश तत पूर्व दिन के दिन और रात्रि मान समान होता रहेगा।

अयनांश का उपयोग ग्रहों की स्थिति के लिए सुधार करने के लिए किया जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ग्रह अलग–अलग गति से चलते हैं। अयनांश साधन सूर्य सिद्धांत के अनुसार १८०० वर्ष मे अयनांश ०० से + २७ अंश और + २७ से ०० तथा ०० से – २७ तक और इसके बाद पुनः वृद्धि होने लगती है। इस प्रकार अयनांश ±२७ मे झूलती रहती है। सूर्य सिद्धांत अनुसार सन ४९० मे अयनांश शून्य था और इसकी वार्षिक गति ५४ विकला है। हालाकी अयनांश साधन के कई प्रकार ज्योतिष गणना प्रचलित हैं।

- **अयनांश निर्णय:** जिस शकाव्द की अयनांश निर्णय करना है, उस शकाव्द से ४२१ अंक घटाकर अर्थात वियोग करके दो स्थानों में स्थापन करनी चाहिए। तत्पश्चात किसी एक स्थान की संख्या को १० अंक से भाग करके जो भागांक निकलेगा उसको दुसरे स्थान के संख्या से वियोग करके जो अवशिष्ट अंक रहेगा उसको ६० अंक से भाग देने पर जो लब्ध अंक निकलता है, वो इष्ट शकाव्द का अयनांश मान होता है।

अक्षांश और देशांतर

अक्षांश और देशांतर को अछे से समझने के लिए पहले भूमध्य रेखा एवं पृथ्वी के अक्ष रेखा को भी समझना होगा, तब अक्षांश और देशांतर को आसानी से समझा जा सकता है। वैदिक ज्योतिष में कुंडली बनाने के लिए जन्म लग्न निर्धारण हेतु स्थानीय समय मान ज्ञात होना जरुरी होता है। इसलिए पंचांग तत्व के इस भाग में पृथ्वी के काल्पनिक अक्षांश और देशांतर से अवलोकन करवाया जा रहा है।

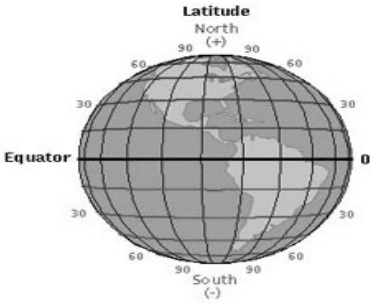

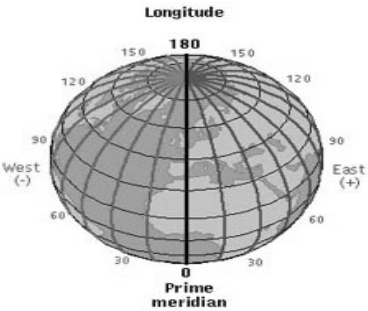

- **भूमध्य रेखा:** यह एक काल्पनिक रेखा है, जो पुरे पृथ्वी को क्षैतिज रूप से दो बराबर भागों में उत्तर एवं दक्षिण के रूप में विभाजित करता है। इस रेखा को विषुवतीय वृत्त रेखा या भूमध्य रेखा भी कहा जाता है। भूमध्य रेखा एक वृताकार रेखा है, जो पृथ्वी के चारो ओर घुमती हुई एक काल्पनिक वृताकार पथ बनाती है। भूमध्य रेखा पृथ्वी के मध्य में होने के कारण का इसका मान ०° डिग्री माना जाता है। भूमध्य रेखा के उपरी भाग को उतरी गोलार्द्ध तथा भूमध्य रेखा के दक्षिणी भाग को दक्षिणी गोलार्द्ध कहते है। एवं पृथ्वी के सबसे उपरी बिंदु अर्थात उतरी ध्रुव से पृथ्वी के सबसे दक्षिणी बिंदु अर्थात दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली काल्पनिक रेखा को पृथ्वी का अक्ष कहते है। जो पृथ्वी के केंद्र से होकर जाती है और पृथ्वी इसी अक्ष को केंद्र बनाकर घुमती रहती है।

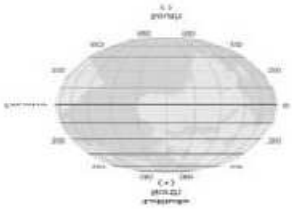

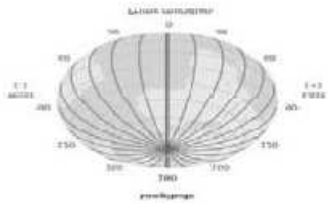

- **अक्षांश रेखाएँ:** भूमध्य रेखा के समानांतर, उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव की ओर खींची गई रेखाओं को अक्षांश रेखाएँ कहा जाता है। भूमध्य रेखा को ०° की अक्षांश रेखा माना जाता है। अक्षांश रेखाएँ कुल १८० हैं, इनमें से १° से ९०° तक की रेखाएँ उत्तरी गोलार्ध में स्थित हैं, जबकि १° से ९०° तक की रेखाएँ दक्षिणी गोलार्ध में हैं। भूमध्य रेखा से उत्तरी ध्रुव की ओर की सभी दूरियाँ उत्तरी अक्षांश और दक्षिणी ध्रुव की ओर की सभी दूरियाँ दक्षिणी अक्षांश में मापी जाती हैं। उत्तरी गोलार्ध के अक्षांश को "N" और दक्षिणी गोलार्ध के अक्षांश को "S" के रूप में दर्शाया जाता है। ये रेखाएँ डिग्री में मापी जाती है। अक्षांश रेखाएँ हर १११ किलोमीटर के अंतराल पर होती हैं। ध्रुवों की ओर बढ़ने पर, भूमध्य रेखा से अक्षांश की दूरी बढ़ती जाती है। सभी अक्षांश रेखाएँ आपस में समानांतर और पूर्ण वृत्त होती हैं। उत्तरी गोलार्ध में प्रमुख अक्षांश रेखाएँ हैं: विशुवृत्त (०°), मकर वृत्त (२३.५° N), और आर्कटिक वृत्त (६६.५° N)। एवं दक्षिणी गोलार्ध में प्रमुख अक्षांश रेखाएँ हैं: कर्क वृत्त (२३.५° S) और अंटार्कटिक वृत्त (६६.५° S) है। उत्तरी ध्रुव ९०° N पर और दक्षिणी ध्रुव ९०° S पर स्थित हैं एवं भारत के मध्य भाग से मकर वृत्त गुजरता है।

- **देशांतर रेखाएँ:** देशांतर, किसी स्थान की कोणीय दूरी को कहते हैं। इसे भूमध्य रेखा के साथ प्राइम मेरिडियन के पूर्व या पश्चिम में डिग्री में मापा जाता है। देशांतर रेखाओं को याम्योत्तर भी कहा जाता है। ये पृथ्वी को विभाजित करने वाली काल्पनिक रेखाएं होती हैं। देशांतर रेखाओं की संख्या ३६० होती है, जो पृथ्वी के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव पर मिलती हैं। यह रेखाएँ भी हर १११ किलो मीटर के अंतराल में ही होता हैं। इन में ०° रेखा को प्रधान देशांतर रेखा कहलाता है। जो ग्रीनविच (लंदन, ग्रेट ब्रिटेन) से गुजरता है।

- ✓ **देशांतर संस्कार:–** कोई देश ग्रीनविच से जितने रेखांश दूरी पर होता है, उसके घंटा मिनट बनाकर (१ डिग्री = ४ मिनट) वह देश ग्रीनविच से पूर्व में है तो ग्रीनविच समय से जोड़ देंने से और यदि पश्चिम में हो तो घटा देने से वहां का जो समय निकलकर आता है उसको ही देशांतर संस्कार कहते है।

ग्रीनविच टाइम (जीएमटी)

इंग्लैण्ड की राजधानी लंदन के ग्रीनविच शहर के पास से गुजरने वाले में देशांतर रेखा को ग्रीनविच रेखा कहते हैं। यह देशांतर रेखा को ० डिग्री या ग्रीनविच मीन टाइम/प्राइम मेरीडियन (जीएमटी) माना जाता है। इस रेखा से पूर्व में स्थित सभी १८०° देशांतरों को पूर्वी देशान्तर और पश्चिम में स्थित सभी १८०° देशांतरों को पश्चिमी देशान्तर कहा जाता है।

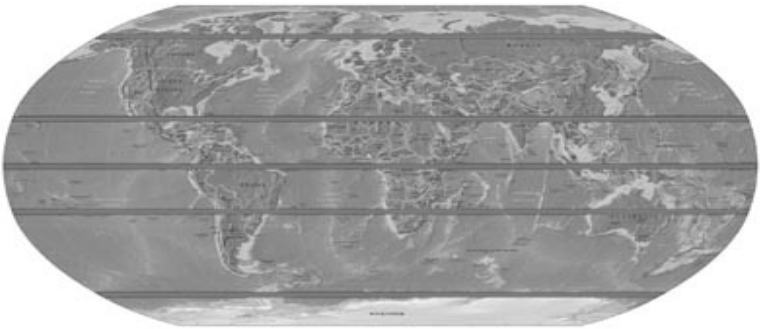

सामान्यता पूर्वी देशान्तर को (E) और पश्चिमी देशान्तरों को (W) द्वारा निर्देशित किया जाता है। ग्रीनविच से पूर्व के स्थानों का समय ग्रीनविच समय से आगे एवं पश्चिम के स्थानों का समय पीछे होता है। विश्व में किस देश में क्या समय है यह जानने के लिए देशांतर रेखाएँ सहायक होते हैं। जब प्रधान देशांतर रेखा पर मद्य रात्रि का (ग्रीनविच मीन टाइम–जीएमटी) ००:०० समय का अनुसरण करते हुए अपना–अपना देश का समय निश्चित करते हैं। यानि की प्रधान देशांतर

रेखा पर मद्य रात्री ००:०० का समय पर विश्व के अन्य सभी जीएमटी से समय आगे है या पीछे है यह तय होता हैं। पृथ्वी २४ घण्टे में ३६०० देशान्तर घूम जाती है। इसलिए पृथ्वी की धूर्णन की गति १५० देशान्तर प्रति घंटा या ४ मिनट में १ देशान्तर है। जब ग्रीनविच पर दोपहर के १२ बजते हैं, उस समय ग्रीनविच के पूर्व में १५० देशान्तर पर १५ × ४ त्र ६० मिनट यानी १ घंटा समय आगे का होता है। किंतु ग्रीनविच के पश्चिम में १५० देशान्तर पर समय ग्रीनविच समय से एक घंटा पीछे होता है। आगे का समय (+) चिह्न मे दर्शाया जाता हैं, और पीछे का समय (–) चिह्न में दर्शाया जाता हैं।

भारत का समय जीएमटी से ५:३० आगे है अर्थात +५:३० हैं। जीएमटी पर यदि समय ००:०० है, तो भारत में प्रात: काल ५:३० होता है। जैसे जीएमटी से पूर्व की ओर समय अधीक होते जाता है और जीएमटी से पश्चिम की ओर समय घटते जाता है। प्रत्येक देशांतर रेखा पर एक दूसरे देशांतर रेखा से ४ मनट्स समय का अंतर होता है। २४ घंटों में ३६० देशांतर रेखाएँ पास होता हैं। ३६०÷ २४=१५ यानि १ घंटे में १५ देशांतर रेखाएँ निकल जाते हैं। ६०÷१५=४ इस तरह हर एक देशान्तर रेखा के बीच चार मिनट का समय का अन्तर होता है।

भारतीय मानक समय

भारत लगभग ७० अंश देशांतर से ९५ अंश देशांतर तक पश्चिम से पूर्व तक फैला हुआ है। भारतीय समय निर्धारण हेतु ८२ अंश ३० कला का देशांतर मानक मान लिया गया है। इस मानक से समस्त भारत की घड़ियां समय दर्शाती हैं, जिसे हम भारतीय मानक समय कहते हैं। विश्व के समस्त देशों के समय उन देशों के मानक पर निर्भर करते हैं।

उदाहरण के लिए इंग्लेंड का मानक ० (शून्य) अंश देशांतर है। भारत के मानक से यह ८२ अंश ३० कला कम है। प्रत्येक अंश पर समय के ४ मिनट का अंतर पड़ता है। अतः ८२ अंश ३० कला का गुणा ४ मिनट से किया तो आया = ३३० मिनट = ५ घंटे ३० मिनट। अतः इंग्लैण्ड

का समय भारत के समय से ५ घंटे ३० मिनट कम है, क्योंकि इंग्लैण्ड का मानक भारत से कम है। ज्योतिष में प्रश्न कुंडली या जन्म कुंडली बनाने में जन्म स्थान के स्थानीय समय का ही प्रयोग होता है।

स्थानीय समय निरूपण

स्थानीय समय (LMT) का अर्थ किसी विशेष स्थान के माध्यम से मध्याह्न रेखा पर आधारित समय है। किसी क्षेत्र विशेष के देशांतर रेखा के आधार पर, ग्रीनविच औसत समय, के अनुसार निकाला गया समय क्षेत्रीय मानक समय कहलाता है। पृथ्वी ३६० डिग्री देशांतरों में बंटी हुई है और सूर्य हर घंटे १५ डिग्री घुमने के करण देशांतर का हर डिग्री चार मिनट के बराबर होता है।

भारत में मानक समय ८२ अंश ३० मिनट को माना गया है। भारतीय मानक समय पर आधारित घड़ियाँ का जो समय होती है वो स्टैण्डर्ड समय होती है, इस कारण किसी क्षेत्र विशेष स्थानीय समय निकलने के लिए उस समय की शुद्धि की आवश्यकता होती है। जैसे:–

❖ **जबलपुर का उदाहरण:**

- जबलपुर का देशांतर ८०° ०' (८० डिग्री ० मिनट) है।
- ग्रीनविच का देशांतर ०° है।
- भारत का मानक समय (IST) ग्रीनविच से ५ घंटे ३० मिनट आगे है, क्योंकि भारत का मानक समय ८२.५° देशांतर के आधार पर निर्धारित किया गया है।
- जबलपुर का देशांतर ८०° है और यह ८२° ३०' से २° ३०' पीछे है।
- प्रत्येक डिग्री देशांतर में ४ मिनट का समय अंतर होता है, तो २° ३०' × ४ मिनट = १० मिनट का अंतर आता है।
- इसका मतलब यह है कि जब मानक समय (१२ बजे) हो, तो जबलपुर का समय १२ बजकर १० मिनट होगा।

❖ **काशी का उदाहरण:**

- काशी का देशांतर ८३° ०' (८३ डिग्री ० मिनट) है।
- काशी का देशांतर ८२° ३०' से अधिक है, यानी काशी, जबलपुर से थोड़ा आगे है।
- ८३° × ४ मिनट = ५ घंटे ३२ मिनट।
- यहाँ जबलपुर से काशी का देशांतर १° ३०' अधिक है, तो १° ३०' × ४ मिनट = ६ मिनट का अंतर बढ़ जाएगा।

- इसका मतलब यह है कि जब मानक समय (१२ बजे) हो, तो काशी का स्थानीय समय १२ बजकर २ मिनट होगा।

❖ **दिल्ली का उदाहरण:**

- दिल्ली का देशांतर ७७° १३' पूर्व है।
- ग्रीनविच के देशांतर (०°) से भारतीय मानक समय (IST) ८२° ३०' पूर्व (५ घंटे ३० मिनट) पर आधारित है।
- अब, दिल्ली का देशांतर ८२° ३०' से लगभग ५° १७' (८२° ३०' - ७७° १३') पीछे है।
- जैसा की प्रत्येक डिग्री के लिए ४ मिनट का अंतर होता है, तो: ५° १७' × ४ मिनट = २१ मिनट ८ सेकंड का अंतर होगा।

✓ **दिल्ली का स्थानीय समय:** यदि भारतीय मानक समय (IST) के अनुसार घड़ी में १२ बजे, तो दिल्ली का समय इससे २१ मिनट ८ सेकंड पहले होगा। यानी दिल्ली में १२ बजकर लगभग २० मिनट के आसपास होगा।

मुहूर्त व काल गणना

हिन्दू समय गणना में समय की अलग अलग माप इस प्रकार हैं। इनमे मुहूर्त भी एक प्रकार के समय मापन इकाई है। एक सूर्यादय से दूसरे सूर्योदय तक का समय दिवस है, एक दिवस में एक दिन और एक रात होते हैं। दिनमान और रात्रिमान के १५ भाग के एक भाग को मुहूर्त कंहा जाता है, एक दिन रात में कुल ३० मुहूर्त होते हैं।

एक मुहूर्त लगबग ४८ मिनट (२ घटी) का होता है एवं एक मुहूर्त में ३७७३ उच्छ्वास होते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, चन्द्रमास, सूर्यमास, ग्रहण, अयन, ग्रहों के उदय–अस्त, दैनिक लग्नादि का विचार कर जो श्रेष्ठ समय निकाला जाता है वह शुभ मुहूर्त कहा जाता है। शुभ मुहूर्त में किये गये कार्यों में उत्साह, लाभ एवं सफलता मिलती है। सदोष मुहूर्त में किये गये कार्य में विघ्नबाधा, असफलता, कष्ट आदि प्राप्त होते हैं।

ग्रह और नक्षत्रों की गति एवं स्थिति के अनुसार शुभ–अशुभ समय की गणना की जाती है। ग्रह, नक्षत्र आदि के परिभ्रमण, परिवर्तन एवं संयोग बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्त्व को प्रभावित करते हैं अत: शुभ ग्रह, शुभ नक्षत्र एवं शुभ दिन आदि का निर्णय करके शुभ मुहूर्त का निर्धारण करके कार्य करना चाहिए।

- **दिवा मुहूर्तों के नाम इस प्रकार हैं:-** १) रुद्र, २) आहि (सर्प), ३) मित्र, ४) पितृ, ५) वसु, ६) वाराह, ७) विश्वेदेवा, ८) विधि, ९) सतमुखी, १०) पुरुहूत, ११) वाहिनी, १२) नक्तनकरा, १३) वरुण, १४) अर्यमा, १५) भग ये पन्द्रह मुहूर्त दिन में होते हैं।
- **रात्रि मुहूर्तों के नाम इस प्रकार हैं** १) गिरीश (शिव), २) अजपाद, ३) अहिरध्र, ४) पूषा ५) अश्विनीकुमार, ६) यम, ७) अग्नि, ८) व्रह्मा, ९) चन्द्र, १०) अदिति, ११) गुरु (वृहस्पति), १२) विष्णु, १३) युमिगद्युति, १४) ब्रह्म और १५) समुद्रम ये पन्द्रह मुहूर्त रात्रि में माने गये हैं।

मुहूर्तों का शुभाशुभ चार्ट

क्रमांक	समय	मुहूर्त	गुण
१	०६:०० – ०६:४८	रुद्र	अशुभ
२	०६:४८ – ०७:३६	आहि	अशुभ
३	०७:३६ – ०८:२४	मित्र	शुभ
४	०८:२४ – ०९:१२	पितृ	अशुभ
५	०९:१२ – १०:००	वसु	मंगलवार अशुभ
६	१०:०० – १०:४८	वाराह	गुरुवार अशुभ
७	१०:४८ – ११:३६	विश्वेदेवा	शुभ
८	११:३६ – १२:२४	विधि	सोम, बुध व् शुक्र अशुभ
९	१२:२४ – १३:१२	सतमुखी	सोम व् शुक्र वार अशुभ
१०	१३:१२ – १४:००	पुरुहूत	अशुभ
११	१४:०० – १४:४८	वाहिनी	अशुभ
१२	१४:४८ – १५:३६	नक्तनकरा	अशुभ
१३	१५:३६ – १६:२४	वरुण	शुभ
१४	१६:२४ – १७:१२	अर्यमा	रविवार अशुभ
१५	१७:१२ – १८:००	भग	अशुभ
१६	१८:०० – १८:४८	गिरीश	अशुभ
१७	१८:४८ – १९:३६	अजपाद	अशुभ
१८	१९:३६ – २०:२४	अहिरबुध्न्य	शुभ

१९	२०:२४ – २१:१२	पुष्य	शुभ
२०	२१:१२ – २२:००	अश्विनी	शुभ
२१	२२:०० – २२:४८	यम	अशुभ
२२	२२:४८ – २३:३६	अग्नि	शुभ
२३	२३:३६ – २४:२४	ब्रह्मा	शुभ
२४	२४:२४ – ०१:१२	चन्द्र	शुभ
२५	०१:१२ – ०२:००	अदिति	शुभ
२६	०२:०० – ०२:४८	जीव/अमृत	अति शुभ
२७	०२:४८ – ०३:३६	विष्णु	शुभ
२८	०३:३६ – ०४:२४	युमिगद्युति	शुभ
२९	०४:२४ – ०५:१२	ब्रह्म	अति शुभ
३०	०५:१२ – ०६:००	समुद्रम्	शुभ

- इन्ह मुहूर्तो में अमृत/जीव मुहूर्त और ब्रह्म मुहूर्त बहुत श्रेष्ठ होते हैं, ब्रह्म मुहूर्त सूर्योदय से पच्चीस नाड़ियां पूर्व, यानि लगभग दो घंटे पूर्व होता है। यह समय योग साधना और ध्यान लगाने के लिये सर्वोत्तम कहा गया है।

  - ✓ १ दिवस = ६० घटी (६० घटि २४ घंटे के बराबर है या १ घटी = २४ मिनट, घटि को देशज भाषा में घडी भी कहा जाता है)।
  - ✓ १ घटी = ६० पल (६० पल २४ मिनट के बराबर है या १ पल = २४ सेकेण्ड)।
  - ✓ १ पल = ६० विपल (६० विपल २४ सेकेण्ड के बराबर है, १ विपल = ०.४ सेकेण्ड)।
  - ✓ १ विपल = ६० प्रतिविपल इसके अतिरिक्त १ पल = ६ प्राण (१ प्राण = ४ सेकेण्ड)।

इस प्रकार एक दिवस में ३६०० पल होते हैं। एक दिवस में जब पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, तो उसके कारण सूर्य विपरीत दिशा में घूमता प्रतीत होता है। ३६०० पलों में सूर्य एक चक्कर पूरा करता है, इस प्रकार ३६०० पलों में ३६० अंश। १० पल में सूर्य का जितना कोण बदलता है उसे १ अंश कहते है।

कालगणना में क्रमशः प्रहर, दिन–रात, पक्ष, अयन, संवत्सर, दिव्यवर्ष, मन्वन्तर, युग, कल्प और ब्रह्मा की गणना की जाती है। चक्रीय अवधारणा के अतर्गत ही हिन्दुओं ने काल

को कल्प, मन्वंतर, युग (सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग) आदि। इस काल का सूक्ष्मतम अंश परमाणु है तथा महत्तम अंश ब्राह्म आयु है।

कालगणनाए में क्रमशः तालिकाए

- २ परमाणु– १ अणु – १५ लघु – १ नाड़िका
- ३ अणु – १ त्रसरेणु – २ नाड़िका – १ मुहूत्र्त
- ३ त्रसरेणु– १ त्रुटि – ३० मुहूत्र्त – १ दिनरात
- १०० त्रुटि– १ वेध – ७ दिन रात – १ सप्ताह
- ३ वेध – १ लव – २ सप्ताह – १ पक्ष
- ३ लव– १ निमेष – २ पक्ष – १ मास
- ३ निमेष– १ क्षण – २ मास – १ ऋतु
- ५ क्षण– १ काष्ठा – ३ ऋतु – १ अयन
- १५ काष्ठा – १ लघु – २ अयन – १ वर्ष
- १० पलक झपकने का समय = १ काष्ठा
- ३५ काष्ठा= १ कला
- २० कला= १ मुहूर्त
- १० मुहूर्त= १ दिवस
- ३० दिवस= १ मास
- ६ मास= १ अयन
- २ अयन= १ वर्ष, = १ दिव्य दिवस

नाक्षत्रीय मापन

- एक परमाणु मानवीय चक्षु के पलक झपकने का समय = लगभग ४ सेकेण्ड।
- एक विघटि = ६ परमाणु = २४ सैकिण्ड।
- एक घटि या घड़ी = ६० विघटि = २४ मिनट।
- एक मुहूर्त = २ घड़ियां = ४८ मिनट।

- एक नक्षत्र अहोरात्रम या नाक्षत्रीय दिवस = ३० मुहूर्त (दिवस का आरम्भ सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक, न कि अर्धरात्रि से)।

६० प्रत्यानुकला – १ अनुकला	६० कला – १ अंश
६० अनुकला – १ विकला	३० अंश – १ राशि
६० विकला – १ कला	३६० अंश – राशि चक्र (१२ राशि)

१ दंड = २४ मिनट, १ अनुक्षेत्र = २.५ अनुपल, १ डिग्री = ७० मील, १ योजन = ८ मील, १ क्रोश = २ मील, ४ क्रोश = १ योजन, ३५ क्रोश = १ डिग्री।

लिपियर निर्णय

किसी भी इंग्रेजी वर्ष संख्या को ४ अंक से भाग करने पर अवशिष्ट अंक ० होने से वो वर्ष लिप इयार अर्थात फेब्रयारी महीना २९ दिन का है यह समझना चाहिए। परन्तु १७००, १८००, १९००, २१०० वर्ष में फेब्रयारी महीना २८ दिन के एवं १६००, २०००, २४०० वर्ष में फेब्रयारी महीना २९ दिन का है।

भचक्र (सौरमंडल या खगोलीय वृत्त)

सूर्य पथ वृत्ताकार ३६० अंश दीर्घ तथा १५ अंश चौड़ा होता है। सौरमंडल के इस खगोलीय वृत्त को ही भचक्र कहते हैं। यह भचक्र को १२ बराबर भागों में बंटकर राशि चक्र का निमार्ण किया गया है। इनमे प्रत्येक भाग अर्थात राशि (३६०/१२) =३० अंश का होता है। इनके नाम क्रमशः मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ एवं मीन हैं। पुनः यह भचक्र २७ बराबर भागों में बंटा गया है, इन्ह प्रत्येक भाग को नक्षत्र कहा जाता हैं।

प्रत्येक नक्षत्र (३६०/२८७= १३.२०) १३ अंश २० कला का होता है। इनके नाम क्रमशः अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा, आद्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्र, उत्तराभाद्र और रेवती हैं।

यह पुरे भचक्र के ऊपर नियंत्रण या शासन सूर्यादि नव ग्रहों की होती है। एवं मानव जीवन में प्रकृति में इन्ह नव ग्रह, राशि, नक्षत्रो का क्या प्रभाव पड़ रहा है या पड़ेगा इसका फलादेश का नाम ही फलित ज्योतिष है। और यह काम जो विद्वान करते है वो ज्यातिषी या

दैवज्ञ के रूप में जनमानस में परिचित होते है। एवं यह दिव्य ज्ञान जिस ग्रन्थ या शास्त्रों से हमे सिखने को मिलता है उसको ज्योतिष शास्त्र कहा जाता है।

हालाँकि प्राक वैदिक ज्योतिष में राशि चक्र का उपयोग नही किया जाता था, पूर्व क्षितिज में लगनेवाले नक्षत्रों को लग्न नक्षत्र मानकर २७ नक्षत्रों के नौ भाग करके तीन–तीन नक्षत्रों का एक–एक भाग बनाकर ज्योतिष फलादेश किया जाता था। इनमें प्रथम "जन्म नक्षत्र", दसवाँ "कर्म नक्षत्र" तथा उन्नीसवाँ "आधान नक्षत्र" माना गया है। शेष को क्रम से संपत्, विपत्, क्षेम्य, प्रत्वर, साधक, नैधन, मैत्र और परम मैत्र माना गया है; जैसे:–

✓ १ से ९ – जन्म नक्षत्र	✓ २३ – प्रत्वर
✓ १० से १८ – कर्म नक्षत्र	✓ २४ – साधक
✓ १९ – आधान नक्षत्र	✓ २५ – नैधन (मृत्यु)
✓ २० – संपत्कर	✓ २६ – मैत्र
✓ २१ – विपत्कर	✓ २७ – परममैत्र
✓ २२ – क्षेम्य	

इनमें जन्म, संपत् और नैधन अर्थात् १, २ और ७ द्वादश भाववाली जन्मकुंडली के १, २ और ८ स्थानों से मिलते हैं। नक्षत्रो का यह नौ भाग वर्तमान कुंडली के बारह स्थानों के किसी न किसी स्थान में अंतर्भुक्त हो जाते हैं; जो मेष आदि संज्ञाओं के प्रचार में आने के पहले ही से हमारी फलादेश पद्धति में विद्यमान थे। बाद के मनीषियों ने गणना की सुविधार्थ एक काल्पनिक राशिचक्र की निर्माण किए है, जिससे ज्योतिष गणना बहुत ही आसान और सरल हुआ है।

====✂====

द्वितीय अध्याय

पंचांग तत्व

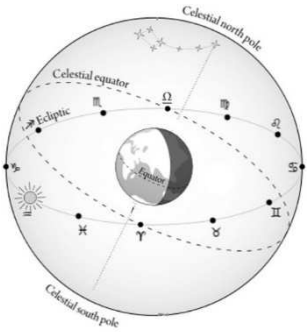

पंचांग भारतीय फलित ज्योतिष शास्त्रों का मूल आधार है, जो समय की गणना और भविष्यवाणी के लिए उपयोग किया जाता है। पंचांग के शाब्दिक अर्थ है, पंच + अंग = पांच अंग यानि पंचांग। इसमें पांच प्रमुख अंग शामिल होते हैं: तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण। प्रत्येक अंग का अपना विशेष महत्व होता है, ये पाँच तत्व मिलकर न केवल दैनिक जीवन में समय का प्रबंधन करते हैं, बल्कि विभिन्न ज्योतिषीय घटनाओं और शुभ–अशुभ समय का निर्धारण भी करते हैं।

पंचांग के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर ढंग से प्रबंधित कर सकता है और सही समय पर सही निर्णय ले सकता है। पंचांग का अध्ययन और उपयोग हमें हमारी परंपराओं और संस्कृति से जोड़े रखता है और हमारे जीवन को संतुलित और समृद्ध बनाने में मदद करता है।

पंचांग के आधार पर ही दैनिक चौघड़िया, राहु काल, होरा काल, चंद्र बल, तारा, ग्रहण जैसी महत्वपूर्ण गणनाओं का अध्ययन और अनेकों शुभ कार्यों को सम्पन्न किया जाता है। जैसे: मुण्डन मुहूर्त, वाहन ख़रीद मुहूर्त, नींव रखने का मुहूर्त, व्यापार आरम्भ करने का मुहूर्त, विवाह का मुहूर्त, ग्रह प्रवेश हेतु उत्तम समय, यात्रा मुहूर्त तथा ऐसे ही अन्य महत्वपूर्ण तथा शुभ समय को भी जाना जा सकता हैं।

इसके अतिरिक्त अग्निवास, घात चक्र, यामार्ध, गुलिक काल, सोलह संस्कार के लिए शुभ समय तथा कुछ विशिष्ट योगों जैसे कि सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, पुष्कर योग, हुताशन योग, गुरु पुष्य योग, रवि पुष्य योग तथा नल्ला नेरम – गौरी पंचांगम आदि पर भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण अथवा शुक्र और बृहस्पति ग्रह के अस्त होने का समय भी पंचांग के माध्यम से जाना जाता हैं।

पंचांग हिन्दू समाज द्वारा माने जाने वाला एक शास्त्रीय कैलेंडर विशेष है। इसकी गणना के तीन धाराएँ हैं– पहली चंद्र आधारित, दूसरी नक्षत्र आधारित और तीसरी सूर्य आधारित कैलेंडर पद्धति। इसके ही भिन्न–भिन्न रूप मे यह लगभग पूरे विश्व मे माना जाता है। हिंदू पंचाग की कलैंडर में एक साल में १२ महीने होते हैं। प्रत्येक महीने में १५ दिन के दो पक्ष होते हैं: शुक्ल और कृष्ण। इस कैलेंडर पद्धति में प्रत्येक साल में दो अयन भी होते हैं। इन दो अयनों की राशियों

में २७ नक्षत्र भ्रमण करते रहते हैं। १२ मास का एक वर्ष और ७ दिन का एक सप्ताह होते है, जो विक्रम सावंत से ही प्रचलित है।

महीने का हिसाब सूर्य व चंद्रमा की गति पर रखा जाता है, जो १२ राशियाँ बारह सौर मास के रूप में विवेचित होते हैं। जिस दिन सूर्य जिस राशि मे प्रवेश करता है उसी दिन की संक्रांति होती है। पूर्णिमा के दिन चंद्रमा जिस नक्षत्र मे होता है उसी आधार पर महीनों का नामकरण हुआ है। हिन्दू पंचांग कैलेंडर पद्धति में चंद्र वर्ष, सौर वर्ष से ११ दिन ३ घड़ी ४८ पल छोटा है।

इसीलिए हर ३ वर्ष मे इसमे एक महीना जोड़ दिया जाता है, जिसे अधिक मास, मल मास या पुरुषोत्तम महीना के रूप में माना जाता हैं। महीने को चंद्रमा की कलाओं के घटने और बढ़ने के आधार पर शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष विभाजित किया गया हैं।

एक दिन को तिथि कहा जाता है जो पंचांग के आधार पर उन्नीस घंटे से लेकर चौबीस घंटे तक होती है। दिन को २४ घंटों के साथ–साथ ८ प्रहरों में भी बांटा गया है। एक प्रहर करीब ३ घंटे का होता है। एक घंटे में लगभग दो घड़ी होती हैं, एक पल लगभग आधा मिनट के बराबर होता है और एक पल में चौबीस क्षण होते हैं। प्रहर के अनुसार देखा जाए तो चार प्रहर का एक दिन और चार प्रहर की एक रात होती है।

महीनों के परिचय

हिन्दू कैलेंडर में १२ महीना होते है, जैसा पहले बताया गया है। एवं सौरमास, चंद्रमास एवं नक्षत्र मास होता है। यह तीनों ही मास बिधि हिन्दू कैलेंडर के महत्वपूर्ण अंग हैं और इनका उपयोग विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक और ज्योतिषीय कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है। ये तीनों मास मिलकर हमारे जीवन और समय की संरचना को निर्धारित करते हैं, जिससे हमें समय के साथ सामंजस्य बिठाने में मदद मिलती है।

- **सौरमास:** सौरमास सूर्य की गति पर आधारित होते हैं। एक सौरमास सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने के समय को दर्शाता है। सौरमास का उपयोग विशेष रूप से दक्षिण भारतीय कैलेंडर में किया जाता है। सौरमास का आरम्भ सूर्य की संक्रांति से होता है। सूर्य की एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति का समय को सौरमास कहलाता है। सौरमास गणना बिधि में १२ राशियों को बारह सौरमास माना जाता है। जिस दिन सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उसी दिन की संक्रांति होती है। इस राशि प्रवेश से ही सौरमास का नया महीना शुरू माना जाता है। सौरमास का उपयोग कृषि कार्यों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मौसम और फसल चक्र को दर्शाता है।

- ✓ **सौरमास के नाम:** मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन। यह १२ महीना मिलकर १ सौर वर्ष होती है, एक सौर वर्ष ३६५ दिन का होता है। सौर–वर्ष के दो भाग होते हैं; उत्तरायण और दक्षिणायन। दोनों अयन में कुल छह महीना करके होते है। मकर संक्रांति के दिन सूर्य उत्तरायण होता है, जबकि सूर्य धनु से मकर राशि में प्रवेश करता है। सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है, तब सूर्य दक्षिणायन होता है। (वर्षमान विशेष: सूर्यसिद्धांत के अनुसार वर्षमान ३६५.२५८७५६२ दिन के होते है एवं निरयन वर्षमान ३६५.२५६३६२८ दिन का माना जाता है)।
  - सूर्य लगभग १४ जनवरी से १३ फरवरी तक दसवीं राशि मकर में रहता है।
  - १४ फरवरी से १३ मार्च तक ग्यारहवीं राशि कुंभ में रहता है।
  - १४ मार्च से १३ अप्रैल तक बारहवीं राशि मीन में रहता है।
  - १४ अप्रैल से १५ मई तक पहली राशि मेष में रहता है।
  - १५ मई से १५ जून तक दूसरी राशि वृष में रहता है।
  - १५ जून से १५ जुलाई तक तीसरी राशि मिथुन में रहता है।
  - १५ जुलाई से १६ अगस्त तक चौथी राशि कर्क में रहता है।
  - १६ अगस्त से १६ सितम्बर तक पांचवीं राशि सिंह में रहता है।
  - १६ सितम्बर से १६ अक्तूबर तक छठी राशि कन्या में रहता है।
  - १६ अक्तूबर से १६ नबम्बर तक सातवीं राशि तुला में रहता है।
  - १६ नबंवर से १५ दिसंबर तक आठवीं राशि वृश्चिक में रहता है।
  - १५ दिसंबर से १४ जनवरी तक नौवीं राशि धनु में रहता है।

- ❖ **चंद्रमास:** चंद्रमास चंद्रमा की गति पर आधारित होते हैं। चंद्रमा की कला की घट–बढ़ वाले दो पक्षों (कृष्ण और शुक्ल) का जो एक मास होता है वही चंद्रमास कहलाता है। लगभग २९.५ दिन का एक चंद्रमास होता है। शुक्ल प्रतिपदा से प्रारंभ होकर अमावस्या को पूर्ण होने वाला 'अमांत' मास मुख्य चंद्रमास है। कृष्ण प्रतिपदा से 'पूर्णिमात' पूरा होने वाला गौण चंद्रमास है। हिन्दू धर्म के अधिकतर व्रत, उपवास और त्योहार चंद्रमास के आधार पर मनाए जाते हैं; जैसे: दीवाली, होली, नवरात्रि आदि।

- ✓ सौरवर्ष की तुलना में चंद्रवर्ष ११ दिन ३ घटी ४८ पल छोटा होता है, इसीलिए हर ३ वर्ष में इसमें १ महीना अतिरिक्त जोड़ दिया जाता है। पूर्णिमा के दिन, चंद्रमा जिस नक्षत्र में होता है उसी आधार पर महीनों का नामकरण हुआ है। चित्रा नक्षत्र के नाम पर चैत्र मास, विशाखा नक्षत्र के नाम पर वैशाख मास, ज्येष्ठा नक्षत्र के नाम पर ज्येष्ठ मास, आषाढ़ा

नक्षत्र के नाम पर आषाढ़ मास, श्रवण नक्षत्र के नाम पर श्रावण मास, भाद्रपद नक्षत्र के नाम पर भाद्रपद मास, अश्विनी के नाम पर आश्विन मास, कृत्तिका के नाम पर कार्तिक मास, मृगशीर्ष के नाम पर मार्गशीर्ष, पुष्य के नाम पर पौष, मघा के नाम पर माघ तथा फाल्गुनी नक्षत्र के नाम पर फाल्गुन मास का नामकरण हुआ है। साधारणत: जिस तिथि में वर्ष शुरू होती है, उस तिथि के ११ तिथि में वर्ष की समाप्ति होती है।

❖ **नक्षत्रमास:** नक्षत्र मास चंद्रमा की स्थिति और नक्षत्रों पर आधारित होता है। इसमें चंद्रमा के एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र में प्रवेश करने के समय को गिना जाता है। चंद्रमा अश्विनी से लेकर रेवती तक के नक्षत्र में विचरण करता है वह काल नक्षत्रमास कहलाता है। यह लगभग २७ दिनों का होता है, इसीलिए २७ दिनों का एक नक्षत्रमास कहलाता है। जन्मकुंडली और ज्योतिषीय गणनाओं के लिए नक्षत्र मास का विशेष महत्व है।

✓ **पूर्णिमा के दिन चंद्रमा जिस नक्षत्र में रहता है, इसी के आधार पर ही महीनों के नाम होता है:**

चैत्र: चित्रा, स्वाति।	**आश्विन:** अश्विन, रेवती, भरणी।
वैशाख: विशाखा, अनुराधा।	**कार्तिक:** कृतिका, रोहणी।
ज्येष्ठ: ज्येष्ठा, मूल।	**मार्गशीर्ष:** मृगशिरा, उत्तरा।
आषाढ़: पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, शतभिषा।	**पौष:** पुनर्वसु, पुष्य।
श्रावण: श्रवण, धनिष्ठा।	**माघ:** मघा, अश्लेशा।
भाद्रपद: पूर्वभाद्र, उत्तरभाद्र।	**फाल्गुन:** पू.फा., उ.फा., हस्त।

ऋतुए

ऋतु परिवर्तन का कारण पृथ्वी द्वारा सूर्य के चारों ओर परिक्रमण और पृथ्वी का अक्षीय झुकाव है। पृथ्वी का घूर्णन अक्ष इसके परिक्रमा पथ से बनने वाले समतल पर लगभग ६६.५ अंश का कोण बनता है। जिसके कारण उत्तरी या दक्षिणी गोलार्धों में से कोई एक गोलार्द्ध सूर्य की ओर झुका होता है। यह झुकाव सूर्य के चारों ओर परिक्रमा के कारण वर्ष के अलग-अलग समय अलग-अलग होता है, जिससे दिन-रात की अवधियों में घट-बढ़ का एक वार्षिक चक्र निर्मित होता है। यही ऋतु परिवर्तन का मूल कारण बनता है।

❖ **ऋतु को ६ भागों में बांटा गया है;** जैसे:- ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर व वसंत। भारत में यह छह ऋतुएं होती हैं।

पंचांग के आधार

पंचांग के मूल आधार तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण होते है। ये पाँच तत्व मिलकर पंचांग की संरचना होता है, जो ज्योतिषी गणना तथा धार्मिक अनुष्ठानों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। पंचांग का सबसे महत्वपूर्ण उपयोग शुभ और अशुभ मुहूर्तों का निर्धारण करने में होता है। विवाह, गृह प्रवेश, नामकरण और अन्य शुभ कार्यों के लिए उपयुक्त समय का चयन पंचांग के माध्यम से किया जाता है। सही मुहूर्त का चयन व्यक्ति के जीवन में सफलता और समृद्धि लाने में सहायक होता है।

पंचांग के अनुसार ही व्रत, उपवास और त्योहारों की तिथियाँ निर्धारित होती हैं। ये तिथियाँ धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं का पालन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, और व्यक्ति को आध्यात्मिक शांति और संतुष्टि प्रदान करती है। किसी व्यक्ति के जन्म के समय पंचांग के अंगों की स्थिति के आधार पर उसकी जन्मकुंडली बनाई जाती है। यह कुंडली व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे स्वास्थ्य, करियर, विवाह और अन्य महत्वपूर्ण घटनाओं का अध्ययन करने में सहायता करती है।

१) तिथि

तिथि पंचांग का प्रथम अंग है, हर तिथि का अपना महत्व और प्रभाव होता है, जो हमारे दैनिक जीवन और कार्यों को प्रभावित करता है। तिथि चंद्रमा की स्थिति पर आधारित होती है और यह चन्द्र महीने के दिनों का सूचक होती है। एक तिथि पंचांग के आधार पर उन्नीस घंटे से लेकर चौबीस घंटे तक की होती है। एक चंद्र मास में कुल ३० तिथियाँ होती हैं, जो दो पक्षों में विभाजित हैं। १५ कृष्ण पक्ष की और १५ तिथि शुक्ल पक्ष तिथि होती है। तिथियाँ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गिनी जाती है और १५ तिथि को पूर्णिमा कहते हैं। इसके बाद कृष्ण पक्ष की तिथियाँ आरम्भ हो जाती है। वे भी प्रतिपदा से आरम्भ होकर अमावस्या तक गिनी जाती हैं।

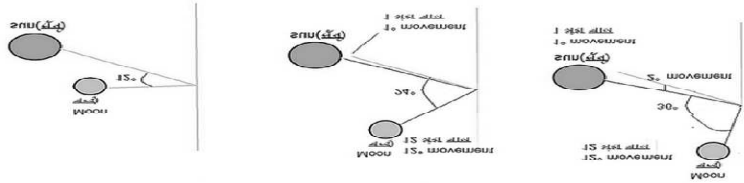

सूर्य की गति से चन्द्र की गति अधिक है। जब दोनों का अन्तर बढ़ने लगता है तो एक तिथि का आरम्भ होने लगता है। जब यह अन्तर बढ़ते–बढ़ते १२ अंश का होता है तो एक तिथि पूरी हो जाती है, अर्थात सूर्य और चन्द्र में जब १२ डिग्री का अन्तर पड़ता है तो एक तिथि होती है। अर्थात चन्द्रमा की एक कला को तिथि कहते हैं। जब अन्तर १८० अंशों का होता है उस समय

को पूर्णिमा कहते हैं और जब यह अन्तर ० या ३६० अंशों का होता है उस समय को अमावस कहते हैं।

❖ तिथियों के नाम निम्नलिखित हैं:–

१.प्रतिपदा २.द्वितीया ३.तृतीया ४.चतुर्थी ५.पंचमी ६.षष्ठी ७.सप्तमी ८.अष्टमी ९.नवमी १०.दशमी ११.एकादशी १२.द्वादशी १३.त्रयोदशी, १४.चतुर्दशी और १५.पूर्णिमा यह शुक्ल पक्ष कहलाता है। कृष्ण पक्ष में यही १४ तिथि होती हैं, बस अन्तिम तिथि पूर्णिमा के स्थान पर अमावस्या नाम से जाना जाता है। जैसे: १.प्रतिपदा २.द्वितीया ३.तृतीया ४.चतुर्थी ५.पंचमी ६.षष्ठी ७.सप्तमी ८.अष्टमी ९.नवमी १०.दशमी ११.एकादशी १२.द्वादशी १३.त्रयोदशी, १४.चतुर्दशी और १५.अमावस्या यह कृष्णा पक्ष की तिथियाँ होती है।

▪ तिथियों के अन्य नाम:–

प्रतिपदा – वृद्धि, द्वितीया – सुमंगला, तृतीया – सबला, चतुर्थी – खला, पंचमी – श्रमती, षष्ठी – कीर्ति, सप्तमी – मित्रपदा, अष्ठमी – बलवती, नवमी – उग्रा, दशमी – धर्मिणी, एकादशी – नन्दा, द्वादशी – यशोवती, त्रयोदशी – जयकरा, चतुर्दशी – क्रूरा, पूर्णिमा – सौम्या एवं अमावस्या – दर्श।

पक्ष

चन्द्रमा की कलाओं के ज्यादा या कम होने के अनुसार ही चंद्रमास को पक्षों में बांटा गया है। पक्ष दो प्रकार के होते है: शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष। पूर्णिमा से अमावस्या तक बीच के दिनों को कृष्णपक्ष एवं अमावस्या से पूर्णिमा तक का समय शुक्लपक्ष होती है। कृष्णपक्ष अथवा शुक्लपक्ष में प्राय: १५ दिन होते हैं।

परंतु किसी पक्ष में किसी तिथि की क्षय हो जाने की स्थिति में १४ दिन अथवा तिथि–वृद्धि होने पर १६ दिन भी हो जाते हैं। कभी–कभी चन्द्र और सूर्य की स्पष्ट गणित प्रक्रिया के कारण किसी पक्ष में दो बार तिथि का क्षय हो जाने से १३ दिन का पक्ष भी वन जाता है। १३ दिवसीय पक्ष को 'विश्वघस्त्र पक्ष' का नाम देकर इसे विश्व शांति को भंग करने वाला माना जाता है।

क्यौकी तेरह दिवसीय विश्वघस्त्र पक्ष असाध्य रोगों का उत्पादक, उपद्रव पैदा करने वाला, हिंसा एवं रक्तपात बढ़ाने वाला, राष्टों के मध्य युद्ध की स्थिति बनाने वाला, प्राकृतिक प्रकोप, दुर्घटनावश जन–धन की भीषण हानि करने वाला, समाज में अशांति एवं अराजकता के वातावरण का सृजनकर्ता माना जाता है।

जन्म पक्ष फल

- **शुक्लपक्ष:** शुक्लपक्ष में जन्म लेने वाला व्यक्ति साधारणत: दीर्घायु, विनीत, चरित्रवान, सुशील, मृदुभाषी, सदा खुश रहने वाले एवं सुन्दर शारीर विशिष्ठ होते है।
- **कृष्णपक्ष:** कृष्णपक्ष में जन्म लेने वाले जातक प्रलापी, कलहप्रिय, कामुक, कुल हितकारी एवं चंचल स्वभाव विशिष्ठ होते है।

अमावस्या एवं पूर्णिमा निर्णय

सूर्य एवं चन्द्रमा जिस दिन एक बिन्दु पर आ जाते हैं उस तिथि को अमावस्या कहते हैं। उस दिन सूर्य और चन्द्रमा का गति का अन्तर शून्य अक्षांश होता है, अर्थात सूर्य और चंद्रमा की देशांतर रेखाएँ बराबर होती हैं।

अमावस्या तिथि में राशि, अंश और कला का साम्य होता है, इसलिए इस दिन को सूर्य और चन्द्र के संगम भी कहा जाता हैं। एवं सूर्य से बाहर निकल कर पूर्व दिशा की ओर चन्द्रमा जैसे–जैसे आगे बढता है वैसे–वैसे तिथि बढती रहती है।

सूर्य एवं चन्द्रमा जब परस्पर आमने–सामने अर्थात् ६ राशि या १८० अंश के अन्तर पर होते हैं, तब उस तिथि को पूर्णिमा या पूर्णमासी कंहा जाता हैं। जन्म कुंडली में सूर्य और चन्द्रमाँ एक राशिस्थ होने से अमावस्या तिथि में एवं परष्पर स्प्तमस्थ होने से पूर्णिमा तिथि में जातक का जन्म हुआ है ये समझनी चाहिए।

- ❖ **अमावस्या तिथि दो प्रकार की होती है:** सिनीवाली अमावस्या एवं कुहू अमावस्या। चतुर्दशी तिथि मिश्रित अमावस्या को सिनीवाली अमावस्या एवं प्रतिपदा तिथि मिश्रित अमावस्या को कुहू संज्ञक अमावस्या कहा जाता है।
- ✓ **कुछ मुख्य अमावस्या:** भौमवती अमावस्या, मौनी अमावस्या, शनि अमावस्या, हरियाली अमावस्या, दिवाली अमावस्या, सोमवती अमावस्या एवं सर्वपितृ अमावस्या आदि।
- ➢ **पूर्णिमा तिथि के भी दो प्रकार होते हैं:** अनुमति पूर्णिमा एवं राका पूर्णिमा। चतुर्दशी तिथि मिश्रित पूर्णिमा को अनुमति संज्ञक पूर्णिमा एवं प्रतिपदा तिथि मिश्रित पूर्णिमा को राका संज्ञक पूर्णिमा का संज्ञा दिया जाता है। कुछ मुख्य पूर्णिमा: कार्तिक पूर्णिमा, माघ पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा आदि।

तिथियों के प्रकार व विशेष योग

तिथियों को मुख्य रूप से पांच भागों में बांटा गया है, जैसे: १.नंदा २.भद्रा ३.जया ४.रिक्ता और ५.पूर्णा तिथि। पहली तिथि यानी प्रतिपदा होगी नंदा, दूसरी भद्रा, तीसरी जया, चोथी रिक्ता और पांचवी पूर्णा। इसके बाद पुनः छटी नंदा, सातवी भद्रा... इसी क्रम से तिथियों की श्रेणी विभाग किया जाता है। किसी भी तरह के फिल्म उद्योग, फैशन शो, भारी उद्योग की स्थापना करना, विलासिता एवं मनोरंजन से सम्बंधित कार्य, भवन निर्माण, व्यापार–व्यवसाय समन्धित कार्य प्रारंभ करने के लिए नन्दा तिथियां सर्वश्रेष्ठ माना जाता हैं। नंदा तिथि में जन्म लेने वाले जातक ईश्वर भक्त, पंडित, मानी एवं परिजनों के प्रिय होते है । स्वास्थ्य, शिक्षा–प्रतियोगिता में सफलता, व्यवसाय की शुरुआत उग्र कार्य करना, धान, अनाज लाना, गाय–भैंस, वाहन खरीदने जैसे काम करने के लिए भद्र तिथि आदर्श होते है।

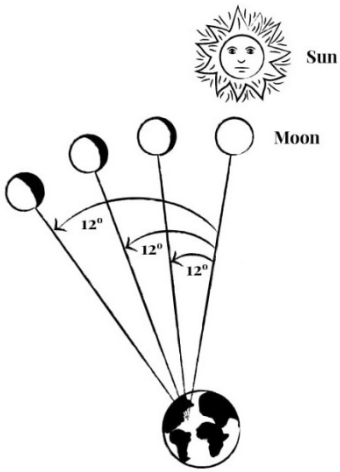

भद्रा तिथि खरीदी गई वस्तुओं की संख्या बढ़ती जाती है। इस तिथि में जन्म लेने पर जातक सरकारी मुलाजिम, धार्मिक चिन्ताओं में लिप्त, माननीय, मायावी संसार के मोह से भयग्रस्त एवं महा विज्ञ होता है। जया तिथि प्रशासनिक विभागों के साथ–साथ, न्यायिक विभाग, सैन्य, शक्ति संग्रह, कोर्ट–कचहरी के मामले निपटाना, शस्त्र खरीदना, वाहन खरीदना, किसी भी तरह की शिक्षा प्रतियोगिता में शामिल होना, विद्या प्रारंभ, परदेश गमन, संकल्प सिद्धि के लिए सर्वोत्तम मानी गयी है।

तिथियों के श्रेणीभेद

संज्ञा	तिथि	स्वामी
नन्दा तिथि	प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी	शुक्र
भद्रा तिथि	द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी	बुध
जया तिथि	तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी	मंगल
रिक्ता तिथि	चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी	शनि
पूर्णा तिथि	पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या	गुरु

जया तिथि में जन्म लेने वाले जातक महा विज्ञ, पुत्र तथा परिवार से युक्त, वीर, शांत एवं राजा अथवा सरकार द्वारा पूजित होता है। रिक्ता तिथि तंत्र–मंत्र सिद्धि के लिए, आपरेशन,

दुश्मनों के खात्मा और कर्ज से छुटकारा दिलाने के लिए सबसे उत्तम माना गया है। रिक्ता तिथि में जन्म लेने वाला जातक शत्रुओ का नाश करने वाला, गुरु निंदाकारी, धनहीन एवं प्रमाद युक्त होता है। एवं पूर्णा तिथि मंगनी, विवाह, भोज आदि मांगलिक कार्यों के लिए शुभ माना जाता है। पूर्णा तिथि में जन्म लेने वाले जातक धन से परिपूर्ण, वेद एवं शास्त्रों के विद्वान, सत्य वक्ता तथा शुद्ध मन वाले होते है।

- ✓ **सिद्धा तिथि विशेष:** शुक्रवार को नंदा तिथि (प्रतिपदा ,षष्टि ,एकादशी), बुधवार को भद्रा तिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी), मंगलवार को जया तिथि (तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी), शनिवार को रिक्ता तिथि (चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी) तथा गुरूवार को पूर्णा तिथि (पंचमी, दशमी, पूर्णिमा) हो तो सिद्ध योग होता है, जिसमें सभी कार्यों में सिद्धि मिलती है। इसी प्रकार नंदा तिथि रविवार या मंगलवार को, भद्रा तिथि सोमवार या शुक्रवार को, जया तिथि बुधवार को, रिक्ता तिथि वीरवार को तथा पूर्णा तिथि शनिवार को संयोग होने से बहुत कष्टकारी योग होता बनता है। इस योग में कार्य करने से ज्यादातर मामलों में असफलता ही प्राप्त होती है।

- ✓ **मास शून्य तिथि:** चैत्र कृष्ण अष्टमी, वैशाख कृष्ण नवमी, ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी, ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी, श्रावण कृष्ण द्वितीया–तृतीया, भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा–द्वितीया, आश्विन कृष्ण दशमी–एकादशी, कार्तिक कृष्ण पंचमी, कार्तिक शुक्ल चतुर्दशी, अगहन कृष्ण सप्तमी–अष्टमी, पौष कृष्ण चतुर्थी–पंचमी, माघ कृष्ण पंचमी, माघ शुक्ल तृतीया शून्य तिथि कही गई है। मास शून्य तिथियों में शुरू किए गए कार्य सफल नहीं होती है। इन तिथियों में शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।

- ✓ **ज्वालामुखी योग**: कुछ विशेष तिथियों और नक्षत्रों से मिलकर ज्वालामुखी योग बनता है। प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी, दशमी को अश्लेषा और एकादशी को मघा नक्षत्र हो तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग में भी कोई शुभ कार्य नहीं करना चाहिए। यह भयंकर योग होता है, इसलिय इस योग में कोई भी शुभ कार्य नहीं करनी चाहिए।

- ✓ **दग्ध व संवर्तादि योग:** सोमवार को एकादशी, मंगलवार को पंचमी, बुधवार को तृतीया, गुरूवार को षष्टी, शुक्रवार को अष्टमी तथा शनिवार को नवमी हो तो दग्ध योग होता है। एवं रविवार को सप्तमी, बुधवार को प्रतिपदा हो तो संवर्त नामक योग बनता है। दग्ध व् संवर्तादि योग शुभ कार्यों में बाधक होता है।

- ✓ **जन्मतिथि विशेष:** किसी जातक के किसी वर्ष में जन्ममास में जन्मनक्षत्र युक्त जन्म तिथि होने से वो वर्ष जातक को आरोग्य, सम्मान व् सुख की प्राप्ति होती है। जन्म तिथि शनि

या मंगल बार होकर जन्मनक्षत्र संयुक्त ना हो तो वो वर्ष जातक के लिए भीषण अशुभ रहता है।

- ✓ **अक्षया तिथि विशेष:** सोमबार को अमावस्या, रविबार को शुक्ला सप्तमी, मंगल बार को शुक्ला चतुर्थी, गुरुबार को शुक्लाष्ठमी होने से अक्षय तिथिया नामक संयोग बनता है। उक्त योग में कोई भी पाप या पुण्य कर्म करने से ६० सहस्र जन्मों में भी इसका फल कभी ह्रास नहीं होता है।

- ✓ **पुण्यतरा योग:** शनि या मंगल बार को कृष्णाष्ठमी अथवा कृष्णा चतुर्दशी होने से पुण्यतरा योग बनता है।

- ✓ **मन्वंतरा तिथि:** आश्विन मास के शुक्ला नवमी, कार्त्तिक के शुक्ला द्वादशी, पौष व् भाद्र महीना के शुक्ला तृतीया, गौण फाल्गुन अमावस्या, पौष के शुक्ला एकादशी, अषाढ़ के शुक्ला दशमी, माघ के शुक्ला सप्तमी, गौण श्रावण की कृष्णाष्ठमी, अषाढ़, कार्त्तिक, फाल्गुन, चैत्र व जेष्ठ महीने की पूर्णिमा तिथि मन्वंतरा कहलाता है।

- ✓ **पर्व तिथि:** चतुर्दशी, अष्ठमी, अमावस्या, पूर्णिमा व् सूर्य संक्रांति को पर्व तिथि कहा जाता है।

तिथियों के स्वामी

- प्रतिपदा – अग्नि
- द्वित्तीया – ब्रह्मा
- तृतीया – गौरी
- चतुर्थी – गणेश
- पंचमी – नाग
- षष्ठी – कार्तिकेय
- सप्तमी – सूर्य
- अष्टमी – शिव
- नवमी – दुर्गा
- दशमी – यमराज
- एकादशी – विश्वदेव
- द्वादशी – भगवान विष्णु
- त्रयोदशी – कामदेव
- चतुर्दशी – शिव
- अमावस्या – पितर
- पूर्णिमा – चन्द्र

- ✓ **तिथि गंडांत:** गंडांत का अर्थ सन्धि काल से होता है। पूर्णा तिथियो के पंचमी, दशमी, अमावस्या एवं पूर्णिमा की अंतिम एक घटी अर्थात २४ मिनट तथा नंदा तिथियो दोनो पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठमी, एकादशी तिथियो की प्रारंभिक एक घटी अर्थात २४ मिनट का समय तिथि गंडांत कहा जाता है। शुभ कार्य का प्रारंभ अथवा शुभ मुहूर्त निर्धारण मे तिथि गंडांत के समय त्याग करना उचित रहता है।

- ✓ **त्र्यहस्पर्श व् अवमत्र्यहस्पर्श:** एक दिन में तिन तिथि के योग होने से त्र्यहस्पर्श योग कहा जाता है। इस दिन किसी भी शुभकर्म नही करनी चाहिए। कुछ विद्य्वान एक तिथि के तिन दिन तक रहने से त्र्यहस्पर्श मानते है हालाँकि शास्त्रों में यह प्रमाण नही मिलता है। एवं एक दिन में द्वि तिथि की अंत होता है तो इसे अवमत्र्यहस्पर्श कहते है। त्र्यहस्पर्श व् अवमत्र्यहस्पर्श में कोई भी शुभ कर्म नहीं करनी चाहिए।

- ✓ **तिथि वृद्धि और तिथि क्षय:** चंद्रमा की गति के कारण ही तिथि वृद्धि और तिथि क्षय होती है। क्यौकी चन्द्रमा की गति कम और ज्यादा होती रहती है। चन्द्रमा कभी तेज चलते हुए १२ अंश की दूरी को कम समय में पार कर लेता है और कभी कभी धीमा चलते हुए अधिक समय लेकर पूरा करता है। अगर किसी तिथि की अवधि २४ घंटे से कम है और वह सूर्यादय के बाद शुरू हुई और अगले दिन सूर्यादय से पहले ही खत्म हो जाए तो इसे 'तिथि क्षय' कहते हैं। और यदि कोई तिथि सूर्योदय से पहले शुरू हो और अगले सूर्योदय तक बनी रहे तो इस स्थिति को 'तिथि वृद्धि' कहते हैं।

- ✓ **काली तिथियां:** शुक्ल पक्ष की पहली और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं, चौदहवीं और पन्द्रहवीं तिथि को काली तिथि के नाम से जाना जाता है। इन तिथियों को अच्छा नहीं माना जाता है, क्योंकि इन तिथियों के दौरान चन्द्रमा सूक्ष्म तथा कमझोर रहता है।

- ✓ **अन्धादि तिथियां:** शुक्ल पक्ष की ग्यारहवीं, बारहवीं, तेरहवीं, चौदहवीं, पन्द्रवीं तथा कृष्ण पक्ष की पहली, दुसरी, तीसरी और चौथी तिथि को अन्धी तिथि कहा जाता है। शुक्ल पक्ष की आठवीं, नौवी, दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं और तेरहवीं तिथि तथा कृष्ण पक्ष की पहली, आठवीं, नौवीं, दसवीं तिथि को अर्धदृष्टी तिथि कंहा जाता है। शुक्ल पक्ष की चौदहवीं और पन्द्रवीं तिथि तथा कृष्णपक्ष की तथा दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवी, छठवीं और सातवीं तिथि को पूर्णदृष्टी तिथि कहा जाता है।

- ✓ **युगादि और मनवादी तिथियां:** कार्तिक महिने में शुक्लपक्ष की नौवीं तिथि से सत्ययुग की, बैशाख महिने में शुक्ल पक्ष की तीसरी तिथि से त्रेतायुग की, भद्रपद महिने की कृष्ण पक्ष की तेरहवीं तिथि से द्वापर युग की एवं माघ मास की अमावस्या को कलयुग की शुरुआत हुई है; इसलिए इन्ह तिथियों को युगादि तिथियाँ कंहा जाता है। स्वायाम्भूवा मनवन्तर की शुरुआत चैत्र मास में शुक्लपक्ष की तीसरी तिथि को तथा ब्रह्म स्वर्णी मनवन्तर की शुरुआत माघ मास की शुक्ल पक्ष की सातवीं तिथि को होने के कारण इन्हें मनोवादि तिथि कहते है। शास्त्रानुसार युगादि और मनवादी तिथियों में दान–पुण्य, पवित्र नदी में स्नान, तीर्थयात्रा आदि धार्मिक कार्यकलापो के अलावा कोई नया कार्य नही करना चाहिए।

- ✓ **मास व चन्द्र दग्धादि योग:** सौर वैशाख महीनों की शुक्लाषष्ठी, जैष्ठ की कृष्णाचतुर्थी, आषाढ़ की शुक्लाष्ठमी, श्रावण की कृष्णाषष्ठी, भाद्रपद की शुक्लादशमी, आश्विन की कृष्णाष्टमी, कार्त्तिक की शुक्लाद्वादशी, अग्रहायण की कृष्णादशमी, पौष की शुक्लाद्वितीय, माघ की कृष्णा द्वादशी, फाल्गुन की शुक्ला चत्तुर्थी और चैत्र की कृष्णा द्वितीया तिथि मासदग्धा होती है। इस प्रकार से मेषादि राशि में चन्द्र रहने से उक्त तिथि चन्द्र दग्धा होती है। मास व् चन्द्र दग्धादि तिथि में कोई भी शुभ कार्य नहीं करनी चाहिए, बच्चे की जन्मं होने से भी अल्पायु के होते है।
- ✓ **दिनदग्धा योग:** रविवार को द्वादशी, सोमवार को एकादशी, मंगलवार को दशमी, बुधबार को तृतीय, गुरुवार को षष्ठी, शुक्रबार को द्वितीया एवं शनिबार को सप्तमी तिथि होने से दिनदग्धा योग होता है।
- ✓ **महादग्धा योग:** रविवार को द्वादशी व् मघा, सोमवार को एकादशी व् कृत्तिका, मंगलवार को दशमी व् आद्रा, बुधबार को तृतीय व् मूल, गुरुवार को षष्ठी व् भरणी, शुक्रबार को द्वितीया व् अश्विनी एवं शनिबार को सप्तमी व अश्लेशा नक्षत्र होने से महादग्धा योग बनता है।
- ✓ **पाप योग:** रवि व् मंगलबार को नंदा तिथि, सोम व् शुक्रबार भद्रा, बुधबार को जया, गुरुबार रिक्ता एवं शनिबार को पूर्ण तिथि होने से पापयोग कहलाता है।
- ✓ **तिथ्यमृत योग:** रवि व् सोमबार को पूर्णा तिथि, मंगलबार को भद्रा, गुरुबार को जया, शुक्रबार को रिक्त एवं बुध व् शनिबार को नंदा तिथि होने से तिथ्यमृत योग बनता है।
- ✓ **नक्षत्रामृत योग:** रविबार उत्तर फाल्गुनी, उत्तरषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद, रोहिणी, पुष्या, हस्ता, मूल व् रेवती नक्षत्र; सोमबार श्रवण, धनिष्ठा, रोहिणी, मृगशिरा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद, उत्तर भाद्रपद, हस्ता व् अश्विनी नक्षत्र; मंगलबार पुष्या अश्लेशा, कृत्तिका, स्वाती, उत्तरभाद्रपद व् रेवती नक्षत्र; बुधबार कृत्तिका, रोहिणी, शतभिषा व् अनुराधा नक्षत्र; गुरुबार स्वाती, पुनर्वसु, पुष्या व् अनुराधा नक्षत्र; शुक्रबार पूर्वफाल्गुनी, उत्तर फाल्गुनी, पूर्वभाद्रपद, उत्तर भाद्रपद, अश्विनी, श्रवण व् अनुराधा नक्षत्र एवं शनिबार को स्वाति व् रोहिणी नक्षत्र होने से नक्षत्रामृत योग बनता है।
- ✓ **त्र्यमृत योग:** रवि व् मंगलबार को नंदा तिथि व् स्वाती, शतभिषा, आद्रा, रेवती, चित्र, अश्लेशा, मूल, कृत्तिका; शुक्र व् सोमबार को भद्रा तिथि व् पूर्व फाल्गुनी, पूर्व भाद्रपद, उत्तर फाल्गुनी, उत्तर भाद्रपद; बुधबार को जया तिथि व् मृगशिरा, श्रवण, पुष्या, ज्येष्ठा, भरणी, अभिजीत, अश्विनी; गुरुबार को रिक्त तिथि व् उत्तरषाढ़ा, विशाखा, अनुराधा, मघा, पुनर्वसु, पूर्वषाढ़ा; एवं शनिबार को पुर्णा तिथि व् रोहिणी, हस्ता, धनिष्ठा नक्षत्र होने से त्र्यमृत योग बनता है, उक्त योग में यात्रादि करने से अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है।

जन्म तिथि फल

- **प्रतिपद:** इस तथी में जन्म लेने वाला व्यक्ति आमतौर पर जातक काफी तेजश्वी और दीर्घायु होता है। विशाल परिवार से युक्त, विद्वान, विवेकशील, धनवान, सुशील, सुंदर तथा राजकीय कोष से धन प्राप्त करने वाला होता हैं।
- **द्वितीया:** किसी भी माह की द्वितीया तिथि को जन्म लेने वाले जातक कर्मशील, सत्य के मार्ग पर चलने वाला तथा दुसरे की दुख तकलीफ़ो को दूर करने वाला होता है। द्वितीया तिथि में जन्म लेने वाले व्यक्ति दाता, दयालु, गुणवान, सदाचारी और सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा कीर्तिवान होते हैं।
- **तृतीया:** इस तिथि में जन्म लेने वाले लोग विद्वान, बलिष्ठ, जन्म स्थान से दूर निवास करने वाले, विलास प्रिय एवं चतुर प्रकृति के होते है। जातक स्वाभाव से बहुत ही चंचल और अभिमानी भी होता है।
- **चतुर्थी:** चतुर्थी तिथि को जन्म लेने वाले जातक कुछ चंचल स्वाभाव के परन्तु सुखी होते हैं। जीवन में कुछ दुर्गुणों के बावजूद भी वे साहसी, समझदारी से धन खर्च करने वाले, शेयर–सट्टा लाटरी आदि में रुचि रखने वाले होते हैं।
- **पंचमी:** पंचमी तिथि को जन्म लेने वाले जातक सत्यमार्गी और दीर्घायु जीवन जीते हैं। अपनी इन्द्रियों को नियंत्रण में रखकर सहज स्वाभाव के साथ ही विशाल बुद्धि के होते हैं। इसलिए ये लोग स्वस्थ शरीर वाले, स्त्री, पुत्र मित्रादि से सुखी, दयावान, राजमान्य एवं परोपकारी होते हैं।
- **षष्टी:** षष्टी तिथि को जन्म लेने वाला व्यक्ति काफी सुंदर, विद्वान और प्रभावशाली होता है। इस तिथि में जन्म लेने वाले लोग सत्यवादी, धनवान, पुत्रवान, अत्यंत पराक्रमी, कीर्तिवान, चतुर, समाज में श्रेष्ठ एवं महिलाओं के प्रति बहुत ही आकर्षित होते है।
- **सप्तमी:** सप्तमी तिथि को जन्म लेने वाले व्यक्ति सद्गुणों से भरपूर, श्रेष्ठ आचरण करनेवाला, आस्तिक, ईश्वर और गुरु के प्रति समर्पित भाव रखने वाला होता है। सप्तमी तिथि में जन्मे हुए जातक गुणग्राही एवं धार्मिक प्रवृत्ति के होते है।
- **अष्टमी:** अष्टमी तिथि में जन्म लेने वाले व्यक्ति सुखी, सुख संपत्ति से युक्त, दयालु, स्त्री से अनुरक्त तथा धार्मिक प्रकृति वाले होते हैं। ऐसे जातक झूट नही बोलते एवं दूसरों की मदद करने में हमेशा तत्पर होते हैं।
- **नवमी:** इस तिथि में जन्म लेने वाले जातकों को अपने परिवार और बच्चें से अत्यधिक प्रेम होता है। ऐसे जातक धार्मिक प्रवृत्ति ले होने के कारण कर्मकांड और पूजा–पाठ में खास रूचि रखते है।

- **दशमी:** दशमी तिथि में जन्म लेने वाले जातक आत्मिक रूप से सामाजिक कार्यक्रमों को बहुत अच्छी तरह से संचालित करते हैं। ऐसे लोग धर्म भीरु, सुख संपत्तिवान, शास्त्रज्ञ, उदार चित्त, विनम्र और रसिक प्रवृत्ति के होते हैं।
- **एकादशी:** एकादशी तिथि में जन्म लेने वाले जातक की वाणी अक्सर कठोर होते है, पर हृदय से कोमल ही होते हैं। इस तिथि में जन्म लेने वाले लोग बहुत ही देव, द्विज, गुरु, पूजा करने वाला और पवित्र हृदय वाला होते हैं।
- **द्वादशी:** इस तिथि में जन्म लेने वाले व्यक्ति चंचल स्वभाव के होते है,इनके मस्तिष्क में हमेशा कुछ न कुछ चलता रहता है। यह लोग दूर शहर व देशों की यात्रा करने में रूचि रखने वाले कुशल व्यवहार, जलक्रीड़ा का प्रेमी, राजशक्ति का सेवक और अन्नदाता प्रवृत्ति के होते हैं।
- **त्रयोदशी:** त्रयोदशी तिथि में जन्म लेने वाले जातक बहुत ही बुद्धिमान, सात्विक प्रवृत्ति, सुंदर रूपवान, शूरवीर एवं चतुर होते हैं और संतान सुख से युक्त होता है। यह अपने मन पर पूरी तरह से काबू रखने के साथ साथ प्रबंधन क्षमता में भी अपनी अच्छी पकड़ रखते हैं।
- **चतुर्दशी:** यह तिथि को यूं तो जन्म की दृष्टि से श्रेष्ठ नहीं माना जाता है। इस दिन जन्म लेने वाले जातक क्रूर प्रवृत्ति का अत्यंत पराक्रमी, चतुर, विनोदप्रिय तथा कामुक होता है। ऐसे लोग कटु आलोचक, विरोधी एवं क्रोधी स्वभाव के होते हैं। परन्तु यह लोग समाजसेवा से जुड़े कार्यों में ये बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने वाले होते हैं।
- **पूर्णिमा:** पूर्णिमा तिथि में जन्मे जातक अच्छी संगत वाले, धनी, मानी एवं सदैव मन से खुश रहने वाले होते है। अपनी समस्याओं को हमेशा अपने अन्दर छुपाकर रखते है, परन्तु कभी अकेले भोजन करना पसंद नहीं करते हैं।
- **अमावस्या:** अमावस्या के दिन जन्म लेने वाले जातक अत्यधिक क्रोधी व् अभिमानी होते है। कार्य की शुरुआत धीरे–धीरे करते हैं परन्तु किसी भी कार्य को नियमानुसार और अच्छे तरीके से करना ही इनका मुख्य उद्देश्य होता है। अत्यधिक क्रोधी होने के कारण कई बार इन्हें अच्छे–बुरे का ज्ञान नहीं रह जाता है।

तिथि भेद में निषिद्ध कर्म व् वर्जित पदार्थ

- प्रतिपदा= कुष्मांड भक्षण से अर्थ हानि होता है।
- द्वितीया= कटहल, वृहती भक्षण से हरिस्मरण के अयोग्य माना जाता है।
- तृतीया= लवण, पटल भक्षण से शत्रु वृद्धि होता है।

- चतुर्थी= तिल, मुला भक्षण से धनहानि होता है।
- पंचमी= खटाई, विल्व भक्षण से कलंक लगता है।
- षष्ठी= तेल, निम्ब भक्षण से पक्षी योनी होता है।
- सप्तमी= आंवला, ताल भक्षण से शारीर विनाश होता है।
- अष्ठमी= नारियल भक्षण से मुर्खता आती है।
- नवमी= काशीफल, अलावु भक्षण गोमांस के समान होता है।
- दशमी= परवल, कलमवी शाक भक्षण से गो हत्या जनित पाप लगता है।
- एकादशी= दलिया, शिम भक्षण से पाप लगता है।
- द्वादशी= मसूर, पुई शाक भक्षण से व्रह्म हत्या जनित पाप लगता है।
- त्रयोदशी= बैगन, वर्त्ताकू भक्षण से सूतहानि होता है।
- चतुर्दशी= मधु, माषकलाई भक्षण से शरीर चिररोगी होता है।
- अमावस्या= रतिकर्म या मांस भक्षण से पाप लगता है।
- पूर्णिमा= जुआ खेलने या मांस भक्षण से पाप लगता है।

२. वार

यह पंचांग का दूसरा अंग है, सप्ताह के सात दिनों का वर्णन वार के रूप में किया गया है। शास्त्रानुसार एक सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक की कालावधि को वार अर्थात दिन कहते हैं। इसकी गणना दिन के स्वामी का निर्धारण करने के लिए भी की जाती है।

दिनों के नाम साथ प्रमुख ग्रहों के नाम पर रखा गया हैं, अर्थात जिस ग्रह की होरा प्रात: काल होती है उसी ग्रह के नाम से उस दिन का नाम रखा गया है। सारी पृथ्वी पर दिनों का क्रम एक जैसा है और दिन ७ ही माने जाते है।

- **सात दिनों (वार) के नाम इस प्रकार हैं:–** १.रविवार २.सोमवार ३.मंगलवार ४.बुधवार ५.गुरूवार ६.शुक्रवार और ७.शनिवार।

प्रत्येक वार का एक ग्रह होता है जो उस दिन की ऊर्जा और प्रभाव को नियंत्रित करता है। उदाहरण के लिए, रविवार सूर्य देव का दिन, सोमवार चंद्रमा का दिन, होता है, जबकि शनिवार शनिग्रहों का दिन माना जाता है।

सात दिनों का नाम

	हिंदी नाम	संस्कृत नाम	English
१.	रविवार	रविवासर/भानुवासरः	Sunday
२.	सोमवार	सोमवासरः/इन्दुवासरः	Monday
३.	मंगलवार	मङ्गलवासरः/भौमवासरः	Tuesday
४.	बुधवार	बुधवासरः/सौम्यवासरः	Wednesday
५.	गुरूवार	गुरुवासरः/बृहस्पतिवासर	Thursday
६.	शुक्रवार	शुक्रवासरः/भृगु वासर	Friday
७.	शनिवार	शनिवासरः/स्थिर वासर	Saturday

✓ सामान्यत शुभ कर्म के लिए सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को शुभ माना जाता है, और अशुभ कर्म के लिए रवि, मंगल और शनि वार प्रसस्त होता है।

दिन का महत्व

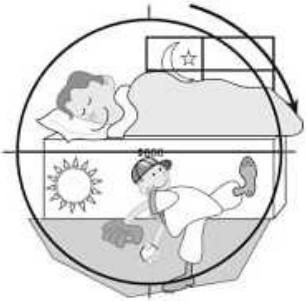

हिन्दू शास्त्रों में दिन (दिन और रात का चक्र) का महत्व बहुत गहरा है। इसे विभिन्न अवधियों और संस्कृतियों के संदर्भ में समझा जा सकता है। हिन्दू धर्म में प्रत्येक दिन के अपने विशेष महत्व होते हैं। पंचांग के अनुसार, प्रत्येक दिन का एक तिथि, नक्षत्र और योग होता है, जो धार्मिक अनुष्ठानों और कार्यों के लिए दिशा–निर्देश प्रदान करता है। दिन के विभिन्न समय पर पूजा–अर्चना और अन्य धार्मिक गतिविधियाँ करने की परंपरा है। कई हिन्दू त्योहार सूर्योदय या सूर्यास्त के समय विशेष पूजा के साथ मनाए जाते हैं। जो जीवन की अनेक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है, जिससे यह जीवन की विविध गतिविधियों और धार्मिक आस्थाओं का भी प्रतीक है।

१) **ब्रह्म मुहूर्त:** यह सूर्य उगने से पहले का समय होता है। इसे ध्यान, साधना और मंत्र जाप के लिए सर्वोत्तम माना जाता है।

२) **प्रात:काल (सुबह):** यह समय सूर्योदय से लेकर सूर्योदय के बाद के कुछ घंटों तक होता है। इसे ज्ञान और ऊर्जा का समय माना जाता है। प्रात:काल में ध्यान, पूजा और अन्य धार्मिक गतिविधियों का विशेष महत्व है।

३) **मध्यान्ह (दोपहर):** यह समय सूर्य के उच्चतम स्थिति में होने के बाद का होता है। इस समय में किए गए कर्मों का फल अधिक प्रभावशाली माना जाता है। इसके अंतर्गत अधिकतर कार्य और व्यवसायिक गतिविधियाँ होती हैं।

४) **संध्या (शाम):** संध्या का समय सूर्यास्त के समय से प्रारंभ होता है। इसे ध्यान और पूजा का समय माना जाता है, और विशेष रूप से संध्या वंदन का महत्व है। यह समय मन की शांति और ध्यान के लिए उपयुक्त होता है।

५) **रात्रि:** रात्रि का समय सूर्य अस्त के बाद का होता है। इसे विश्राम और आत्म-चिंतन का समय माना जाता है। रात्रि में साधना और ध्यान के विशेष महत्व को भी बताया गया है।

दिन और रात

पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है तथा साथ ही अपने अक्ष पर घूमती है। पृथ्वी को अपनी धुरी पर एक चक्कर पूरा करने के लिए २४ घंटे लगते हैं। पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूर्णन गति करने के कारण ही दिन और रात होती हैं। सूर्य की किरणे पृथ्वी के केवल एक ही ओर पड़ता है और पृथ्वी के दूसरी ओर सूर्य का प्रकाश नही पहुंच पाता है जिससे वहा रात होता है। अर्थात पृथ्वी का जो भाग सूर्य की तरफ रहता है, उस पर घूर्णन के दौरान सूर्य का प्रकाश पड़ता है और दिन होता है। पृथ्वी का जो भाग सूर्य से दूर होता है, उस पर रात होती है।

सूर्योदय और सूर्यास्त

सूर्योदय और सूर्यास्त दोनों प्राकृतिक घटनाएँ हैं जो दिन और रात के चक्र का निर्धारण करती हैं। दोनों ही घटनाएँ प्राकृतिक चक्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और मानव जीवन में गहराई से जुड़ी हुई हैं। वैदिक ज्योतिष में सूर्योदय और सूर्यास्त का विशेष महत्व है। ये दोनों समय न केवल दिन के चक्र को दर्शाते हैं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन, स्वास्थ्य और मानसिक स्थिति पर भी प्रभाव डालते हैं।

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय ग्रहों की स्थिति और नक्षत्र भी महत्वपूर्ण होते हैं। ये व्यक्ति के जीवन पर कंही प्रकार प्रभाव डालते हैं; जैसे कि स्वास्थ्य, करियर और संबंध आदि। कई महत्वपूर्ण कार्य जैसे; विवाह, भूमि खरीदी या व्यवसाय की शुरुआत के लिए शुभ मुहूर्त का निर्धारण सूर्योदय और सूर्यास्त के समय को देखते हुए निर्द्धारण किया जाता है।

❖ **सूर्योदय:** सूर्योदय वह समय है जब सूर्य पूर्व की दिशा से निकलता है। यह समय नई शुरुआत, ऊर्जा और आशा का प्रतीक माना जाता है। सूर्योदय के समय वातावरण में एक अद्भुत शांति होती है, और यह प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने का एक बेहतरीन मौका होता है।

- ✓ **सूर्योदय का महत्व:** सूर्योदय का समय नए विचारों और ऊर्जा का प्रतीक है। इस समय ध्यान और साधना करने से मन और आत्मा को शांति मिलती है। इसे 'ब्रह्म मुहूर्त' भी कहा जाता है, जो आध्यात्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है।
- ❖ **सूर्यास्त:** सूर्यास्त वह समय है जब सूर्य पश्चिम की दिशा में अस्त होता है। यह समय दिन की समाप्ति का संकेत है और अक्सर यह एक रंग-बिरंगी आकाश के साथ होता है। सूर्यास्त का दृश्य मन को शांति और संतोष प्रदान करता है और यह दिनभर की गतिविधियों का समापन करता है।
- ✓ **सूर्यास्त का महत्व:** सूर्यास्त दिन के अंत का प्रतीक है। यह समय दिनभर की गतिविधियों का समापन करने और दिनभर के अनुभवों पर विचार करने के लिए उपयुक्त है। सूर्यास्त के बाद का समय ध्यान और आत्मचिंतन के लिए श्रेष्ठ माना जाता है। यह मानसिक शांति और संतुलन पाने का भी समय होता है।

यामार्ध

दिनमान या रात्रिमान को ८ भाग करने से जो एक एक भाग बनते है उनको यामार्द्व कहलाता है। दिनमान के प्रथम यामार्ध पति दिन पति ही होते है। प्रथम यामार्ध पति से पर पर षष्ठ ग्रह क्रमश द्वितीय, त्रितियादि यामार्ध के अधिपति होते है। रात्रि यामार्ध के भी प्रथम यामार्ध पति वारेश अर्थात दिन पति ही होते है। तदुपरान्त प्रथम यामार्ध पति के पर पर पंचम ग्रह द्वितीयादि यामार्ध के अधिपति होते है। एवं जिस यामार्ध के अधिपति शनि होते है, वो यामार्ध कालवेला व् रात्रि में कालरात्रि होता है।

दिन यामार्ध पति चक्र

यामार्ध	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिबार
प्रथम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
द्वितीय	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
तृतीय	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल
चतुर्थ	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य
पंचम	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
षष्ठ	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध
सप्तम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र
अष्ठम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

रात्रि यामार्ध पति चक्र

यामार्ध	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनिबार
प्रथम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
द्वितीय	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध
तृतीय	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य
चतुर्थ	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
पंचम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र
षष्ठ	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
सप्तम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल
अष्ठम	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि

दंड विशेष

यामार्ध का चार भाग के एक भाग को दंड कहा जाता है। दिन अथवा रात्रि यामार्ध के प्रथम दंडाधि पति यामार्ध पति ही होते है। रात्रि दंडाधि पति निर्णय में प्रथम दंडाधि पति के षष्ठ ग्रह द्वितीय दंडाधि पति, उसके षष्ठ ग्रह तृतीय दंडाधि पति एवं तृतीय दंडाधि पति के षष्ठ ग्रह चतुर्थ दंडाधि पति होते है। और दिन के दंडाधि पति निर्णय में प्रथम दंडाधि पति ग्रह के संख्या के आधा संख्यक ग्रह द्वितीय दंडाधि पति, उसके आधा संख्यक ग्रह तृतीय दंडाधि पति एवं तृतीय दंडाधि पति ग्रह के आधा संख्यक ग्रह चतुर्थ दंडाधि पति होते है। (आधा संख्या में अगर भगनांक होने पर उस भगनांक परित्याग करके केबल पूर्णांक को ही लिया जाता है एवं पूर्णांक के आभाव में ८ अंक लेने का नियम है)।

दिन दंडाधिपति चक्र

संख्या	यामार्ध	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	सूर्य	सूर्य	सूर्य	बुध	चन्द्र
२	चन्द्रमा	चन्द्र	सूर्य	राहू	बुध
३	मंगल	मंगल	सूर्य	राहू	बुध
४	बुध	बुध	चन्द्र	सूर्य	राहू
५	गुरु	गुरु	चन्द्र	सूर्य	राहू
६	शुक्र	शुक्र	मंगल	सूर्य	राहू
७	शनि	शनि	मंगल	सूर्य	राहू

रात्रि दंडाधिपति चक्र

संख्या	यामार्ध	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	सूर्य	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र
२	चन्द्रमा	चन्द्र	शनि	गुरु	मंगल
३	मंगल	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
४	बुध	बुध	चन्द्र	शनि	गुरु
५	गुरु	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
६	शुक्र	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि
७	शनि	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य

वार वेला, काल वेला और काल रात्रि

वैदिक ज्योतिष शास्त्रानुसार वारवेला, कालवेला, कालरात्र्यादी अशुभ समय होते है, इनमे किए गए कार्यो का अशुभ परिणाम होते है। जैसेः यात्रा करने से मृत्यु, शादी होने से कन्या विधवा, उपनयन संस्कार करने व्रह्महत्या जनित पाप लगता है। वार वेला और काल वेला दिन के समय होती है जबकि काल रात्रि रात के समय होती है।

- **बारबेला:** रविबार के दिन चतुर्थ यामार्ध, सोमवार के दिन सप्तम यामार्ध, मंगलबार के दिन द्वितीय यामार्ध, बुधबार के दिन पंचम यामार्ध, गुरुबार के दिन अष्ठम यामार्ध, शुक्रवार के दिन तृतीय यामार्ध एवं शनिबार के दिन षष्ठ यामार्ध बारबेला होता है।
- **कालबेला:** रविबार के दिन पंचम यामार्ध, सोमवार के दिन द्वितीय यामार्ध, मंगलबार के दिन षष्ठ यामार्ध, बुधबार के दिन तृतीय यामार्ध, गुरुबार के दिन सप्तम यामार्ध, शुक्रवार के दिन चतुर्थ यामार्ध एवं शनिबार के दिन प्रथम और अष्टम यामार्ध कालबेला होता है।
- **कालरात्रि:** रविबार रात्रि के षष्ठ यामार्ध, सोमबार रात्रि के चतुर्थ यामार्ध, मंगलबार रात्रि के द्वितीय यामार्ध, बुधबार रात्रि के सप्तम यामार्ध, गुरुबार रात्रि के पंचम यामार्ध, शुक्रवार रात्रि के तृतीय यामार्ध एवं शनिबार रात्रि के प्रथम और अष्ठम यामार्ध कालबेला कहलाता है।

कुलिक योग

- **कुलिक वेला:** रविबार के दिन चतुर्दश मुहूर्त्त, सोमबार के दिन द्वादश मुहूर्त्त, मंगलबार के दिन दशम मुहूर्त्त, बुधबार के दिन अष्ठम मुहूर्त्त, गुरुबार के दिन षष्ठ मुहूर्त्त, शुक्रबार के दिन चतुर्थ मुहूर्त्त एवं शनिबार के दिन द्वितीय मुहूर्त्त कुलिक वेला होते है।

❖ **कुलिक रात्रि:** रविबार रात्रि के त्रयोदश मुहूर्त, सोमबार रात्रि के एकादश मुहूर्त, मंगलबार रात्रि के नवम मुहूर्त, बुधबार रात्रि के सप्तम मुहूर्त, गुरुबार रात्रि के पंचम मुहूर्त, शुक्रबार रात्रि के तृतीय मुहूर्त एवं शनिबार रात्रि के प्रथम मुहूर्त कुलिक रात्रि होते है।

✓ **नोट:–** कुलिक संज्ञक मुहूर्त समस्त शुभ कार्यों तथा यात्रा में वर्जित होता है। (दिनमान और रात्रिमान को समान १५ भाग करने से एक एक भाग मुहूर्त कहलाता है)।

जन्मदिन फल

- **रविवार:** रविवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति तेजस्वी, चतुर, गुणवान, उत्साही प्रकृति का होता है।
- **सोमवार:** सोमवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति सामान्यत बुद्धिमान, सुंदर नेत्र वाला, गौर वर्ण, शांत स्वभाव के होते हैं।
- **मंगलवार:** मंगलवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध प्रेमी, पराक्रमी, अपनी बातों पर कायम रहने वाले और अपने परिवार का नाम रोशन करने वाले होते हैं।
- **बुधवार:** बुधवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति मीठा बोलने वाले, पढ़ाई में रुचि रखने वाले, ज्ञानी, लेखक और संपत्तिवान और सफल व्यापारी होते हैं।
- **बृहस्पतिवार:** इस दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति विद्या में निपुण, धनवान, ज्ञानी, विवेकशील, उच्च अधिकारी, जज, खाद्य सामग्री के व्यापारी और उत्तम सलाहाकार होते हैं।
- **शुक्रवार:** शुक्रवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति भौतिक सुखों मे लिप्त रहने वाले, होशियार, धनवान एवं तीक्ष्ण बुद्धि के होते हैं। विपरीत लिंग के तरफ इनका आकर्षण ज्यादा रहता है।
- **शनिवार:** शनिवार के दिन जन्म लेने वाला व्यक्ति कठोर स्वभाव वाला, पराक्रमी, परिश्रमी, दुःख सहने की गजब शक्ति रखने वाला, न्यायी एवं गंभीर स्वभाव के होते हैं। महिलाएं कटुभाषी, पति से नित्य तकरार करने वाली होती है।

वार निर्णय

किसी भी इंगरेजी वर्ष के किसी दिन के वार को जान ने के लिए उस इंग्रजी वर्ष संख्या के एक चतुर्थांश लेके (भाग शेष कोई अंक अवशिष्ट रहने पर वर्ष के चतुर्थांश संख्या के साथ १ अंक अतिरिक्त जोड़ना चाहिए) अभीष्ट मासांक, दिनांक एवं अवदांक संख्या को एक साथ योग करना

चाहिए। उसके बाद उपरोक्त अंक ७ संख्या से भाग देकर अवशिष्ट अंक के अनुसार वार अर्थात दिन निर्णय करना चाहिए। अगर कोई वर्ष लीपइयार है तो वर्ष के मार्च महीना से लेके डिसेम्बर महीने के किसी तारीख का वार निर्णय करना है तो अतिरिक्त १ अंक योग करने के पश्चात् ही ७ अंक से भाग करना चाहिए।

- ✓ अवशिष्ट अंक १ = रविबार, २= सोमबार, ३= मंगलबार, ४= बुधबार, ५= गुरुबार, ६= शुक्रबार एवं ० अंक होने से शनिबार समझना चाहिए।
- **अवदांक:** १५८२ साल से १७०० साल तक अवदांक = ३, १७०१ साल से १८०० साल तक अवदांक = २, १८०१ साल से १९०० साल तक अवदांक = १ एवं १९०१ साल से २१०० साल तक अवदांक = ० होता है।
- **मासांक:** जानुयारी = ५, फेब्रुयारी = १, मार्च = १, अप्रैल = ४, में = ६, जून = २, जुलाई = ४, अगष्ठ = ०, सेप्टेम्वर = ४, ओक्टोबर = ५, नवेंबर = १, दिसम्बर = ३ होता है।

३. नक्षत्र

आकाश मंडल में स्थित ताराओं के समूह को नक्षत्र कहते हैं। ज्योतिष शास्त्रानुसार आकाश में २७ प्रमुख तारामंडल होते हैं। चंद्रमा का हर नक्षत्र में भ्रमण लगभग एक दिन में होता है। नक्षत्रों का उपयोग जन्मकुंडली बनाने और विभिन्न ज्योतिषीय गणनाओं के लिए किया जाता है। प्रत्येक नक्षत्र का अपना विशेष प्रभाव और गुण होते हैं, जो व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं और ९ चरणों के मिलने से एक राशि बनती है। २७ नक्षत्रों के नाम इस प्रकार हैं; १.अश्विनी २.भरणी ३.कृत्तिका ४.रोहिणी ५.मृगशिरा ६.आद्रा ७.पुनर्वसु ८.पुष्य ९.अश्लेषा १०.मघा ११.पूर्वाफाल्गुनी १२.उत्तराफाल्गुनी १३.हस्त १४.चित्रा १५.स्वाती १६.विशाखा १७.अनुराधा १८.ज्येष्ठा १९.मूल २०.पूर्वाषाढ़ा २१.उत्तरषाढ़ा २२.श्रवण २३.घनिष्ठा २४.शतभिषा २५.पूर्वाभद्रपद २६.उत्तराभाद्रपद एवं २७.रेवती।

- ❖ **दग्ध संज्ञक नक्षत्र:** वार और नक्षत्र के विशेष मेल से बनता है, जैसे: रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगल को उत्तराषाढा, बुधवार को धनिष्ठा, बृहस्पतिवार को उत्तराफाल्गुनी, शुक्र को ज्येष्ठा एवं शनि को रेवती नक्षत्र होने पर दग्ध संज्ञक हैं। इन नक्षत्रों के योग में उक्त दिन में शुभ कार्य करना वर्जित होता है।
- ❖ **विष योग:** रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगलवार को उत्तराषाढा, बुधवार को धनिष्ठा, गुरूवार को शतभिषा, शुक्रवार को रोहिणी तथा शनिवार को रेवती नक्षत्र हो तो विष योग होता है, जो अपने नाम के अनुसार सभी कार्यों में अशुभ फलदायक होता है।

- **उत्पात, मृत्यु और काण योग:** रविवार को विशाखा से तीन नक्षत्र, सोमवार को पूर्वाषाढा से तीन नक्षत्र, मंगलवार को धनिष्ठा से तीन नक्षत्र, बुधवार को रेवती से तीन नक्षत्र, गुरुवार को रोहिणी से तीन नक्षत्र, शुक्रवार को पुष्य से तीन नक्षत्र, शनिवार को उत्तराफल्गुनी से तीन–तीन नक्षत्र होने पर क्रमश: उत्पात, मृत्यु व काण योग बनते है। इन योगों में शुरु किए गए काम अपने नाम के अनुसार उत्पातयुक्त, मृत्युकारक व आधी–अधूरी सफलता देने वाले होते है।
- **मास शून्य संज्ञक:** चैत्र में रोहिणी और अश्विनी, वैशाख में चित्रा और स्वाति, ज्येष्ठ में पुष्य और उत्तराषाढ़, आषाढ़ में पूर्वाफाल्गुनी और घनिष्ठा, श्रवण में उत्तराषाढ़ और श्रवण, भाद्रपद में शतभिषा और रेवती, आश्विन में पूर्वाभाद्रपद, कार्तिक में कृत्तिका और मघा, मार्गशीर्ष में चित्रा और विशाखा, पौष में अश्विनी, आद्रा और हस्त, माघ में मूल, श्रवण, फाल्गुन में भरणी और ज्येष्ठा नक्षत्र मास शून्य संज्ञक नक्षत्र होते हैं। मास शून्य संज्ञक नक्षत्रो की योग में कार्यों की सिद्धि में नक्षत्रों की संज्ञाओं का फल प्राप्त होता है।
- **चंडीशचंडायुध योग:** सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उस से तत्कालीन आश्लेषा, मघा, चित्रा, अनुराधा रेवती या श्रवण नक्षत्र तक की गणना करने पर जो संख्या निकलेगा वही संख्या यदि अश्वनी नक्षत्र से तत्कालीन चन्द्र नक्षत्र की हो तो चंडीशचंडायुध योग होता है, जिसमें शुभ कार्यों का आरम्भ करना वर्जित माना जाता है।
- **औत्पातिक योग:** रविवार विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा सोमवार पूर्वाषाढ़ उत्तराषाढ, श्रवण मंगलवार धनिष्ठा शतभिषा पूर्वा भाद्रपद बुधवार अश्वनी भरणीं रेवती गुरूवार रोहिणी मृगशिरा आर्द्रा शुक्रवार पुष्य आश्लेषा मघा शनिवार उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा नक्षत्र होने से औत्पातिक योग बनता है। औत्पातिक योग में यात्रा तथा अन्य शुभ कार्य आरम्भ करने से उत्पात, रोग, हानि होने की संभावना रहता है।
- **सार्पशीर्ष योग:** सूर्य व चन्द्रमा जब एक ही नक्षत्र में रहे तब अगर अनुराधा नक्षत्र हो, यह स्थिति केवल मार्गशीर्ष मास में ही संभव है, तब उस अनुराधा नक्षत्र का तीसरा व चौथा चरण सार्पशीर्ष कहलाता है। यह जन्म के लिए जितना अशुभ है उतना ही मुहूर्त शास्त्र में किसी काम के लिए भी अशुभ माना जाता है।
- **योगी नक्षत्र विशेष:** रेवती नक्षत्र से ६ नक्षत्र पूर्वार्द्ध योगी, आद्रा नक्षत्र द्वादश नक्षत्र मध्यभाग योगी एवं जेष्ठा नक्षत्र से ९ नक्षत्र अपरभाग योगी होते है। स्त्री अथवा वेश्या समागम के समय पुर्व्वार्द्ध नक्षत्र होने से रमणी भर्त्तीप्रिया, मध्यभाग योगी नक्षत्र होने से दोनों के मध्ये बहुत प्रीती का संचार होता है एवं परभाग योगी नक्षत्र होने से रमणी पुरूष का प्रिया होती है। नव वर–वधु मिलन के समय नक्षत्र विचार करनी चाहिए।

- **सेवकादि नक्षत्र फल:** भृत्य, धनी, भर्त्ता व् ग्राम का नक्षत्र से प्रभु, ऋणी, स्त्री और नगर का नक्षत्र पुर्वव होने से क्रमशः सेवाविनाश, धननाश, भर्त्रनाश एवं ग्रामसौख्य नाश होता है। भृत्य के नक्षत्र से प्रभु के नक्षत्र प्रथम होने से सेवा नाश होता है।
- **गन्तान्त दोष:** जेष्ठ, रेवती, अश्लेशा नक्षत्र का शेष २ दंड एवं मूल, अश्विनी और मघा नक्षत्र के पहले का २ दंड नक्षत्र गन्तान्त होते है। कर्क, वृश्चिक व् मीन की शेष अर्द्धदंड एवं सिंह, धनु और मेष की पहला अर्द्धदंड लग्न गन्तान्त होते है। पुर्णा तिथि के शेष १ दंड एवं नन्दा तिथि के पहला १ दंड तिथि गन्तान्त होते है। गन्तान्तादि दोष में विवाह आदि शुभ कर्म वर्जित होते है।

४. योग

हिदू पंचांग के अनुसार पंचांग में दो प्रकार के योगों की गणना की जाती है। प्रथम प्रकार: सूर्य तथा चन्द्रमा के राशि अंशों से एवं दूसरा: सप्ताहे सात दिनों तथा अभिजीत सहित अश्विनादि २८ नक्षत्रों से। वार तथा नक्षत्रों के विशेष संयोजन से जो २८ योग बनते हैं उन्हें 'आनन्दादि' योग कहते हैं।

आनंदादि योगों का नाम और फल

योग के नाम	फल	योग के नाम	फल
१.आनन्द	सिद्धि	१५. लुम्बक	धनक्षय
२. कालदण्ड	मृत्यु	१६. उत्पात	प्राणनाश
३. धुम्र	असुख	१७. मृत्यु	मृत्यु
४. धाता	सौभाग्य	१८. काण	क्लेश
५. सौम्य	बहुसुख	१९. सिद्धि	कार्यसिद्धि
६. ध्वांक्ष	धनक्षय	२०. शुभ	कल्याण
७. केतु/ध्वज	सौभाग्य	२१. अमृत	राजसन्मान
८. श्रीवत्स	सौख्यसम्पत्ति	२२. मुसल	धनक्षय
९. वज्र	क्षय	२३. गद	भय
१०. मुद्गर	लक्ष्मीक्षय	२४. मातङ्ग	कुलवृद्धि
११. छत्र	राजसन्मान	२५. राक्षस	महाकष्ट
१२. मित्र	पुष्टि	२६. चर	कार्यसिद्धि
१३. मानस	सौभाग्य	२७. स्थिर	गृहारम्भ
१४. पद्म	धनागम	२८. वर्धमान	विवाह

सप्ताहे के प्रथम दिन रविवार तथा प्रथम नक्षत्र अश्विनी इन दोनों के योग से प्रथम आनन्द योग बनता है। पुनः सोमवार के दिन (अश्विनी को लेकर ४ नक्षत्र तक छोड़कर ५ वां) मृगशिरा नक्षत्र से दूसरा कालदण्ड योग बनता है। इसी प्रकार मंगलवार को आश्लेषा, बृहस्पतिवार को अनुराधा, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा और शनिवार को शतभिषा नक्षत्र नक्षत्रों का योग होने पर समस्त २८ योग बनते हैं।

आनन्दादि योग गणना में अभिजीत नक्षत्र को भी सम्मिलित किया जाता है। रविवार को अश्विनी हो तो आनन्द योग, भरणी हो तो कालदण्ड इत्यादि इस क्रम में योग बनता है। इसी प्रकार से सोमवार को मृगशिरा हो तो आनन्द, आद्रा हो तो कालदण्ड इत्यादि क्रम होता है। आनन्दादि २८ योगो में से आनन्द, धाता, सौम्य, श्रीवत्स, धन, मित्र, मानस, सिद्धि, शुभ, अमृत, मातंग, सुस्थिर तथा वर्धमान योग सभी कार्यों के लिए शुभ माना जाता है एवं शेष अन्य योगो को अशुभ माना जाता हैं।

सूर्य चन्द्रमा ग्रह के संयोग से कुल २७ योग बनता है, जो सूर्य–चंद्र की विशेष दूरियों की स्थितियों को दर्शाता हैं। प्रत्येक योग का अपना विशेष प्रभाव होता है, जो समय की गुणवत्ता को दर्शाते हैं। योग के आधार पर दिन के शुभ और अशुभ समय का निर्धारण किया जाता है, जो विभिन्न कार्यों के लिए महत्वपूर्ण होता है।

सूर्य–चंद्र की बिशेष दूरियों के आधार पर बनने वाले २७ योगों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं:– १. विष्कुम्भ २. प्रीति ३. आयुष्मान ४. सौभाग्य ५. शोभन ६. अतिगण्ड ७. सुकर्मा ८.घृति९.शूल १०. गण्ड ११. वृद्धि १२. ध्रव १३. व्याघात १४. हर्षल १५. वङ्का १६. सिद्धि १७. व्यतीपात १८.वरीयान१९.परिधि २०. शिव २१. सिद्ध २२. साध्य २३. शुभ २४. शुक्ल २५. ब्रह्म २६. ऐन्द्र एवं २७. वैघृति।

- ✓ इन्ह २७ योगों में से कुल ९ योग विष्कुम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ और वैधृति को अशुभ माना जाता है, तथा सभी प्रकार के शुभ कामों में परितेज्य होता है।
- ❖ **योगों के स्वामी:–** विष्कुम्भ का स्वामी यम, प्रीति का विष्णु, आयुष्मान का चन्द्रमा, सौभाग्य का ब्रह्मा, शोभन का वृहस्पति, अतिगण्ड का चन्द्रमा, सुकर्मा का इन्द्र, घुति का जल, शूल का सर्प, गण्ड का अग्नि, वृद्धि का सूर्य, ध्रुव का भूमि, व्याघात का वायु, हर्षल का भंग, वङ्का का वरुण, सिद्धि का गणेश, व्यतीपात का रुद्र, वरीयान का कुबेर, परिधि का विश्वकर्मा, शिव का मित्र, सिद्ध का कार्तिकेय, साध्य का सावित्री, शुभ का लक्ष्मी, शुक्ल का पार्वती, ब्रह्मा का अश्विनी कुमार, ऐन्द्र का पित्तर, वैघृति की दिति हैं।
- ❖ **योगों का अशुभ समय:–** योगों का कुछ समय शुभ कार्य का प्रारम्भ करने के लिए वर्जित होता है। इन वर्जित समय में कार्य आरम्भ किया जाए तो कार्यों में बाधाएं आती हैं, अत:

छोड़कर ही शुभकार्य प्रारम्भ करना चाहिए। विष्कुम्भ योग की प्रथम ३ घण्टे, परिधि योग का पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध शुभ, शूल योग की प्रथम २ घण्टे ४८ मिनट, गण्ड और अतिगण्ड की २ घण्टे २४ मिनट, व्याघात योग की ३ घण्टे १२ मिनट, हर्षल और वङ्का योग के ३ घण्टे ३६ मिनट, व्यतीपात और वैधृति योग सम्पूर्ण शुभ कार्यों में त्याज्य होता हैं।

५. करण

सूर्य के भोगांश के अन्तर को ६ अंक से भाग देने पर प्राप्त संख्या करण कहलाती है। दूसरे शब्दों में चन्द्र और सूर्य में ६ अंश के अन्तर के समय को एक करण कहते हैं। सहज भाषा में तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। एक तिथि में दो करण होते हैं;– एक पूर्वार्ध में तथा एक उत्तरार्ध में होते हैं। कुल ११ करण होते हैं जिनमें से ७ चर (चलायमान) और ४ स्थिर (स्थायी) करण होते हैं।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्ध में चतुष्पाद, अमावस्या के उत्तरार्ध में नाग और शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किस्तुघ्न करण होता है। करण का उपयोग विशेष ज्योतिषीय गणनाओं और शुभ–अशुभ समय निर्धारण में किया जाता है।

- **करणों के नाम इस प्रकार हैं:– १. बव २.बालव ३.कौलव ४.तैतिल ५.गर ६.वणिज्य ७.विष्टी ८.शकुनि ९.चतुष्पाद १०.नाग एवं ११.किंस्तुघन।**

इसमें किंस्तुघ्न से गणना आरम्भ करने पर पहले ७ करण आठ बार क्रम से पुनरावूत होते है। अंत में शेष चार करण स्थिर प्रकृति के है। स्थिर करण प्रत्येक चान्द्रमास में एक बार ही आते हैं, जबकि चर करणों की आवृत्ति प्रत्येक चान्द्रमास में आठ बार होती है। ८ X ७ = ५६ चर करण तथा ४ स्थिर करण = ६० करण। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्ध से प्रारम्भ होकर अमावस्या तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध तक चारों स्थिर करण अपरिर्वितत रहने के कारण इन्हें स्थिर करण कहा जाता है।

- ✓ **चरसंज्ञक करण:–** बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज्य, विष्टी।
- ✓ **स्थिरसंज्ञक करण:–** शकुनि, चतुष्पाद, नाग, किंस्तुघन।
- ✓ **करणों के स्वामी:–** बव का इन्द्र, बालव का ब्रह्मा, कौलव का मित्र, तैतिल का सूर्य, गर का पृथ्वी, वणिज्य का लक्ष्मी, विष्टी का यम, शकुनि का कलि, चतुष्पाद का रुद्र, नाग का सर्प, किंस्तुघन का वायु स्वामी होते हैं।

✓ **करणों में प्रशस्त कर्मः–** वव करण में पुष्टि के निमित्त कर्म, बालव में वास्तु, गृहप्रवेश, निधि स्थापन आदि शुभ स्थिर कर्म, ब्राह्मणों के हितकारक कर्म, कौलव में स्त्री सम्बन्धी तथा सज्जन मैत्री आदि कर्म, तैतिल में सज्जन सेवा, राजसेवादि कर्म, गर में भूमि, कृषि सम्बन्धी, बीज बोना इत्यादि तथा वणिज में क्रय–विक्रयादि कर्म करना प्रशस्त माना गया है।

❖ करणों के गुण स्वभाव एवं प्रतीकः

१) **बवः**– इसका प्रतीक सिंह है। इसका गुण समभाव है तथा इसक अवस्था बालावस्था है।

२) **बालवः**– इसका प्रतीक है चीता। यह कुमार माना जाता है तथा इसकी अवस्था बैठी हुई मानी गई है।

३) **कौलवः**– इसका प्रतीक शूकर को माना गया है। यह श्रेष्ठ फल देने वाला ऊर्ध्व अवस्था का करण माना जाता है।

४) **तैतिलः**– इसका प्रतीक गधा है। इसे अशुभ फलदायी सुप्त अवस्था का करण माना जाता है।

५) **गरः**– इसका प्रतीक हाथी है। इसे प्रौढ़ माना जाता है तथा इसकी अवस्था बैठी हुई मानी गई है।

६) **वणिजः**– इसका प्रतीक गौ माता को माना गया है तथा इसकी अवस्था भी बैठी हुई मानी गई है।

७) **विष्टि अर्थात भद्राः**– इसका प्रतीक मुर्गी को माना गया है। इसे मध्यम फल देने वाला बैठी हुई स्थिति का करण माना जाता है।

८) **शकुनिः**– इसका प्रतीक पक्षी है। यद्यपि इसकी अवस्था ऊर्ध्वमुखी है, फिर भी इसे सामान्य फल देने वाला करण माना जाता है।

९) **चतुष्पदः**– इसका प्रतीक पशु है। फल भी सामान्य है तथा इसकी अवस्था सुप्त मानी जाती है।

१०) **नागः**– इसका प्रतीक नाग या सर्प को माना गया है। इसका फल सामान्य है तथा इसकी अवस्था सुप्त मानी गई है।

११) **किस्तुघ्नः**– इसके प्रतीक माने जाते हैं कृमि, कीट और कीड, इसका फल सामान्य है तथा इसकी अवस्था ऊर्ध्वमुखी है।

जन्म करण फल

- **बव:** बव करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक स्वभाव होने के करण अनैतिक और धर्म विरूद्ध कार्यों से हमेशा दूर ही रहते हैं। अपने व्यवहार से समाज में काफी मान सम्मान प्राप्त करते हैं। इनकी बुद्धि तीक्ष्ण होती है जिससे ये किसी भ्रम में नहीं उलझते हैं।
- **बालव:** बालव करण में जन्म लेने वाले व्यक्ति भी काफी धार्मिक स्वभाव के होते है। ये जीवन में काफी धन अर्जित करते हैं एवं तीर्थयात्रा भी करते है। मनुष्य तथा देवताओं की सेवा करने वाला, विद्या और धन के सुख से सम्पन्न और राजा का मान्य होता है।
- **कौलव:** कौलव करण में जन्म लेने वाले व्यक्ति का स्वभाव बहुत ही मिलनसार होने के करण ऐसे व्यक्ति सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार रखते हैं, परन्तु ये लोग बहुत ही स्वाभिमानी भी होते हैं।
- **तैतिल:** तैतिल करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति बहुत ही सौभाग्यशाली और धनवान होता है। इनके जीवन में प्रेम का विशेष महत्व होने के करण सभी जानो से स्नेह करने वाले होते है, एवं उत्तम घरो में रहना पसंद करते है।
- **गर:** इस करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति काफी परिश्रमी होता है और गृह काम में तत्पर रहते है। यह भाग्य से अधिक कर्म पर विश्वास रखता है, एवं अपनी मेहनत से सबकुछ प्राप्त करते है।
- **वणिज:** वणिज करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति तेज बुद्धि का स्वामी होता है। इनके अन्दर व्यवसाय करने का बहुत जूनून रहता है, इस करण ये व्यापार में बहुत ही निपुण होते है। व्यापार के उद्देश्य से ये लोग देशांतरों में यात्रा करते रहते हैं और लाभ प्राप्त करते हैं।
- **विष्टि:** विष्टि करण में जन्म लेने वाले व्यक्ति पर विष्टि करण का अशुभ प्रभाव रहने के करण आचरण संदिग्ध रहता है। वह मनुष्य अशुभ कर्म के आरम्भ करने वाला, परस्त्री गामी, विषकार्य में सदा कुशल होता हैं।
- **शकुनी:** इस करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति पौष्टिकादि क्रियाओं के करने में कुशल, औषध आदि में प्रवीण एवं न्याय करने वाला होता है। आस पास कहीं विवाद उत्पन्न हो तो उसे अपनी बुद्धि से शांत कर देते हैं।
- **चतुष्पद:** चतुष्पद करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति देवता, ब्राह्मणों प्रीति रखने वाला, गौ की सेवा करने वाला, गौऔ का स्वामी और बड़ाई करने लायक और चतुष्पद पशु जीवों की चिकित्सा करने वाला होता है।
- **नाग:** नाग करण में जिनका जन्म होता है उन्हें दुर्भाग्यशाली माना जाता है। ये लोग धींवरों से प्रीति करने वाला और चंचल लोचन वाला एवं इनका जीवन संघर्षमय होता है।

- **किंस्तुघ्न:** किंस्तुघ्न करण में जन्म लेने वाला व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली होते है। ये शुभ कर्म में निरत, तुष्टि पुष्टि मंगल और सिद्धि प्राप्त करने वाला होता है, इन्हें सभी प्रकार के सांसारिक सुख प्राप्त होते हैं।

भद्रा विशेष

विष्टी करण का नाम ही भद्रा है, भद्रा का वास भूमि पर होने से मृत्यु दाता होती है अर्थात शुभ फलदायक नही होती हैं। हिन्दू शास्त्रानुसार भद्रा माता, छाया से उत्पन्न सूर्य भगवान की पुत्री और शनिदेव की बहन है। इनका काले विकराल रूप, लंबे बाल और दांत होते है। अपने इस भयावह रूप के कारण जन्म के पश्चात् ही भद्धा माता पूरे संसार को अपना निवाला बनाने वाली थी और इस कारण सभी पूजा–पाठ उत्सव या किसी भी मंगल कार्य में विघ्न डालने लगी। बाद में व्रह्म जी के समझाने के उपरात उन्हें सभी ११ करणों में सातवे करण विष्टि करण के रूप में जगह दी गई और तभी से भद्रा को विष्टि करण के नाम से जाना जाता है। किसी भी नवीन कार्य का आरम्भ इस करण में नहीं किया जाता है, कुछ धार्मिक कार्यों में भी भद्रा का त्याग किया जाता है। भद्रा का सुप्त और बैठी हुई स्थितियां उत्तम नहीं होतीं है, ऊर्ध्व अवस्था उत्तम होती हैं।

भद्रा का वास

भद्रा का तीनों लोकों में वास है, वे हर समय तौनी लोको में विचरण करती रहती हैं। जब चंद्रमा, मेष, वृष, मिथुन या वृश्चिक राशि में स्थित होता है तो भद्रा का वास स्वर्ग लोक में होता है। जब चन्द्रमा कन्या, तुला, धनु और मकर राशि में स्थित होता है तव भद्रा का वास पाताल लोक में माना जाता है। जब चन्द्रमा कर्क, सिंह, कुंभ और मीन राशि में स्थित होता है तब भद्रा का वास पृथ्वी लोक में माना जाता है। पृथ्वी लोक में वास के समय भद्रा का मुख सामने की ओर होता है। वहीं स्वर्ग लोक में वास के समय इसका मुख ऊपर की तरफ और पाताल लोक में वास के समय भद्रा का मुह नीचे की ओर होता है। पृथ्वी लोक में वास के समय सामने की तरफ भद्रा का मुख होना प्रभावी होता है। इस कारण भद्रा काल में पृथ्वी पर किसी भी मंगल कार्य पूर्ति नहीं की जाती है।

- **भद्रा के प्रकार:** चतुर्थी में भद्रा हंसी, अष्टमी में नन्दिनी, एकादशी में त्रिशिरा, पूर्णिमा में सुमुखी, तृतीया में करतलिका, सप्तमी में वैकृति, दशमी में रौद्रमुखी, एवं चतुर्दशी में चतुर्मुखी भद्रा के नाम से जाना जाता हैं।
- **भद्रा के १२ नाम:** धान्या, दधिमुखी, भद्रा, महामारी, खरानना, कालरात्रि, महारुद्रा, विष्टि, कुलपुत्रिका, भैरवी, महाकाली एवं असुरक्ष्याकारी। धार्मिक मान्यता के अनुसार भद्रा के इन्ह १२ नामों का जाप करने से भद्राकाल जनित कष्ट दूर होते है।

भद्राकाल एक अशुभ घड़ी होता है, अतः इस काल में कोई भी शुभ कार्य करना वर्जित माना गया है। जैसेः भद्राकाल में मुंडन, विवाह, गृह प्रवेश, तीर्थ स्थलों का भ्रमण, संपत्ति या व्यापार की शुरुआत या निवेश ये सभी मंगल कार्य भद्राकाल में नहीं करने चाहिए। परन्तु किसी दुश्मन पर प्रहार करना, हथियारों का इस्तेमाल, सर्जरी, ऑपरेशन, किसी के विरोध में कानूनी कार्रवाई करना, आग लगाना, किसी जानवरों से संबंधित कार्य की शुरुआत करना शुभ फलदायी रहता हैं, एवं यज्ञ–हवन भी किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अगर कोई जरूरी कार्य करना है तो दिन के समय जब भद्रा उत्तरार्ध में होती है अथवा रात में जब भद्रा पूर्वार्ध में होती है, तब करना चाहिए।

ग्रहण विशेष

पुराणों की मान्यता के अनुसार अमरत्ता प्राप्ति के उद्देश्य देवताओं और दैत्यों के बीच समुद्र मंथन होता है। समुद्र मंथन से जब अमृत का कलश निकला तव अमृत कलश को लेकर देवताओं और दैत्यों में विवाद होता है। देवताओं को चिंता थी कि यदि अमृत दैत्यों ने पी लिया तो दैत्य अमर हो जाएंगे और हर जगह इनका राज्य हो जाएगा। तब भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप रखा और दैत्यों से अमृत का कलश लेकर देवताओं को अमृतपान करवाते है।

लेकिन देवताओं की पक्ति में स्वरभानु नाम का एक राक्षस भी रूप बदलकर छिप कर बैठ गया चंद्रमा और सूर्य ने स्वरभानु को पहचान लिया और भगवान विष्णु को पूरी बात बता दी, यह बात सुनकर तुरंत विष्णु भगवान ने सुर्दशन चक्र से स्वरभानु का सिर धड़ से अलग कर दिया जाता है। लेकिन तब तक अमृत की बूंद गले से नीचे उतर चुकी थी इसलिए सिर और धड़ अलग हो जानें के बाद भी उसकी मृत्यु नही होती है। बाद में इस दैत्य की सिर राहु और धड़ केतु बनकर बदला लेने के लिए चंद्र और सूर्य पर समय समय पर आक्रमण करते हैं, इसी क्रिया को ही ग्रहण कहते हैं।

- ❖ भौतिक विज्ञान की दृष्टि से पृथ्वी सूरज की परिक्रमा करती है और चाँद पृथ्वी की निरंतर परिक्रमा करता है। इस दौरान कई बार चंद्रमा और सूर्य के बीच धरती आ जाती है। इसकी वजह से सूर्य की सीधी रोशनी चंद्रमा तक नहीं पहुंच पाती है और पृथ्वी की परछाई चंद्रमा पर पड़ती है, इसी को ही चंद्र ग्रहण कहते हैं। और जब सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा एक सीध में आ जाते हैं यानी सूर्य और पृथ्वी के बीच चंद्रमा आ जाता है, तो ऐसी स्थिति को सूर्य ग्रहण कहा जाता है। चन्द्र ग्रहण हमेशा रात में एवं सूर्य ग्रहण हमेशा अमावस्या को दिन में ही लगता है। एवं एक साल में चार या पांच चन्द्र या सूर्य ग्रहण लग सकते हैं।
- ✓ **पूर्ण ग्रास सूर्यग्रहण:** पूर्ण सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा पृथ्वी के काफी निकट होता है और वह पूरी तरह से सूर्य को ढक लेता है। इस स्थिति में, चंद्रमा की छाया पृथ्वी पर

पड़ती है, जिससे सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक नहीं पहुंच पता है। परिणाम स्वरूप पृथ्वी पर अंधकार जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है, इसी को ही पूर्ण ग्रास सूर्य ग्रहण कहलाता है।

- ✓ **आंशिक ग्रास सूर्यग्रहण:** आंशिक ग्रास सूर्य ग्रहण तब होता है, जब चंद्रमा सूर्य के एक भाग को ही ढकता है। इस स्थिति में, पृथ्वी पर कुछ हिस्सों में सूर्य का एक हिस्सा चंद्रमा द्वारा ग्रहणित होता है, जबकि अन्य हिस्से पर सूर्य का प्रकाश सामान्य रूप से उपलब्ध रहता है। इस स्थिति में पृथ्वी के उस भाग विशेष में लगा ग्रहण आंशिक ग्रास सूर्य ग्रहण कहलाता है।
- ✓ **वलयाकार सूर्य ग्रहण:** वलयाकार सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा पृथ्वी से काफी दूर होता है, और ऐसे स्तिति में वह केवल सूर्य के मध्य भाग को ही ढकता है। इस स्थिति में, चंद्रमा सूर्य को पूरी तरह से नहीं छिपाता, जिससे सूर्य के चारों ओर एक चमकता "वलय" दिखाई देता है, जिसे वलयाकार सूर्य ग्रहण कहते है। वलयाकार सूर्य ग्रहण के दौरान, सूर्य का बाहरी भाग प्रकाशित रहता है, जबकि मध्य भाग चंद्रमा द्वारा ढक जाता है।

ग्रहण और नवांश

सूर्य और मंगल ग्रहों के नवांश में आकाश बादल रहित होने के कारण ग्रहण स्पष्ट दिखाई देता है। बुध और शनि ग्रहों के नवांश में ग्रहण होने से आकाश में मेघाच्छन्न रहने की सम्भावना रहती है, जिस बजाय से ग्रहण स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता है। बृहस्पति के नवांश में भी ग्रहण होने से आकाश में बादल रहता हैं इसलिए ग्रहण अदृश्य होता है। वर्षा ऋतु में चन्द्रमा और शुक्र के नवांश में ग्रहण के समय भारी वर्षा होती है। और वर्षा ऋतु के उत्तरार्ध में यदि चंद्रमा और शुक्र के नवांश में ग्रहण हो तो पूरा आकाश बादलों से ढक जाता है और ग्रहण अदृश्य रहता है।

ग्रहण के दौरान राहु की वर्ण

ग्रहण के समय राहू सफ़ेद वर्ण की दृष्टि होने से दुर्भिक्ष व ब्राह्मणों के लिए कष्टकारी होता है। यदि राहु पीले रंग में दिखाई दे तो मनुष्य जाति में रोग और शोक उत्पन्न होते हैं और उस वर्ष अतिवृष्टि और अनावृष्टि से फसलें नष्ट होती है। यदि कपिल वर्ण दिखाई दे तो म्लेच्छ और जंगली पशु नष्ट होते हैं और अकाल पड़ने की संभावना होती है। यदि राहु सूर्य की किरणों के समान दिखता है, तो अकाल, भारी बारिश और पक्षी नष्ट हो जाते हैं। यदि धुंआ जैसा दिखाई दे तो इसका अर्थ है मंगल, समृद्धि और अल्प वर्षा का द्योत्यक है। यदि राहु अरुण तथा नीला अथवा श्याम वर्ण में दिखाई दे तो समस्त प्राणियों की भूख से कष्ट होती है। राहू का कालापन शूद्र जाति की पीड़ा को दर्शाता है। यदि राहु कमल के समान हो और पीले रूप में दिखाई दे तो वैश्य जाति विनष्ट होते है। अत्यंत तेजवान राहू दर्शन होने से अग्निभय, गैरिकवर्ण के दर्शन होते है, तो पृथ्वी

पर युद्ध प्रारम्भ होता है। यदि राहु को श्याम या हरिद्रा वर्ण में दिखाई दे तो प्राणियों का नाश होता है। यदि राहु पाटलिपुष्प के रंग जैसा दिखाई दे तो वज्रपात से अनेको प्राणी नष्ट होते हैं।

ग्रहण नाड़ी नक्षत्र फल

जिस नक्षत्र में चंद्रमा या सूर्य को ग्रहण लगता है, वह नक्षत्र किसी व्यक्ति की जन्म नाड़ियों में से एक है, तो छह महीने के भीतर उस व्यक्ति की सभी नाड़ियाँ दूषित हो जाती हैं। जन्म नक्षत्र में ग्रहण होने से मृत्युतुल्य कष्ट अथवा जातक को स्वजाती सह अनेको दुःख का सामना करना पड़ता है। जिस व्यक्ति का नाड़ी नक्षत्र ग्रहण के समय पड़ता है, उस व्यक्ति के सभी दोषों की शांति के लिए शतपुष्पा (गुल्फा), प्रियंगु, अरंड, चंदन और वीरण की जड़ युक्त जल से स्नान करना चाहिए इससे ग्रहण का नाड़ी–नक्षत्र जनित दोष नष्ट हो जाता है।

सूर्य ग्रहण के दौरान नाड़ी दोष निवारण के लिए तांबे के बर्तन में तिल भरकर या गव्यघृत भरकर दान करना लाभकारी होता है। एवं चंद्र ग्रहण के दौरान नाड़ी दोष प्रतिकार के लिए गव्यघृत पूर्ण कुंभ के ऊपर ताजा भरा हुआ शंख रखकर उसे इच्छापूर्वक ब्राह्मण को देना अच्छा रहता है। जन्म राशि में ग्रहण होने से घात, द्वितीय में क्षति, तृतीय में लक्षीप्राप्ति, चतुर्थ में दुःख, पंचम में चिंता, षष्ठ में सुख, सप्तम में स्त्री वियोग, अष्ठम में मृत्यु, नवम में मानहानि, दशम में सुख, एकादश में लाभ एवं द्वादश में ग्रहण होने से मृत्यु होती है। ग्रहण की अशुभता नाश के लिए स्वर्ण दान, गो दान अथवा शिव जी का पूजा करनी चाहिए।

ग्रहण का प्राकृतिक फल

यदि ग्रहण के बाद सप्ताह मध्य वारिश होने से धन की हानि होती है और ज्यादा वारिश होने से रोग होता है। ग्रहण के पश्चात सप्ताह मध्य भूकंप होना अति अमंगल का द्योत्यक होता है। ग्रहण के एक सप्ताह के भीतर उल्कापात होने से राजमंत्री नाश होते है। ग्रहण मध्य आकाश में तरह–तरह के बादल हो तो सभी जानवर भयभीत होते हैं। यदि बिजली कड़कती है तो गर्भवती स्त्री का गर्भाशय नष्ट हो जाता है और किसी जहरीले जानवर के काटने से राजा पीड़ित होते है। यदि ग्रहण के सप्ताह मध्ये इन्द्रधनु और दण्ड दर्शन हो तो पशुओं की भूख से कष्ट होती है। ग्रहण के सप्ताह मध्य आकाश में विजली ना कड़कते हुए मूसलाधार वारिश होने से प्रचुर मात्रा में फसल पैदा होती है।

धार्मिक विधि–निषेध

सनातन हिन्दू धर्म्मानुसार ग्रहण के समय में कीटाणु बहुलता से फैल जाते हैं इसलिए ग्रहण के समय भोजन नही करनी चाहिए। खाद्य वस्तु, जल आदि में सूक्ष्म जीवाणु एकत्रित होकर उसे

दूषित कर देते हैं, इसलिए पाकपात्र परित्याग करने का विधान है। चन्द्र ग्रहण के समय कफ की प्रधानता बढ़ती है और मन की शक्ति क्षीण होती है, जबकि सूर्य ग्रहण के समय जठराग्नि, नेत्र तथा पित्त की शक्ति कमज़ोर पड़ती है। सूर्यग्रहण से चार प्रहर पूर्व और चंद्र ग्रहण में तीन प्रहर पूर्व गरिष्ठ भोजन नहीं करना चाहिये। बूढे बालक और रोगी एक प्रहर पूर्व तक भोजन ग्रहन कर सकते हैं।

ग्रहण के बाद स्नान करने का भी विधान है, क्यौकी स्नान के दौरान शरीर के अंदर ऊष्मा का प्रवाह बढ़कर भीतर–बाहर के कीटाणु नष्ट होता है और धुल कर बह जाता है। जो व्यक्ति ग्रहण के पश्चात् स्नान नहीं करता है, वो व्यक्ति सात जन्म तक कष्ट भोगता है। रविवार के दिन सूर्य ग्रहण एवं सोम वार के दिन चन्द्र ग्रहण होने से इसे चूड़ामणि योग कहते है। उस पुन्य योग में गंगा स्नान करने से अनंत गंगा स्नान का फल मिलता है। ठीक इसी तरह दशहरा तिथि अर्थात जेष्ठ महीने की शुक्लपक्ष की दशमी तिथि में गंगा स्नान करने से दशविध पापक्षय होकर अपार पुण्य मिलता है।

ग्रहण के समय भगवान का पूजन, भजन–कीर्तन, गायों को घास, पक्षियों को अन्न, जरुरतमन्दों को वस्त्र दान से अनेक गुना पुण्य प्राप्त होता है। ग्रहण के समय में मंत्रों का जाप करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। ग्रहण के दौरान स्नान करके ब्राह्मण को दान देने से अपार पुन्य मिलता हैं। परन्तु ग्रहण की अवधि में तेल लगाना, जल पीना, मल–मूत्र त्याग करना, केश विन्यास बनाना, रति–क्रीड़ा करना, मंजन करना वर्जित माना गया हैं।

भूकंपन

मीन, कर्क व मकर लग्न में भूकंपन होने से कुर्म्म विचलित सिंह, तुला व् मिथुन लग्न में नागराज (अनंत) विचलित कुम्भ, धनु व् कन्या लग्न में पृथ्वी स्वयं विचलित एवं मेष, वृषभ और वृश्चिक लग्न में भूकंपन होने से गज गण विचलित होते है। कुर्म्म व नाग विचलित होने से महामारी, दुर्भिक्ष एवं पृथ्वी व गज विचलित होने से कल्याणकारी होता है।

हेमंत व वसंत ऋतू में दिन में भूकंपन होना मानव के लिए भीषण कष्टकारी (दुर्भिक्ष/मरक) एवं रात में भूकंपन होना शुभ होता है। ग्रीष्म, वर्षा, शरद और शिशिर ऋतू में रात के समय भूकंपन होना अनावृष्टि, दुर्भिक्ष व प्रजापीड़ा का कारक होता है।

शनिवार, रविवार और मंगलवार में भूकंपन होना मनुष्य के लिए भीषण घातक, शस्यहानि, अग्निदाह, राजछत्रभंग, युद्ध का कारक होता है। चन्द्र अथवा सूर्य ग्रहण काल में भूकंपन होना भीषण अशुभ का संकेत देता है। जैसे: सांप्रदायिक अशांति, युद्ध में राजा की पराजय, दुर्भिक्ष आदि।

खर मास

गुरु की राशि अर्थात् धनु और मीन में जब सूर्य रहते हैं तो वह मास खरमास कहलाता है। अर्थात पौष व चैत्र दोनों सौरमास को खरमास कहा जाता है। सूर्य गुरु गृह में होने से सूर्य का तेज मंद हो जाता है। समस्त सृष्टि, जीवन, के मुख्य आधार सूर्य ही हैं। समस्त शुभ/मांगलिक कार्यों का सम्पादन भी सूर्य की स्थिति के आधार पर ही किया जाता है, अतः जब सूर्य मंद होते हैं तो किसी भी प्रकार का मांगलिक कार्य निषिद्ध हो जाता है।

इसलिये खरमास में सभी तरह के मांगलिक कार्य उपनयन–विवाहादि गृहारम्भ, ग्रहप्रवेश, वधूप्रवेश आदि वर्जित हैं। क्यौकी खरमास में किये गये कार्यों में सूर्य द्वारा प्राप्त होने वाला शुभफल प्राप्त नहीं हो सकता है। हालाकी दान–दक्षिन्य, सेवा, जपतप, तीर्थ यात्रा, सूर्य देव की पूजा अर्चना के लिए खरमास प्रसस्त होता है। खरमास और मलमास दोनों पूर्णतः अलग हैं। खरमास हर साल में दो वार आता है, और मलमास तिन साल के अन्तराल में एक बार आता है।

मलमास (अधिमास)

धार्मिक ग्रंथो के अनुसार मलमास की बहुत ही अध्यात्मिक महत्त होता है। मलमास हिन्दू धार्मिक मान्यताओं के अनुसार एक अतिरिक्त महीना होता है, जिसे अधिमास या पुरुषोत्तम मास के नाम से भी जाना जाता है। अतिरिक्त महीना होने की बजह से इस महीने में सूर्य संक्रांति नहीं होती है।

सूर्य संक्रांति न होने के कारण इस महीना को निकृष्ट अर्थात मलिन माना जाता है, इसलिए इसे मलमास कहा जाता है। अतिरिक्त महीना होने की वजाय से इसे अधिमास भी कहा जाता है और यह महीना भगवान विष्णु जी की अति प्रिय मास होने के कारण इसे पुरुषोत्तम मास कहा जाता है।

हिंदू कैलेंडर सूर्य और चंद्रमा के वर्ष की गणनाओं से चलता है, इसमें सौर वर्ष ३६५.२४२२ दिन का जबकि चंद्र वर्ष ३५४.३६७० दिन का होता है। सौर एवं चन्द्र वर्षो में लगभग ११ दिनों का अंतर होता है। इस अंतर को संतुलित करने के लिए हर तीन साल में पंचांग में एक अतिरिक्त महीना जोड़ दिया जाता है, जिए मलमास, अधिक मास या पुरुषोत्तम मास कहा जाता है।

धर्म कर्म, तीर्थ–यात्रा, भजन–पूजन, जप–तप के लिए यह महीना विशेष पुण्य फलदायक माना जाता है। परन्तु विवाह संस्कार, मुण्डन, ग्रह प्रवेश, व्यापार प्रारम्भ जैसे सांसारिक कार्य के लिए यह महीना निषिद्ध होता है।

क्षय मास

सौर मास की प्रवृति सूर्य जिस समय किसी राशि में प्रवेश करता है, उस समय से होती है, और जिस अमांत चांद्र मास में संक्रांति होती है, उसी चांद्र मास के आधार पर संबंधित संक्रांतिजन्य सौर मास का नामकरण होता है। सूर्य कभी एक राशि पार करने में २९ दिनों से थोड़ा अधिक समय लेता है और कभी यह सीमा ३१ दिनों से भी अधिक होती है।

इसीलिए सूर्य की बारह संक्रांतियां प्रायः २९.२५ दिन से लेकर ३१.५ दिन में होती है। धनु के आधे भाग पर रहते समय सूर्य की गति तीव्रतम अर्थात ६१°:१०'' विकला प्रति दिन रहती है। धीरे-धीरे घटते हुए यही गति मिथुन के मध्य में न्यूनतम ५७°:१२'' विकला हो जाती है। अधिकतम गति से सूर्य एक राशि को २९.२२ सावन दिनों में ही पार कर लेता है, जबकि चांद्र मास २९.५३ माध्य सावन दिन का होता है। अतः अधिक मास तो क्रमशः ३२.५ चांद्र मासों के बाद आता रहता है, लेकिन क्षय मास कभी कभी ही आता है।

सूर्य की गति वृश्चिक, धनु व मकर राशियों में क्रमशः तीव्रतर से तीव्रतम होने के कारण क्षय मास इनसे संबंधित मासों में अर्थात कार्तिक, मार्गशीर्ष या पौष में होता है। जिस चंद्रमास के दोनों पक्षों में सूर्य संक्रांति होती है, उस मास को क्षय मास कहा जाता है। जिस वर्ष क्षय मास होता है, उस एक वर्ष के भीतर दो अधिक मास होते हैं। क्षयमास, वह चान्द्रमास होता है जिसमें एक अमावस्या से दूसरे अमावस्या के बीच सूर्य की दो संक्रांतियां होती हैं। क्षयमास की संभावना १९ साल या १४१ साल में ही बनती है।

उत्तरायण और दक्षिणायण

हिन्दू पंचांग में वर्ष को बारह राशियो और दो अयनों में बांटा गया है: उत्तरायण और दक्षिणायण। एक वर्ष में दो अयन होता है, अर्थात एक अयन ६ महीने का होता है। एक अयन देवता का एक दिन होता है और ३६० अयन में देवता का एक वर्ष बनता है। शास्त्रों के अनुसार जब सूर्य मकर राशि से मिथुन राशि तक भ्रमण करते हैं तब तक का समय उत्तरायण कहा जाता है, उत्तरायण को मकर संक्रांत के नाम से भी जाना जाता है। और जब सूर्य कर्क राशि से धनु राशि में विचरण करते हैं तब उस समय को दक्षिणायन कहते हैं। अर्थात माघ महीने के पहला

तारीख से अषाढ़ महीनें के संक्रांति तक उत्तरायण होते है, एवं सावन महीने के पहलें तारीख से पौष महीने के संक्रांति तक दक्षिणायन होते है।

उत्तरायण सूर्य की उत्तर दिशा की ओर गति को कहते हैं और दक्षिणायन सूर्य की दक्षिण दिशा की ओर गति को कहा जाता है। अयन का अर्थ होता है चलना, ग्रहों के राजा सूर्यदेव पूरे वर्ष गतिमान रहते हैं, और सूर्य की विभिन्न अवस्थाओं से ही ऋतुओं का निर्धारण किया जाता है। उत्तरायण में शिशिर, बसंत और ग्रीष्म यह तीन ऋतुएं पड़ती हैं, और जब दक्षिणायन में वर्षा, शरद और हेमंत ऋतुएं होती हैं।

उत्तरायण के दौरान शुभ कार्यों को बढ़ावा दिया जाता है, जब सूर्य उत्तरायण में होता है तब हिंदू धर्म के अनुसार यह तीर्थ यात्रा व उत्सवों के लिए प्रशस्त माना जाता है। एवं सूर्य जब दक्षिणायन में होता है तब व्रत और उपवास का समय होता है, व्रत से रोग और शोक मिटते हैं। दक्षिणायन में विवाह और उपनयन आदि संस्कार वर्जित है, दक्षिणायन में गृह प्रवेश करने से घर में नकारात्मकता आती है परन्तु अग्रहायण मास में ये सब किया जा सकता है।

राजादि आनयन

अभीष्ट शकाव्द संख्या से १०२१ अंक घटाने से जो अंक होगा उसमे १ अंक योग करके ७ अंक से विभाजित (भाग) करके अवशिष्ट अंक १ = शुक्र, २ = चन्द्र, ३ = गुरु, ४ = सूर्य, ५ = बुध, ६ शनि एवं ० = मंगल उस वर्ष की राजा होते है। एवं राजा ग्रहों से चतुर्थ ग्रह मंत्री, मंत्री ग्रह से चतुर्थ ग्रह जलाधिपति और उसके चतुर्थ ग्रह शषयाधिपति होते है।

यात्रादि विशेष

यात्रा के लिए जिस दिशा में जाना हैं, उस दिशा से सम्बन्धित लग्न या राशि के होने पर लाभदायक स्थिति वनती है। जिस व्यक्ति का जो लग्न एवं राशि होती है यदि यात्रा के लिए वही लग्न व राशि का प्रयोग किया जाए तो वह भी अनुकूल फल देता है। यात्रा के संदर्भ में वर्गोत्तर लग्न और वर्गोत्तम चन्द्र अनुकूल रहता है। ऐसे में यदि केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभ ग्रह तथा ३, ६, ११ भाव में पाप ग्रह हों तो अत्यंत शुभ होता है।

यात्रा के दिन के योग और करणों पर भी विचार करना चाहिए। विष्टि करण, व्यतिपात योग, मृत्यु योग, दग्ध योग, ककरच योग, संवर्तक योग, हुतासन योग, विष योग, यमघंट योग अदि होने से यात्रा नहीं करनी चाहिए। जिस दिन यमघंट योग और मृत्यु बाण योग साढ़े चार घंटे से अधिक समय का हो, उस दिन भी यात्रा स्थगित कर देनी चाहिए।

यात्रा के लिए घर से निकलते ही यदि दही, दूध, घी, फल, फूल का पान, हाथी, घोड़, गाय, बैल, चावल, जल का घड़ा, सफेद वस्त्र पहने कुंवारी कन्या, बैंड–बाजे, घोड़ा आदि अचानक सामने आ जाएं तो ये शुभ लक्षण माने जाते हैं। इनके दर्शन मात्र से कार्य की सफलता की आशा और संभावना दोगुनी हो जाती है।

इसके विपरीत यदि घर से निकलें तो फफूंद लगा हुआ, कुरूप, कष्टदायक पदार्थ जैसे तेल बेचने वाला व्यक्ति, लंगड़ा, कैना, कपड़े धोने वाला व्यक्ति, हड्डी, बिल्ली, विधवा, वस्त्रहीन व्यक्ति, सांप, भैंसा, सियार, गाय, बीमार कुत्ता, रोने की आवाज, गंदा सूअर आदि सामने आए तो इसे अशुभ लक्षण माना जाता है। ऐसी स्थिति में यात्रा को यथा सम्भव टाल देना चाहिए। यदि यात्रा पर जाना बहुत आवश्यक हो तो इष्ट देव, कुलदेव, पितृदेव आदि का ध्यान करके उचित संकल्प के साथ यात्रा प्रारंभ करनी चाहिए।

यात्रा के लिए समय या मुहूर्त निर्धारित करने के लिए यात्रा के उद्देश्य और यात्रा की दूरी को ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही, यात्रा के साधनों, जैसे हवाई, समुद्री मार्ग, सड़क या रेल द्वारा यात्रा, पर भी विचार किया जाना चाहिए। ध्यान देने वाली बात यह है कि दैनिक या रोजमर्रा की यात्रा के प्रसंग में मुहुर्त का विचार नहीं किया जाता है। मुहूर्त वह अनुकूल या प्रतिकूल समय या अवधि है, जो किसी भी समय पंचांग मापदंडों की विभिन्न स्थितियों के अनुसार घटित होती है।

दिशा शूल

ज्योतिष और वास्तु शास्त्रों में दिशा को बहुत महत्वेपूर्ण माना गया है। दिशाओं के शुभ और अशुभ प्रभाव पर ही हमारे कार्य की सिद्धि अनेकांशे निर्भर करती है। कई बार गलत दिशा में यात्रा करना या फिर गलत दिशा में बैठकर कार्य करने से अशुभ फलों की प्राप्ति होती है। फलित ज्योतिष के अनुसार दिशा शूल एक ऐसा अशुभ योग है जो उस संबंधित दिशा में यात्रा करना बहुत ही अशुभ और हानि कारक माना जाता है।

दिशाशूल में यात्रा करने से मनोरथ कभी सिद्ध नहीं होता है, आर्थिक हानि होती है और यहाँ तक कि कभी कभी यात्रा मृत्यु का कारण बन सकता है। सप्ताह के अलग–अलग दिनों में अलग–अलग दिशाओं में शूल बताए गए हैं। निम्नलिखित तालिका से दिशाशूल के वारे में समझा जा सकता है:

- सोमवार और शनिवार को पूर्व दिशा में दिशा शूल होता है।
- रविवार और शुक्रवार को पश्चिम दिशा में दिशा शूल होता है।।
- मंगलवार और बुधवार को उत्तर दिशा में दिशा शूल होता है।

- गुरूवार को दक्षिण दिशा में दिशा शूल होता है।

✓ इसके आलावा सोमवार और गुरूवार को दक्षिण –पूर्व कोण, रविवार और शुक्रवार को दक्षिण–पश्चिम कोण में, मंगलवार को उत्तर–पश्चिम कोण में एवं बुधवार और शनिवार को उत्तर–पूर्व कोण में दिशा शूल माना जाता है।

अगर यात्रा करना बहुत जरुरी होता है तो ऐसे स्थिति में, शास्त्रों के अनुसार रविवार को दलिया या फिर घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर, मंगलवार को थोड़ा सा गुड़ खाकर, बुधवार को तिल और धनिया खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौ खाकर वहीं शनिवार को अदरक या फिर उड़द की दाल खाकर यात्रा करनी चाहिए। इससे दिशा दोष समाप्त होता है तथा यात्रा फलदायी होती है।

दिन विचार

यात्रा के लिए बृहस्पति और शुक्रवार को सबसे आदर्श होता है। रविवार, सोमवार और बुधवार को यात्रा की दृष्टि से मध्यम माना जाता है। एवं मंगलवार और शनिवार यात्रा के लिए शुभ नहीं माना जाता हैं।

सम्मुख शुक्र दोष

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यात्रा के लिए सम्मुख शुक्र का भी त्याग करना चाहिए क्योंकि सम्मुख शुक्र यात्रा के लिए अशुभ होता है। गोचरवश शुक्र जिस नक्षत्र में पहुंचता है उस नक्षत्र की दिशा में यात्रा करने से सम्मुख शुक्र लगता है। शुक्र गोचरवश कृतिका से आश्लेषा नक्षत्र में हो तो पूर्व दिशा में, मघा से विशाखा नक्षत्र तक दक्षिण में, अनुराधा से श्रवण तक पश्चिम में तथा घनिष्ठा से भरणी नक्षत्र में होने पर उत्तर दिशा में होता है।

यात्रा में अनुकूल नक्षत्र

हस्ता, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, पुनर्वसु, श्रवण और घनिष्ठा नक्षत्रों में यात्रा करना सवसे आदर्श माना जाता हैं। क्योंकि इन नक्षत्रो में यात्रा करने से संतोषजनक परिणाम मिलते हैं। उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में यात्रा करना मध्यम माना जाता है और शेष नक्षत्र यात्रा के लिए अधम होता है।

✓ आदर्श रूप से अपने जन्म नक्षत्र से पहले, तीसरे, पांचवें, सातवें, दसवें, बारहवें, चौदहवें, सोलहवें, उन्नीसवें, इक्कीसवें, तेईसवें और पच्चीसवें नक्षत्र में यात्रा करने से बचना चाहिए।

नक्षत्र शूल

ज्येष्ठा नक्षत्र में पुर्व दिशा में, पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में दक्षिण दिशा में, रोहिणी नक्षत्र म एपश्चिम दिशा में, उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में उत्तर दिशा में यात्रा करने से शूल नक्षत्र जनित दोष हेतु मृत्यु प्राप्त होता है। मतान्तर में श्रवण नक्षत्र में पुर्व, अश्विनी नक्षत्र में दक्षिण, पुष्या नक्षत्र में पश्चिम एवं हस्त नक्षत्र में उत्तर दिशा में नक्षत्र शूल होता है।

यात्रा मे चंद्रमा विचार

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यात्रा पर निकलने से पहले चन्द्रमा की शुद्धि का भी विचार करना चाहिए। मेष, सिंह, और धनु इन राशियों पर चंद्रमा पूर्व दिशा में होता है। वृष, कन्या, मकर इन राशियों पर चंद्रमा दक्षिण दिशा में निवास करता है। तुला, कुंभ, मिथुन इन राशियों पर चंद्रमा पश्चिम दिशा में निवास करता है। एवं कर्क, वृश्चिक, मीन इन राशियों पर चंद्रमा उत्तर दिशा में निवास करता है।

यात्रा करते समय सन्मुख एवं दाहिना चंद्रमा सभी तरह से लाभकारी होता है, तथा कार्यों में विजय दिलाता है। यात्रा करते समय अगर चंद्रमा पीठ के पीछे हो तो अनिष्ट करता है। एवं बाई तरफ चंद्रमा हो तो धन की हानि करता है। जन्म राशि से चन्द्रमा तीसरा, छठा, दसमा, ग्यारहवां, पहला और सातवें राशि में हो तो यह यात्रा के लिए बहुत ही शुभ होता है। यात्रा के दिन अगर चन्द्रमा गोचरवश चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश राशि में हो तो यात्रा नहीं करनी चाहिए।

तिथि विचार

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यात्रा के लिये प्रतिपदा श्रेष्ठ तिथि मानी जाती है। द्वितीया कार्यसिद्धि के लिये, तृतीया आरोग्यदायक, चतुर्थी कलह प्रिय, पंचमी कल्याणप्रदा, षष्ठी कलहकारिणी, सप्तमी भक्षयपान सहित, अष्टमी व्याधि दायक, नवमी मृत्यु दायक, दशमी भूमि लाभप्रद, एकादशी स्वर्ण लाभ करवाने वाली, द्वादशी प्राण नाशक और त्रयोदशी सर्व सिद्धि दायक होती है। पूर्णिमा व अमावस्या तिथि को एवं तिथि क्षय मासान्त तथा ग्रहण के बाद के तीन दिन यात्रा नही करनी चाहिए।

परिघ दण्ड

यात्रा सफल और अनुकूल वनाने के लिए परिघ दण्ड का भी आंकलन करना चाहिए। गोचरवश चन्द्रमा घनिष्ठा से आश्लेषा नक्षत्र में भ्रमण करता है तो पूर्व और उत्तर दिशा में यात्रा करना शुभ होता है जबकि दक्षिण व पश्चिम दिशा में अशुभ फल देता है। जब चन्द्रमा मघा से श्रवण नक्षत्र

तक गोचरवश जब भ्रमण करता है तब पश्चिम और दक्षिण दिशा में शुभ तथा पूर्व और उत्तर दिशा में अशुभ फल देता है, चन्द्रमा के नक्षत्र जनित इस बिशेष अवस्थान को ही परिघ दण्ड कहते हैं ।

तारा शुद्धि

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यात्रा में तारा शुद्धि विचार करना अत्यंत जरुरी होता है। जन्म नक्षत्र से पहला, तीसरा, पांचवां, सातवां, दशवां, बारहवां, चौदहवां, सोलवां, उन्नीसवां, इक्कीसवां, तेइसवां और पच्चीसवां नक्षत्र में यात्रा करने से तारा दोष लगता है। इसलिए इन नक्षत्रों में यात्रा त्याग करना चाहिए।

घात दोष

घात दोष साधारणत: राज सेवा, विवाद, युद्ध, शिकार के लिए तथा अन्य यात्रा मे घातक होता है, इस लिए यात्रा में सर्वदा निषेध है। परन्तु तीर्थ यात्रा, विवाह मे कि गई यात्रा, गुरूकुल मे जाने के लिय कि जाने वाली यात्रा एवं अन्य किसी मंगल कार्यक्रम मे इसका विचार नही होता है।

- **घात लग्न विचार:** मेष राशि वालों के लिए मेष लग्न, वृष राशि वालों के लिए वृष लग्न, मिथुन राशि वालों के लिए कर्क लग्न, कर्क राशि वालों के लिए तुला लग्न, सिंह राशि वालों के लिए मकर लग्न, कन्या राशि वालों के लिए मीन लग्न, तुला राशि वालों के लिए धनु लग्न, वृश्चिक राशि वालों के लिए वृश्चिक लग्न, धनु राशि वालों के लिए धनु लग्न, मकर राशि वालों के लिए कुंभ लग्न, कुंभ राशि वालों के लिए मिथुन लग्न, मीन राशि वालों के लिए सिंह लग्न घातक लग्न माना जाता हैं।
- **घात राशि विचार:** मेष राशि वाले जातक को पहला चंद्रमा, वृष राशि वाले जातकों पांचवा चंद्रमा, मिथुन राशि वाले जातक को नोवा चंद्रमा, कर्क राशि वाले जातक को दूसरा चंद्रमा, सिंह राशि वाले जातक को छटा चंद्रमा, कन्या राशि वाले जातक को दसवां चंद्रमा, तुला राशि वाले जातक को तीसरा चंद्रमा, वृश्चिक राशि वाले को सातवां चंद्रमा, धनु राशि वाले जातक को चौथा चंद्रमा, मकर राशि वाले जातक को आठवां चंद्रमा, कुंभ राशि वाले जातक को ग्यारहवां चंद्रमा एवं मीन राशि वाले जातक को बाहरवां में स्थित चंद्रमा घातक होता है।
- **घात नक्षत्र विचार:** मेष राशि वालों के लिए मघा नक्षत्र, वृष राशि वालों के लिए हस्त नक्षत्र, मिथुन राशि वालों के लिए स्वाति नक्षत्र, कर्क राशि वालों के लिए अनुराधा नक्षत्र, सिंह राशि वालों के लिए मूल नक्षत्र, कन्या राशि वाले जातको के लिए श्रवण नक्षत्र, तुला

राशि वाले जातकों के लिए उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, वृश्चिक राशि वाले जातकों के लिए रेवती नक्षत्र, धनु राशि वाले जातकों के लिए भरणी नक्षत्र, मकर राशि वाले जातकों के लिए रोहिणी नक्षत्र, कुभं राशि वाले जातकों के लिए आर्द्रा नक्षत्र एवं मीन राशि वाले जातकों के लिए आश्लेषा नक्षत्र घातक होते हैं।

- **घात वार विचार:** मेष राशि वालों के लिए रविवार, वृष सिंह तथा कन्या राशि वालों के लिए शनिवार, मिथुन राशि वालों के लिए सोमवार, कर्क राशि वालों के लिए बुधवार, मकर राशि वालों के लिए मंगलवार, कुंभ तथा तुला राशि वालों के लिए बृहस्पति वार एवं धनु, वृश्चिक तथा मीन राशि वालों के लिए शुक्रवार घातक वार होता हैं।
- **घात तिथि विचार:** वृष कन्या तथा मीन राशि वालों के लिए पूर्णा तिथि, मिथुन तथा कर्क राशि वालों के लिए नंदा तिथि घातक होता है। तुला मेष मकर तथा कुंभ राशि वालों के लिए रिक्ता तिथि एवं धनु सिह, कुभं राशि वालो के लिए जया सज्ञक तिथि घातक होती है।

विवाह विशेष

सनातन हिन्दू धर्म में विवाह संस्कार को मनुष्य जीवन के सोलह संस्कारों में से सबसे महत्वपूर्ण संस्कार बताया गया है। माना जाता है, विवाह से पूर्व शुभ मुहूर्त निकाल लेने से वर–वधु का दाम्पत्य जीवन बेहतर होने के साथ उनके मध्य प्यार व ताल मेल भी हमेशा बना रहता हैं। विवाह के लिए शुभ मुहूर्त निकलने के लिए जब कुंडली में गुण मिलान की प्रक्रिया संपन्न हो जाती है तब वर–वधू की जन्म राशि के आधार पर विवाह संस्कार के लिए निश्चित तिथि, वार, नक्षत्र तथा समय को निकाला जाता है।

विवाह के लिए मूल, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, हस्त, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तरा आषाढ़, उत्तरा भाद्रपद, स्वाति, मघा और रोहिणी आदि नक्षत्र को सबसे आदर्श माना जाता है। इन नक्षत्रो मे विवाह करने पर वर वधु को संतान, प्रपोत्र, संपत्ति, पारस्परिक सहानुभूति, आपसी स्नेह और खुशिया प्राप्त होती है। जबकी भरणी, कृतिका, आद्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, श्रवण, घनिष्ठा व शतभिषा को शुभ नहीं माना जाता है।

क्यौकी कृतिका, भरणी, आद्रा, पुनर्वसु और अश्लेषा नक्षत्र में शादी होने से वधु ६ वर्ष के अंदर ही विधवा होती है। पुष्य नक्षत्र में शादी होने से पति अपनी पत्नी को त्याग कर दूसरी शादी करता है। एवं चित्रा, विशाखा और ज्येष्ठा नक्षत्र में शादी होना तलाक का प्रमुख कारन बनता हैं। मघा और मूल के प्रथम चरण तथा रेवती के चतुर्थ चरण में विवाह नही करनी चाहिए।

शुभ नक्षत्र के साथ–साथ विवाह के लिए शुभ महीना का होना भी बहुत जरुरी माना जाता है, ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार विवाह संस्कार के लिए ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, वैशाख, मार्गशीर्ष और आषाढ़ माह ही सबसे उत्तम माना जाता हैं। विवाह मुहूर्त निकलने में नक्षत्र व् मास के साथ साथ शुभ योग एवं लग्न भी देखा जाना चाहिए।

विवाह के लिए प्रीति, आयुष्मान, सौभाग्य, शोभन, सुकर्मा, धृति, वृद्धि, ध्रुव, सिद्धि, वरीयान, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल एवं ब्रह्म योग प्रशस्त होता हैं। अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, व्यतिपात, परिध, इन्द्र एवं वैधृति योगो मे विवाह होता है तो वर–वधु की मृत्यु अथवा वर–वधु अनेक रोगो से त्रस्त होते है। विवाह के लिए तुला, मिथुन, कन्या, वृष और धनु लग्न शुभ माने जाते है एवं अन्य सभी लग्न मध्यम होते है।

❖ विवाह लग्न निरूपण में विशेष ध्यान रखने वाले बातें:

१) विवाह लग्न वर अथवा कन्या के जन्म लग्न व जन्म राशि से अष्टम राशि का न हो।

२) विवाह लग्न में जन्म लग्न के अष्टमेश की उपस्थिति न हो इस बात का से चाहिए, क्योकि विवाह लग्न में जन्म लग्न के अष्टमेश का होना अति– अशुभ माना जाता है।

३) विवाह लग्न में 'लग्न भंग' योग नहीं होना चाहिए। विवाह लग्न से द्वादश भावं में शनि, दशम भाव में मंगल, तीसरे भाव में शुक्र, लग्न में पापग्रह या क्षीण चंद्रमा स्थित नहीं होना चाहिए।

४) विवाह लग्नेश, चंद्र व शुक्र अशुभ अर्थात ६, ८, १२ भाव में नहीं होने चाहिए एवं विवाह लग्न कर्त्तरी योग से ग्रसित नहीं होना चाहिए।

५) विवाह लग्न में सप्तम व अष्टम भाव ग्रह रहित होना शुभ माना जाता है।

विवाहादि कार्य के लिए सोम, बुध, गुरु और शुक्र वार श्रेष्ठ होते हैं, रवि व शनिवार मध्यम एवं मंगलवार त्याज्य हैं। विवाह मुहूर्त निरूपण में विष्टि, शकुनि, चतुष्पद एवं नागकरण को त्यागकर सभी करण शुभ होते है। षष्ठी, अमावस्या, अष्टमी, रिक्ता त्रयोदशी और कृष्ण पक्ष की अन्तिम पांच तिथि व शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के अतिरिक्त सभी तिथियाँ शुभ होते है।

परन्तु पंचांग शुद्धि का अभाव, संक्रांति का दिन, षष्ठ लग्न में पाप, विवाह लग्न में शुक्र छठे तथा मंगल अष्टम में, त्रिविध गंडांत, कर्तरी दोष, त्रिकागत चंद्रमा, अष्टम लग्न से वर–वधू की राशि द्वादश लग्न दोष, दिन के अनुरूप नक्षत्रों की विषघटी, निन्दित क्षण, पाप ग्रह युद्ध दोष, पाप नक्षत्र, पाप नवांश, होलाष्टक, पितृपक्ष, मलमास, धनुस्थ और मीनस्थ सूर्य, जन्मतिथि, जन्ममास, जन्मनक्षत्र, लत्ता दोष, पात दोष, युति दोष, वेध (पंचशलाका, सप्तशलाका), जामित्र, पंचक, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य एवं दग्धा तिथि दोष में विवाह वर्जित है। मृत्यु बाण दोष,

सिंहस्थ गुरु, व्यतिपात योग, भद्रा, वैधृति योग, क्षयमास, कुलिक (गुलिक) नामक मुहूर्त, प्रहरार्ध एवं पात काल का विवाहादि शुभ कार्यों में अधिकांश परित्याग करने का विधान मिलता है। गुरु शुक्र के अस्त होने के दो दिन पूर्व और उदय होने के दो दिन पश्चात तक का समय एवं ग्रहण काल दोष के समय एक दिन पहले व तीन दिन पश्चात का समय अर्थात् कुल पांच दिन विवाह हेतु त्याज्य होता है।

परन्तु गान्धर्व (प्रेम) आदि विवाह के लिये किसी विशेष मुहूर्त की अपेक्षा नही रहती है, इसमें केवल नक्षत्र शुद्धि का विधान है। इसलिये गान्धर्व, आसुर, पैशाच एवं राक्षस विधि के विवाह में केवल नक्षत्र शुद्धि का विचार करना चाहिये। गान्धर्व, आसुर, पैशाच आदि विवाहों में त्रिपदीय चक्र के अनुसार (सूर्य नक्षत्र से ४ नक्षत्र अशुभ, २ शुभ, ३ अशुभ १ १ शुभ १ अशुभ, ४ शुभ ६ अशुभ, ३ शुभ, १ अशुभ ३ शुभ) शुभ नक्षत्रों में गान्धर्व आदि विवाह करना चाहिये।

अन्धादि लग्न

विवाह लग्न अंध, बधिर या पंगु नहीं होना चाहिए। विवाह बधिर लग्न में होने से वर–कन्या दोनों दरिद्र होते है, और यदि दिवान्ध में लग्न हो तो कन्या विधवा होती है। यदि रात्रान्ध में लग्न हो तो सन्तति मरण और पंगु लग्न हो तो धन नाश होता है। दिन में तुला और वृश्चिक, रात्रि में तुला और मकर बधिर है। तथा दिन में सिंह, मेष, वृष और रात्रि में कन्या, मिथुन, कर्क अंध संज्ञक हैं। दिन में कुम्भ और रात्रि में मीन लग्न पंगु होते है। धनु, तुला, वृश्चिक, ये तीनो अपराह्न में बधिर माने जाते हैं, जबकि मिथुन, कर्क व् कन्या ये लग्न रात्रि में अंधे होते है। सिंह, मेष, वृष ये लग्न दिन में अंधे होते है और मकर, कुम्भ, मीन प्रातःकाल तथा सायंकाल में कुबड़े होते है।

विवाह में त्रिबल शुद्धि

विवाह मुहूर्त का विचार करते समय त्रिबल का विचार करना अत्यंत आवश्यक माना जाता है। त्रिबल अर्थात तीन बल इसमें हम सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति का बल देखा जाता हैं। त्रिबल विचार में वधु के लिए गुरु एवं चंद्रमा का बल और पुरुष के लिए सूर्य तथा चंद्रमा के बल का विचार किया जाता है। त्रिबल विचार में सूर्य, चंद्रमा तथा बृहस्पति का बल कुछ कम या पूर्ण नहीं हो तो विवाह नहीं किया जाना चाहिए। क्यौकी गुरू ग्रह जीवन एवं भाग्य का कारक, चंद्रमा धन एवं मानसिक शांति का कारक तथा सूर्य तेज प्रदान करने का कार्य करते हैं। इसलिए यदि विवाह के समय यह ग्रह पूर्ण अनुकूल न हों तो वर एवं वधु का दाम्पत्य जीवन सूख पूर्वक व्यतीत नही होता है।

शरीर एवं धन का संबंध पुरुष से बनता है और बुद्धि का बल ही इन्हें नियंत्रित करने में सक्षम बनता है। इसलिए कन्या के लिए गुरू का बल देखा जाता है, क्योंकि शरीर और धन के संवर्धन में गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि गृहलक्ष्मी का बुद्धि बल श्रेष्ठ है तो गृहस्थ जीवन सुखद होता है।वर–वधु की जन्म राशि से विवाह के समय गुरू–सूर्य तथा चंद्रमा जिन राशियों में विचरण कर रहे हैं, वहां तक गिनती करके त्रिबल विचार किया जाता है।

पुरूष के लिए सूर्य का विचार करने हेतु उसकी जन्म राशि से गोचर का सूर्य यदि चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो यह समय विवाह के लिए त्याग करना उचित रहता है। अगर पहले, दूसरे, पांचवें, सातवें या नवें स्थान में सूर्य स्थित हो तो सूर्य का दान और पूजादि करके विवाह किया जा सकता है। एवं सूर्य तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें स्थान में हों तो विवाह का होना बहुत शुभप्रद माना जाता है।

कन्या की जन्म राशि से गुरू गोचर में यदि चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में भ्रमण कर रहा है तो यह विवाह के लिए सही नहीं होता है। इसके अतिरिक्त यदि पहले, तीसरे, छठे या दशवें स्थान में गुरू हों तो उसकी पूजा एवं दान कराके विवाह किया जा सकता है। यदि दूसरे, पांचवे, सातवें, नौवें या ग्यारहवें स्थान में गुरू हों तो विवाह करना शुभप्रद माना जाता है।

चंद्र विचार के लिए वर एवं वधु की जन्म राशि से चंद्रमा का गोचर यदि चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में पड़े तो अशुभ माना जाता है। अन्य सभी स्थानों पर चंद्रमा के गोचर विवाह के लिए शुभ माना जाता है। सूर्य, चंद्र व् गुरू तीनों ही विवाह के समय यदि चौथे, आठवें या बारहवें स्थान में भ्रमण कर रहे हों तो विवाह के लिए अशुभ होते हैं। मतान्तर में वर के लिए चंद्रमा को बारहवें में शुभ माना जाता हैं, लेकिन कन्या के लिए बारहवां चंद्रमा पूर्ण रुप से निषिद्ध माना गया है। इसी प्रकार त्रिबल में सूर्य–चंद्र तथा गुरू का विचार करते हुए ग्यारहवां स्थान सर्वथा शुभ माना जाता है।

त्रिबल विचार के अनुसार वर–वधु की राशि के आधार पर तीनों ग्रहों शुभ हैं तो विवाह करना चाहिए। अगर त्रिवल में ग्रहों शुद्धि न हो तो ग्रह की शांति के पश्चात् ही विवाह कार्य संपन्न करनी चाहिए नही तो विवाह को कुछ समय के लिए टाल देना ही हितकर व शुभ होता है।

विवाह में मास शुद्धि

कन्या का विवाह माघ मास में करने से धनवती, फाल्गुन में सौभाग्यती, वैशाख एवं ज्येष्ठ में पति प्रिया होती है। आषाढ़ में विवाह करने से कुल की वृद्धि करने वाली होती है और अन्य मास (चैत्र, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक व पौष) विवाह में वर्जित है। एवं मार्गशीर्ष में विवाह

करना माध्यम होता है। सूर्य संक्रमण की मिथुन, कुम्भ, मकर, वृश्चिक, वृष, मेष और मिथुन राशियों के चान्द्र मासों में विवाह लग्न शुभ होती है। मिथनु राशिगत सूर्य में आषाढ शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक, वृश्चिक के सूर्य में कार्तिक मास में, मकर के सूर्य में पौष मास में मेष के सूर्य में चैत्र चान्द्र मास में भी विवाह लग्न होती है। परन्तु यज्ञोपवीत और विवाह आदि शुभ कार्यों में सौर मास ही ग्राह्य है।

गोधूलि विशेष

गोधूलि सूर्यास्त से पहले और सूर्यास्त के बाद का समय होता है, जिसमें वातावरण आंशिक रूप से सूर्य से प्रकाशित होता है, न तो पूरी तरह से अंधेरा होता है और न ही पूरी तरह से प्रकाशित होता है। गोधूलि शब्द का अर्थ है – गो + धूल = अर्थात गायों के पैरों से उठने वाली धूल, गोधूलि बेला का संबंध गायों की घर वापसी से होता है अर्थात इस समय गायें और अन्य पशु अपने घर की ओर लौटते हैं। पक्षियां भी एक कतार में आसमान में उड़ते हुए अपने घोंसले की ओर जाते है। यह समय उत्साह, आनंद और उमंग से भरा होता है, ईसलिए हिंदू धर्म में गोधूलि बेला को मांगलिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ माना गया है।

❖ **गोधूलि तीन प्रकार के होते हैं:** १) नागरिक गोधूलि (क्षितिज के सबसे निकट), २) समुद्री गोधूलि और ३) खगोलीय गोधूलि (क्षितिज से सबसे दूर)। सूर्योदय के समय लग्न राशि से सातवीं राशि गोधूलि लग्न होती है। गोधूलि लग्न का समय– वैदिक पंचांग अनुसार स्थानीय सूर्यास्त से १२ मिनिट पूर्व एवं सूर्यास्त के १२ मिनिट पश्चात् के समय को गोधूलि काल कहा गया है। अर्थात सूर्यास्त के समय की १ घड़ी (२४ मिनट) गोधूलि काल होते है।

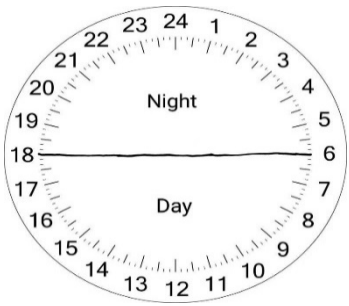

गोधूलि बेला पात और जामित्रादि दोष को नाश करने वाला होता है। साथ ही गोधूलि बेला लग्न के दोषों को भी दूर करता है और अष्टम भाव यानी पाप भाव में गोचर कर रहे ग्रहों के कारण उत्पन्न हुए अनिष्टों से मुक्त होता है। यही बजाए से विवाहादि में शुभ लग्न ना मिलने पर गोधुली काल में वर– बधू का विवाह संपन्न करबाया जाता है। गोधूलि बेला मां लक्ष्मी के आगमन का समय माना जाता है, इसलिए इस मुहूर्त में लक्ष्मी पूजन करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है। गोधूलि बेला में तुलसी के पास दीपक जलाना चाहिए, साथ ही

इस बेला में पीपल, केला और बरगद जैसे धार्मिक वृक्षों के पास भी दीपक जलाने से त्रिदेवों और मां लक्ष्मी का आशीर्वाद मिलता है।

मन्य्यता है गोधूलि बेला में घर पर वाद-विवाद या कलह-क्लेश करने से एवं किसी को उधार देने से लक्ष्मी नाराज हो जाती हैं। कोई अगर दूध या दही मांगने आए तो वह गोधूलि बेला में नहीं देना चाहिए, गोधूलि बेला में तुलसी को नहीं छूना चाहिए और न ही जल चढ़ाना चाहिए। प्रार्थना, पूजा-पाठ के लिए गोधूलि बेला को बहुत अच्छा माना जाता है। गोधुली वेला में घर पर आरती जरूर करनी चाहिए इससे सुख-शांति आती है साथ ही रोग-शोक दूर हो जाते हैं। इस समय पूजा करने घर पर बरकत बनी रहती है और देवी-देवता प्रसन्न होते हैं, धन, बल, बुद्धि, विद्या और दिव्यता की प्राप्ति होती है।

चौघड़िया

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चौघड़िया मुहूर्त देखकर वह कार्य या यात्रा करना उत्तम होता है, इसलिए चौघड़िया की जानकारी होना अत्यधिक आवश्यक है। किसी भी कार्य के लिए हमें चौघड़िया देखने की आवश्यकता होती है। भारत वर्ष में शुभ कार्य करने से पहले मुहूर्त साधने की परंपरा आदि काल से ही चली आ रही है, उत्तर भारत में चौघड़िया, मिथिला एवं बंगाल में यामार्ध तथा दक्षिण भारत में राहुकाल को देखकर ही शुभ कार्य करने की प्रथा है। यदि कभी किसी कार्य के लिए कोई मुहूर्त नहीं निकल रहा हो एवं कार्य को शीघ्रता से आरंभ करना हो या किसी यात्रा पर आवश्यक रूप से जाना हो तो उसके लिए चौघड़िया मुहूर्त देखने का विधान है।

शुभ और अशुभ समय का पता लगाने की प्रणाली चौघड़िया कहलाती है। चौघड़िया एक संस्कृत शब्द है जो "चौ" और "घड़िया" से मिल कर बना है। चौ का अर्थ होता है "चार" और "घड़िया " का अर्थ होता है "समय"। "घड़िया" को "घटी" के रूप में भी जाना जाता है। दिन और रात के दौरान ८-८ चौघड़िया मुहूर्त होते हैं। प्रत्येक चौघड़िया मुहूर्त लगभग ४ घटी (एक घटी लगभग २४ मिनट) का होता है। दिन और रात्रि के चौघड़िया का आरंभ क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से होता है। चौघड़िया का मुहूर्त वार और ग्रह से जुड़ा है एवं सातों वारों के चौघड़िए अलग-अलग होते हैं। जैसे रविवार का सूर्य ग्रह है जिसका चौघड़ियां उद्वेग से प्रारंभ होता है। इस तरह क्रमशः सोमवार का चंद्रमा अमृत से, मंगलवार का मंगल रोग से,

बुधवार का बुध लाभ से, गुरुवार को गुरु शुभ से, शुक्रवार का शुक्र चर से, शनिवार का शनि काल से प्रारंभ होता है। मतलब जिस दिन जो वार होता है उस दिन का प्रारंभ उक्त चौघड़िया से होता है।

चौघड़िया (मुहूर्त) के ७ प्रकार होते हैं: १) उद्वेग, २) चर, ३) लाभ, ४) अमृत, ५) काल, ६) शुभ और ७) रोग। इनमे से अमृत, शुभ, लाभ और चाल चौघड़िया को शुभ माना जाता है। अमृत को सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया में से एक माना जाता है वहीँ चाल को भी अच्छे चौघड़िया के तौर पर देखा जाता है। एवं उद्वेग, रोग और काल को अशुभ मुहूर्त माना जाता है। किसी भी अच्छे कार्य को करते समय अशुभ चौघड़िया से बचना चाहिए। चर में यात्रा वाहन मशीन संबंधित कार्य, उद्वेग में जमीन से संबंधित काम तथा स्थायी कार्य करना चाहिए। शुभ चौघड़िया में स्त्रियों को सिंगार आदि मांगलिक कार्य, लाभ में व्यापार नौकरी आदि कर्म करना चाहिए। रोग में रोगियों को रोगमुक्त होने पर स्नान करना चाहिए, काल चौघड़िया में धन संग्रह करना शुभ रहता है। एवं अमृत चौघड़िया में सभी प्रकार के कार्य जैसे; पूजा, समारोह करना विशेष शुभता देता है।

राहुकाल विचार

वैदिक ज्योतिष के अनुसार दिन का कुछ समय अलग अलग ग्रहों के प्रभाव में रहता है। ग्रहों के प्रभाव से प्रत्येक काल का अपना एक अलग महत्व होता है। मुख्य रूप से समय के तीन भागों का १)यम गण्ड, २)राहु काल और ३)कुलिक काल का विशेष महत्व होता है। इनमें कुलिक काल में शुभ कार्य शुरू किया जा सकता है जबकि राहु काल और यम गण्ड को किसी भी शुभ काम को शुरू करने के लिए प्रसस्त नहीं माना गया है। राहुकाल को राहुकालम भी कहा जाता है,

राहुकाल का समय क्रूर ग्रह राहु के नाम से है जो एक पाप ग्रह माना गया है। अर्थात इस भाग का स्वामी राहु होता है जिसे बहुत अनिष्टकारी माना जाता हैं। राहुकाल में किए गए कार्यों में हमेशा असफलता ही प्राप्त होती है और किए गए कार्यों के विपरित परिणाम मिलते है। ज्योतिष गणना के अनुसार यह काल कभी सुबह, कभी दोपहर तो कभी शाम के समय पड़ता है। लेकिन हमेशा सूर्योदय के बाद ही पड़ता है एवं राहुकाल की अवधि दिन (सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय) के आठवें भाग के बराबर अर्थात कुल डेढ़ घंटा का होता है।

राहुकाल ज्ञात करने के लिए स्थानीय दिनमान को आठ से समान भाग करके अभीष्ट वार के गुणक से अष्टमांश को गुणा करके उसे सूर्योदय काल में जोड़ देंने से उक्त दिन का राहुकाल का समय प्राप्त होता है। उसमें दिनमान के १/८ भाग के समय को जोड़ने पर जो समय आएगा, उतने बजे तक राहुकाल रहता है। सोमवार को दूसरा, मंगलवार को सातवां, बुधवार को पांचवां,

गुरुवार को छठा, शुक्रवार को चौथा, शनिवार को तीसरा और रविवार को आठवां हिस्सा राहुकाल कहलाता है।

✓ राहू काल का समय (अनुमानित):

१. रविवार को शाम ४:३० बजे से ६ बजे तक।

२. सोमवार को सुबह ७:३० बजे से ९ बजे तक।

३. मंगलवार के दिन ३ बजे से शायं ४:३० बजे तक।

४. बुधवार के दिन १२ बजे से १:३० बजे तक।

५. गुरुवार के दिन १:३० बजे से ३ बजे तक।

६. शुक्रवार के दिन सुबह १०:३० बजे से १२ बजे तक।

७. शनिवार के दिन सुबह ९ बजे से १०:३० बजे तक राहुकाल होता है।

✓ **नोट:** सामान्यतया जब सूर्योदय छ बजे प्रातः माना जाय और सूर्यास्त छः बजे सायं होता है। परन्तु सूर्योदय व सूर्यास्त का समय बदलने पर राहुकाल भी उसी अनुपात में दिन के आठवे भाग के अनुसार आगे पीछे होगा।

❖ राहुकाल के दौरान क्या करें क्या न करें:–

राहु को नैसर्गिक अशुभ कारकग्रह माना गया है, जो शुभ कार्यो में विघ्न और बाधा डालने वाला होता है। इसलिए राहुकाल की अवधि में शुभ ग्रहों के लिए यज्ञ और उनसे सम्बन्धित कार्य को करने में राहु बाधक होता है। शुभ ग्रहों की पूजा व यज्ञ इस अवधि में करने पर परिणाम अपूर्ण प्राप्त होता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार राहुकाल के दौरान किसी भी पवित्र, शुभ या अच्छे कार्य की शुभारम्भ नहीं करना चाहिए। राहुकाल में कोई भी नई मंहगी लग्जरी चीज नहीं खरीदने चाहिए, किसी दुकान या प्रतिष्ठान के उद्घाटन, गृहप्रवेश करना अथवा किसी नए व्यापार की शुरुआत राहुकाल में नही करना चाहिए। राहुकाल में विवाह, सगाई, मुंडन, यात्रा, धन–निवेश एवं हवन की पूर्णाहुति भी नहीं दिया जाना चाहिए।

राहू भ्रमण चक्र

यामार्ध	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	पश्चिम	अग्नि	वायु	उत्तर	दक्षिण	नैरित	इशान
द्वितीय	अग्नि	उत्तर	दक्षिण	नैरित	इशान	पुर्व	पश्चिम
तृतीय	उत्तर	नैरित	इशान	पुर्व	पश्चिम	वायु	अग्नि
चतुर्थ	नैरित	पुर्व	पश्चिम	वायु	अग्नि	दक्षिण	उत्तर
पंचम	पुर्व	वायु	अग्नि	दक्षिण	उत्तर	इशान	नैरित
षष्ठ	वायु	दक्षिण	उत्तर	इशान	नैरित	पश्चिम	पुर्व
सप्तम	दक्षिण	इशान	नैरित	पश्चिम	पुर्व	अग्नि	वायु
अष्ठम	इशान	पश्चिम	पुर्व	अग्नि	वायु	उत्तर	दक्षिण

✓ **द्यूतक्रीड़ा, युद्ध, विवाद और यात्रा में सम्मुखस्थ राहू अशुभ होता है।**

होरा काल

शुभ कार्य करने से पहले मुहूर्त साधने की परंपरा आदि काल से ही चली आ रही है। भारतीय ज्योतिष में होरा चक्र का बहुत ही महत्व है। शुभ और अशुभ कर्म फल की प्राप्ति के लिये होरा काल का उपयोग किया जाता हैं। अहोरात्र शब्द से 'अ' और 'त्र' हटाने के बाद होरा शब्द बनता है। लग्न और राशि के आधे भाग (१५ अंश) की होरा संज्ञा होती है अर्थात एक होरा होती है।

होरा मुहूर्तों में किया जाने वाला हर कार्य सिद्ध होता है। सात ग्रहों के सात होरा होते हैं, जो दिन रात के २४ घंटों में घूमकर मनुष्य को कार्य सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी शुभ अवसर प्रदान करते हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार एक दिन (दिन–रात)में २४ होराएँ होती हैं जिन्हें हम २४ घंटो के रूप में जानते हैं। प्रत्येक होरा एक घंटे का होता है, जिस दिन जो वार होता है, उस वार के सूर्योदय के समय १ घंटे तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद एक घंटे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घंटे तक रहता है।

इस क्रम से २४ घंटे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय के समय उसी (अगले) वार का होरा आता है। सूर्य की होरा राजसेवा के लिये उत्तम है। चन्द्रमा की होरा सर्व कार्य सिद्ध करने के लिये शुभ है। मंगल की होरा युद्ध, कलह, विवाद, लडाई झगडे के लिये, बुध की होरा ज्ञानार्जन के लिये शुभ है। गुरु की होरा विवाह के लिये, शुक्र की होरा विदेशवास के लिये, शनि की होरा धन और द्रव्य इकट्ठा करने के लिये शुभ है।

❖ ग्रह की होरा विभिन्न कार्य हेतु ऐसे प्रयोग में लिए जाते हैं:–

- **सूर्य की होरा:** सूर्य की होरा में सरकारी नौकरी के लिए आवेदन करना, पदभार संभालना, उच्च अधिकारियों से भेंटवार्ता करना, टेंडर के लिए आवेदन एवं माणिक रत्न धारण करना शुभ रहता है।
- **चंद्र की होरा:** चंद्र की होरा सभी प्रकार कार्य के लिए शुभ माना गया हैं। इसके अलावा चंद्र की होरा में बागवानी, खाद्य संबंधी क्रियाएँ, समुद्र व चांदी से संबंधित कार्य एवं मोती धारण करने के लिए बहुत शुभ मानी जाती है।
- **मंगल की होरा:** मंगल की होरा में पुलिस व अदालती मामलों से संबंधित कार्य करना शुभ होता है। इसके अलावा इस होरा में नौकरी ज्वॉइन करना, सट्टा लगाना, उधार देना, किसी सभा–समिति में हिस्सा लेना, मूंगा एवं लहसुनिया रत्न धारण करना शुभ फलदायी माना जाता है।
- **बुध की होरा:** बुध की होरा में नए व्यापार शुरू करना लाभकारी होता है। इसके अलावा इस होरा में लेखन व प्रकाशन का कार्य करना, प्रार्थना पत्र देना, विद्यारंभ करना, कोष संग्रह करना और पन्ना रत्न धारण करना भी शुभ माना जाता है।
- **गुरु की होरा:** गुरु की होरा में उच्च अधिकारियों भेंट करना, शिक्षा विभाग में जाना व शिक्षक से मिलना, विवाह संबंधी कार्य करना और गुरु ग्रहों की रत्न धारण करना शुभ माना जाता है, अर्थात इन कार्यों को करने में आपको सफलता मिलता है।
- **शुक्र की होरा:** शुक्र ग्रह की होरा काल में जातकों के लिए नए वस्त्र पहनना, आभूषण ख़रीदना अथवा उसे धारण करना, फ़िल्म जगत से संबंधित कार्य करना, मॉडलिंग करना, यात्रा पर जाना एवं हीरा व ओपल रत्न धारण करना शुभ माना जाता है।
- **शनि की होरा:** शनि की होरा में मकान की नींव रखना अच्छा माना जाता है। इसके साथ इस होरा काल में कारखाना शुरू करना, वाहन अथवा भूमि ख़रीदना एवं शनि व् राहू ग्रह की रत्न धारण करने के लिए प्रशस्त माना जाता है।

गुलिक काल

दिन मान या रात्रि मान का हर एक भाग का एक एक ग्रह अधिपति होते है। शनि ग्रह जिस भाग का अधिपति होते है उसी भाग को ही गुलिक कहा जाता है। जिस दिन का दिनमान निकालना हो उस दिन का पहले भाग का अधिपति बारेश होते है एवं क्रमानुसार दूसरे ग्रह अधिपति होते है। जैसे रविवार के दिन पहले भाग का अधिपति सूर्य, द्वितीय भाग का अधिपति चंद्र .. सोमवार के दिन पहले भाग का अधिपति चंद्र दूसरे भाग का अधिपति मंगल।

रात्रि का गुलीक निर्माण के लिए रात्रि मान को ८ भाग करके पहले भाग का अधिपति बारेश से पंचम ग्रह तत्पश्चात दूसरे भागों का अधिपति बारेश से पंचम ग्रहों से क्रमानुसार होती है । एवं शनि जिस भाग का अधिपति बनता है वो भाग गूलिक होता है ।

गुलिक गणना में दिनमान या रात्रि मान में सूर्यादि ७ ग्रह ही अधिपति होते है एवं अंतिम भाग निरुक्त रहता है । शनि द्वारा शासित सप्ताह के प्रत्येक दिन लगभग १ घंटा ३० मिनट की अवधि का समय होता है । गुलिक काल को गुलिका के रूप में भी जाना जाता है मतलब खिलने का समय– इस अवधि में किसी भी गतिविधि के सकारात्मक, अच्छे और विकास उन्मुख परिणाम मिलते हैं ।

गुलिक काल दिन के महत्वपूर्ण समयों में से एक है जिसमें किसी के भाग्य को प्रभावित करने की शक्ति होती है । 'गुलिक काल' को किसी भी नई परियोजना को शुरू करने या किसी महत्वपूर्ण कार्य को शुरू करने के लिए एक अच्छा समय माना जाता है । व्यापक रूप से यह धारणा है कि गुलिका काल में जो भी कुछ कार्य किया जाता है वह फिर से करना पड़ता है अर्थात घटित होता है ।

गुलिक काल के दौरान गृह प्रवेश करना, सोना खरीदना या किसी मांगलिक कार्य के लिए बहुत अच्छा माना गया है । गुलिक काल में किसी व्यक्ति का अंतिम संस्कार अथवा विवाह आदि करने से बचना चाहिए, यात्रा भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि कर्मों के दोहराए जाने की काफी संभावना होती है । इसलिए गुलिक काल के दौरान कोई भी अशुभ कार्य न करने की सलाह दी जाती है ।

यमगंडम

यमगंडम/यमघंटक काल को मृत्यु काल भी कहा जाता है । यमगंडा काल को केतु काल के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दिन के १.५ घंटे की यमगंडा काल पर केतु ग्रह शासन करता है । यमगंडा काल का अर्थ है "कार्य की मृत्यु" का समय, इसलिए यमघंटक/यमगंडा काल को अत्यंत अशुभ माना जाता हैं । यमगंडा काल के दौरान कोई नया काम या मांगलिक कार्य शुरू करने की सलाह नहीं दी जाती है ।

हालाँकि, इस काल के दौरान अंतिम संस्कार या दाह संस्कार, इस उम्मीद में किए जाते हैं, कि आत्मा मोक्ष प्राप्त करेगी । यमगंड काल निर्णय के लिए प्रत्येक दिन को आठ खंडों में विभाजित करके रविवार पांचवां खंड, सोमवार चौथा खंड, मंगलवार तीसरा खंड, बुधवार दूसरा खंड, गुरुवार पहला खंड, शुक्रवार सातवां खंड एवं शनिवार छठा खंड यमगंड काल की अवधि होती है ।

योगिनी चक्र विचार

प्रतिपदा और नवमी को योगिनी पुर्व दिशा में, तृतीया और एकादशी को योगिनी आग्नेय कोण में, पंचमी ओर त्रयोदशी के दिन योगिनी दक्षिण दिशा में, चतुर्थी ओर द्वादशी के दिन योगिनी नैऋत्य दिशा में, षष्ठी ओर चतुदर्शी के दिन योगिनी पश्चिम दिशा मे रहती है। सप्तमी ओर पुर्णिमा के दिन योगिनी व्यावय दिशा में, द्वितीय ओर दशमी तिथि को योगिनी उत्तर दिशा में, अष्टमी ओर अमावस्या में योगिनी ईशान दिशा मे रहती है।

यात्राकाल में योगिनी बाई तरफ हो तो सुखदायी होती है, पिछे हो तो कार्य मे सिद्धि देने वाली और योगिनी दाई तरफ हो तो धन का नाश करने वाली होती है। एवं योगिनी यात्रा करते समय सन्मुख हो तो मृत्यु तुल्य कष्टकारी होती हैं। योगिनी दक्षिण भाग या सम्मुख में रखके कोई भी शुभ कार्य करने से भी इसका अशुभ फल की प्राप्ति होती है।

योगिनी चक्रम

दिशा	**पूर्व**	**पश्चिम**	**उत्तर**	**दक्षिण**
तिथि	१ / ९	६ / १४	२ /१०	५ / १३
विदिशा	इशान	आग्नेय	नैरित्य	वायव्य
तिथि	३० / ८	३ / ११	४ /१२	७ / १५

पंचक

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार चंद्रमा जब गोचर में कुंभ और मीन राशि से होकर गुजरता है, तो यह समय अशुभ माना जाता है। क्यौकी चन्द्रमा इस दौरान धनिष्ठा से लेकर शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद एवं रेवती इन्ह पंच नक्षत्रो से होते हुए गुजरता है, इस कारण इन्ह समय को पंचक कहा जाता है। पंचक धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण से प्रारंभ होकर रेवती नक्षत्र के अंतिम चरण तक रहता है। मान्यता है कि इन दिनों में मरने वाले व्यक्ति परिवार के अन्य पांच लोगों को भी साथ ले जाते हैं।

- ✓ **पंचक ५ प्रकार के होते हैं:** १)रोग पंचक २) राज (नृप) पंचक ३)अग्नि पंचक ४)मृत्यु पंचक एवं ५) चोर पंचक।

१) **रोग पंचक:** रविवार से शुरू होने वाले पंचक रोग पंचक होते हैं। इस पंचक में किसी तरह का शुभ कार्य नहीं किया जाता है। इस दौरान पंचक में पांच दिनों के लिये शारीरिक और मानसिक रुप से काफी यातनाएं झेलनी पड़ सकती है इसलिये स्वास्थ्य के प्रति विशेष रुप से सावधान रहने की आवश्यकता होती है।

२) **राज पंचक:** सोमवार से शुरू होने वाले पंचक को राज पंचक कहते हैं। यह बहुत ही शुभ पंचक होता है। लकिन इस दौरान किसी नई नौकरी को ज्वाइन करना अशुभ माना जाता है, हालाकी नौकरी सरकारी हो तो उसके लिये इसे शुभ माना गया है। क्यौकी सरकारी कामों में सफलता और संपत्ति से जुड़ा कार्यों के लिए यह पंचक शुभ होता है। यह नियम बुधवार पंचक के लिए भी लागू होते हैं।

३) **अग्नि पंचक:** मंगलवार से शुरू होने वाले पंचक को अग्नि पंचक कहा जाता है। इस पंचक में कोर्ट–कचहरी और विवाद आदि के फैसले को लेकर कार्य किए जा सकते हैं। परन्तु इस पंचक में किसी तरह का निर्माण और मशीनरी कार्यों को करना अशुभ होता है। घर बनाना हो या फिर एक घर से दूसरे घर में प्रस्थान करना अथवा ग्रह प्रवेश करना अग्नि पंचक के दौरान इन कार्यों को नहीं किया जाना चाहिए यह नियम गुरुवार पंचक के लिए भी लागू होते हैं।

४) **मृत्यु पंचक:** शनिवार से शुरू होने वाले पंचक को मृत्यु पंचक कहा जाता है। यह पंचक बहुत ही अशुभ होते है, दौरान किसी भी तरह के जोखिम भरे कार्य नही करनी चाहिए। विवाह जैसे शुभ कार्य की भी इस दौरान मनाही होती है। इसमें जान और माल का नुक्सान हो सकता है इसलिये इसे मृत्य पंचक कहा जाता है।

५) **चोर पंचक:** शुक्रवार से शुरू होने वाले पंचक को चोर पंचक कहा जाता है। इस पंचक के दौरान यात्रा नही करनी चाहिये एवं व्यावसायिक रुप से लेन–देन करने से भी आर्थिक नुक्सान होने का खतरा बना रहता है।

पंचक के प्रभाव से घनिष्ठा नक्षत्र में अग्निभय, शतभिषा नक्षत्र में कलह, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में रोग, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में दंडभय एवं रेवती नक्षत्र में धन हानि की संभावना होती है। पंचक लगने पर लकड़ी और घास का संग्रह, दक्षिण दिशा की यात्रा, मृतक का दाह संस्कार, खाट (चारपाई) खरीदना, घर की छत नहीं बनवानी चाहिए, मकान और दुकान बनाना भी त्याज्य होता है। क्योकि पंचकों में यह सब कार्य करने पर अग्नि भय, रोग, दण्ड, हानि और शोक होता है। गर्ग मुनि के मतानुसार पंचक के समय जो भी शुभ–अशुभ काम किये जाते है वह ५ गुना फल देते है। इसलिए पंचक काल में किसी की मृत्यु होने पर शव के पास ५ कुश के पुतले बनाकर शव के साथ विधि विधान से अंतिम संस्कार करने का विधान है।

विविध योगादि ज्ञातम

सर्वार्थ सिद्धि योग

वार और नक्षत्र के संयोग को सर्वार्थ सिद्धि योग कहते हैं । यह योग विशेष वारों को पड़ने वाले विशेष नक्षत्रों के योग से बनता है। जैसे: सोमवार, गुरुवार अथवा शुक्रवार के दिन यदि रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा और श्रवण नक्षत्र होने से सर्वार्थ सिद्धि योग बनता है। एवं इस दिन द्वितीया और एकादशी तिथि को छुड़कर कोई भी तिथि हो, यह योग नष्ट नहीं होता है। क्यौकी द्वितीया और एकादशी तिथि होने पर यह शुभ योग अशुभ मुहूर्त में बदल जाता है।

सर्वार्थ सिद्धि योग के दौरान किए गए सभी कार्य सफल होते हैं, नए कार्य की शुरुआत करने के लिए भी यह एक उत्तम समय माना जाता है । धन प्राप्ति और सुख, समृद्धि के लिए भी यह योग शुभ माना जाता है। कोई विद्या ग्रहण करने के लिए या कोई नया कौशल सीखने के लिए यह योग लाभकारी होता है।

नौकरी पर जाना, गृह कार्य प्रारंभ करना जैसे काम भी किए जा सकते है, सर्वार्थ सिद्धि योग में किए गए सभी कार्य पूरे होते हैं और यह शुभ फलदायी भी होते हैं। परन्तु सर्वार्थ सिद्धि योग द्वितिया या फिर एकादशी के दिन बन रहा हो तो इसे शुभ नहीं माना जाता है। अगर मंगलवार और शनिवार के दिन बन रहा हो तो इस योग में लोहा खरीदना अशुभ माना जाता है ।

सर्वार्थ सिद्धि योग में विवाह करना सही नहीं माना जाता है, इस योग में यात्रा करना और गृह प्रवेश करना भी अशुभ माना जाता है। सर्वार्थ सिद्धि योग अगर गुरु–पुष्य योग से बन रहा हो और शनि रोहणी नक्षत्र योग से निर्मित तो भी यह योग शुभ नहीं माना जाता है।

सर्वार्थ सिद्ध मुहूर्तए

हमारे शास्त्रों में शुभ मुहूर्त का विशेष महत्व बताया गया है। कोई भी शुभ कार्य बिना शुभ मुहूर्त के करना अच्छा नहीं माना जाता है। समय की इसी महत्ता को और अधिक शुभता प्रदान करने के लिए कुछ सर्वसिद्ध तिथि भी होते हैं, ऐसी तिथियों को 'स्वयं सिद्ध मुहूर्त' कहा जाता है।

हर वर्ष में कुल पांच सिद्ध मुहूर्त होते हैं: १) फुलेरा या फुलरिया दूज, २) देवउठनी एकादशी, ३) बसंत पंचमी, ४) आश्विन शुक्ल दशमी (विजय दशमी) और ५) वैशाख शुक्ल

तृतीया (अक्षय तृतीया) है, इन पांच दिनों में मुहूर्त न होते हुए भी शुभ कार्य किए जा सकते हैं। किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती है। परंतु विवाह इत्यादि में मुहूर्तों को ही स्वीकार करना श्रेयस्कर रहता है।

- ✓ **फुलेरा दूज –** फुलेरा दूज जिसे फुलेरा दौज भी कहा जाता है। यह दिन सगाई या विवाह के लिए सर्वोत्तम माना गया है। इस दिन पर श्रीकृष्ण और राधा रानी के साथ फूलों की होली खेली जाती है।
- ✓ **देवउठनी एकादशी –** कार्तिक माह की एकादशी तिथि को भगवान विष्णु चार महीने के योग निद्रा से जागते हैं। इसलिए यह भी एक सर्वसिद्ध मुहूर्त माना गया है। हिंदू धर्म में देवउठनी एकादशी का विशेष महत्व है।
- ✓ **वसंत पंचमी –** वसंत पंचमी माघ माह की शुक्ल पंचमी के दिन मनाई जाती है। इस तिथि पर बुद्धि देने वाली देवी सरस्वती की पूजा की जाती है। इसे भी एक सर्वसिद्ध मुहूर्त माना जाता है।
- ✓ **विजयादशमी –** विजयादशमी जिसे दशहरा नाम से भी जाना जाता है, इसी दिन पर ही भगवान राम ने रावण का वध किया था। इसलिए इस दिन को बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है।
- ✓ **अक्षय तृतीया –** वेदादि शास्त्रों में अक्षय तृतीया को बहुत ही शुभ दिन माना गया है। इस दिन पर माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। साथ ही इस दिन को भगवान परशुराम के जन्मोत्सव के रूप में भी मनाया जाता है।

अभिजित मुहूर्त

प्रत्येक दिन का मध्य–भाग अभिजित मुहूर्त कहलाता है, जो मध्य से पहले और बाद में २ घड़ी अर्थात् ४८ मिनट का होता है। दिनमान के आधे भाग को स्थानीय सूर्योदय के समय में जोड़ देने से मध्य काल स्पष्ट हो होता है। जिसमें २४ मिनट घटाने और २४ मिनट जोड़ने पर अभिजित्का प्रारंभ काल और समाप्ति काल प्राप्त होता है। इस अभिजित्काल में लगभग सभी दोषों के निवारण करने की अद्भुत शक्ति होते है। मुंडन आदि मांगलिक कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त न मिलने पर अभिजित्मुहूर्त काल में मांगलिक कार्य किए जा सकते हैं।

दुर्मुहूर्त

हिंदू ज्योतिष में, 'दुर मुहूर्त' एक अशुभ समय या अवधि को संदर्भित करता है। जिसे नए उद्यम या महत्वपूर्ण गतिविधियों को शुरू करने के लिए प्रतिकूल माना जाता है। यदि किसी बच्चे का जन्म दुर मुहूर्त के दौरान होता है, तो अक्सर यह माना जाता है कि जन्म कुछ नकारात्मक अर्थ या चुनौतियों को लेकर आ सकता है। सोमवार को ब्रह्मरक्ष, मंगलवार को वह्नि और पित्र्य,

बुधवार को अभिजित्, गुरुवार को तोय और रक्ष, शुक्रवार को ब्रह्मरक्ष तथा पित्र्य, शनिवार को ईश और सर्प नामक मुहूर्त दुर्मुहूर्त कहे गये हैं। इसलिए यह सभी शुभ कर्मों में त्याज्य है।

पुष्कर योग

पुष्कर योग दो प्रकार का होता है, १) द्विपुष्कर एवं २) त्रिपुष्कर। विशेष दिन, नक्षत्र और तिथि के दुर्लभ संयोग से यह योग वनता है। जैसे: रविवार, मंगलवार या शनिवार के दिन द्वितीया, सप्तमी व द्वादशी में से कोई एक तिथि हो एवं उस दिन चित्रा, मृगशिरा अथवा धनिष्ठा नक्षत्र हो तो 'द्विपुष्कर' नामक योग बनता है। और यदि रविवार, मंगलवार अथवा शनिवार के दिन; द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी में से कोई एक तिथि हो और विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु अथवा कृत्तिका नक्षत्र का संयोग हो तो 'त्रिपुष्कर' नामक योग बनता है।

शास्त्रों के अनुसार "द्विपुष्कर योग" में जो भी कार्य किया जाता है, उसकी दो वार पुनरावृत्ति होती है अर्थात लाभ या हानि दुगनी होती है। एवं त्रिपुष्कर योग में जो भी कार्य किया जाता है उसका तिन वार पुनरावृत्ति होती है। इसलिए द्विपुष्कर अथवा त्रिपुष्कर योग में मृतक का दाह संस्कार अंत्योष्टि क्रिया आदि नहीं करना चाहिए। आभूषण, भूमि-संपत्ति, वाहन इत्यादि को खरीदना द्विपुष्कर और त्रिपुष्कर योग में बहुत अच्छा माना गया है। इसके अतिरिक्त पशुओं की खरीदारी करना अथवा कोई नए व्यवसाय का आरंभ करना भी इस योग के समय पर शुभ होता है।

रवि पुष्य योग

ज्योतिष शास्त्रों में रवि पुष्य योग को अत्यंत शुभ और समृद्धिदायक माना जाता है। इस दिन किए गए कार्यों का फल कई गुना अधिक मिलता है। रवि पुष्य योग में किए गए दान, स्नान, पूजा-पाठ और जप-तप का विशेष महत्व होता है। सभी २७ नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र सबसे महत्वपूर्ण है, जब रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र पड़ता है तव रवि पुष्य योग बनता है।

रवि पुष्य योग में सभी प्रकार के मांगलिक कार्य करना, सोना खरीदना, प्रॉपर्टी और वाहन आदि की खरीदारी शुभ होता है। रवि पुष्य योग में गाय माता को गुड़ खिलाना और मंदिर में दीपक जलाना अत्यंत लाभदायक माना जाता है। लेकिन रवि पुष्य योग में विवाह नहीं करना चाहिए।

गुरु पुष्य योग

गुरु पुष्य योग को अमृत योग या गुरुपुष्यामृत योग आदि नामों से जाना जाता है। यह योग शुभ काम, निवेश, व्यवसाय और खरीदारी के लिए विशेष होता है। ज्योतिष के अनुसार पुष्य नक्षत्र के स्वामी ग्रह बृहस्पति हैं, जब गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र होते है, तब गुरु पुष्य योग बनता है।

इस योग में की गई खरीदारी अक्षय रहती है। गुरु पुष्य नक्षत्र नए व्यवसाय शुरू करना, कृषि भूमि, घर, वाहन, सोने–चांदी की खरीद करना तथा बही–खाता शुरू करने के लिए शुभ माना जाता है।

मधु सर्प योग

मधु सर्प योग एक अशुभ योग होता है। यह योग शहद में जहर मिलाने के समान है। इसलिए इस योग को मधु सर्प योग कहा जाता है। कुछ तिथि की विशेष संयोजन होने शुभ योग भी अशुभ हो जाते हैं। जैसे: रविवार को हस्त नक्षत्र होने पर अमृत सिद्ध योग बनता है, लेकिन यदि पंचमी तिथि हो तो यह मधु सर्प योग में परिवर्तित हो जाता है।

दिन	नक्षत्र	तिथि	दिन	नक्षत्र	तिथि
रविवार	हस्त	पंचमी	गुरूवार	पुष्य	नवमी
सोमवार	मृगशिरा	षष्टी	शुक्रवार	रेवती	दशमी
मंगलवार	अश्विनी	सप्तमी	शनिवार	रोहिणी	एकादशी
बुधवार	अनुराधा	अष्ठमी			

अमृत सिद्धि योग

"अमृत सिद्धि योग" किसी कार्य या उद्यम को शुरू करने के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है। इस योग में कोई भी महत्वपूर्ण काम शुरू करना अनुकूल परिणाम सुनिश्चित करता है। परन्तु अमृत सिद्धि योग होने पर भी मंगलवार को गृह प्रवेश एवं गृह निर्माण हेतु शिलान्यास आदि कार्य नहीं करने चाहिए। गुरुवार को अमृत योग होने पर विवाह मुहूर्त पर विचार नहीं करना चाहिए। शनिवार को अमृत योग होने पर भी यात्रा, विशेषकर दक्षिण दिशा की यात्रा से बचना चाहिए।

- **अमृत योग:** रविवार को मूल, सोमवार को श्रवण, मंगलवार को उत्तरा भाद्रपद, बुधवार को कृतिका, गुरूवार को पुनर्वसु, शुक्रवार को पूर्वा फाल्गुनी तथा शनिवार को स्वाति नक्षत्र हो तो अमृत योग होता है जो सभी कार्यों में सिद्धि प्रदायक होता है।
- **सिद्धि योग:** रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशिरा, मंगलवार को अश्वनी, बुधवार को अनुराधा, गुरूवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती तथा शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो तो सिद्धि योग होता है जो सभी कार्यों में सिद्धि देने वाला होता है।

दग्ध, विष, हुताशन योग

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार दग्ध, विष, हुताशन योग कुछ विशेष तिथियो एवं वार के संयोजन से बननते है, जिसे सभी शुभ कार्यो एवं विशेषकर यात्रा के लिए त्यागना चाहिए। जो निम्नवत है:–

दग्ध योग	विष योग	हुताशन योग
रविवार को द्वादशी	रविवार को चतुर्थी	रविवार को द्वादशी
सोमवार को एकादशी	सोमवार को षष्ठी	सोमवार को षष्ठी
मंगलवार को पंचमी	मंगलवार को सप्तमी	मंगलवार को सप्तमी
बुधवार को तृतीया	बुधवार को द्वितीया	बुधवार को अष्टमी
गुरुवार को षष्ठी	गुरुवार को अष्टमी	गुरुवार को नवमी
शुक्रवार को अष्टमी	शुक्रवार को नवमी	शुक्रवार को दशमी
शनिवार को नवमी	शनिवार को सप्तमी	शनिवार को एकादशी

विविध मुहुर्त ज्ञातम

सूतिका स्नान मुहूर्त

शास्त्रानुसार रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाति, अश्विनी और अनुराधा नक्षत्रों में रवि, मंगल और बृहस्पति वार में प्रसूता स्त्री को स्नान कराना शुभ माना जाता है। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्रवण, मघा, भरणी, विशाखा, कृत्तिका, मूल और चित्रा नक्षत्रों में, बुध और शनि वार में एवं अष्टमी, षष्ठी, द्वादशी, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथियों में प्रसूता स्त्री को स्नान कराना वर्जित है।

अन्नप्राशन मुहूर्त

लग्न से पहले, तीसरे, चौथे, पाँचवें, सातवें और नौवें स्थान में शुभग्रह हों; दसवें स्थान में कोई ग्रह न हो, तृतीय, षष्ठ और एकादश स्थान में पापग्रह हों और छठे तथा आठवें स्थान को छोड़ अन्य स्थानों में चन्द्रमा स्थित हो ऐसे लग्न में वालको के लिए छठे, आठवें, दसवें इत्यादि सम मासों में और कन्याओ के लिए पाँचवें, सातवें, नवें इत्यादि विषम मासों में अन्नप्राशन करना शुभ होता है। चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी, अष्टमी, अमावस्या और द्वादशी तिथि को छोड़ अन्य तिथियों में; जन्मराशि अथवा जन्मलग्न से आठवीं राशि, आठवाँ नवांश, मीन, मेष और वृश्चिक को छोड़ अन्य लग्नों में; रोहिणी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, पुष्य, अश्विनी, अभिजित्, पुनर्वसु, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा नक्षत्रों में अन्नप्राशन करना प्रसस्त रहता है।

कर्णवेध मुहूर्त

चैत्र, पौष, आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक, जन्ममास, रिक्तातिथि और जन्मतारा को छोड़कर जन्म से छठे, सातवें, आठवें महीने में अथवा बारहवें या सोलहवें दिन, सोम, बुध, गुरु, शुक्र में और श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में बालक का कर्णवेध शुभ होता है । शुभग्रह १/३/४/५/७/९/१०/११ स्थानों में, पापग्रह ३/६/११ स्थानों में शुभ होते हैं, अष्टम में कोई ग्रह न हो एवं यदि गुरु लग्न में हो तो विशेष उत्तम होता है।

मुण्डन मुहूर्त

जन्म से तीसरे, पाँचवें, सातवें इत्यादि विषम वर्षों में; अष्टमी, द्वादशी, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, प्रतिपदा, षष्ठी, अमावस्या, पूर्णमासी और सूर्य-संक्रान्ति को छोड़ अन्य तिथियों में; चैत्र महीने को छोड़ उत्तरायण में; सोम, बुध, शुक्र और बृहस्पति वारों में; शुभ ग्रहों के लग्न अथवा नवांश में; जन्मलग्न अथवा जन्मराशि से आठवीं राशि को छोड़कर अन्य लग्न व राशि में, लग्न से आठवें स्थान में शुक्र को छोड़ अन्य ग्रहों के न हो; ज्येष्ठा, मृगशिर, रेवती, चित्रा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, हस्त, अश्विनी और पुष्य नक्षत्र में, लग्न में तृतीय एकादश और षष्ठ स्थान में पापग्रहों के रहते हुए मुण्डन कराना शुभ होता है।

वाहन खरीदने का शुभ मुहूर्त

वाहन खरीदने के लिए सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार को शुभ माना जाता है। प्रतिपदा, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, अष्टमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी और पूर्णिमा तिथि एवं अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एवं रेवती नक्षत्र शुभ होते है। वाहन खरीदने के लिए चर एवं द्विस्वभावी लग्न ही शुभ होता है।

व्यापार शुरू करने का मुहूर्त

नया व्यापार तथा नई दुकान को शुरू करने के लिए अश्वनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रेवती नक्षत्र एवं रविवार, सोमवार, बुधवार, बृहस्पतिवार, शुक्रवार शुभ होते है। व्यापार कोई भी हो वह शुक्र और गुरु कारक होता है, इस लिए गुरु शुक्र अस्त नहीं होने चाहिए। स्वयं के नाम कि राशि से चंद्रमा चौथा छठा आठवां बारहवां भी नहीं होना चाहिए। रिक्ता तिथि, अमावस्या, श्राद्ध, सुतक-सावड़, होलाष्टक आदि भी वर्जित होते है। द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी, त्रयोदशी तिथियों में बड़े-बड़े व्यापार सम्बन्धी कारोबार करना शुभ होता है।

विद्यारम्भ मुहूर्त

मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा (पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी), पुष्य, आश्लेषा नक्षत्रों में; रवि, गुरु, शुक्र इन वारों में; षष्ठी, पंचमी, तृतीया, एकादशी, द्वादशी, दशमी, द्वितीया इन तिथियों में और लग्न से नौवें, पाँचवें, पहले, चौथे, सातवें, दसवें स्थान में शुभग्रहों के रहने पर विद्यारम्भ करना शुभ है। मतान्तर से तीनों उत्तरा, रेवती और अनुराधा में भी विद्यारम्भ करना शुभ कहा गया है।

दीक्षा मुहूर्त

चैत्रमास की शुक्ल त्रयोदशी, बैसाख की शुक्ल एकादशी व् तृतीया यानी अक्षय तृतीया, ज्येष्ठ की कृष्णचतुदशी व् शुक्लदशमी, आषाढ़ की शुक्लनवमी, श्रावण की नागपंचमी, भाद्र की रोहिणी युगाष्टमी (जन्माष्टमी), कार्तिक की महाअष्टमी, अग्रहायण की शुक्लाष्टमी, पौष की चतुदशी, फाल्गुन की शुक्ल एकादशी ये सभी तिथियों में दक्षिणायन और उत्तरायण संक्रांति, ग्रहण के समय, युगाद्या, मन्वन्तर और महाष्टमी और महानवमी में दीक्षा अत्यंत शुभ होती है।

द्विरागमन मुहूर्त

विवाह के उपरान्त वधू अपने पति के घर में नव वधू प्रवेश होने के बाद लौटकर अपने पिता के घर आने के बाद पुनः दुबारा पति के घर आगमन को द्विरागमन कहा जाता है। विवाह के एक वर्ष बाद विषम वर्षों में, कुम्भ, मेष, वृश्चिक राशि के सूर्य में, सूर्य और गुरु की शुद्धि के साथ शुभ ग्रह के वार (सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार), मिथुन, मीन, कन्या, तुला और वृष लग्नों में से किसी एक में; लघु संज्ञक अश्विनी, हस्त, पुष्य और अभिजित; ध्रुवसंज्ञक (उतरात्रय, रोहिणी), चरसंज्ञक (श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु और स्वाती), मूल नक्षत्रों में द्विरागमन मुहूर्त शुभ होता है। विवाह के दिन से २, ३, ४, ५, ६, ९, १०, १२, १६ दिन अथवा विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ होता है। द्विरागमन में सम्मुख अथवा दक्षिण भाग में शुक्र त्याज्य है। दीपावली के दिन द्विरागमन सर्वदा शुभ होता है। सिंहस्थ गुरु व सन्मुख शुक्र या गुरु युक्त सिंहस्थ शुक्र होने पर भी दीपावली के दिन पति के घर में वधू का प्रवेश शुभ होता है। द्विरागमन में विष्कम्भ, अतिगण्ड, शूल, गण्ड, वज्र, व्यतीपात, परिघ, वैधृति, व्याघात और हर्षण योग; विष्टि करण, पितृपक्ष, मलमास, धनुस्थ और मीनस्थ सूर्य, ग्रहण काल आदि त्याज्य होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त

मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, चित्रा, हस्त, स्वाति, रोहिणी, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में; सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि वारों में और

द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा तिथियों में वैशाख, श्रावण, माघ, पौष, फाल्गुन मास में लग्नशुद्धि के साथ गृहारम्भ श्रेष्ठ होता है।

गृहप्रवेश मुहूर्त

नतुन गृह में प्रवेश के लिए उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, रोहिणी, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती युक्त सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि वार में; लग्नशुद्धि के साथ २/३/५/६/७/१०/११/१२/१३ तिथि शुभ रहता है। एवं जीर्ण गृह में प्रवेश के लिए कार्तिक, मार्गशीर्ष, श्रावण, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ मास में शतभिषा, पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, नक्षत्रों में; सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि वारों में और द्वितीया, तृतीया, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी तिथि शुभ होते है।

कुआं खुदवाने का मुहूर्त

हस्त, अनुराधा, रेवती, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों में, बुध, गुरु, शुक्र वारों में और रिक्ता तिथि (४/९/१४) को छोड़ अन्य तिथियों में कुआं खुदवाना शुभ होता है।

देवगृह निर्माण मुहूर्त

माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, मार्गशीर्ष, पौष (मतान्तर से) मास में पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, मृगशिरा, श्रवण, अश्विनी, चित्रा, पुनर्वसु, विशाखा, आर्द्रा, हस्त, धनिष्ठा और रोहिणी नक्षत्र युक्त सोम, बुध, गुरु, शुक्र और रवि वारों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी, द्वादशी और त्रयोदशी तिथियों में देवगृह (मन्दिर) निर्माण करना शुभ है। एवं सोम, बुध, गुरु और शुक्र वार २/५/७/११/१२/१३ तिथियों में मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, श्रवण, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों में मण्डप बनाना शुभ रहता है।

प्रतिमा निर्माण व् प्रतिष्ठा मुहूर्त

पुष्य, रोहिणी, श्रवण, चित्रा, धनिष्ठा, आर्द्रा, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, हस्त, मृगशिरा, रेवती और अनुराधा इन नक्षत्रों में सोम, गुरु और शुक्र इन वारों में एवं द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, एकादशी और त्रयोदशी तिथियों में प्रतिमा निर्माण कार्य करना शुभ होता है। एवं प्रतिष्ठा के लिए अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रेवती इन नक्षत्रों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्र वार

युक्त शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया, पंचमी, दशमी, त्रयोदशी और पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और पंचमी तिथिया शुभ है।

मंन्त्र सिद्धि व् हवन का मुहूर्त

मन्त्र सिद्ध करने के लिए उत्तराफाल्गुनी, हस्त, अश्विनी, श्रवण, विशाखा, मृगशिरा नक्षत्र युक्त रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में; द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, त्रयोदशी, पूर्णिमा तिथिया शुभ होता है। सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उसमें तीन–तीन नक्षत्रों का एक–एक त्रिक होता है, ऐसे सत्ताईस नक्षत्रों के नौ त्रिक होते हैं। इनमें पहला सूर्य का, दूसरा बुध का, तीसरा शुक्र का, चौथा शनैश्चर का, पाँचवाँ चन्द्रमा का, छठा मंगल का, सातवाँ बृहस्पति का, आठवाँ राहु का और नौवाँ केतु का त्रिक होता है। हवन के दिन का नक्षत्र जिसके त्रिक में पड़े उसी ग्रह के अनुसार फल प्राप्ति होता है। रवि, मंगल, शनि, राहु और केतु ग्रहों के त्रिक में हवन करना वर्जित होता है।

वैदिक हवन में अग्निवास का भी विशेष महत्व होता है, दिन और तिथि के हिसाब से अग्नि अलग–अलग लोकों में वास करती है। शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से लेकर अभीष्ट तिथि तक गिनने से जितनी संख्या हो उसमें एक और जोड़े; फिर रविवार से लेकर इष्टवार तक गिनने से जितनी संख्या हो, उसको भी उसी में जोड़े। जोड़ने से जो राशि आए उसमें ४ का भाग दे। यदि तीन अथवा शून्य शेष रहे तो अग्नि का वास पृथ्वी में होता है, यह हवन करने के लिए उत्तम होता है। एक शेष में अग्नि का वास आकाश में होता है, इसका फल प्राणों को नाश करने वाला होता है एवं दो शेष में अग्नि का वास पाताल में होता है, जिसका फल अर्थनाशक है। गर्भाधानादि संस्कार निमित्तक हवन, दुर्गा व् रूद्र पूजा हेतु हवन, नित्य हवन, वास्तुशांति, विष्णु प्रतिष्टा निमित्तक हवन, ग्रह शांति, नवरात्री, शतचंडी, लक्ष – कोटि हवन एवं उत्पात शांति हेतु हवन में अग्निवास देखना आवश्यक नही है।

शान्तिक और पौष्टिक कार्य हेतु मुहूर्त

अश्विनी, पुष्य, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, रेवती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पुनर्वसु, स्वाति, अनुराधा, मघा नक्षत्रों में, रिक्त तिथि (४/९/१४), अष्टमी, पूर्णमासी, अमावस्या तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में सोम, बुध, गुरु, शुक्र वारों में शान्तिक और पौष्टिक कार्य करना शुभ रहता है। लग्न से बारहवाँ और आठवाँ स्थान शुद्ध हो और कोई ग्रह नहीं हो तथा जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरा, छठा, दसवाँ, ग्यारहवाँ लग्न हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तथा शुभग्रह युक्त हों, चन्द्रमा जन्मलग्न व जन्मराशि से तीसरे, छठे, दसवें, ग्यारहवें स्थान में हो तो सभी कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है। इसे सर्वारम्भ मुहूर्त भी कहते है।

सोलह संस्कारणम

हिंदू धर्म वैज्ञानिक आधार और प्राचीन मान्यताओं पर आधारित शाश्वत धर्म है। वैज्ञानिक आधार होने से के कारण कई युग बीत जाने के बाद भी हिंदू धर्म का प्रभुत्व समाप्त नहीं हुआ है। हिंदू धर्म ग्रंथों में जन्म से लेकर मृत्यु तक के १६ संस्कारों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। सोलह संस्कार मनुष्य के पाप और अज्ञान को दूर कर विचारों को शुद्ध करता है और ज्ञान को बढ़ाता है। यह सोलह संस्कार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में विशेष महत्व रखता है।

- ✓ **षोलोह संस्कारों के क्रम इस प्रकार है:** १)गर्भाधान, २)पुंसवन, ३)सीमन्तोन्नयन, ४)जातकर्म, ५)नामकरण, ६)निष्क्रमण, ७)अन्नप्राशन, ८)चूड़ाकर्म, ९)विद्यारंभ, १०)कर्णवेध, ११)यज्ञोपवीत, १२)वेदारम्भ, १३)केशान्त, १४)समावर्तन, १५)विवाह एवं १६) अन्त्येष्टि।

इनमें पहला गर्भाधान संस्कार और मृत्यु के उपरांत अंत्येष्टि अंतिम संस्कार है। गर्भाधान के बाद पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण ये सभी संस्कार नवजात का दैवी जगत् से संबंध स्थापना के लिये किये जाते हैं। गर्भाधान से विद्यारंभ तक के संस्कारों को गर्भ संस्कार भी कहते हैं। इनमें पहले तीन (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन) संस्कार को अन्तर्गर्भ संस्कार तथा इसके बाद के छह संस्कारों को बहिर्गर्भ संस्कार कहते हैं।

गर्भ संस्कार को दोष मार्जन अथवा शोधक संस्कार भी कहा जाता है। दोष मार्जन संस्कार का तात्पर्य यह है कि शिशु के पूर्व जन्मों से आये धर्म एवं कर्म से सम्बन्धित दोषों तथा गर्भ में आई विकृतियों के मार्जन के लिये संस्कार किये जाते हैं। एवं बाद वाले छह संस्कारों को गुणाधान संस्कार कहा जाता है। नामकरण के बाद चूड़ाकर्म और यज्ञोपवीत संस्कार होता है। यज्ञोपवीत से समावर्तन संस्कार तक ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का हमारे शास्त्रों में विधान है।

वेदाध्ययन के बाद जब सामाजिक परम्परा निर्वाह करने की क्षमता व परिपक्वता आ जाती थी तो गृर्हस्थ्य धर्म में प्रवेश कराया जाता था, इसके बाद विवाह संस्कार होता है। यह गृहस्थ जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। हिन्दू धर्म में स्त्री और पुरुष दोनों के लिये यह सबसे बडा संस्कार है, जो जन्म–जन्मान्तर का होता है।

१) **गर्भाधान:** सोलह संस्कारों में गर्भाधान सब्स्कर पहला है। गृहस्थ जीवन का प्रमुख उद्देश्य श्रेष्ठ सन्तानोत्पत्ति है। इसी उद्देश्य से ही गर्भाधान संस्कार किया जाता है। इस संस्कार में विवाहित स्त्री के द्वारा मन एवं विचारों को पवित्र कर स्वस्थ रूप से गर्भधारण करती है।

२) **पुंसवन:** गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास की दृष्टि से यह संस्कार बहुत ही उपयोगी है। गर्भस्थ शिशु से सम्बन्धित इस संस्कार को शुभ नक्षत्र में सम्पन्न किया जाता है। पुंसवन संस्कार का उद्देश्य स्वस्थ एवं उत्तम संतति को जन्म देना है। गर्भाधान के दूसरे या तीसरे महीने में इस संस्कार को करने का विधान है।

३) **सीमन्तोन्नयन:** सीमन्तोन्नयन को सीमन्तकरण अथवा सीमन्त संस्कार भी कहा जाता हैं। इसका शाब्दिक अर्थ है– "सीमन्त+उन्नयन" अर्थात 'केश+ऊपर उठाना'। सीमन्तोन्नयन का अभिप्राय है सौभाग्य संपन्न होना। गर्भपात रोकने तथा गर्भस्थ शिशु एवं माता की रक्षा की उद्देश्यही यह संस्कार गर्भ धारण के छठे अथवा आठवें महीने में होता है। इस संस्कार में पति अपनी पत्नी के बालों को ऊपर की ओर उठाता है।

४) **जातकर्म:** नवजात शिशु के नालच्छेदन से पूर्व इस संस्कार को किया जाता है। मेधा, बल एवं दीर्घायु के लिये दो बूंद घी तथा छह बूंद शहद का सम्मिश्रण अभिमंत्रित कर स्वर्ण खण्ड से नवजातक को चटाने के बाद पिता यज्ञ एवं विशेष प्रार्थना करता है। एवं माता बालक को स्तनपान कराती है।

५) **नामकरण:** नामकरण संस्कार का सनातन धर्म में अधिक महत्व है। ज्योतिष विज्ञान तो नाम के आधार पर ही भविष्य की रूपरेखा तैयार करता है। जन्म के ग्यारहवें दिन यह संस्कार होता है। लेकिन अनेक कर्मकाण्डी विद्वान इस संस्कार को शुभ नक्षत्र अथवा शुभ दिन में करना उचित मानते हैं।

६) **निष्क्रमण:** निष्क्रमण का अभिप्राय है बाहर निकलना इस संस्कार में शिशु को सूर्य तथा चन्द्रमा की ज्योति दिखाने का विधान है। भगवान भास्कर के तेज तथा चन्द्रमा की शीतलता

से शिशु को अवगत कराना ही इसका उद्देश्य है। जन्म के चौथे महीने इस संस्कार को करने का विधान है।

७) **अन्नप्राशन:** अन्न जिसे शास्त्रों में प्राण कहा गया है उसको ग्रहण कर शारिरिक व मानसिक रूप से बलवान व प्रबुद्ध बना जा सकता है। स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। आहार शुद्ध होने पर ही अन्त:करण शुद्ध होता है तथा मन, बुद्धि, आत्मा सबका पोषण होता है। इसीलिए नवजातक बच्चे की अन्नप्राशन संस्कार किया जाता है।

८) **चूड़ाकर्म:** चूड़ाकर्म को मुंडन संस्कार भी कहा जाता है। शुचिता और बौद्धिक विकास की परिकल्पना से बालक के पहले, तीसरे या पांचवें वर्ष में इस संस्कार को करने का विधान है। वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ शुभ मुहूर्त में यह संस्कार सम्पन्न किया जाता है। इस संस्कार से शिशु को बुद्धि, बल और आयु की प्राप्ति होती है।

९) **विद्यारंभ:** विद्या अथवा ज्ञान ही मनुष्य की आत्मिक उन्नति का साधन है। विद्यारम्भ का अभिप्राय बालक को शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर से परिचित कराना है। प्राचीन काल में जब गुरुकुल की परम्परा थी तो बालक को वेदाध्ययन के लिये भेजने से पहले घर में अक्षर बोध कराया जाता था।

१०) **कर्णवेध:** शारीरिक व्याधि से रक्षा ही इस संस्कार का मूल उद्देश्य है। प्रकृति प्रदत्त इस शरीर के सारे अंग महत्वपूर्ण हैं। कान हमारे श्रवण द्वार हैं। कर्ण वेधन से व्याधियां दूर होती हैं तथा श्रवण शक्ति भी बढ़ती है। इसके साथ ही कानों में आभूषण हमारे सौन्दर्य बोध का परिचायक भी है।

११) **यज्ञोपवीत:** यज्ञोपवीत अथवा उपनयन धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। यह आयु को बढ़ानेवाला, बल और तेज प्रदान करनेवाला है। इस संस्कार के बारे में हमारे धर्मशास्त्रों में विशेष उल्लेख है। यज्ञोपवीत धारण का वैज्ञानिक महत्व भी है।

१२) **वेदारंभ:** वेद का अर्थ होता है ज्ञान और वेदारम्भ के माध्यम से ज्ञान को अपने अन्दर समाविष्ट करने का अभिप्राय से ही यह संस्कार किया जाता है। यज्ञोपवीत के बाद बालकों को वेदों का अध्ययन एवं विशिष्ट ज्ञान से परिचित होने के लिये गुरुकुलों में भेजा जाता है ।

१३) **केशांत:** गुरुकुल में वेदाध्ययन पूर्ण कर लेने पर आचार्य के समक्ष यह संस्कार सम्पन्न होता है। वस्तुत: यह संस्कार गुरुकुल से विदाई लेने तथा गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का उपक्रम में केशान्त संस्कार शुभ मुहूर्त में किया जाता था।

१४) **समावर्तन:** गुरुकुल से विदाई लेने से पूर्व ब्रह्मचारी का स्नान करवाकर समावर्तन संस्कार किया जाता था। विशेष मन्त्रोच्चारण के साथ सुगन्धित पदार्थो एवं औषधादि युक्त जल से भरे हुए वेदी के उत्तर भाग में आठ घड़ों के जल से स्नान करने का विधान है।

१५) **विवाह:** धर्म शास्त्र के अनुसार विवाह ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। हमारे शास्त्रों में आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख है– ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्रजापत्य, आसुर, गन्धर्व, राक्षस एवं पैशाच। वैदिक काल में ये सभी प्रथाएं प्रचलित थीं समय के अनुसार इनका स्वरूप बदलता गया, परन्तु आज भी विवाह संस्कार के परिणाम है कि हमारा समाज सभ्य और सुसंस्कृत हैं।

१६) **अन्त्येष्टि:** अन्त्येष्टि को अंतिम अथवा अग्नि परिग्रह संस्कार भी कहा जाता है। आत्मा में अग्नि का आधान करना ही अग्नि परिग्रह है। धर्म शास्त्रों की मान्यता है कि मृत शरीर की विधिवत् क्रिया करने से जीव की अतृप्त वासनायें शान्त हो जाती हैं। इसी निमित्त से ही मरने के उपरांत परिजनों के दोवारा अन्त्येष्टि संस्कार किया जाता है।

====✂====

तृतीय अध्याय

ग्रह तत्व

ज्योतिष शास्त्रों में ग्रहों का स्थान सबसे महत्वपूर्ण होता है। ज्योतिषीय भविष्यवाणी करने के लिए ग्रहों की स्थिति और दशाओं का अध्ययन करना पड़ता है। इन ग्रहों का अपना स्वभाव और अपनी प्रकृति होती है। यह ग्रह किसी भी मनुष्य के जीवन में प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालते हैं। सौर्य मंडल में अनगिणत ग्रहों में से हमारे शरीर पर जिन्ह ९ ग्रहों का प्रभाव पड़ता है, ज्योतिष शास्त्र में उन्हीं ९ ग्रहों का अध्यन किया जाता है जो इस प्रकार हैं:

वैदिक ज्योतिष में नौ ग्रह

१. सूर्य (Sun)	४. बुध (Mercury)	७. शनि (Saturn)
२. चन्द्रमा (Moon)	५. गुरु (Jupiter)	८. राहु (Rahu)
३. मंगल (March)	६.शुक्र (Venus)	९. केतु (Ketu)

नव ग्रहों के पौराणिक स्वरूप

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में इन्ह ९ ग्रह को एक साथ में नवग्रह कंहा जाता है। ग्रहों से आने वाली किरणें हमारे जीवन, समाज तथा प्रकृति को प्रभावित करती हैं। सभी ग्रह हमारे शरीर में किसी न किसी चीज का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक ग्रह की अपनी विशिष्ट विशेषताएं, ऊर्जाएं और प्रभाव होती हैं, और ऐसा माना जाता है कि किसी व्यक्ति के जन्म के समय ग्रहों की स्थिति उसके व्यक्तित्व, जीवन के अनुभवों और भाग्य को आकार देती है। समुद्र में ज्वार-भाटा भी सूर्य और चन्द्र की आकर्षण शक्ति के प्रभाव से ही होता है ! अमावस्या और पूर्णिमा का भी विशेष प्रभाव हमारी धरती पर पड़ता है।

वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ग्रह क्या होते हैं ?

वैदिक ज्योतिष में ग्रह केवल आकाशीय पिंड नहीं हैं, बल्कि ब्रह्मांडीय प्रभाव हैं जो हमारे जीवन की दिशा को आकार देते हैं। वे आदर्श ऊर्जाओं और सिद्धांतों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो

ग्रह तत्व

हमारे अस्तित्व के विभिन्न पहलुओं में प्रकट होते हैं। ग्रह केवल मनुष्य पर ही नहीं पृथ्वी पर रहने वाले सभी प्रकार के जीव–जंतुओं के जीवन पर भी अपना प्रभाव डालते हैं।

नव ग्रहों के प्रतीक चिह्न

खगोल शास्त्र के अनुसार ग्रह (राहु–केतु को छोड़कर) आकाश मंडल में स्थित वे खगोलीय पिण्ड हैं जो गतिमान अवस्था में रहते हैं। एवं गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा सौर मंडल में एक–दूसरे से निश्चित दूरी में बंधें हुए हैं और वे सूर्य की परिक्रमा करते रहते हैं। इसमें सभी ग्रहों की एक निश्चित गति होती है, जैसे: चंद्रमा की गति सबसे तेज़ है अतः चंद्रमा के गोचर की अवधि सबसे कम होती है। इसी प्रकार शनि की गति सबसे मंद होती है, ग्रहो की गोचर समन्धित विस्तृत जानकारी गोचर बिभाग में दिया गया है।

राहु और केतु दक्षिणी और उत्तरी ध्रुव का प्रतीक है, जो छाया ग्रहों के रूप में वैदिक ज्योतिष में गणना किया जाता है। राहू और केतु ग्रह आकाशीय परिधि में चलने वाले चन्द्रमा और सूर्य के मार्ग के प्रतिच्छेदन बिंदु को निरूपित करते हैं, इसलिए राहु और केतु को क्रमशः उत्तर और दक्षिण चन्द्र आसंधि कहा जाता है। जैसे पृथ्वी एक सीमा तक सभी वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है, ऐसे ही धरती के उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव का एक अलग प्रभाव भी सम्पूर्ण पृथ्वी पर बना रहता है।

वैदिक ज्योतिष सुत्रम

नवग्रह स्त्रोत्रम

जवाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् ।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥१॥
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम् ।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम् ॥२॥
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम् ।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम् ॥३॥
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम् ॥४॥
देवानां च ऋषीणां च गुरूं कांचनसन्निभम् ।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम् ॥५॥
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम् ।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम् ॥६॥
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम् ।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम् ॥७॥
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम् ।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम् ॥८॥
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम् ।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ॥९॥

नवग्रह ध्यान मंत्र

ॐ प्रत्यक्ष देवं विशदं सहस्त्र मरीचिभिः शोभितभूमिदेशम् । सप्ताश्वगं सद्ध्वजहस्तमाद्यं देवं भजेऽहं मिहिरं हृदब्जे ॥ ॐ शङ्खप्रभमेणप्रियं शशांक मीशानमौलिस्थित मीडयवृत्तम् । तमीपतिं नीरजयुग्महस्तं ध्याये हृदब्जे शशिनं ग्रहेशम् ॥ ॐ प्रतप्तगांगेयनिभिं ग्रहेशं सिंहासनस्थं कमलासिहस्तम् । सुरासुरैः पूजितपादपद्मं भौमं दयालुं हृदये स्मरामि ॥ ॐ सोमात्मजं हंसगतं द्विबाहुं शंखेन्दुरूपं ह्यासिपाशहस्तम् । दयानिधिं भूषणभूषिताङ्गं बुधं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ॐ तेजोमयं शक्ति त्रिशूलहस्तं सुरेन्द्रज्येष्ठैः स्तुतपादपद्मम् । मेधानिधिं हस्तिगतं द्विबाहुं गुरुं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ॐ संतप्तकाञ्चननिभं द्विभुजं दयालुं पीताम्बरं धृतसरोरुहद्वन्दशूलम् । कौंचासनं ह्यसुरसेवितपादपद्मं शुक्रं स्मरे द्विनयनं हृदि पङ्कजेहम् ॥ ॐ नीलांजनाभं मिहिरेष्टपुत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजङ्गपाणिम् । सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं शनिं स्मरे मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ॐ शीतांशुमीत्रान्तक मीडयरूपं घोरं च वैडूर्यनिभं विबाहुम् । त्रैलोक्यरक्षापरमिष्टदं च राहुं ग्रहेन्द्रं हृदये स्मरामि ॥ ॐ लाङ्गलयुक्तं भयदं जनानां कृष्णाम्बुभृत्सन्निभमेकवीरम् । कृष्णाम्बरं शक्ति त्रिशूलहस्तं केतुं भजे

मानसपङ्कजेऽहम् ॥ ॐ नवग्रहाय नमः ॥

नवग्रह गायत्री मंत्र

१. **सूर्य:** ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि तन्नो: सूर्य: प्रचोदयात ॥

२. **चंद्र:** ॐ क्षीरपुत्राय विद्महे मृतात्वाय धीमहि तन्नम्चंद्र: प्रचोदयात ॥

३. **मंगल:** ॐ अंगारकाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो: भौम प्रचोदयात ॥

४. **बुध:** ॐ सौम्यरुपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो: बुध: प्रचोदयात ॥

५. **बृहस्पति:** ॐ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो: गुरु: प्रचोदयात ॥

६. **शुक्र:** ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो: शुक्र: प्रचोदयात ॥

७. **शनि:** ॐ शिरोरुपाय विद्महे मृत्युरुपाय धीमहि तन्नो: सौरि: प्रचोदयात ॥

८. **राहु:** ॐ शिरोरुपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो: राहु: प्रचोदयात ॥

९. **केतु:** ॐ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो: केतु: प्रचोदयात ॥

ग्रहों का वैदिक मंत्र

- **सूर्य:** ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॥
- **चंद्र:** ॐ इमं देवा असपत्नं सुवध्यं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजासोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा ॥
- **मंगल:** ॐ अग्निमूर्धा दिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम् अपां रेतां सि जिन्वति ॥
- **बुध:** ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥
- **गुरु:** ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥
- **शुक्र:** ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पय: सोमं प्रजापति: ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु ॥
- **शनि:** ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं योरभि स्त्रवन्तु न: ॥
- **राहु:** ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृध: सखा कया शचिष्ठया वृता ॥

- **केतु:** ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे सुमुषद्भिरजायथा: ॥

	सहज मन्त्र	पौराणिक मंत्र	तांत्रिक मंत्र
सूर्य	ॐ घृणिः सूर्याय नमः	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः
चंद्र	ॐ सों सोमाय नमः	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः
मंगल	ॐ अं अंगारकाय नमः	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः भौमाय नमः
बुध	ॐ बुं बुधाय नमः	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः
गुरु	ॐ बृं बृहस्पतये नमः	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः गुरवे नमः
शुक्र	ॐ शुं शुक्राय नमः	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	ॐ ऐं ह्रां श्रीं शुक्राय नमः
शनि	ॐ शं शनैश्चराय नमः	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः शनैश्चराय नमः
राहु	ॐ रां राहवे नमः	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः
केतु	ॐ कें केतवे नमः	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	ॐ ह्रीं क्लीं केतवे नमः

✓ **मन्त्र जप संख्या:** सूर्य ग्रहों का मन्त्र ७००० चन्द्रमा = ११,००० मंगल = १०,००० बुध = ९००० गुरु = १९,००० शुक्र = १६,००० शनि = २३,००० राहू = १८,००० एवं केतु ग्रहों के लिए १७,००० संख्या में मन्त्र जप करना चाहिए। नवग्रहों के पूजन और मंत्रो का बिधिवत जप करने से ग्रह पीड़ा से मुक्ति मिलती है।

ग्रहों का जन्म स्थान

सूर्य – कलिंग देश
चन्द्र – यमुना
मंगल – अवन्ति नगर
बुध – मगध
गुरु – सिन्धु (सैन्धवे)
शुक्र – भोजकंठ
शनि – सौराष्ट्र
राहु – वैनाठिक/मय
केतु – कुशद्वीप (अन्तर वेदी)

- **नवग्रह हवन सामग्री:** अगर, तगर, नागर मोथा, बालछड़, छाड़छबीला, कपूर कचरी, भोजपत्र, इन्द जौ, सितावर, सफेद चन्दन, आम या ढाक की लकड़ी और हवन कुंड।
- **नवग्रह की नौ समिधा:** १.सूर्य= आक/अर्क, २.चन्द्र= ढाक/पलाश, ३.मंगल= कत्था/खदिर, ४.बुध= अपामार्ग/चिरचिटा, ५.गुरु= अश्वथ/पीपल, ६.शुक्र= यज्ञडूमुर/गूलर, ७.शनि= शमी/जांड, ८.राहू= दुर्व्वा/दूब और ९.केतु= कुश।
- **ग्रहों का दान:** सूर्य= ब्राह्मण, चन्द्र= कापालिक, मंगल= भिक्षुक, बुध= शिशु, गुरु= ज्योतिर्बिद, शुक्र= शैव, शनि= नग्न सन्यासी एवं राहू व् केतु= चंडाल।

ग्रहों का सुगंधित द्रव्य

- **सूर्य ग्रह:** केसर या गुलाब की सुगंध।
- **चंद्र ग्रह:** चमेली और रातरानी के इत्र।
- **मंगल ग्रह:** लाल चंदन का इत्र, तेल अथवा सुगंध।
- **बुध ग्रह:** चंपा का इत्र तथा तेल।
- **गुरु ग्रह:** केसर और केवड़े का इत्र और पीले फूलों की सुगंध।
- **शुक्र ग्रह:** सफेद फूल, चंदन और कपूर, चंपा, चमेली और गुलाब की खुशबू।
- **शनि ग्रह:** कस्तुरी, लोबान तथा सौंफ की सुगंध।
- **राहु और केतु:** काली गाय का घी व कस्तुरी के इत्र।

ग्रहों का दानद्रव्य

- **सूर्य:** माणिक्य, गोधूम, सवत्सा धेनु, कुसुम्भ वस्त्र, गुड़, स्वर्ण, ताम्र, रक्तचन्दन, रक्तपद्म।
- **चन्द्र:** वंशपात्र में तंडुल, कर्पुर, मोती, शुक्ल वस्त्र, वृष, रौप्य, घृतपूर्ण कुम्भ।
- **मंगल:** प्रवाल, गोधूम, मसूर, अरुण वर्ण वृष, गुड़, स्वर्ण, रक्तवस्त्र, करवी पुष्प व् ताम्र।
- **बुध:** हरावस्त्र, स्वर्ण, कांस्य, मुदग, पन्ना, घृत, झंटीपुष्प, दासी व् हस्तीदन्त।
- **गुरु:** चिनि, हरिद्रा, अश्व, पीतधान्य, पीतवस्त्र, पुष्पराग मणि, नमक व् स्वर्ण।
- **शुक्र:** घृतवर्ण वस्त्र, धेनु, श्वेतअश्व, हीरक, स्वर्ण, रौप्य, आतप, घृत व् चन्दन।
- **शनि:** मश्कलाई, तेल, इन्द्रनीलमणि, कृष्ण तिल व् लौह।
- **राहू:** गोमेद, अश्व, कृष्णवस्त्र, कम्वल, लौहपात्र, तेल व् कृष्ण तिल।
- **केतु:** वैदूर्यमणि, कृष्ण तिल, मृगनाभि व् खड्ग।

ग्रहो का धातु, रत्न व् मूलादि

	रत्न	उपरत्न	मूल	धातु
सूर्य	माणिक्य	सूर्यकांत मणि	बिल्व	ताम्र, स्वर्ण
चंद्र	मोती	चंद्रकांत मणि	क्षीरिका	चाँदी, शंख
मंगल	मूंगा	अनुराग मणि	अनन्त	ताम्र, स्वर्ण
बुध	पन्ना	फिरोजा	वृद्धधारक	स्वर्ण, कांसा
गुरु	पुखराज	टोपाज	व्रम्हजष्टि	स्वर्ण, चांदी, दस्ता
शुक्र	हीरा	वरुणमणि	सिंहपुष्प	रां, चांदी, प्लटनियम
शनि	नीलम	संध्यामणि	श्वेतवेडेला	सीसा, लोहा
राहू	गोमेद	पुलकमणि	श्वेत चन्दन	लोहा, पञ्चधातु
केतु	वैधुर्य मणि	राजपट्ट	अश्वगंधा	इस्पात, पञ्चधातु

- **पञ्चधातु** = स्वर्ण, चांदी, ताम्र, लोहा एवं सीसा।

सूर्य ग्रहों की रत्न अनामिका अंगुली में, चन्द्रमाँ ग्रहों की रत्न कनिष्ठा या तर्जनी अंगुली में, मंगल ग्रहों का रत्न अनामिका अंगुली में, बूध ग्रह की रत्न कनिष्ठा अंगुली में, गुरु और शुक्र ग्रहों का रत्न तर्जनी अंगुली में, शनि ग्रहों का रत्न मध्यमा अंगुली में, राहू ग्रह का तर्जनी अथवा मध्यमा अंगुली में एवं केतु ग्रहों का रत्न कनिष्ठा अथवा मध्यमा अंगुली में पहना आदर्श रहता है। रत्न हमेशा पुरुषो को दाहिना हाथ मे एवं महिलाओं को वाम हाथ में पहना चाहिए। गले या वाजू में कोई भी रत्न पहना जा सकता है।

ग्रहों का स्थान, मंडल भोग्यद्रव्यादि

ग्रह	परिमाण	मंडल	स्थान	भोग द्रव्य	दक्षिणा
सूर्य	१२ अंगुली	वर्तुल	मध्य	गुड़पक्कान्न	धेनु
चन्द्र	एक हस्त	अर्द्धचम्द्रकृति	अग्नि	घृतपरमान्न	शंख
मंगल	४ अंगुली	त्रिकोण	दक्षिण	हविषन्न	वृष
बुध	२ अंगुली	धनुराकृति	ईशान	दुग्धपक्कान्न	स्वर्ण
गुरु	६ अंगुली	पद्मकृति	उत्तर	दध्यान्न	पीतवस्त्र
शुक्र	९ अंगुली	दीर्घ चतुरस्र	पुर्वव	घृतान्न	अश्व
शनि	४ अंगुली	खडगाकृति	पश्चिम	तिल पिष्टक	कृष्णागाभी
राहू	१२ अंगुली	मकराकृति	नैरित	आममांस	खड्ग
केतु	६ अंगुली	सर्पाकृति	वायु	चित्रोंदन	छाग

ग्रहों का स्वरूप, गोत्र और जन्मस्थान

- **सूर्य:** शास्त्रों में सूर्य को ग्रहों का राजा बताया गया है। यह कश्यप गोत्र के क्षत्रिय एवं कलिंग देश के स्वामी हैं। जवा कुसुम फुल के समान रक्तवर्ण है। दोनों हाथों में कमल लिए हुए हैं। सिंदूर के समान वस्त्र, आभूषण और माला धारण किए हुए हैं। सात घोड़ों के एक चक्र रथ पर आरूढ़ होकर सुमेरु की प्रदक्षिणा करते हैं।
- **चंद्र:** शास्त्रों में चंद्रमा को अत्रि गोत्रीय बताया गया हैं। यह यमुना देश के स्वामी हैं। चन्द्रमा दूध के समान श्वेत शरीर पर श्वेत वस्त्र, मोती का माला और अनुलेपन धारण किए हुए हैं। इसलिए इनका शरीर शास्त्रों में अमृतमय समान बताया गया है। दो हाथो में से एक में वरमुद्रा, दूसरे हाथ में गदा है। अपनी सुधामयी किरणों से तीनों लोकों को सींच रहे हैं। दस घोड़ों के त्रिचक्र रथ पर आरूढ़ होकर सुमेरु की प्रदक्षिणा कर रहे हैं।
- **मंगल:** शास्त्रों में मंगल ग्रह को भारद्वाज गोत्र के बताया गया हैं। यह क्षत्रिय जाती के है एवं अवंति प्रदेश के स्वामी हैं। इनका रंग अग्नि के समान रक्तवर्ण है। वाहन मेष है, रक्त वस्त्र और रक्तिम माला धारण किए हुए हैं। इनके हाथों में शक्ति, वर, अभय और गदा है। इनके अंग–अंग से कांति की धारा छलकती रहती है। मेष के रथ पर सुमेरु की प्रदक्षिणा करते हुए अपने अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता के साथ सूर्य के अभिमुख जा रहे हैं।
- **बुध:** बुध ग्रहो को शास्त्रों में अत्रि गोत्र के एवं मगध देश के स्वामी बताया गया हैं। इनके शरीर का वर्ण दुर्व्वा श्याम है। चार हाथों में ढाल, गदा, वर और खड्ग है। दुर्व्वा श्याम वस्त्र धारण किए हुए हैं। सौम्य मूर्ति के सिंह पर सवार हैं।
- **गुरु:** बृहस्पति ग्रह को ही ही गुरु ग्रह कहां जाता है। यह अंगिरा गोत्र के ब्राह्मण हैं। सिंधु देश के स्वामी हैं। इनका वर्ण वर्ण पीत है। पीतांबर वस्त्र धारण किए हुए, कमल पर बैठे हुए हैं। चार हाथों में रुद्राक्ष, वरमुद्रा, शिला और दण्ड धारण किए हुए हैं।
- **शुक्र:** शास्त्रों में शुक्र ग्रह को भृगु गोत्र के ब्राह्मण बताया गया हैं। भोजकट देश के अधिपति हैं। कमल पर बैठे हुए हैं, घृताव श्वेत वर्ण के इनका शरीर है। चार हाथों में रुद्राक्ष, वरमुद्रा, शिला और दण्ड है। श्वेत वस्त्र धारण किए हैं।
- **शनि:** शास्त्रों में शनि ग्रह को कश्यप गोत्र के शूद्र बताया गया हैं। सौराष्ट्र प्रदेश के अधिपति हैं। इनका वर्ण कृष्ण अर्थात घनश्याम वर्ण के है और कृष्ण वस्त्र ही धारण किए हुए हैं। चार हाथों में बाण, वर, शूल और धनुष है। एवं शनि देव का वाहन गृध्र है।
- **राहु:** शास्त्रों के अनुसार राहु ग्रह पैठीनस गोत्र के है। इनका जाती यद्यपि शूद्र हैं परन्तु यह असुर प्रकृति के है। मय (मलय/राठीना) देश के अधिपति हैं। इनका वर्ण कृष्ण है और वस्त्र भी कृष्ण ही है। वाहन सिंह है तथा चार हाथों में खड्ग, वर, शूल और ढाल रहते हैं।

- **केतु:** केतु ग्रह को शास्त्रों में जैमिनी गोत्र के शूद्र जाती के बताया गया हैं। कुशद्वीप प्रदेश के अधिपति हैं। इनका वर्ण धुएं सा है और वैसा ही धुएं सा वस्त्र धारण किए हुए हैं। मुख और नयन विकृत है, गीध वाहन है। दो हाथों में वरमुद्रा तथा गदा लेके सूर्याभिमुखी है।

ग्रहों का अन्य नाम

- **सूर्य:** भास्कर, दिवाकर, अरुण, प्रभाकर, सविता, तपन, दीननाथ, मार्त्तंड, ज्योति, विजकर, आदित्य, भानु, सहस्रांशु, हेलि, अर्क, चित्रभानु।
- **चन्द्रमा:** सुधांशु, हिमांशु, विधु, शशधर, सुधाकर, शशांक, इंदु, सोम, कलानिधि, द्विजराज, निशिकांत, निशानाथ, निशाकर, ज्योत्स्ना, चंद्रक, कर्पुर, आह्लादजनक, चाँद, विद्रु, शशांक, शीतरश्मि, हेम्ना, उडुनाथ, अब्ज, भेष।
- **मंगल:** लोहितांग, भौम, भुमिसुत, क्षितिसुत, वीरभद्र, क्षितिज, शिवपुत्र, कुज, क्षमापुत्र, श्वोन, शुभ, कुशल, अंगारक, महीसूत।
- **बुध:** इंद्रपुत्र, सोमज, रौहिनेय, वोधन, हेमा, शशिनंदन, चंद्रात्मीज, पंडित, तारासुत, श्यामांग।
- **वृहस्पति:** गुरु, देवगुरु, सुरगुरु, वचसांपति, वासस्पति, अंगिरा, इज्य, विषण, चित्र, जीव, शिखंडीज, गीष्पति, त्रिदशमंत्री।
- **शुक्र:** वरुण, असुराचार्य, स्फुजित, सुखी, कवि, उशना, भृगु, भार्गव, सित, उपनस, दानवाचार्य, भृगुनंदन, षोरशर्चची, दैत्यगुरु।
- **शनि:** काल, मन्द, पंगु, असित, इनपुत्र, भानवि, कृष्ण, अर्कपुत्र, यम, आर्कि, रविसूत, शौरि, मार्त्तंड वंशज, सूर्यपुत्र, सौरि, मन्द, दिवाकरसूत, सप्तांशु, सप्तार्च्ची, रविज, मंदकाल, रवितनय।
- **राहू:** सिंहिकेय, तम, अहि, अगु, फनी, भुजंग, स्वर्भानु, अष्टमग्रह, त्याग, विधुन्तुद।
- **केतु:** शिखि, ब्रह्मसूत, ध्वज, उत्पात, धुम्रवर्ण, निम्नांग, शिखण्ड।

ग्रहों का वैज्ञानिक दृष्टीकोण

सूर्य:– सूर्य सौर मंडल का केंद्र है और यह एक तारा है। यह लगभग ४.६ अरब वर्ष पुराना है और इसका व्यास लगभग १.३९ मिलियन किमी है। सूर्य मुख्यतः हाइड्रोजन (लगभग ७४%) और हीलियम (लगभग २४%) से बना है, और इसमें अन्य तत्व भी होते हैं जैसे ऑक्सीजन, कार्बन, नाइट्रोजन आदि। सूर्य की ऊर्जा नाभिकीय संलयन द्वारा उत्पन्न होती है, जहां हाइड्रोजन के परमाणु हीलियम में परिवर्तित होते हैं। सूर्य की सतह का तापमान लगभग ५.५०० डिग्री सेल्सियस है, जबकि इसके केंद्र का तापमान लगभग १५ मिलियन डिग्री सेल्सियस है।

चंद्रमा:– चंद्रमा, जिसे सामान्यतः "चाँद" कहा जाता है, यह पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है। इसका व्यास लगभग ३.४७४ किमी है, जो पृथ्वी के व्यास का लगभग १/४ है। चंद्रमा की सतह पर मुख्य रूप से सिलिकेट सामग्री और ऑक्साइड होते हैं। चंद्रमा के पास कोई वायुमंडल नहीं है, इसलिए वहां के तापमान में दिन–रात के बीच बड़ा अंतर होता है। चंद्रमा का पृथ्वी से दूरी लगभग ३८४,४०० किमी है। चंद्रमा का पृथ्वी पर ज्वार–भाटा पर प्रभाव होता है, जो समुद्र स्तर में बदलाव लाता है। चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर लगभग २७.३ दिन में एक चक्कर लगाता है।

मंगल:– यह ग्रह सौर मंडल का सातवाँ सबसे बड़ा ग्रह है। मंगल की चौड़ाई पृथ्वी की चौड़ाई से लगभग आधी है, और इसका भूमध्येरेखीय व्यास लगभग ४,२२१ मील (६,७९२ किलोमीटर) है। मंगल सूर्य से चौथा ग्रह है, जो १४१.६ मिलियन मील (२२७.९ मिलियन किलोमीटर) की औसत दूरी पर परिक्रमा करता है। आयरन ऑक्साइड के कारण मंगल ग्रहों लाल रंग का होता हैं। इसके पास ऊँचे पर्वत और गहरी घाटियाँ हैं। बर्फ के कणिकाएं और संभावित जीवन के संकेत भी है।

बुध:– सौरमंडल का सबसे छोटा ग्रह बुध है। पृथ्वी की चौड़ाई का एक तिहाई से थोड़ा ज़्यादा है और इसका भूमध्येरेखीय व्यास लगभग ३,०३२ मील (४,८८० किलोमीटर) है। बुध सूर्य का सबसे नज़दीकी ग्रह है, जो औसतन ३६ मिलियन मील (५८ मिलियन किलोमीटर) की दूरी पर सूर्य को परिक्रमा करता है। बुध पृथ्वी की तुलना में सूर्य से ५७ मिलियन मील ज़्यादा नज़दीक है। एवं सबसे तेज़ गति से घूमता है, इसका वायुमंडल बहुत पतला होती है। बुध ग्रहों में दिन और रात के तापमान में भी बड़ा अंतर (दिन में ४३०° सेल्सियस, रात में –१८०° सेल्सियस) होता है।

बृहस्पति:– बृहस्पति सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है। यह पृथ्वी से लगभग ११ गुना चौड़ा है और इसका भूमध्येरेखीय व्यास ८८,८४६ मील (लगभग १४२,९८४ किलोमीटर) है। बृहस्पति सूर्य से पाँचवाँ ग्रह है, जो ४८३.७ मिलियन मील (७७८ मिलियन किलोमीटर) की औसत दूरी

पर परिक्रमा करता है। बृहस्पति एक गैसीय ग्रह है जो मुख्यत हाइड्रोजन और हीलियम से बना है।

शुक्र:– शुक्र सौरमंडल का छठा सबसे बड़ा ग्रह है, और इसकी चौड़ाई पृथ्वी के समान है। शुक्र ग्रह का भूमध्यरेखीय व्यास लगभग ७,५२२१ मील (१२,१०४ किलोमीटर) है। इस कारण से, शुक्र को कभी–कभी पृथ्वी का जुड़वाँ भी कहा जाता है। शुक्र सूर्य से ६७.२ मिलियन मील (१०८ मिलियन किलोमीटर) की औसत दूरी पर परिक्रमा करता है। शुक्र ग्रहों में पृथ्वी के २४३ दिन में एक वर्ष होती है, घने वायुमंडल में सल्फ्यूरिक एसिड के बादल के कारण तापमान लगभग ४७०° सेल्सियस तक रहता है।

शनि:– सौर मंडल का दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है, एवं शनि ग्रह का ८० से अधिक उपग्रह है। शनि ग्रह पृथ्वी से लगभग नौ गुना चौड़ा है, जिसका भूमध्यरेखीय व्यास लगभग ७४,८९८ मील (लगभग १२०,५३६ किलोमीटर) है। शनि सूर्य से छठा ग्रह है, जो ८८९.८ मिलियन मील (१.४ बिलियन किलोमीटर) की औसत दूरी पर परिक्रमा करता है। शनि ग्रह की गैसीय संरचना में हाइड्रोजन और हीलियम प्रमुख होने के करण चारो तरफ एक खूबसूरत वलय दिखाई देता हैं।

राहू:– राहू वास्तव में कोई भौतिक ग्रह नहीं है, बल्कि यह एक छाया ग्रह है। इसे चंद्रमा के उत्तरी नोड के रूप में जाना जाता है। राहू की स्थिति चंद्रमा की कक्षा में होती है, जहां चंद्रमा सूर्य के चारों ओर की यात्रा करते समय सूर्य की ओर से अदृश्य होता है। यह एक ज्योतिषीय अवधारणा है, और इसका कोई वास्तविक आकार नहीं है।

केतु:– केतु भी राहू की तरह एक छाया ग्रह है, जिसे चंद्रमा के दक्षिणी नोड के रूप में जाना जाता है। जैसे राहू चंद्रमा की उत्तरी कक्षा में होता है, वैसे ही केतु चंद्रमा की दक्षिणी कक्षा में होता है। केतु का भी कोई भौतिक रूप नहीं है, परन्तु यह ज्योतिषीय अर्थों में महत्वपूर्ण होता है।

ग्रहों का पौराणिक आख्यान

- **सूर्य:** शास्त्रों में सूर्य देव को एक प्रमुख देवताओं के रूप में माना गया है। यह कश्यप ऋषि और उनकी पत्नियों में से एक अदिति के पुत्र होने के कारण सूर्यदेव को आदित्य के नाम से भी जाना जाता है। उनके बाल और हाथ स्वर्ण के हैं। उनके रथ को सात घोड़े खींचते हैं, जो सात चक्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
- **चंद्र:** शास्त्रों में चंद्रमा को सोमदेव के रूप में भी जाना जाता है और उनकी पूजा भी किया जाता है। उनके हाथों में एक मुगदर और एक कमल रहता है। वे हर रात पूरे आकाश में

अपना रथ (चांद) चलाते हैं, जिसे दस सफेद घोड़े या मृग द्वारा खींचा जाता है। वह ओस से जुड़े हुए हैं और जनन क्षमता के देवताओं में से एक हैं और उन्हें निषादिपति भी कहा जाता हैं।

- **मंगल:** शास्त्रों में उन्हें लाल रंग या लौ के रंग में रंगा माना जाता है, अत्यधिक लाल होने के कारण उन्हें अंगारक भी कहा जाता है। उन्हें पृथ्वी, या भूमि अर्थात पृथ्वी देवी की संतान माना जाता है। चतुर्भुज, एक त्रिशूल, मुगदर, कमल और एक भाला लिए हुए होते है। उनका वाहन एक भेड़ा है, वह युद्ध के देवता हैं और ब्रह्मचारी हैं।
- **बुध:** शास्त्रों में बुध ग्रह को चन्द्रमाँ और तारा का पुत्र बताया गया है। उनके हाथों में एक कृपाण, एक मुगदर और एक ढाल होती है और वे रामगर मंदिर में एक पंख वाले शेर या गरुड़ वाले रथ की सवारी करते हैं।
- **बृहस्पति(गुरु):** बृहस्पति देवताओं के गुरु हैं, अधिकांश लोग बृहस्पति को "गुरु" बुलाते हैं। यह शील और धर्म के अवतार हैं, प्रार्थनाओं और बलिदानों के मुख्य प्रस्तावक हैं, इसलिए इन्हें जिन्हें देवताओं के पुरोहित के रूप में माना जाता है। वे पीले या सुनहरे रंग के हैं और एक छड़ी, एक कमल और अपनी माला धारण करते हैं।
- **शुक्र:** भृगु और उशान के बेटे का नाम है और वे दैत्यों के शिक्षक और असुरों के गुरु हैं। प्रकृति से वे राजसी हैं और धन, खुशी और प्रजनन का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे सफेद रंग, मध्यम आयु वर्ग और भले चेहरे के हैं। शास्त्रों में उनकी विभिन्न सवारियों का वर्णन मिलता है, ऊंट पर या एक घोड़े पर या एक मगरमच्छ पर है। वे एक छड़ी, माला और एक कमल धारण करते हैं और कभी–कभी एक धनुष और तीर भी धारण करते है।
- **शनि:** शनि शब्द की व्युत्पत्ति शनये क्रमति सः अर्थात वह जो धीरे–धीरे चलता है। शनि वास्तव में एक अर्ध–देवता हैं और सूर्य और उनकी पत्नी छाया के एक पुत्र हैं। काले लिबास में, एक तलवार, तीर और दो खंजर लिए एक काले कौए पर सवार होते हैं।
- **राहू:** राहू आरोही/उत्तर चंद्र आसंधि के देवता हैं। जो आठ काले घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर सवार हैं। वह तमस असुर प्रकृति के है जो अराजकता में किसी व्यक्ति के जीवन के उस हिस्से का पूरा नियंत्रण हासिल करता है। पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान एक असुर ने थोड़ा दिव्य अमृत पी लिया था। लेकिन इससे पहले कि अमृत उसके गले से नीचे उतरता, भगवान विष्णु जी ने मोहिनी अवतार लेकर उसका गला काट दिया था एवं उस असुर का सिर राहू बन गया।
- **केतु:** केतु अवरोही/दक्षिण चंद्र आसंधि का देवता है। शास्त्रों में केतु ग्रह को राक्षस सांप की पूंछ के रूप में दर्शाया गया है। माना जाता है कि मानव जीवन पर एवं पूरी सृष्टि में

इसका जबरदस्त प्रभाव पड़ता है। वह प्रकृति में तमस है और पारलौकिक प्रभावों का प्रतिनिधित्व करता है।

वैदिक ज्योतिष में ग्रहों का व्यवहारिकता

सूर्यः– चौकौर, छोटा कद, गहरा लाल रंग, पुरुष, क्षत्रिय जाति, पाप ग्रह, सत्वगुण प्रधान, अग्नि तत्व, पित्त प्रकृति है। राजा, ज्ञानी, पिता, स्वर्ण, तांबा, फलदार वृक्ष, छोटे वृक्ष, गेंहू, हड्डी, सिर, नेत्र, दिमाग़ व हृदय पर अपना प्रभाव रखता है। सूर्य व्यक्ति की मूल पहचान, आत्म सम्मान और जीवन शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है। यह व्यक्ति के अहंकार, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमताओं से जुड़ा हुआ है। जन्म कुंडली में सूर्य की स्थिति व्यक्ति के करियर पथ और समग्र जीवन उद्देश्य के बारे में जानकारी दे सकती है।

चन्द्रः– गोल, स्त्री, वैश्य जाति, सौम्य ग्रह, सत्वगुण, जल तत्व, वात कफ प्रकृति के है। सफेद रंग, माता, कलाप्रिय, सफेद वृक्ष, चांदी, मिठा, चावल, छाती, थूक, जल, फेंफड़े तथा नेत्र ज्योति पर अपना प्रभाव रखता है। अवचेतन मन, अंतर्ज्ञान और भावनाओं का प्रतिनिधित्व चंद्रमा द्वारा किया जाता है। यह व्यक्ति की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं, आदतों और प्रवृत्तियों को नियंत्रित करता है। जन्म कुंडली में चंद्रमा की स्थिति व्यक्ति की भावनात्मक भलाई और आंतरिक प्रकृति को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

मंगलः– तंदुरस्त शरीर, चौकौर, क्रूर, आक्रामक, पुरुष, क्षत्रिय, पाप, तमोगुणी, अग्नितत्व, पित्त प्रकृति है। लाल रंग, भाई–बहन, युद्ध, हथियार, चोर, घाव, दाल, पित्त, रक्त, मांसपेशियाँ, ऑपरेशन, कान, नाक आदि का प्रतिनिधि है। मंगल ग्रह क्रिया, ऊर्जा और दृढ़ संकल्प का ग्रह है, यह व्यक्ति की प्रेरणा, साहस और प्रतिस्पर्धात्मकता को नियंत्रित करता है। मंगल ग्रह व्यक्ति की दृढ़ता, महत्वाकांक्षा और चुनौतियों के प्रति दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

बुधः– दुबला शरीर, नपुंसक, वैश्य जाति, समग्रह, रजोगुणी, पृथ्वी तत्व व त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) प्रकृति है। हरा रंग, चना, मामा, गणित, व्यापार, वायुरोग, वाक्, जीभ, तालु, स्वर, गुप्त रोग, गूंगापन, आलस्य व कोढ़ का प्रतिनिधि है। सीखना, बुद्धि और संचार बुध के क्षेत्र हैं, यह व्यक्ति की विश्लेषणात्मक क्षमताओं, अनुकूलनशीलता और तर्क कौशल का प्रतिनिधित्व करता है। बुध की स्थिति व्यक्ति की संचार और निर्णय लेने की शैली को प्रभावित करती है।

बृहस्पतिः– भारी शरीर, पुरुष, ब्राह्मण, सौम्य, सत्वगुणी, आकाश तत्व व कफ प्रकृति है। पीला रंग, वेद, धर्म, भक्ति, स्वर्ण, ज्ञानी, गुरु, चर्बी, कफ, सूजन, घर, विद्या, पुत्र, पौत्र, विवाह तथा गुर्दे का प्रतिनिधित्व करता है। बृहस्पति बुद्धि, विस्तार और विकास का ग्रह है। यह व्यक्ति

के विश्वास, आध्यात्मिकता और उच्च ज्ञान को नियंत्रित करता है। जन्म कुंडली में मजबूत बृहस्पति शिक्षा, आध्यात्मिक खोज और प्रचुरता के अवसरों का संकेत दे सकता है।

शुक्रः– सुन्दर शरीर, स्त्री, ब्राह्मण, सौम्य, रजोगुणी, जल तत्व व कफ प्रकृति है। सफेद रंग, सुन्दर कपडे, सुन्दरता, पत्नी, प्रेम सम्बन्ध, वीर्य, काम–शक्ति, वैवाहिक सुख, काव्य, संगीत, आँख व स्त्री का प्रतिनिधि है। शुक्र में रचनात्मकता, सुंदरता और प्रेम जैसे गुण समाहित होते हैं। यह व्यक्ति के रोमांटिक झुकाव, कलात्मक प्रतिभा और सद्भाव की भावना को दर्शाता है। शुक्र की स्थिति व्यक्ति के रिश्तों और सौंदर्य संबंधी प्राथमिकताओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रकट कर सकती है।

शनिः– काला रंग, धसी हुई आंखें, पतला लंबा शरीर, क्रूर, नपुंसक, शूद्रवर्ण, पाप, तमोगुणी, वात कफ प्रकृति व वायु तत्व प्रधान है। काला रंग, चाचा, ईर्ष्या, धूर्तता, चोर, जंगली जानवर, नौकर, आयु, तिल, शारीरिक बल, योगाभ्यास, ऐश्वर्य, वैराग्य, नौकरी, हृदय रोग आदि का प्रतिनिधि है। शनि को अक्सर राशि चक्र के कार्यपालक के रूप में देखा जाता है। यह अनुशासन, जिम्मेदारी और जीवन के सबक का प्रतीक है। शनि का प्रभाव चुनौतियों और बाधाओं को ला सकता है, लेकिन कड़ी मेहनत, धैर्य और दृढ़ता के माध्यम से पुरस्कार भी देता है।

राहु व केतुः– पाप ग्रह, चाण्डाल, तमोगुणी, वात पित्त प्रकृति व नपुंसक हैं। गहरा धुंए जैसा रंग, पितामह मातामह, धोखा, दुर्घटना, झगडा, चोरी, सर्प, विदेश, चर्म रोग, पैर, भूख व उन्नति में बाधा के प्रतिनिधि हैं। वे कर्म प्रभावों और पिछले जीवन के अनुभवों से जुड़े हैं। राहु इच्छाओं और सांसारिक आसक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि केतु आध्यात्मिक विकास और वैराग्य का प्रतीक है।

ग्रहो का देवता, शक्ति और अवतार

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में सभी ग्रहों के लिए देवताओं का निर्देष्ठ किया गया है। इन्ह देवताओं के पूजानुष्ठान से ततसम्मंधित ग्रहों की पीड़ा में शांति मिलती है। प्रत्येक ग्रह के लिए देवताओं को तीन स्तर वाटा गया है। १) भौतिक स्तर के लिए ग्रह देवता २) मानसिक स्तर के लिए अधिदेवता एवं ३) आत्मिक स्तर के लिए प्रत्यधि देवता होते है। ग्रह देवता से ग्रह के स्वरूप को जान सकते है। अधि देवता ग्रहों कि प्रकृति बताते है और प्रत्यधि देवता ग्रहों के कार्य बताते है।

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता उनके दिव्य संरक्षक और सहायक देवताओं को संदर्भित करते हैं। ये देवता ग्रहों की शक्ति और प्रभाव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अधिदेवता पुष्टिकारक होते हैं, विषयो को सुव्यवस्थित करते हैं और केवल आशीष और कृपा प्रदान करते हैं। प्रत्यधिदेवता विघ्नहर्ता होते हैं और ग्रह दोषों का निवारण करते हैं।

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता का महत्वपूर्ण स्थान है। ये देवता, ग्रहों की ऊर्जा और प्रभाव को नियंत्रित करते हैं और उनके माध्यम से विभिन्न ग्रहों की पूजा और अनुष्ठान किए जाते हैं। अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता का ज्ञान होने से व्यक्ति अपने जीवन में ग्रहों के अनुकूल और प्रतिकूल प्रभाव को संतुलित कर सकता है।

साधारणत: भौतिक स्तर पर कुछ पाने के लिए ग्रह देवता की पूजा की जाती है। कुछ अच्छा हो जाए इस भावना से अधिदेवता की और किसी परेशानी से मुक्ति के लिए प्रत्यधिदेवता की उपासना कि जाती है।

नवग्रहों की स्थिति

नवग्रहो की पूजा के लिए सूर्य देव की मूर्ति को केंद्र में रखकर दुसरे ग्रहों के मूर्ति को अगम प्रदीष्ठ अथवा वैदिक प्रदिष्ठ के अनुसार एकल वर्ग में रखके इनकी पूजा किया जाता है।

- **अगम प्रदिष्ट:** अगम प्रदिष्ट में सूर्य केंद्र में, चंद्र सूर्य के पूर्व, बुध उनके दक्षिण, बृहस्पति उनके पश्चिम, शुक्र उनके उत्तर, मंगल उनके दक्षिण–पूर्व, शनि उनके दक्षिण–पश्चिम, राहू उत्तर–पश्चिम में और केतु उत्तर–पूर्व में स्थित होते हैं।
- **वैदिक प्रदिष्ट:** वैदिक प्रदिष्ट में, सूर्य केंद्र में ही होता है, लेकिन शुक्र पूर्व में, मंगल दक्षिण में, शनि पश्चिम में, बृहस्पति उत्तर में, चंद्र दक्षिण–पूर्व में, राहू दक्षिण–पश्चिम में, केतु पूर्व–पश्चिम में और बुध उत्तर–पूर्व में स्थित होते है।

ग्रहों की चाल

वैदिक ज्योतिष में, ग्रहों की चाल, जिसे "पारगमन" के रूप में जाना जाता है, जो भविष्य की घटनाओं और व्यक्तियों पर पड़ने वाले प्रभावों की भविष्यवाणी करने में एक महत्वपूर्ण कारक है। किसी भी समय आकाश में ग्रहों की स्थिति व्यक्ति के जीवन और पूरी दुनिया को प्रभावित कर सकती है। जन्म कुंडली और ग्रहों के पारगमन के जटिल विश्लेषण के माध्यम से ही वैदिक ज्योतिष में किसी जातक का व्यक्तित्व, जीवन के अनुभवों और संभावित नियति के बारे में विचार किया जाता है।

किसी जातक के जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कि करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत विकास पर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए इन पारगमनों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करना पड़ता हैं। उदाहरण के लिए; बृहस्पति का किसी विशेष राशि में पारगमन व्यक्ति के जीवन में विकास और विस्तार की अवधि की शुरुआत कर सकता है; जबकि शनि, राहू, केतु का पारगमन चुनौतियाँ ला सकता है।

ग्रहों की संख्याएँ

सूर्य: १ चन्द्र: २ मंगल: ९ बुध: ५ गुरु: ३ शुक्र: ६ शनि: ८ राहू: ४ एवं केतु: ७ अंक का प्रतिनिधित्व करता है।

ग्रहों का देवता, अधिदेवता, प्रत्याधिदेवतादि

ग्रह	देवता	अधिदेवता	प्रत्यधिदेवता	शक्ति
सूर्य	अग्नि	शिव	अग्नि	मातंगी
चन्द्र	वरुण	उमा	जल	भुवनेश्वरी
मंगल	कार्त्तिक	स्कन्द	पृथ्वी	बगलामुखी
बुध	विष्णु	नारायण	विष्णुः	षोडशी
गुरु	इन्द्र	व्रह्म	इन्द्र	तारा
शुक्र	इन्द्राणी	इन्द्र	चन्द्र/ शची	कमला
शनि	व्रह्म	यम	प्रजापति	द. काली
राहू	रूद्र	काल	सर्प	छिन्नमस्ता
केतु	रूद्र	चित्रगुप्त	व्रह्मा	धूमावती

ग्रहों का लोक, अवतार, वेदादि ज्ञान

ग्रह	लोक	वेद	अवतार	सहचरी
सूर्य	नरक	X	रामचंद्र	सुवर्णा, छाया
चन्द्र	पाताल	X	कृष्ण/वलराम	रोहिणी
मंगल	नरक	सामवेद	नृसिंह	शक्तिदेवी
बुध	मृत्यलोक	अथर्ववेद	बुद्ध	इला
गुरु	स्वर्गलोक	ऋग्वेद	बामन	तारा
शुक्र	पितृलोक	यजुर्वेद	परशुराम	सुकिर्थी, उर्जस्वथी
शनि	विनाश	X	कूर्म्म	नीलादेवी
राहू	X	X	बराह	सिंही
केतु	X	X	मीन	चित्रलेखा

ग्रहों का वर्ण

सूर्य – ताम्र वर्ण, चन्द्र – श्वेतवर्ण, मंगल – रक्तवर्ण, बुध – हरित वर्ण, गुरु – पीतवर्ण, शुक्र – घृत श्वेत वर्ण, शनि – गाढ़ नील वर्ण, राहू – कृष्ण वर्ण एवं केतु – धुम्र या विचित्र वर्ण।

शरीर में ग्रहों का मुख्य स्थान

सूर्य: मस्तक, मुख	गुरु: जंघा, कटी
चन्द्रमा: ह्रदय, कंठस्थ	शुक्र: गुह्य, अंडकोष
मंगल: पीठ, पेट	शनि: जानू, ऊरू
बुध: हाथ, पैर	राहू/केतु: गुह्य, पैर

ग्रहों का दान, गोत्रों व वेदादि संज्ञा

ग्रह	दान	पञ्च तत्व	गोत्र	आकृति
सूर्य	व्राह्मण/ज्योतिषी	अग्नि	काश्यप	चतुष्कोण
चन्द्र	कापालिक	जल	आत्रेय	स्थूल
मंगल	भिक्षुक	अग्नि	भरद्वाज	चतुष्कोण
बुध	शिशु	पृथ्वी	आत्रेय	बर्तुल
गुरु	ज्योतिषी/गुरु	आकाश	अंगीरा	बर्तुल
शुक्र	शैव	जल	भार्गव	कृश
शनि	नग्न सन्यासी	वायु	काश्यप	दीर्घ
राहू	चंडाल	X	पैठिनसी	दीर्घ
केतु	चंडाल	X	जैमिनीय	दीर्घ

ग्रहों का वर्गीकरण

ग्रहादि की गुण बिशेषता को देखते हुए वैदिक ज्योतिष में ग्रहादि को जाती, लिंग, वर्ण आदि बिभिन्न श्रेणियों में भी भाग किया गया है। सठिक भविष्यतवाणी करने के लिए ग्रहो की इन्ह मूल तथ्यो का ज्ञान होना बहुत जरुरी होता है। वैदिक ज्योतिष में सूर्य और चंद्रमा को भी ग्रह माना जाता है। इसके अलावा मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और राहु–केतु भी इनमें शामिल हैं। हालाँकि राहु और केतु ग्रह को छाया ग्रह कहा जाता है।

इन ग्रहों की अपनी एक अलग प्रकृति और अपना भिन्न स्वभाव होता है। अपनी विशेषता के कारण इनमें से कुछ ग्रह शुभ तो कुछ क्रूर ग्रह होते हैं। बुध एक ऐसा ग्रह है जो तटस्थ ग्रह की श्रेणी में आता है, अर्थात बुध ग्रहो शुभ संयोग से शुभ होता है, एवं अशुभ ग्रहो के संयोग से अशुभ हो जाता है। इसलिए वैदिक ज्योतिष में बृहस्पति, शुक्र, बली चंद्रमा को नैसर्गिक शुभ ग्रह माना जाता है; एवं मंगल, केतु, शनि, राहु, सूर्य ग्रहो को नैसर्गिक अशुभ श्रेणी में रखा जाता है।

- ✓ **वैदिक ज्योतिष में:** सूर्य, मंगल = उग्र व् क्रूर; शनि, राहू, केतु = क्रूर व् पापी एवं गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र = सौम्य ग्रह होते है।

नैसर्गिक शुभाशुभ ग्रहों की चार्ट

शुभ ग्रह	अशुभ ग्रह	शुभाशुभ
बृहस्पति, शुक्र	मंगल, केतु, शनि, राहु, सूर्य	बुध, चन्द्रमा

ज्ञातव्य:- अशुभ ग्रहो की संयोग से बुध अशुभ होता है और शुभ ग्रहो की प्रभाव से बुध शुभ होता है। एवं शुक्लपक्ष की बली चंद्रमा को शुभ और कृष्णपक्ष की निर्बली चन्द्रमा को अशुभ माना जाता है। कृष्णाष्ठमी से शुक्लाष्ठमी तक चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, शनि, पापयुक्त बुध, राहू एवं केतु अशुभ ग्रहों होते है।

- ✓ **ग्रहों की कारकता:** सूर्य व् मंगल: तेज (अग्नि), बुध: पृथ्वी, गुरु: व्योम (आकाश), शुक्र व् चन्द्र: जल एवं शनि वायु तत्व के अधिपति होते है।
- ✓ **ग्रहों का लोक:** सूर्य व् मंगल नरक के अधिपति। चन्द्र पाताल लोक, बुध मृत्युलोक, गुरु स्वर्गलोक, शुक्र पितृलोक एवं शनि विनाश के अधिपति होते है।

मुखमंडल में ग्रहों का स्थान

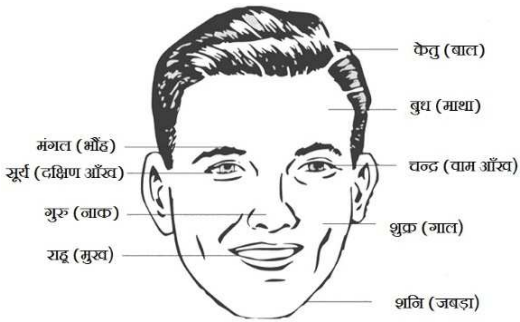

स्त्री पुरुष संज्ञक ग्रह

ग्रहादि की प्रकृति को देखते हुए वैदिक ज्योतिष में सूर्य, मंगल, गुरु और राहु ग्रहो को पुरुष ग्रह तथा चंद्र, शुक्र ग्रहो को स्त्री ग्रह एवं बुध, केतु और शनि ग्रहो को नपुंसक ग्रहो की संज्ञा दिया जाता है। मतान्तर में शनि, बुध ग्रहों को तटस्थ एवं केतु ग्रहों को उभयलिंगी का भी संज्ञा दिया गया है। पुत्र–कन्या संतानादि विचार में ग्रहादि की स्त्री पुरुष प्रकृति की ज्ञान रहना जरुरी होता है।

शीर्षादि ग्रह की संज्ञा

- **शीर्षद्वय ग्रह:** चन्द्र, बुध और शुक्र।
- **पृष्ठद्वय ग्रह:** सूर्य, मंगल, शनि, राहू व् केतु।
- **उभयद्वय ग्रह:** गुरु (वृहस्पति)।

जलीय शुष्क युग्म ग्रहादि

- **जलीय ग्रह:** चंद्र एवं शुक्र।
- **शुष्क ग्रह:** सूर्य, मंगल, राहु–केतु एवं शनि।
- ज्योतिष शास्त्रानुसार चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र स्थिर एवं युग्म ग्रह होते है।
- ✓ **ज्ञातव्य:** बुध एवं गुरु ग्रह जलराशि अर्थात कर्कट और मीन राशि में रहने पर जलीय ग्रह के रूप में विवेचित होते है एवं अन्य राशि पर रहने से शुष्क ग्रह माना जाता है। शुष्क ग्रहों की दशा में जातक की शरीर शुष्क होता है एवं जलीय ग्रहो की दशा में शरीर पुष्ट होता है।

ग्रहों का गुण

- **सूर्य:** सफलता, सौभाग्य, व् चमकप्रद विषय।
- **चन्द्र:** कल्पना, सनेह, ममता, परिवर्तनशीलता।
- **मंगल:** साहस, जीवनीशक्ति, पराक्रम व् संग्रामी मनोभाव, शल्यविद्या।
- **बुध:** व्यवसा–वाणिज्य, विज्ञान, व्यावहारिक वुद्धि।
- **गुरु:** उच्चाभिलाष, नेतृत्व क्षमता।
- **शुक्र:** प्रेम, कामुकता, सौन्दर्य।
- **शनि:** भावसाम्य वोध, विचारशीलता, चिंतन, अवसाद ग्रस्त, निसंगप्रिय, स्वल्पवाक्।
- **राहू/ केतु:** अराजकता, युद्ध – संग्राम, दंभ, शठता।

ग्रहों का दिशापति

सूर्य पूर्व दिशा की अधिपति, चन्द्रमा वायव्य कोण, मंगल दक्षिण दिशा, बुध उत्तर दिशा, गुरु ईशान कोण, शुक्र अग्नि कोण, शनि पश्चिम दिशा, राहु नैऋत कोण एवं केतु ईशान कोण की अधिपति होते है।

ग्रहादि का जाति–वर्ण और गुण

ग्रहों का स्वभाव को देखते हुए वैदिक ज्योतिष में ग्रहों को जाति–वर्ण और गुणों में भाग किया गया है। किसी जातक या जातिका की स्वभाव चरित्र को अच्छे से समझने के लिए ग्रहो की जाति व् गुण की समन्धित ज्ञान रहना जरूरी होता है। वैदिक ज्योतिष में शुक्र, गुरु ग्रह को व्राह्मण, सूर्य, मंगल ग्रहो को क्षत्रिय, बुध गृह को वैश्य वर्ण की, शनि ग्रह को चण्डाल अथवा शूद्र बर्ण एवं राहु और केतु ग्रहो को असुर ग्रहो की श्रेणी में रखा जाता है। त्रिगुणात्मक भेद में सूर्य, चंद्र और गुरु ग्रहों को सत्त्वगुण संपन्न, बुध और शुक्र ग्रहो को रजो: गुण संपन्न एवं शनि, राहु, केतु और मंगल ग्रहो को तामसिक गुण का माना जाता है।

ग्रहादि का रंग-रस, ऋतु, धात्वादि और त्रिदोषादि

ग्रह	रंग	रस	धात्वादि	त्रिदोषादि
सूर्य	ताम्रलाल	तिक्त	हडडी	पित्त
चन्द्र	सफ़ेद	नमकीन	रक्त	वात,श्लेषा
मंगल	विद्युत	कटु	मज्जा	पित्त
बुध	दुर्व्याश्याम	मिश्रित	चर्म	वायु,पित्त,कफ
गुरु	कनक	मधुर	वसा	कफ
शुक्र	घृताब	अम्ल	शुक्राणु	कफ, वात
शनि	नील	कषाय	स्नायु	वायु
राहू	काला	क्षार	X	X
केतु	धुम्र	क्षार/तिक्त	X	X

ग्रहो का दिक्शूल

रवि और शुक्र वार पश्चिम, मंगल और बुधवार उत्तर, वृहस्पतिवार दक्षिण, सोम और शनिवार को पूर्व दिशा की तरफ दिक्शूल रहता है। दिक्शूल को सामने की तरफ रखके कोई भी शुभ कार्य अथवा यात्रा नहीं करनी चाहिए।

ग्रहों का भाव स्वामीत्व

- **सूर्य:** काल पुरुष कुंडली में सूर्य ग्रहों को केवल पंचम भाव का स्वामित्व है।
- **चन्द्रमा:** कुंडली में चन्द्र ग्रहों को केवल चतुर्थ भाव का स्वामीत्व प्राप्त है।
- **मंगल:** कुंडली में मंगल ग्रहो को प्रथम एवं अष्ठम भाव का स्वामित्व प्राप्त है।
- **बुध:** काल पुरुष कुंडली में बुध ग्रह तीसरे एवं छठे भाव का स्वामी होता है।

- **गुरु:** काल पुरुष कुंडली में गुरु ग्रह नवम और द्वादश भाव का स्वामी होते है।
- **शुक्र:** कुंडली में शुक्र ग्रह दुसरे और सातवें भाव का स्वामी होता है।
- **शनि:** काल पुरुष कुंडली में शनि ग्रह दशम और एकादश भाव के स्वामी है।

ग्रहों का पद विशेष

- **ग्रहों का पद:** सूर्य, मंगल – चतुष्पद; चन्द्र, राहू, केतु – अपद; बुध, शनि – बहुपद; गुरु और शुक्र ग्रह द्विपद के होते है।
- **द्विपदादि विचार:** सूर्य, चन्द्र व मंगल ग्रहों से मनुष्य, बुध व शनि से पक्षी, गुरु व् शुक्र के द्वारा देवता एवं राहू और केतु ग्रहों के द्वारा राक्षस का विचार किया जाता है।
- **चतुश्पदादि:** सूर्य, मंगल, राहू व केतु – वनचर; चन्द्र, शुक्र – जलचर एवं बुध व गुरु ग्राम्यचर होते है।
- **अपद विचार:** सूर्य – मत्स्य, चन्द्रमा – शंख, कडीयाँ, मंगल – जलौका, प्रवाल, बुध – शम्भुक, गुरु – झिनुक, शुक्र – श्वेतप्रवाल, कीट, शनि – साधारण कीट एवं राहू व् केतु – सर्प, केंचु का विचार होता है।
- **वहुपद विचार:** सूर्य से पतंग, चन्द्र से केकड़ो, मंगल से विछु, बुध से कन्दुक, गुरु से चींटी (पिपीलिका), शुक्र से जलचर कीट, शनि से मछर एवं राहू व् केतु से भ्रमर विचार किया जाना चाहिए।

ग्रहादि का लिंग, वर्ण, आत्मराजादि ज्ञान

ग्रह	लिंग	वर्ण	आत्मादि	राजादि
सूर्य	पुरुष	क्षत्रिय	आत्मा	राजा
चन्द्र	स्त्री	वैश्य	मन	रानी
मंगल	पुरुष	क्षत्रिय	वल	सेनापति
बुध	क्लीव	वैश्य	वाक्य	युवराज
गुरु	पुरुष	व्राह्मण	ज्ञान	देवमंत्री
शुक्र	स्त्री	व्राह्मण	काम	दैत्यमंत्री
शनि	क्लीव	शुद्र/म्लेच्छ	दुःख	दूत/भृत्य
राहू	पुरुष	चाण्डाल	दुःख	अन्त्यज
केतु	पुरुष	चाण्डाल	दुःख	अन्त्यज

ग्रह तत्व

- **जीवन का विभिन्न काल:** मानव जीवन में चन्द्र शैशव काल, बुध बाल्यकाल, मंगल किशोर अवस्था, शुक्र युवावस्था, सूर्य मध्यावस्था, गुरु प्रौढ़ावस्था, शनि वृद्धावस्था तथा राहू/केतु अति वृद्धावस्था के कारक होते है।
- **ग्रहों का शारीरिक अंगो की संज्ञा:** सूर्य: हड्डी, चन्द्र: रक्त, मंगल: मांसपेशी, बुध: त्वचा, गुरु: वसा(चर्वी), शुक्र: वीर्य, शुक्राणु, शनि: स्नायु।
- **ग्रहों का पारिवारिक समंध:** सूर्य: पिता, चन्द्र: माता, मंगल: भाई, बुध: बहन, गुरु: पुत्र, संतान, पति, शुक्र: पत्नी, शनि: सेवक, नौकर।
- **ग्रहों के अन्न:** सूर्य: गेंहू, चन्द्र: चावल, मंगल: अरहर, मसूर, बुध: मुंग, हरा चना, गुरु: चने की दाल, काबुली चना, शुक्र: चना, राजमा, श्याम मूंगा, श्वेत चावल, शनि: उड़द, काला चना, तिल, राहू/केतु: उड़द, चना, कुल्थी।
- **ग्रहों के शासकीय पद:** सूर्य: राजा, चन्द्र: रानी, मंगल: सेनापति, बुध: राजकुमार, गुरु: प्रधानमंत्री, शुक्र: मंत्री, शनि: नौकर, राहू/केतु: सैनिक।

ग्रहादि का ऋतु दिशा, कारकादि

ग्रह	ऋतू	प्रभातादि	दिशा	चरादि	कारक
सूर्य	ग्रीष्म	मध्याह्न	पूर्व	स्थिर	पिता
चन्द्र	वर्षा	अपराह्न	वायु	चर	माता
मंगल	ग्रीष्म	मध्याह्न	दक्षिण	चर	भाई
बुध	शरद	प्रातकाल	उत्तर	द्विस्वभाव	मित्र
गुरु	हेमन्त	प्रातकाल	इशान	स्थिर	संतान
शुक्र	वसन्त	अपराह्न	अग्नि	चर	स्त्री
शनि	शिशिर	सायंकाल	पश्चिम	स्थिर	अनुचर
राहू	X	सायंकाल	नैऋत	चर	दादा
केतु	X	सायंकाल	इशान	चर	नाना

ग्रहों का शरीर अंग

सूर्य: मस्तक, दाहिना आंख व् मुख	गुरु: जंघा, चर्बी व् कटी
चन्द्र: ह्रदय, वाम आंख, रक्त व् गला	शुक्र: गुह्य, वीर्य व् कोष
मंगल: पृष्ठ, मज्जा व् उदर	शनि: जानू, स्नायु व् ऊरू
बुध: हाथ, त्वचा व् पद	राहू/केतु: गुह्य, हड्डी, चर्म व् पद

ग्रहों का रंग विशेष

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक ग्रह का एक विशिष्ट रंग माना गया है। ग्रह दोष को दूर करने के लिए ग्रह के रंगों की वस्तुओं का प्रयोग करने की सलाह दी जाती है।

- **सूर्य:–** ज्योतिष शास्त्रों में सूर्य ग्रह का रंग नारंगी, रक्त वर्ण लाल और सुनहरा रंग का बताया गया है। इस रंग का प्रयोग करने से व्यक्तित्व में सकारात्मकता आती है और जीवन में सफलता मिलती है। सूर्य ग्रहो के दोष को दूर करने के लिए इन्ह रंगो का उपयोग करना चाहिए।
- **चंद्र:–** चन्द्रमा का प्रभाव मन के ऊपर ज्यादा पड़ता है, इसलिए वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा का रंग सफेद माना गया है। चंद्र दोष होने पर सफेद रंग की वस्तुओं दूध, खीर, मखन, चावल या चांदी का उपयोग करना चाहिए।
- **मंगल:–** वैदिक ज्योतिष में मंगल ग्रह का रंग लाल माना जाता है। इसलिए मूंगा, लाल रंग के फूल, वस्त्र, मसूर की दाल आदि का प्रयोग मंगल ग्रह की स्थिति को मजबूत करने के लिए प्रयोग किया जाता है। लाल रंग प्रेम, उत्साह और साहस का रंग होते है।
- **बुध:–** ज्योतिष शास्त्रों में बुध का रंग हरा माना गया है। बुध दोष को दूर करने के लिए हरे रंग के कपड़े, हरे रंग के सब्जी, हरी रंग की वस्तुओं का उपयोग किया जाता है।
- **बृहस्पति:–** बृहस्पति ग्रह का रंग पीला होता है। गुरु दोष को दूर करने के लिए हल्दी, चना, गुड़, पीले रंग के वस्तुओ का प्रयोग करना चाहिए।
- **शुक्र:–** वैदिक ज्योतिष में शुक्र ग्रहो का रंग चमकीला सफेद और गुलाबी आभा वाले माना जाता है। शुक्र ग्रह के दोषो को दूर करने के लिए चमकीले सफेद या गुलाबी रंग की वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।
- **शनि:–** शनि ग्रह का रंग काला या गहरी नीला माना गया है, क्योंकि उसके वलय में नीला रंग भी होता है। शनि ग्रह के दुष्प्रभावों से बचने के लिए काले या नीले रंग के बस्तुओ का प्रयोग करना चाहिए।
- **राहु:–** राहु ग्रह का रंग वैसे तो नीला है। राहु ग्रहो के प्रभाव से बचने के लिए नीले रंगों का प्रयोग करना चाहिए।
- **केतु:–** केतु ग्रह का रंग ज्योतिष शास्त्रों में धूम्र रंग का बताया गया है, पर कहीं कंही चितकबरा अर्थात काला और सफेद माना गया है। इसलिए केतु प्रभाव से बचने के लिए सफ़ेद काले रंग के कुत्ते को खाना खिलाया जाता है।

ग्रहों द्वारा वस्तु विचार

- **सूर्य:** सोना, गुड़, गेहूं, घी, तेल, रस, सुगन्धित आदि वस्तुओं का विचार किया जाता है ।
- **चन्द्र:** चांदी, चावल, दूध, घी, श्वेत, वस्तु, प्रत्येक रस, जल, रुपया, खरीज आदि का विचार किया जाता है।
- **मंगल:** सोना, मूंगा, लाल वस्त्र, रक्त वस्तु, धान का विचार किया जाता है।
- **बुध:** प्रत्येक दाल, मूंग, हरे फल, मटर, परवल, सेम, सब्जियां, हरे वस्त्र का विचार किया जाता है।
- **गुरु:** सोना, चने की दाल, गुड़, सरसों, पीला वस्त्र, पीला रंग, गेहूं, जौ, पकवान, हलुआ आदि का विचार किया जाता है।
- **शुक्र:** रस, चांदी, मोती, जल, दूध, दही, रुपया, श्वेत वस्त्र, धातु, सुगन्ध–सजावट की वस्तु का विचार किया जाता है।
- **शनि:** काली वस्तुए, लोहा, तेल, तिल, उड़द, नमक, कुल्थ, मांस, मदिरा का विचार किया जाता है।
- **राहू:** समस्त काले कपड़े, फर्नीचर, खाट, पलंग, पटला, बच्चों के खिलौने आदि का विचार किया जाता है।
- **केतु:** गिल्ली डंडा, फिरकी, टूटी खाट, बान, पतंग, छप्पर, घास फूसकी झोंपड़ी आदि का विचार किया जाता है।

नष्ट द्रव्य की गनना में ग्रहों की कारकता

- **सूर्य:** दिवा वली, रास्ता के नजदीकी समतल भूमि, देवालय, पुरुष, मध्य उम्र, फरसा रंग, समय १ अयन अर्थात ६ महिना।
- **चन्द्र:** रात्र वली, जल युक्त नजदीकी भूमि, अथवा जलाशय, स्त्री, फरसा रंग, समय २ घंटा।
- **मंगल:** रात्र वली, उच्च भूमि, अग्नि क्षेत्र, युवक, फरसा रंग, समय १ दिन।
- **बुध:** दिन और रात्र वली, श्याम वर्ण की वालक, कृषि भूमि, क्रीडा क्षेत्र, समय २ महिना ।
- **गुरु:** दिवा वली, ग्राम–शहर, वृद्ध व्यक्ति, फरसा रंग, धन स्थान, समय १ महिना।
- **शुक्र:** दिवा वली, वहु जाति, जन बहुल क्षेत्र, जलाशय से दूर, स्त्री, विचित्र वर्ण, फरसा वर्ण, शयन स्थान, समय १५ दिन।

- **शनि:** रात्र वली, गंदगी से भरा क्षेत्र, जंगल, अनुन्नत क्षेत्र, कृष्ण वर्ण वृद्ध व्यक्ति, समय १ साल।
- **राहू/ केतु:** दिवा वली, दुर्गम क्षेत्र, नीच जाती, कृष्ण वर्ण।

ग्रहों का स्वभाव, कारक, क्रूरादि विशेष अवस्था

ग्रह	स्वभाव	कृरादि	अवस्था	गुण
सूर्य	स्थिर	क्रूर	वृद्ध	सत्वगुण
चन्द्र	चंचल	शुभ	युवा	सत्वगुण
मंगल	उग्र	क्रूर	युवा	तमगुण
बुध	मिश्र	मिश्र	युवा	रजगुण
गुरु	क्षिप्र	शुभ	वृद्ध	सत्वगुण
शुक्र	मृदु	शुभ	युवा	रजगुण
शनि	दारुण	क्रूर	अतिवृद्ध	तमगुण
राहू	विक्षिप्त	क्रूर	वृद्ध	तमगुण
केतु	तीक्षण	क्रूर	वृद्ध	तमगुण

ग्रहों का प्रमुख अशुभ फल

- **सूर्य:** भय, अर्थनाश, पीड़ा, सम्मानहानि, मानसिक कष्ट, अग्निभय, पिता का रोग एवं फाड़ा।
- **चन्द्र:** जलभय, शारीरिक पीड़ा, कर्यनाश, अशांति, मनकष्ट, रोग, एवं माता की कष्ट व् रोग।
- **मंगल:** शत्रुभय, अर्थनाश, यानवाहन दुर्घटना, भूमिनाश, डकाती, छिनतई, गुंडागर्दी, रक्तपात, अग्निभय एवं भ्राता की कष्ट।
- **बुध:** शत्रुभय, शारीरिक पीड़ा, कार्यनाश, रोग, वुद्धिहानि, व्यवसा हानि, स्वरणशक्ति की कमी, कन्या और बहनों की कष्ट।
- **गुरु:** प्रणयभंग, धर्म्म हानि, धननाश, रोग–फाड़ा, विपद, दुःख, शत्रु भय, पराजय, ज्ञान हानि एवं पुत्र की कष्ट।
- **शुक्र:** चारित्रिक हानि, दाम्पत्य अशांति, रोग, फाड़ा, प्रणय विच्छेद, एवं जलभय।
- **शनि:** दुःख, अशांति, रोग, फाड़ा, कृपणता, भ्राता की हानि, वित्तनाश, संतानहानि, मनकष्ट, अर्थनाश।
- **राहू/केतु:** उच्चस्थान से पतन, कुकर्म, विपद, अर्थनाश एवं दुर्घटना।

ग्रहों का विविध कारकत्व

मानव जीवन के ऊपर ग्रह का प्रभाव किसी भी तरह से नाकारा नहीं जा सकता है, इसी कड़ी को बढ़ाते हुए ग्रहो की कारकता के बारे में बिस्तार से बताया जा रहा है। कुंडली में सूर्य ग्रह प्रथम, नवम, दशम भाव कारकत्व होती है। चंद्रमा ग्रह चतुर्थ भाव की, मंगल ग्रह तृतीय, षष्टम भाव की, बुध ग्रह चतुर्थ, दशम भाव का बृहस्पति द्वितीय, पंचम, नवम, दशम, एकादश भाव की, शुक्र ग्रह सप्तम, द्वादश भाव की एवं शनि ग्रहो को षष्ट, अष्टम और दशम भाव का कारक माना जाता है। सभी ग्रह के कारक उस ग्रह के प्रभावों को प्रदर्शित करने में सहायक होते हैं। नौ ग्रहों में से जब कोई भी ग्रह अपने प्रभाव देता है तो उसे समझने के लिए उसके कारकों पर दृष्टि डालनी आवश्यक होती है। ज्योतिष गणना सुक्षरूप से करने के लिए ग्रहों के कारकत्व पर अच्छी पकड़ होनी चाहिए, तभी सटीक भविष्यवाणी की जा सकती है।

- **सुर्य ग्रहों की कारकत्व:** ज्योतिष शास्त्रों में सूर्य को ऊर्जा, पराक्रम, अहं, यश, मान–सम्मान, पिता और राजा का कारक माना गया है। हमारे शरीर में सूर्य देव पुरुष, अग्नि, पूर्णवयस्क, फरसा वर्ण, विद्वान, अल्पकेश, मध्याह्न वली, पारदधातु, क्रूर, स्थिर प्रकृति, सौभाग्य, चितकला, हड्डियों तथा हृदय का कारक ग्रह माने जाते हैं। स्वयं शक्ति, राजनीति, स्वास्थ्य, हृदय, पेट, पित्त, दायीं आँख, रक्त प्रवाह में बाधा गर्मी तथा बिजली इन सब चीजो का कारक सुर्य ग्रह होता है। यह रोशनी, अनुशासन, आरोग्यता, बल, बीज़, शरीर, सरकार, नेतृत्व, सफलता, अचानक–चमक्प्रद, शिल्प, सौन्दर्य, गणित, विज्ञान, नेत्र, तेज़, धैर्य, शौर्य, उत्साह, चिकित्सा–विज्ञान, वैध, राज़ सेवा, राज़सी भव्यता, धनवान लोग, वैभव शाली, शान–बान, प्रसिद्धि, सात्विकता, जंगल या पहाड़ की यात्रा, प्रशासन, मस्तिष्क, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, सिर का रोग, क्रोध व अचानक गुस्सा आना आदि सभी सूर्य से देखे जाते हैं। वैदिक ज्योतिष में सुर्य ग्रह को आत्मा का कारक एवं जन्म कुण्डलीं में नवम व् दशम भाव का कारक माना जाता है।

- **चंद्रमा ग्रहों की कारकत्व:** कुंडली में चंद्रमा मन, माता, मानसिक स्थिति, मनोबल, द्रव्य वस्तुओं, चित्त की प्रसन्नता, जलाश्य, यात्रा, सुख शंति, धन संपत्ति, शरीर के तरल पदार्थ, रक्त, बायीं आँख, छाती, दिमागी परेशानी और महिलाओं में मासिक चक्र का कारक होता है। चन्द्रमा के कारकतत्त्व में सभी तरल बस्तुए, दूध, जल, भोज़न, कला, विचार शक्ति, मस्तिष्क, सौम्यता, शीलता, संकोच, भावुकता, कल्पना, सौंद्रर्य, लज्जा, जल से सम्बन्धित वस्तुएं, मुख मंड़ल का तेज, देवी की उपासना, दयावान, कोमलता, संवेदनशीलता, भावनायें, सात्विकता, प्रणय, परिवर्तन, बुद्धि, चावल, कपास, गला, नाड़ी, घाव, गंध, खट्टापन, सफेद कपड़े, कफ प्रवर्ति, उत्तर–पश्चिम दिशा और चांदी के सभी चीजे आते हैं। स्त्री, जलचर, युवती, फरसावर्ण, मधुरभाषी, अपराह्न वली, गैरिकादी

धातु की अधिपति, सुंदर स्वास्थ्य व् स्वभाव, माता की शुभाशुभ एवं कुंडली में चतुर्थ भाव का कारक चन्द्रमा होता है।

- **मंगल ग्रहों की कारकत्व:** वैदिक ज्योतिष में मंगल ग्रह को शक्ति, पराक्रम, साहस, क्रोध व् उत्तेजना का कारक माना जाता है। शौर्य, अस्त्र–शस्त्र, दुर्घटनाओं, अचल संपत्ति, वैज्ञानिक, चिकित्सक, यान्त्रिक कार्यों, पुलिस, सेना, सिर, जानवरों द्वारा काटना, जलना, शल्य क्रिया, उच्च रक्तचाप, गर्भपात इत्यादि का भी कारक मंगल ग्रह होता है। ऊर्ज़ा, क्षमता, प्रधान सेनापति, भूमि, जमीन–जायदाद, वीरता, शत्रु, युद्ध, योद्धा, वर्दीधारी प्रशासनिक व्यक्ति, उच्चपदासीन, शासकीय सेवा, भू–सम्पति का कार्य करने वाले, बिजली और आग, रसोई की अग्नि, घाव, चोट, दुर्घटना, शारीरक व् मानसिक ताकत, अधिकार, प्रसाशन, गुड़, ताम्बा, प्रसिद्धि, चोर, चौपाये, मांसाहारी, सुनार, धर्नुविद्या, मूत्र के रोग आदि मंगल से देखे जाते हैं। मंगल ग्रह शरीर के स्टैमिना और लहु का कारक होता है। हौसला, बाहन, क़र्ज़, ऑपरेशन, मेहनत, शरारत, खाली ज़मीन, उलटे सीधे काम, सेनापति, भड़कीले स्वाभाव, पुरुष, युवक, तमाटे फरसा वर्ण, क्रूर, क्रोधी, मध्याह्नवली, शल्यविद, वलवान व्यक्ति, पारद धातु, भाई एवं तृतीय भाव का कारक मंगल ग्रह होता है।

- **बुध ग्रहों की कारकत्व:** वैदिक ज्योतिष में बुध को बुद्धि, गणित, संचार, चतुरता, चाचा, मामा और मित्र का कारक माना गया है। बुध ग्रहों से चातुर्य, वाणी, मनोविनोद, लेखन कार्य, तर्क वितर्क, ज्योतिष विज्ञान, नृत्य–नाटक, वनस्पति, व्यापार, मध्यस्थता कराने वाला व्यक्ति और संबंधियों के बारे में देखा जाता है। गला, नाक, कान, फेफड़े, आवाज, दिमागी क्षमता, चर्म रोग, स्मरणशक्ति, लेनदेन, वित्त, सीखना, समझना, जानना, शिक्षक, पढ़ना, लेखाजोखा, वकील, पुस्तक लिखना, शिक्षा, बुद्धिमता, बाणी, भाषण, खगोल शास्त्र, वक्ता, विद्वान, लेखक, परीक्षक, पत्रकार, समाचार पत्र, संवादिक, कागज, मुद्रण, मौसी, ताई, चाची, मामी, वेदज्ञान, ममेरे–भाई बहन, वायव्य दिशा, नाभि, पक्षी की भाषा का कारक बुध ग्रह है। व्यवसायी, व्यवहारिक वुद्धि, क्लीब, शिशु, श्यामवर्ण, सौम्य, बच्चो जैसा स्वभाव, प्रातःवली, पंडित, साहित्य, क्रीडा, तीर्थयात्रा, रसिकता और हास्य प्रेमी आदि सभी बुध के कारक तत्व हैं।

- **गुरु ग्रहों की कारकत्व:** गुरु ग्रह समाज मै मान–सम्मान, यश, ज्ञान, आनंद, पति, धनसम्पदा, संतान, परिवार, बड़े भाई, भाग्य, कर्म, लाभ, धन, खुशी, धर्म, पिता, बुजुर्ग, मोटापा आदि का कारक है। आत्मबोध, विवेक, संयम, पहचान, आदर्शनीति, पंडिताई, वेद, पुराण, योग, धर्मशास्त्र, पठन–पाठन, शास्त्रार्थ, पुजारी, विद्वान, राजगुरु, न्यायधीश, जल, क़ानूनी सलाहकार व विशेषज्ञ, मनोवैज्ञानिक, साहूकार, प्रबंधन विशेषता, धार्मिक कार्य में रूचि, पौराणिक ग्रंथो और रीति–रिवाज़ों, कठोर, सदाचारी, आदर्शवादी, नीतिगत

आचरण, आध्यात्मिकता, त्याग, अंतर्मुखी, राजसी भोग विलास, वेदों का ज्ञान, तीर्थयात्राऔर तपस्या भी बृहस्पति ग्रह के कारक तत्व में होते हैं। शिक्षा, श्रेष्ठजनो, भक्ति, प्राचीन साहित्य, संपत्ति, पूर्वजों, फल वाले वृक्षों, शरीर में चर्बी, मधुमेह, पेट की बीमारी, चिरकालीन बीमारियों, कान, बैंक, आयकर, खंजाची, राजस्व, मंदिर, धर्मार्थ संस्थाएं, कानूनी क्षेत्र, जज, न्यायाल्य, वकील, लेखा परीक्षक, सम्पादक, आचार्य, शिक्षाविद, अध्यापक, शेयर बाजार, पूंजीपति, मंत्री, दार्शनिक, निगम पार्षद, ज्योतिषी, दान, परोपकार इत्यादि का कारक गुरु ग्रहों को माना जाता है। कुंडली में पुरुष, पूर्णवयस्क, फरसावर्ण, व्राह्मण, सौम्य, पिंगल केश व् चक्षु, प्रातःवली, पंडित, ज्ञानी, धर्मकर्म, पुत्र एवं पंचम भाव का कारक गुरु (वृहस्पति) ग्रह ही होता है।

❖ **शुक्र ग्रहों की कारकत्व:** ज्योतिष शास्त्रों में शुक्र ग्रह को मंत्री की उपाधि दी गई हैं, और दानव गुरु भी कहा जाता है। शुक्र ग्रह के कारकत्व में भोगयोग्य, मोबाइल, गाड़ी, मकान, कपडे, टीवी, फ्रीज, इत्र, सुगन्धित पदार्थ, गहने, कलाकार, फ़िल्मी स्टार, फैशन, पेंटिंग, शारीरिक समन्ध से जुड़े सभी चीजे, लक्ज़री आइटम्स, वाद्य-यन्त्र, प्रेम-प्रसंग सहित सभी ६४ कलाए और सभी विलासिता पूर्ण वस्तुए है। चेहरे की आभा, सौन्द्रर्य, एशवर्य, परम् आनन्द, बहुर्मुखी, विकास, दुनिया, जल सम्बन्धित वस्तुए, पारिवारिक संपत्ता, वाहन, आभूषण, मूल्यवान वस्तुए, रत्न, नृत्य, गीत-संगीत, विनय, अभिनय, सौन्दर्ये-प्रसाधन, होटल, जलपान, सूरा-सुंदरी, सुंदरता, स्वच्छता, सलीका, दिखावा, खजाना, साहित्य, जल का स्थान, रहस्य, जलक्रीड़ा और खुशबु का कारक शुक्र ग्रह ही होते हैं। विवाह, रोमांस, काम वासना, विलासिता आदि विशेष रूप से पुरुषों की कुंडली में शुक्र को वीर्य का कारक माना गया है। शुक्र ग्रह से वैवाहिक संबंधों, इन्द्रिय भोग विलास, यौन विषय, सभी प्रकार की सुख स्म्पत्ति, भौतिक सुख-सुविधा, आभूषण, सुगंधित वस्तुओं, पुष्प, सजावत के सामान, कलात्मकता, डिजाइनर वस्तुओं, श्वेत रंग के पदार्थों, सुन्दर शरीर, बडी आंखे, दिखने में आकर्षक युवा, काव्यात्मक, गाना बजाना, घुंघराले काले बाल, व्यभिचार, शराब, कफ, कम खाने वाला, छोटी कद-काठी, गुप्त रोग, आँख, आंतें, अपेंडिक्स, मधुमेह रोगादि विचार किया जाता है। स्त्री, युवती नारी, फरसा वर्ण, सौम्य, जलचर, शहर, अपराह्नवली, विद्वान, संगीत, स्वभाव-चरित्र एवं सप्तम भाव का कारक शुक्र ग्रह होता है।

❖ **शनि ग्रहों की कारकत्व:** शास्त्रों में शनि ग्रह को सेवक बताया गया हैं। असंतोष, आत्मग्लानि, उदासीनता, संताप, मानसिक अवसाद, अकेलापन, तकलिफ, समस्याए, काम को डीले करना इन सभी के कारक शनि ग्रह होते है। निम्न वर्ग के कर्मचारी, परेशानी, अड़चने, बीमारी, अँधेरा, चमड़ा, कोयले की खाने, मुसीबतें, नौकरी, मोची, जमीन, जज, डॉक्टर, प्रोफेसर, लेबर, मामा, भूगर्भस्थ सभी चीजे और नशे की सामग्री शनि ग्रह के

कारक में होते है। शनि के कारकतत्व में सांसारिक कलेश, आध्यात्मिक चिंतन, वैराग्य, वृद्धावस्था, प्राकृतिक आपदा, विकलांगता, अपमान, अनादर, अनुचित व्यवहार, कृषिकार्य, खेती बाड़ी, खनिज पदार्थ, वास्तुकार, नौकर–चाकर, निर्दयी कार्य, पुराना मकान, एकान्तप्रिय, नीरसता, रूखापन, तिल, तेल, काली वस्तुए, निराशा, पुरातत्व, निम्नवर्ग के लोग, लोहार, उधोगपति, लोकतंत्र, ठगने का कौशल, स्टोरेज़, ओवर टैंक, मृत्यु का कारण, गंदे कपड़े, बुद्धि, अपवाद, नीचज़नो का आश्रय अदि होते है। शनि ग्रह जीवन, आयु, मृत्यु, दुखः कष्ट, दरिद्रता, निर्धनता, चापलुसी, बीमारी, निम्न स्तर के कार्य, बुढापे, पाप, भय, गोपनीयता, कारावास, कामगार, मजदूर, सेवक, सेवाभाव, दासता, त्याग, उंचाई से गिरना, अकाल, ऋण, कठोर परिश्रम, अनाज के काले दाने, विष, टांगें, राख, अपंगता, आत्मत्याग, बाजू, ड्कैती, अवरोध, लकडी, ऊन, यम, अछूत, इस्पात, सेवा विभाग, विदेशी भाषा, लोभ–लालच, अहंकार, चोरी, निर्ममता, लगंडापन, पांव, नसें, लसीका तंत्र, लकवा, थकान इत्यादि का कारक शनि ग्रह होते है। रोग, पीड़ा, विज्ञान, तकनीकी, लोहा, जेल, आदि का कारक भी शनि ग्रह को माना जाता है। क्लीव,काले रंग के वृद्ध व्यक्ति, क्रूर, संध्यावली, संपत्ति, संसार, दास–दासी, स्वल्पवाक्, विषन्नभाव, अल्पकेश, आलस्य एवं व्यक्ति के शरीर में नाभि का स्थान शनि का होता है, एवं ज्योतिष में शनि का बहुत बड़ा प्रभाव होता है।

❖ **राहु ग्रहों की कारकत्वः** नव ग्रहो में सबसे अधिक क्रूर राहु ग्रह है। दर्द–दुःख, कलेश, जुआ, सट्टा, जुर्म, नशेबाजी, झूठ बोलना, शराब, लाटरी, राजनैतिक घोटाले, मुसीबतें, काम देरी से करवाना, विदेश यात्रा, पुत्र, जीजा, लम्बी बीमारी, सरकार, विदेशी लोग, इण्टरनेट, मोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स सामग्री, चार्जर, अंतरिक्ष, इंजीनियर, पायलट, एयरहोस्टेस, कर्कश वाणी, समाज से बहिष्कार, फिजीकल हेंडीकेप होना, हठी, दुष्टता, अस्थिरता, कुटनीतिज्ञता, वाचाल, आलस्य, दरिद्रता, रुकावट, बाधा, ड्रग और जो भी गलत काम हमारे समाज मै होते है वो सब राहु ग्रह के कारकता में आते है। पुरुष, पूर्णवयस्क, काले रंग, धन, कृपण, मुर्ख, अधार्मिक, झगड़ालू, चोरी व नीचता के कार्य, गंगा स्नान, तीर्थ यात्रा, रूढ़िमुक्त, स्वछंद, धार्मिक प्रवर्ति, परम्परा तोड़ना, नीची दृष्टि, अपवित्रता, वात–कफ की पीड़ा आदि सभी राहु के कारकतत्व हैं। राहु ग्रह पितामह, दादा, सर्प दंश, क्रानिक बीमारियां, डर, विधवा, दुर्वचन, अनतैक इच्छाएं, त्वचा पर दाग, चर्म रोग, सरीसृप, जहर, महामारी, अनैतिक संबन्ध, नानी, व्यर्थ के तर्क, भडकाऊ भाषण, बनावटीपन, खुजली, हड्डियां, और सूजन, डूबना, अंधेरा, दुःख पहुंचाने वाले शब्द, निम्न जाति, दुष्ट स्त्री, जुआरी, विधर्मी, चालाकी, संक्रीण सोच, पीठ पीछे बुराई करने वाले, पाखण्डी, बुरी आदतों का आदी, जहाज के साथ जलमण्न होना, रोगी स्त्री के साथ आनन्द, अंगच्छेदन होना, पथरी, कोढ, बल, व्यय, आत्मसम्मान, शत्रु, मिलावट,

दुर्घटना, नितम्ब, विकलांग, खोजकर्ता, झगडा, गैरकानूनी काम, जासूसी, आत्महत्या, विषैला, पहलवान, शिकारी, दासता, शीघ्र उत्तेजित होना इत्यादि का कारक होता है।

- **केतु ग्रहों की कारकत्व:** वैदिक ज्योतिष के अनुसार यह ग्रह सबसे अधिक गुप्त प्रवृति का हैं। केतु ग्रह को तंत्र–मंत्र, जादू–टोना, काला जादु, जीवाणु, वैराग्य, मोक्ष, घाव, ज्वरादि पीड़ा का कारक माना गया है। केतु ग्रह की कारकता में तस्करी, स्मगलिंग, शराब, नशीली वस्तुए, विष, डॉक्टर, वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति, चालाकी, छल–कपट, झूठ, गुप्तचर, गुप्त शक्ति व विधा, जासूस, कम्प्यूटर, सूक्ष्मता, अंतर्मुखी, शीत की अधिकता, इमली का पेड़, भूख लगना, ऐश्वर्ये, पत्थर, ब्रह्मज्ञान, क्षय रोग, फोड़े–फुन्सी आदि होते हैं। मूर्खता, त्वचा रोग, कम्बल, विचित्र रंग वाले कपड़े, गर्म कपड़े, यात्रा, सिढियां, झंडा, कुर्ता, काला सफेद कुत्ता, दूरदृष्टि, गंगास्नान, बदलाव–स्थान परिवर्तन, हड्डियों की जोड़ा, शारीरिक दर्द कष्ट का भी कारक केतु ग्रह होते है। हकलाना, पहचानने में दिक्कत, आंत, परजीवी, उन्माद, कारावास, विदेशी भूमि में जमीन, कोढ, दासता, आत्महत्या, नाना, दादी, आंखें, तुनक मिजाज, तुच्छ और जहरीली भाषा, लम्बा कद, धुआं जैसा रंग, निरन्तर धूम्रपान करने वाला, शरीर पर दाग, छरहरा और पतला, दुर्भावपूर्ण अपराधी, गिरा हुआ, साजिश, अलौकिक, दर्शनशास्त्र, आकस्मिक मृत्यु, बुरी आत्मा, कीडों के कारण होने वाले रोग, विषैला काटना, धर्म, ज्योतिष, औषधियों का प्रयोग करने वाला, मिलावट करके अशुद्ध करने वाला, गिरफ्तारी, दिवालिया, मैथुन, अपहरण, खून, सजा, कृमि, चोट, अग्निकाण्ड, हत्या, पुरुष, पूर्णवयस्क, काले रंग, धन, अधार्मिक, झगड़ालू और कृपणता का कारक केतु ग्रह को माना जाता है।

राष्ट्रीय और प्रशासनिक कारकत्व

- **सूर्य:** राजा, राष्ट्रनेता, देश के सार्वभौम नेता, क्षमताशाली व्यक्ति, राज प्रतिनिधि, उच्चराज कर्मचारी, विशेष सम्मानीय नेता, सरकारी विभाग, गोशाला, कृषिफार्म आदि सूर्य ग्रहों के कारकत्व में है।
- **चन्द्र:** देश–विदेश, जन्मभूमि, देशनेत्री, प्रजा, राजकोष, जहाज–वन्दरगाह, नदियों, परिवहन, बांध, मत्स्य विभाग आदि चन्द्र ग्रहों के कारकत्व में है।
- **मंगल:** राजनैतिक परिवर्तन, युद्ध, विप्लव, गृहयुद्ध, सैन्यवाहिनी, पुलिस, कारागार, प्राकृतिक आपदा, श्रमिक आन्दोलन, भूमि, सेतु निर्माण उपकरण, गृहादि निर्माण कार्य, क्यामिकल, युद्धउपकरण, दंगा–अशांति, हत्याकांड, लौहनिर्माण, भारी यंत्रपति, चिकित्सा आदि मंगल ग्रहों के कारकत्व में है।

- **बुधः** राजदूत, विधानसभा, राजसभा, आयकर विभाग, प्रकाशन संस्था, प्रेस, बैंक, रास्ता/सड़क, विश्वविद्यालय, सरकारी प्रचार कार्य आदि बुध ग्रहों के कारकत्व में है।
- **गुरुः** मंत्रीसभा, गवेषणा, राज्यों की राजधानी, कानून विभाग, न्यायालय, विचारपति, सरकारी परिकल्पना, लोगो के लिए गृहादि निर्माण, जीवनवीमा, सरकारी ऋण मुकुव, वैज्ञानिकों, विश्वमानव, धार्मिक स्थान, उच्च शिक्षा प्रतिष्ठान आदि गुरु ग्रहों के कारकत्व में है।
- **शुक्रः** व्यवसाय/वाणिज्यिक विषय, प्रजाओं की शांति, नए नौकरियां, राज्यों की श्रीवृद्धि, वस्त्र, थियेटर और सिनेमा जगत, कला विभाग, सूक्ष्म यंत्रादि निर्माण आदि शुक्र ग्रहों के कारकत्व में है।
- **शनिः** देश का सम्मान हानि, श्रमदफ्तर, मंत्रीमंडल परिवर्तन, वन विभाग, खनीज विभाग, सीमेंट्स कारखाना, श्रमिक आन्दोलन, महामारी, शेयर मूल्य ह्रास, राज्यों में युद्ध जैसी परिस्थिति शनि ग्रहों के कारकत्व में है।
- **राहू/केतुः** सरकार पतन, हत्याकांड, गुप्त शत्रु, प्रजाओं की अवनति, कालावाजारी, द्रव्यों की मूल्य वृद्धि, महामारी, अपहरण, क्लेश, रोजगार की कमी, आर्थिक अवनति, विप्लव, श्रमिक आन्दोलन जैसी परिस्थिति राहू/केतु ग्रहों के कारकत्व में है।

ग्रहों से होने वाले रोग

शरीर का निर्माण आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी यह पांच तत्व से होता है। ये पांचो तत्व के ऊपर ग्रहो का काफी प्रभाव पड़ता है। इसलिए जब कोई ग्रह कुंडली में अशुभ स्थिति में रहते है, तो व्यक्ति मानसिक और शारिणिक रूप से परेशान होता है और कई तरह की बीमारियां उत्पन्न होती हैं। शरीर में होने वाली हर बीमारी किसी न किसी ग्रहों से संबंधित होती है।

सूर्यः– सूर्य पाप प्रभाव में होने से बाल झड़ते है और माइग्रेन जैसी बीमारी होती है। पित्त, जलन, उदर संबंधी रोग, रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी होना, कुष्ठ रोग, हृदय रोग, अस्थियों से संबंधित रोग, सिर रोग, रक्त संबंधी रोग, मिर्गी इत्यादि शारीरिक समस्या होती है। आमाशय या अग्न्याशय की निर्बलता, आधासीसी, हड्डियों के रोग (गठिया, अस्थिक्षरण, आदि), ज्वर, दस्त, खुश्की, घेघा, अतितृष्णा, अतिस्वेद, दाएँ नेत्र के रोग, गर्भपात, आँख आना/आईफ्लू, रक्तातिसार, डेंड्रफ, सोराइसिस, आत्मबलहीनता, पसीने में बहुत नमक आना, गला सूखना, स्तनों में दूध सूखना, भय लगना आदि रोग देता है।

चंद्रः– चन्द्रमा पाप प्रभाव में होने से सर्दी, जुकाम, खांसी और कफ जैसी बीमारियां उत्पन्न होती है। व्यक्ति के हृदय एवं फेफड़ों, बायें नेत्र, अनिद्रा या नींद संबंधी समस्या होती है।

अस्थमा, डायरिया, उल्टी, रक्ताल्पता, रक्तविकार, मानसिक तनाव, किडनी, मधुमेह, ड्रॉप्सी, अपेंडिक्स, मूत्र विकार, पीलिया, मुख, दांत, नासिका और दिल से संबंधी किसी भी प्रकार की समस्या होती है। चन्द्र पाप पीड़ित हो तो निमोनिया, साईनस, जलोदर, यक्षा, मनोबलहीनता, मनोविकार, पागलपन, स्मरणशक्ति में कमी, निम्न रक्तचाप, असुरक्षा, अतिभावुकता, सफेद पानी, अनियमित मासिक, भय/शंका, अवसाद, दीनता, निर्ममता, दस्त, मूत्र, लार बहना, थूक ज्यादा बनना, बिस्तर पर पेशाब निकलना, गुमसुम रहना, हथेली–तलवे ठंडे हो जाना, पसीने आना, शरीर के अंगों में पानी भर आना आदि रोग देता है।

मंगल:– मंगल पाप प्रभाव में होने से चोट या दुर्घटना होने का डर हमेशा बना रहता है। गर्दन व कण्ठ रोग, मूत्र रोग, ट्यूमर, कैंसर, गर्मी संबंधित रोग, विषजनित रोग, व्रण, कुष्ठ, खुजली, घमोरियां, रक्त या रक्तचाप संबंधित रोग, पाइल्स, अल्सर, दुर्घटना में रक्तस्त्राव, शरीर के किसी हिस्से का कटना, फोड़े–फुन्सी, ज्वर, अग्निदाह इत्यादि होते हैं। मंगल पाप पीड़ित हो तो पित्त, पीठ, पित्ताशय, अंडकोष, क्षत घाव, रक्तसंक्रमण, खूनी दस्त, मूत्रदाह, आँखों में जलन व लाली, ऐसिडिटी, चेचक खसरा, मलेरिया, डेंगू, पित्तप्रकोप, हैजा, सूखारोग, रक्ताल्पता/एनिमिया, रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता में कमी, एस्टॉफी आफ मसल्स, हाइड्रोसिल, शरीर का तापमान बढ़ा रहना, अतिक्रोध, आवेग, हिंसकता, दाह, बिजली का झटका, शल्यक्रिया, मज्जाक्षय, पीठदर्द, पाचन/पेट के रोग, सिरदर्द, सिर के रोग, कंधों हाथों में दर्द, धैर्यहीनता, कायरता, दंगों अथवा युद्ध या शस्त्र या अस्त्र से चोट, नुकीले दाँतों नाखूनों वाले जानवरों से चोट, लू लगना, रक्तस्त्राव, असन्तुलित मासिक, गर्भस्त्राव, माईग्रेन आदि रोग होता है।

बुध:– बुध पाप प्रभाव में होने से जातक चर्म रोग और सांस की बीमारियों से पीड़ित होते हैं। छाती के रोग, नसों से संबंधित समस्या, विषमय, खुजली, टाइफाइड, पागलपन, शरीर के किसी हिस्से में लकवा, मिर्गी, अल्सर, अजीर्ण, मुख का रोग, हिस्टीरिया, चक्कर आना, निमोनिया, विषम ज्वर, पीलिया, हकलाहट, कण्ठ रोग, चेचक, नाड़ियों की कमजोरी, जीभ का रोग या दिमाग से संबंधित समस्या होने का भी खतरा रहता है। इंसान बहरा और गूंगा (हकलाना/तुतलाना) भी बुध ग्रह के दुष्प्रभाव से होता है। स्मरणशक्ति में कमी, याददाशत चली जाना, व्यग्रता एंग्जाइटी, बुद्धिहीनता, गुर्दे के रोग, त्वचा के रोग (कुष्ठ, दाग,विवर्णता), मसूड़ों, दाँतों व नासिका के रोग, गंध न पहचान पाना, कायरता, नपुंसकता, दमा–अस्थमा आदि साँस के रोग, कंठमाला आदि गले के रोग, पेट के रोग, उल्टी, बाल उड़ना, मुहांसे दाने/रैशिज, सन्निपात, टायफाइट आदि रोग जातक को होता है।

गुरु:– गुरु पाप प्रभाव में होने से पीलीया, थायराइड या पेट संबंधित बीमारी होती है। लीवर, किडनी, तिल्ली आदि से संबंधित कोई रोग, कर्ण संबंधित रोग, मधुमेह, याददाश्त में कमी, जीभ संबंधित कोई समस्या, पिण्डलियों से संबंधित रोग, मज्जा दोष, यकृत, स्थूलता, दंत

रोग और मस्तिष्क विकार इत्यादि होते हैं। सूजन, किसी अंग अवयव का बढ़ना, मोटापा, वात–कफ के रोग, कोलाइटिसाइटिस, एपेंडिसाइटिस, हेपिटाईटिस, लिवर सोराइसिस, लिवर एन्लार्जमेन्ट, कर्कट (क्योंकि वृद्धि का कारक गुरु है और कैंसर बढ़ता फैलता है), बहरापन, ऊँचा सुनना, गैसट्राइटिस, बाल उड़ना, पाचनतंत्र की कमजोरी, खून कम बनना, इंसुलीन न बनना, ज्ञानेन्द्रियों की कमजोरी, चैतन्यता की कमी, साध्य रोग, तोंद निकलना, चटोरापन तथा पकवान गरिष्ठ भोजन के कारण होने वाले रोग, ज्ञान एवं विवेक या निर्णयशक्ति की कमजोरी आदि रोग होते हैं।

शुक्रः– शुक्र पाप प्रभाव में होने से उन्हें यौन सुख नहीं मिलता है और न ही ये लोग अपने जीवन में असली आन्नद की अनुभूति ले पाते हैं। जननेन्द्रिय संबंधित रोग, मिर्गी, अपच, गले के रोग, नपुंसकता, यौन रोग, अन्तःस्त्रावी ग्रंथियों से संबंधित रोग, मादक द्रव्यों के सेवन से उत्पन्न रोग, पीलिया, बांझपन, वीर्य संबंधित और त्वचा संबंधित रोग होता हैं। हारमोन्स में असन्तुलन तथा व्यभिचार से होने वाले रोग, शुक्राणुओं में कमी, पौरुष में अल्पता, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष, गर्भाशय व मासिक के रोग, मुहांसे, उत्तेजना में कमी, अतिकामुकता, कामविकृति/यौनविकृति, प्रमेह, मधुमेह, इक्षुमेह पेशाव में शर्करा जाना, घात जाना, मूत्ररोग, दृष्टिदोष, चोट पक जाना/मवाद पड़ जाना आदि रोग देता है।

शनिः– शनि पाप प्रभाव में होने से शारीरिक कमजोरी, शरीर में दर्द, पेट दर्द, घुटनों या पैरों में होने वाला दर्द, दांतों अथवा त्वचा संबंधित रोग, अस्थिभ्रंश, बहरापन, खांसी, दमा, अपच, स्नायु विकार, मांसपेशियों से संबंधित रोग, लकवा आदि हो सकते हैं। कोई भी दीर्घकालिक रोग तथा दर्द शनि की इन्वॉल्वमेंट के बिना नहीं होता हैं। रीढ़ के रोग, लंगड़ापन, सुन्न होना, पथरी, मूत्रावरोध, अन्धापन, अधरंग, पैरालाईसिस, कम्पवात, पार्किन्सन, सिरदर्द, शरीरदर्द, सर्वाइकल, स्पॉटलाइटिस, स्लिपडिस्क, धनुर्वात, कुबड़ापन, वायुरोग, गैस, ऊपरी असर, भूत–प्रेत बाधा, रहस्यमयी या असाध्य रोग, अनिद्रा, अतिनिद्रा, प्रमाद, मन्थरता, हदयरोग, आयरन की कमी, पागलपन, अवसाद, उच्चाट, भय, ठंडापन, कायरता, विष तथा नशे के कारण होने वाले रोग, मूर्च्छा, संन्यास, नपुंसकता जैसे रोग शनि ग्रहों से होता है।

राहुः– राहु पाप प्रभाव में होने से मस्तिष्क विकार, यकृत विकार, निर्बलता, पेट में कीड़े, मादक द्रव्यों के सेवन से उत्पन्न रोग, ऊंचाई से गिरने से लगने वाली चोट, पागलपन, तेज दर्द, विष जनित परेशानियां, पशुओं या जानवरों से मिलने वाला शारीरिक कष्ट, कुष्ठ रोग, कैंसर, बुखार, कालाजादू, भुत–प्रेत से होने वाले रोग व् विकार, अचानक चोट, हृदयघात जैसी बीमारियां उत्पन्न होती है। फोबिया, फिट्स/दौरे, भूतबाधा, वायुरोग, दुर्घटना, इलैक्ट्रिकशॉक, इन्फैक्शन, पॉइजनिंग, हड्डी टूटना, गोंगापन, मोतियाबिंद, जाला/फूला, दीर्घकालिक रोग, सुन्न होना, नाखूनों की खराबी, अचानक होने वाले रोग घटनाएँ राहू ग्रहों से होती है। मिर्गी, नासूर,

कोढ़, एग्जीमा, दाद, दांतों का असन्तुलित होना, ट्यूमर, हाथ पैर सो जाना, अनिद्रा, अतिनिद्रा, दुःस्वप्न, कोलेस्ट्रॉल आदि का जमना, इन्टॉक्सिकेशन, नशे तथा सभी प्रकार की विकृतियाँ व संक्रमण जैसे रोग होता है।

केतुः– केतु पाप प्रभाव में होने से वात जनित बीमारियां, रक्तदोष, चर्म रोग, सुस्ती, अकर्मण्यता, शरीर में चोट, घाव, एलर्जी, आकस्मिक रोग, परेशानी, कुत्ते का काटना, रीढ़ की हड्डी, कान, स्वप्नदोष, हर्निया, जोड़ों का दर्द, शुगर और गुप्तांग संबंधी रोग होता है। हमेशा भूत–प्रेत का भय बना रहता है, केतु की खराब स्थिति से फोड़े फुंसियां, कटने–फटने, जख्म तथा शल्यक्रिया आदि के संभावना बनी रहती है।

ग्रहों के अनुसार जीविकाए

हम सभी एक आरामदायक और शानदार जीवन जीना चाहते हैं, इसलिए एक स्थिर जीविका की आवश्यकता होती है। कुंडली में स्थित जो भी ग्रह बलवान होकर दशम, दशमेश व लाभ भाव से सम्बन्ध रखता हो अथवा चंद्र, सूर्य या लग्न इनमें से जो भी ग्रह कुंडली में अधिक बली होता है, उससे दशम भाव में जो भी राशि पड़ती है, उस राशि का स्वामी जिस नवमांश में है, उस राशि के स्वामी ग्रह के गुण, स्वभाव तथा साधन से जातक धन प्राप्त करता है।

- **सूर्यः–** कुंडली में बलवान सूर्य ग्रहो कर्मसंस्थान से समन्धित होने से जातक सरकारी सेवा, उच्च स्तरीय प्रशासनिक सेवा, मजिस्ट्रेट, राजनीति, प्रबन्धक, राजदूत, चिकित्सक, होटल मैनेजमेन्ट, रेलवे विभाग, विदेश सेवा, ओषधि, चिकित्सा, लाल रंग के पदार्थ, शहद, गेहूं से संबंधी, लकड़ी, आभूषण खरीदना–बेचना, रत्न बेचना, विद्युत उपकरण, मेडिकल स्टोर, कपड़े का कार्य, वाहनों का क्रय–विक्रय, पुस्तक भण्डार, सभी प्रकार के अनाजों का खरीदना–बेचना, ऊनी वस्त्र, पदार्थ विज्ञान, अन्तरिक्ष विज्ञान, फोटोग्राफी, नाटक, फिल्मों का निर्देशन, तांबा, बिजली, जनरल स्टोर, कपड़ा, वाहन, काठ, सोना–रूपा, सुगंधद्रव्य, जेनरल डायरेक्टर, पोस्ट आफिस, पुलिस, वनविभाग, हाईकोर्ट, माणिक, सींग या हड्डी के बने समान, खेती बाड़ी, धन विनियोग, बीमा एजेंट, सरकारी मुखबीर एवं ज्योतिष समंधीय कार्य करना शुभप्रद रहता है अथवा जातक करता है।
- **चंद्रः–** कुंडली में चंद्रमा का मजबूत होकर कर्मसंस्थान से समन्धित होने से जल से उत्पन्न वस्तुएं, पेय पदार्थ, दही, घी, मक्खन, आईसक्रीम, जल, श्वेत पदार्थ, चांदी, चावल, नमक, चीनी, पुष्प सज्जा, मोती, मूंगा, शंख, क्रॉकरी, कोमल मिट्टी, प्लास्टर ऑफ पेरिस, सब्जी, वस्त्र व्यवसाय, जादूगर, फोटोग्राफिक्स व वीडियो, म्यूजिक, प्रकाशन, दूध से जुड़े व्यवसाय करना लाभकारी होता है। कृषि कार्य, तरल पदार्थो का व्यापार, आयुर्वेदिक दवाओं का व्यापार, बिजली की दुकान, मोटर पार्टस, पेट्रोल पम्प, कोल्ड्र डिंक, संगीत

एकाडिमी, होटल, रेस्टोरेन्ट, मिटटी का कार्य, ठेकेदारी, किसी भी क्षेत्र में दलाली, मनोविनोद के कार्य, आचार–चटनी–मुरब्बे, कोल्ड ड्रिंक्स, नहरी एवम सिंचाई विभाग, मशरूम, मत्स्य से सम्बंधित क्षेत्र, लांड्री, आयात–निर्यात, शीशा, चश्मा, महिला कल्याण, नौ सेना, गंधद्रव्य, जलज द्रव्य, फल, अलंकार, प्रेस, वेंक, खाजनाखाना, हाईकोर्ट, विद्यालय, जल आपूर्ति विभाग, आबगारी विभाग, नाविक, विदेश यात्रा से संबंधित कार्य, अस्पताल, नर्सिंग, परिवहन, जनसंपर्क अधिकारी, कथा–कविता अदि लेखन कार्य चंद्रमाँ ग्रहो से निर्देशित होता है।

- **मंगल:–** कुंडली में मंगल ग्रह कर्मसंस्थान से समन्धित व बलवान होने से जातक पुलिस व सेना की नौकरी, बिजली का कार्य, विद्युत् विभाग, साहसिक कार्य, धातु कार्य, जमीन का क्रय –विक्रय, भूमि के कार्य, भूविज्ञान, रक्षा विभाग, खनिज पदार्थ, इलेक्ट्रोनिकस, इंजिनीयर, मकेनिक, वकालत, ब्लड बैंक, शल्य चिकित्सक, केमिस्ट, सिविल इंजीनियरिंग, शस्त्र निर्माण, बॉडी बिल्डिंग, खेल, कुश्ती, फायर ब्रिगेड, आतिशबाजी, रसायन शास्त्र, सर्कस, दलाली, शक्तिवर्धक कार्य, कम्प्यूटर, सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर, मेडिकल, पेट्रोल पम्प, सर्जरी का सामान, कोर्ट–कचहरी, ठेकेदारी, फार्मेसी, औषधि निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक, सर्जरी, भोजन बनाने संबंधी काम, कल–कारखाना, अग्नि, चूल्हा, ईंधन, बीमा, पारा, पत्थर, मिट्टी का समान, तांबे से संबंधित कार्य, धातुओं से सम्बंधित कार्य क्षेत्र, लाल रंग के पदार्थ, बेकरी, रेशन दोकान, प्लास्टिक, मृत्तिका द्रव्य, अग्नि से बना हुआ द्रव्य, लौह, अस्त्र, कृषि, कैटरिंग, हलवाई, रसोइया, इंटों का भट्ठा, बर्तनों का कार्य, होटल एवम रेस्तरां, फास्टफ़ूड, मिटटी के बर्तन व खिलौने, आदि से जुड़े कार्य कर सकते हैं।
- **बुध:–** बुध पूर्ण रूप से एक वैश्य ग्रह होने के कारण लेखन कार्य, ज्योतिष कार्य, प्रकाशन का कार्य, चार्टड एकाउटेंट, शिक्षक, गणितज्ञ, कन्सलटैंसी, वकील, ब्याज, पूंजी निवेश, शेयर मार्केट, वाणीप्रधान कार्य, एंकरिंग, शिल्पकला, काव्य रचना, सैल टैक्स, आयकर विभाग, पर्यटन, तम्बाकू, पान मसाला, पुस्तक के थोक विक्रेता, दूर संचार विभाग की ठेकेदारी, रेलवे के कारखाना, चूडियों का व्यापार, हरी सब्जियों का व्यापार, मार्केटिंग का बिजनेस तथा टूरिज्म, मोबाइल, चूड़ियां, कपड़े, फर्नीचर से जुड़े व्यापार या जीविकाओं में सफलता देते है। पुरोहित का कार्य, कथा वाचक, वाद्य–यन्त्र, गणित व कोमर्स के अध्यापक, वनस्पति, बीजों व पौधों का कार्य, वाणिज्य संबंधी, टेलीफोन विभाग, विज्ञान शिक्षक, सम्पादक, प्रफेसर, स्कूल इनिस्पेक्टर, गंधद्रव्य, ग्रंथागार, आयुर्वेद, दवाई, रत्न, यातायात, पत्रकारिता, मीडिया, बीमा कंपनी, दलाली, आढ़त, सब्जियां, कम्प्यूटर, फोटो, मुद्रण, डाक–तार, समाचार पत्र, दूत, टाइपिस्ट, कोरियर सेवा, सेल्समैन, हास्य व्यंग के चित्रकार इत्यादि किसी भी व्यापारिक तत्वों से जातक को लाभान्वित बनाता है।

- **गुरु:–** कुंडली में गुरू ग्रहों मजबूत होकर कर्मसंस्थान से समन्धित होने से जातक धर्मोपदेश, धर्मार्थ संस्थान, धार्मिक व्यवसाय, कर्मकाण्ड, ज्योतिष, न्यायालय संबंधित कार्य, नयायाधीश, कानून, वकील, बैंकिंग कार्य, कोशाध्यक्ष, राजनीति, अर्थशास्त्र, पुराण, मांगलिक कार्य, शिक्षक, शिक्षण संस्थाएं, पुस्तकालय, प्रकाशन, प्रबंधन, पुरोहित, किताबों से संबंधित कार्य, परामर्श कार्य, संपादन, थोक विक्रेता, पूजन भण्डार, पान की दुकान, भूमि का क्रय व विक्रय, आभूषण के विक्रेता, पीली वस्तुओं का व्यापार, वक्ता, नेता, पूजापाठ, मिठाई की दुकान, फिल्म प्रोडक्शन, प्रॉपर्टी, गृह निर्माण, उत्तम फर्नीचर, शयन उपकरण, गर्भ संबंधित कार्य, खाने पीने की वस्तुएं, स्वर्ण कार्य, वस्त्रों से संबंधित, लकड़ी से संबंधित कार्य, सभी प्रकार के फल, मिठाइयाँ, मोम, घी, किरयाना, दीवानी विभाग, जज, रेशन स्टोर, सुगंध द्रव्य, अख़बार, नमक व शिक्षा विभाग से जुड़े जीविकाए कर सकते हैं।
- **शुक्र:–** कुंडली में शुक्र ग्रह का मजबूत होकर कर्मसंस्थान से समन्धित होने से जातक कॉस्मेटिक्स, साहित्य, हीरा, पेंटिंग, टीवी शो, सौन्दर्य प्रसाधन, शिल्प कार्य, विज्ञापन, परिवहन विभाग, ठेकेदारी, वस्त्रों का व्यापार, हीरे का बिजनेस, खनिज कार्य, निर्माण कार्य, पर्यटन विभाग, रेसलिंग, थियेटर आदि से सम्बन्धित व्यवसाय अथवा जीविका होता है । इंजिनियर, दुग्धशाला, नौसेना, रेलवे, आबकारी, यातायात, बुनकर, आयकर, कलात्मक कार्य, संगीत (गायन, वादन, नृत्य), अभिनय, चलचित्र संबंधी कार्य, मनोरंजन के साधन, फिल्म उद्योग, वीडियो, पार्लर, मैरिज ब्यूरो, इंटीरियर डेकोरेशन, फैशन डिजाइनिंग, श्रृंगार के साधन, कोसमेटिक, इत्र, गिफ्ट हॉउस, चित्रकला, विवाह से संबंधित कार्य, महिलाओं से संबंधित कार्य, विलासितापूर्ण वस्तु, गाड़ी, सजावटी वस्तुएं, मिठाई संबंधी, रेस्टोरेंट, होटल, खाद्य पदार्थ, दूध से बने पदार्थ, दूध उत्पादन, दही, चावल, धान, गुड़, सोना, चांदी, जौहरी, वस्त्र निर्माता, गारमेंट्स, पशु चिकित्सा, हाथी घोड़ा पालना, टूरिज्म, चाय – कॉफी, चिड़ियाखाना, शिक्षा विभाग, अलंकार, गंधद्रव्य, अनुलेपन द्रव्य, जलजद्रव्य, रत्न, फोटोग्राफी और संगीतज्ञ होता है।
- **शनि:–** कुंडली में शनि कर्मसंस्थान से समन्धित है और शुभ फल देने वाला हो तो ज्योतिष, कर्मकांड, लोहे, वकालत, खनिज विभाग, तकनीकी कार्य, कृषि कार्य, काली वस्तुओं का व्यापार जैसे– तिलहन, काले तिल आदि जातक करता है। ट्रांसपोर्ट का कार्य, मुर्गी पालन, लकड़ी का कार्य, केमिकल प्रोडक्ट, ज्वलनशील तेल (पैट्रोल, डीजल आदि), कुकिंग गैस, प्राचीन वस्तुएं, पुरातत्व विभाग, अनुसंधान कार्य, कच्ची धातु, पशु–पक्षी, तरल पदार्थ, चर्म, सीसा, जेलर, वायुसेना, रेल विभाग, चाय वगिचा, कोयला, चमड़े का काम, जूते, अधिक श्रम वाला कार्य, मजदूरी, ठेकेदारी, मरम्मत के कार्य, अनाज, प्लास्टिक एवम रबर उद्योग, काले पदार्थ, स्पेयर पार्ट्स, भवन निर्माण सामग्री,

पत्थर, ईट, शीशा, टाइल्स, राजमिस्त्री, श्रम एवम समाज कल्याण विभाग, टायर उद्योग, घड़ियों का काम, कबाड़ी का काम, जल्लाद, तेल निकालना, पी डब्लू डी, सड़क निर्माण, सीमेंट यह सव लाभकारी होता है, एवं जातक ये सव बिभाग में ही कर्मरत होता है।

- **राहु:–** कुंडली में राहु बलवान स्थिति में कर्मसंस्थान से समन्धित होने से जातक शेयर मार्किट, फोटोग्राफी, लॉटरी, रेल विभाग, सामरिक विभाग, चाय वगिचा, कारखाना, पुलिस, राजनीती, प्रिंटिंग प्रेस, शराब, कम्प्युटर, बिजली, अनुसंधान बिभाग, आकस्मिक लाभ वाले कार्य, भारी मशीनों से संबंधित कार्य, तामसिक पदार्थ, जासूसी, गुप्त कार्य, कीट नाशक, एण्टी बायोटिक दवाईयां, पहलवानी, जुआ–सट्टा, मुर्दाघर, सपेरा, पशु वधशाला, जहरीली दवा, चमड़ा व खाल एवं ब्रोकर कमीशन एजेंट आदि से संबंधित कार्य कर सकता है।
- **केतु:–** कुंडली में अगर केतु ग्रह मजबूत होकर कर्मसंस्थान से समन्धित होता है, तो जातक धर्म से संबंधित कार्य, शल्य चिकित्सा, विषैले दवा, आध्यात्मिक कार्य, रहस्यमयी विज्ञान, स्टील फैक्ट्री, रेल विभाग, सामरिक विभाग, चाय वगिचा, कारखाना, पुलिस एवं समाज सेवा से जुड़े कार्य करता है।

ग्रहों की षड्बल

वैदिक ज्योतिष में ग्रहों के छह प्रकार के बल बताए गए हैं। षडबल में ग्रहों के छ: प्रकार के बल देखे जाते है, जैसे: १) स्थानबल २) दिग्बल ३) कालबल ४) नैसर्गिकबल ५) चेष्टाबल एवं ६) दृष्टि बल। इन्ह छह प्रकार की बल को एकसाथ में षड्बल कहा जाता है। ग्रहों के बल का मापक षड्बल होते है, इनके आधार पर ही वैदिक ज्योतिष में ग्रहों का बल अर्थात कौन सा ग्रहो कितना प्रभावी होगा यह बिचार किया जाता है। इसलिए किसी भी जन्मकुंडली का विश्लेषण करने के लिए ग्रहों के बलों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक होता है, इन्हें जाने बिना कुंडली का फल कथन निरर्थक होता है। षडबल कि गणना में राहू–केतु के अतिरिक्त अन्य सात ग्रहों की शक्तियों का आकलन किया जाता है। षडबल में अधिक अंक प्राप्त करने वाला ग्रह, बली होकर अपनी दशान्तर्दशा में अपने पूरे फल देता है। इसके विपरीत षडबल में कमजोर ग्रह अपने पूरे फल देने में असमर्थ होता है। कुंडली में स्थित ग्रह अपनी स्थिति, दूसरे ग्रहों कि दृष्टि, दिशा, समय, गति आदि के द्वारा बल प्राप्त करता है।

✓ षडबल की प्रयोजनीयता:–

I. षडबल के आधार पर घटनाओं का फलित करने से भविष्यवाणियों में सटिकता और दृढता आती है, तथा इससे त्रुटि होने कि संभावनाओं में भी कमी होती है।

II. ग्रहों के बल का आकंलन करने के बाद यह सरलता से निश्चित किया जा सकता है, कि किसी व्यक्ति की कुण्डली का विश्लेषण करने के लिए लग्न, चन्द्र, सूर्य तीनों में से किसे आधार बनाया जाए। फलित में इन तीनों में से जो बली हो, उसे ही प्रयोग में लेने के विषय में मान्यता है।

III. पिण्डायु या अंशायु विधि से आयु की गणना करना सरल हो जाता है। क्योंकि इन विधियों में आयु गणना करने के लिये जो आंकडे चाहिये होते हैं, वे उपलब्ध हो जाते हैं।

IV. महादशा और अन्तर्दशा के आधार पर फलित करना सरल हो जाता है। क्योंकि जो ग्रह षडबल में बली हों, वह दशान्तर्दशा में अवश्य अपना सम्पूर्ण फल देने में सक्षम होता है।

१) स्थानबल:

स्थान बल हमेशा ग्रह को स्थानीय बल अर्थात शक्ति देता है। यह वह बल है जो किसी ग्रह को जन्म कुंडली मे एक विशेष स्तिथि प्राप्त होने पर मिलता है। कुंडली में जो ग्रह उच्च, स्वगृही, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्व नवांशस्थ या द्रेष्काणस्थ होता है, वह ग्रहों स्थानबली कहलाता है। चंद्रमा, शुक्र समराशि में और अन्य ग्रह विषमराशि में बली होते हैं।

स्थान बल में पांच प्रकार के विशेष बल होते है, जैसे: १) उच्च बल २) सप्त्वर्गीय बल ३) युग्मा युग बल ४) केंद्र बल एवं ५) द्रेष्कान बल। कोई भी ग्रह एक विशेष राशि में स्थित होता है तो वह उपर्युक्त किसी भी प्रकार से हो सकता है। षड्लब के लिए गणना का आधार रूपा व षशट्यांश है। एक रूपा = ६० षशट्यांश होता है।

- **उच्च बल:** कुंडली में ग्रह अपने सर्वोच्च स्थान पर होने से ग्रह को सम्पूर्ण ६० षशट्यांश बल अर्थात एक रूपा बल मिलता है। इस प्रकार ही अगर ग्रह अपने नीचस्थ स्थान पर होता है तो उसका बल शुन्य हो जाता है।
- **सप्त्वर्गीय बल:** सप्त्वर्गो में स्थित होने पर ग्रह को सप्त्वर्गीय बल प्राप्त होता है। यदि ग्रह मूल त्रिकोण राशि में स्थित है तो उसे ४५ षशट्यांश बल मिलता है। ग्रह यदि स्वराशी में है तो उसे ३० षशट्यांश बल मिलता है और ग्रह यदि अधि मित्र की राशि में है तो उसे २२.५ षशट्यांश बल मिलता है।
- **युग्मायुग बल:** राशि चक्र व नवमांश चक्र में ग्रह सम व विषम राशि में स्थित होने के कारण उसे युग्मायुग्म बल प्राप्त होते है। चंद्रमा व शुक्र ग्रह जन्मकुंडली तथा नवांश कुंडली में समराशि में बलि होते है। सूर्य मंगल बुध गुरु शनि विषम राशियों में स्थित होने पर बलवान होते है।

- **केंद्र बल:** केंद्र बल को केवल जन्मकुंडली के आधार पर ही देखा जाता है। केंद्र अर्थात जन्म लग्न से १, ४, ७ एवं १० भावो में स्थित ग्रहों को ६० षशट्यांश बल प्राप्त होता है। पनफर भाव में (२, ५, ८, ११) स्थित ग्रहों को ३० षशट्यांश बल प्राप्त होता है। एवं ओपोक्लिम भाव (३, ६, ९, १२) में स्थित ग्रह को १५ षशट्यांश बल प्राप्त होता है।
- **द्रेष्कान बल:** पुरुष ग्रह जिस राशि में स्थित होते है उसके प्रथम द्रेष्कान में ०-१० में १५ षशट्यांश बल प्रदान किया गया है। दूसरे व तीसरे द्रेष्कान में शुन्य षशट्यांश बल मिलता है। नपुंसक ग्रह जिस राशि में स्थित होते है उसके दूसरे द्रेष्कान में १५ षशट्यांश बल मिलता है। जबकि प्रथम व तीसरे द्रेष्कान में शुन्य षशट्यांश बल मिलता है। एवं स्त्री ग्रह जिस राशि में स्थित होते है, उसके तीसरे द्रेष्कान में १५ षशट्यांश बल मिलता है, जबकि प्रथम व दूसरे द्रेष्कान में शुन्य षशट्यांश बल मिलता है।

२) दिग्बल:

कुंडली में ग्रहो दिग्बली होने से उन्ह ग्रह को दिशा बल प्राप्त होता है, अर्थात ग्रहो दिग्बली होता है। दिग्बली ग्रह जातक को अपनी दिशा में ले जाकर कई प्रकार से लाभ देने में सहायक बनते हैं। यह जातक को आर्थिक रूप से संपन्न बनाने में सहायक होते हैं; तथा आभूषणों, भूमि, भवन एवं वाहन सुख देते हैं। व्यक्ति को वैभवता की सुख प्राप्ति हो होती है। बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चंद्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से और सूर्य व मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। लग्न पूर्व, दशम दक्षिण, सप्तम पश्चिम और चतुर्थ भाव उत्तर दिशा में होते हैं। इसी कारण उन स्थानों में ग्रहों का रहना दिग्बली कहलाता है।

- **सूर्य के कुंडली मे दिगबली होने पर:** सूर्य के दिगबली होने पर व्यक्ति को आत्मिक रूप से मजबूत अंतर्मन की प्राप्ति होती है, वह अपने फैसलों के प्रति काफी सदृढ़ होता है। व्यक्ति में कार्यों को पूर्ण करने की जुनून रहता है एवं अन्य लोगों के लिए भी मार्गदर्शक बनता है। व्यक्ति के मन में जन कल्याण की भावना रहती है, साथ ही अपने निर्देशों का कडाई से पालन कराने की भी इच्छा रखते है, वह अपने कामों में कभी सुस्ती नहीं दिखाते है।

- **चंद्रमा के कुंडली में दिग्बली होने पर:** चंद्रमा के दिग्बली होने पर व्यक्ति का मन शांत भाव से सभी कामों को करने की ओर लगा रहता है। जातक धन वैभव से युक्त होता है, रत्नों एवं वस्त्राभूषणों का सुख प्राप्त होता है। व्यक्ति का आकर्षण एवं दूसरों के साथ आत्मिक रूप से जुड़ जाना बहुत प्रबल रूप से बढ़ता है, इसी कारण जातक जल्द ही दूसरों के चहेते बन जाते हैं।

- **मंगल के कुंडली मे दिग्बली होने पर:** मंगल ग्रह के दिग्बली होने पर व्यक्ति का साहस और शौर्य बढ़ता है। व्यक्ति भय की भावना से मुक्त होता है और वह किसी भी कार्य को करने से भय नहीं लगता है। वह विद्वान लोगों का आदर करने वाला होता है, तथा दूसरों के लिए मददगार सिद्ध होता है। जातक अपने मार्ग को स्वयं सुनिश्चित करने वाला होता है, वह अपने नियमों तथा वचनों का पक्का होता है। जातक के अंदर धर्मिकता का आचरण करने की इच्छा रहती है वह अनेक व्यक्तियों को आश्रय देने वाला होता है।

- **बुध के कुंडली मे दिग्बली होने पर:** कुंडली में बुध के दिग्बली होने पर जातक का स्वभाव काफी प्रभावशाली बनता है। जातक जीवन में सुख सुविधाओं की चाह रखने वाला होता है वह जीवन को सामर्थ्य पूर्ण जीना चाहता है। हास्य–विनोद में वह पारंगत होता है और प्रसन्नचित रहने वाला होता है तथा वाणी का धुरंधर होता है। व्यक्ति में चातुर्य का गुण प्रबल होता है, अपनी वाणी के प्रभाव द्वारा लोगों को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

- **बृहस्पति के कुंडली मे दिग्बली होने पर:** बृहस्पति के दिग्बली होने पर जातक को बहुत सुखों की प्राप्ति होती है। जातक स्वस्थ रहता है तथा मन से भी बहुत मजबूत होता है। जातक दूसरों के मदत के लिए प्रयासरत रहता है और गुरूजनों की सेवा करके प्रसन्न रहता है। वह सुखी होता है व आर्थिक रूप से संतुष्ट रहता है, शत्रुओं के भय से मुक्त रहता है तथा निडरता से काम करने वाला होता है। जातक के विचारों को सभी लोग बहुत सम्मान देते हैं तथा प्रजा की दृष्टि में उसे सम्मान की प्राप्ति होती है।

- **शुक्र के कुंडली मे दिगबली होने पर:** शुक्र के दिगबली होने पर जातक के जीवन में सौंदर्य का आकर्षण प्रबल होता है। साजो सामान के प्रति उसे बहुत लगाव रहता है तथा वह अपने रहन सहन को भी बहुत उन्नत किस्म का जीने की चाहत रखने वाला होता है। लोग इनकी ओर स्वत: खिंचे चले आते हैं, ऐसा जातक देश–विदेश में सम्मानित होता है और खूब धन अर्जित करता है। साथ ही दूसरों के लिए समर्पण का भाव भी रखता है।

- **शनि के कुंडली में दिग्बली होने पर:** शनि के दिग्बली होने पर जातक ब्राह्मण व देवताओं का भक्त तथा सेवक होता है। वह दूसरों के लिए सेवाकार्य करने वाला होता है, गीत–संगीत तथा नृत्य इत्यादि में जातक की रूचि होती है। वह चतुरता पूर्ण कार्यों को अंजाम देने की कला का जानकार होता है तथा व्यापार कार्यों में निपुण रहता है एवं नीतिपूर्ण व न्यायपूर्ण जीवन जीना ही उसका ध्येय होता है।

३) कालबल:

समय की शक्ति का निर्धारण काल बल करता है। रात में जन्म होने पर चंद्र, मंगल और शनि बलि होते है, और दिन में जन्म होने पर सूर्य, शुक्र और गुरु कालबली होते हैं। एवं बुध दिन औऱ रात दोनों में बलि होते है। पापी ग्रह कृष्ण पक्ष में बलवान होते है और शुभ ग्रह शुक्ल पक्ष में बलवान होते है। उत्तरायण में शुभ ग्रह एवं दक्षिणायन में पाप ग्रह वली होते है। शनि, राहू शीत ऋतू में; सूर्य, मंगल ग्रीष्म ऋतू में; चन्द्र वर्षा ऋतू में, शुक्र वसंत ऋतू में एवं गुरु और बुध शरद व् हेमंत ऋतू में बली होते है।

- **सूर्य ग्रह:** कुंडली में सूर्य ग्रह काल बली होने से व्यक्ति धन कमाने में कुशल होता है और उसे पैतृक संपत्ति विरासत में मिल सकती है। अपनी जीवन शैली के सकारात्मक स्वरूप को समझकर व्यक्ति आगे बढ़ता है और इससे दूसरों को लाभ होता है। वह अपने साहस और पराक्रम से जीवन में आने वाली बाधाओं पर विजय पाने की क्षमता हासिल कर लेता है।
- **चंद्र ग्रह:** काल बली चंद्रमा की स्थिति में व्यक्ति का मन स्वतंत्र रहने की इच्छा पर केंद्रित रहता है। उसे पालतू पशु, गाड़ी सुख और पारिवारिक सुख मिलता है। वह अपने कार्यों से दूसरों को लाभ पहुंचाता रहता है और हर किसी के दुख–दर्द को दूर करता है। व्यक्ति नदी के किनारे यात्रा करता है अथवा जलमार्ग से उसे लाभ होता है।
- **मंगल ग्रह:** कुंडली में मंगल ग्रह काल बली होने से वह अपने कार्यों से समाज को बदलने का प्रयास करता है। अपना काम करने में स्वतंत्रता मिलती है उनका उत्साह उनके कार्यों में भी झलकता है। मंगल की दशा के दौरान जातक को भूमि से धन की प्राप्ति होती है और कृषि से वह उच्च पद का धनी बनता है।
- **बुध ग्रह:** कुंडली में बुध ग्रह काल बली होने से व्यक्ति की वाणी बहुत प्रभावशाली होती है, वह दूसरों के लिए परामर्शदाता या मध्यस्थ के रूप में उपयोगी साबित हो सकता है, उसके विचारों को हर कोई भलीभांति समझ सकता है। व्यक्ति का व्यवहार दूसरों को मिलनसार बनाता है और इस समय उसे सरकारी नौकरी का अवसर भी मिल सकता है।
- **बृहस्पति ग्रह:** वृहस्पति ग्रह अर्थात गुरु ग्रह काल बली होने पर व्यक्ति को बहुत मान–सम्मान मिलता है। व्यक्ति अपने चरित्र और अच्छे कर्मों के कारण लोगों के बीच सम्मान पाता है। व्यक्ति को संतान की प्राप्ति होती है और उसके सुख–समृद्धि की वृद्धि होती है।
- **शुक्र ग्रह:** कुंडली में शुक्र ग्रह काल बली हो जाता है तो व्यक्ति के जीवन में कई प्रकार के सांसारिक सुख आते हैं। धन, वस्त्र, आभूषण और सुंदरता की ओर ध्यान आकर्षित होता है। व्यक्ति को समाज के लोकप्रिय वर्गों तक पहुंच मिलती है, और संगीत, नृत्य आदि में भी रुचि विकसित होती है।

- **शनि ग्रह:** शनि ग्रह काल बली होने से आत्मविश्वास बढ़ता है, जातक ईमानदार एवं भरोसेमंद होता है। जातक बुद्धिमान और शक्तिशाली होता है एवं जातक राजनीति व् कूटनीति के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। जातक को साहित्य एवं संगीत में भी विशेष रुचि होती है।

४) नैसर्गिक बल:

नैसर्गिक बल ग्रहो का प्राकृतिक बल होता है। कुंडली में शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चंद्र व सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। वैदिक ज्योतिष के अनुसार सूर्य सबसे अधिक बलि है, और शनि सबसे कम बलि ग्रहो होते है। अग्नि राशियों में जलीय ग्रहों का होना उनकी सौम्यता के लिए, जलीय राशियों में अग्नि ग्रहों का होना उनके तेज के लिए, पार्थिव राशियों में वायवी ग्रहों का होना उनकी गति के लिए, पार्थिव ग्रहों का वायवी राशियों में होना उनके स्थायित्व के लिए सामान्यतः अनुकूल नहीं होता है। पृष्ठोदयी राशियों में बैठें शुभ ग्रह अल्प सामर्थ्य वाले होते है, किन्तु क्रूर ग्रह विकराल होते है। जबकी शिर्शोदय राशियों में क्रूर ग्रह अल्पवली एवं शुभ ग्रह बलवान होते है।

५) चेष्टाबल:

चेष्टा बल ग्रहो की गतिशील बल होती है। उत्तरायण में अर्थात मकर से मिथुन पर्यन्त किसी भी राशि में सूर्य और चंद्रमा रहने से चेष्टाबली होते हैं। मंगल, बुध, शुक्र और शनि यदि चंद्रमा के साथ हों तो चेष्टाबली होते हैं। अर्थात मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि को चेष्टाबल तब प्राप्त होता है जब वे वक्री होते है।

६) दृष्टि बल:

एक ग्रहो की दूसरे ग्रहो पर दृष्टि पड़ने से दृष्टि बल मिलता है। शुभ ग्रहों की दृष्टि होने से ग्रहो को बल मिलता है अर्थात यह दृष्टि बली हो जाते है। परन्तु पाप ग्रह की दृष्टि में ग्रह का बल कम हो जाता है, इसलिए किसी शुभ ग्रहो के ऊपर पाप ग्रहो की दृष्टि होने पर उस ग्रहो को निर्बल माना जाता है।

ग्रहों की अवस्थाएँ

ग्रहो की षडबल की तरह, पञ्च प्रकार की विशेष शारीरिक और मानसिक अवस्थाय भी होते है । ग्रहों के अंश, राशि, भावों तथा पारस्परिक सम्बन्धों के अनुसार यह भिन्न–भिन्न प्रकार की अवस्थाएं मानी गयी हैं।

बालादि अवस्था में ग्रहों को बल उनके अंशो के आधार पर मिलता है, जबकि दीप्तादि में राशि के आधार पर मिलता है। जैसे: १) बाल्य आदि पाँच अवस्थायें २) दीप्तिादि दस अवस्थायें ३) जागृतादि तीन अवस्थायें ४) लज्जितादि छ: अवस्थायें तथा ५) शयनादि द्वादश अवस्थायें होती है।

वैदिक ज्योतिष में सूर्य आदि ग्रहों की लगबग ९६ प्रकार की अवस्था होती हैं। उनमें से भी सारभूत प्रमुख अवस्था यह पांच होती हैं। हम प्रकृति में आते हैं, पहले शिशु अवस्था में होते हैं, फिर बाल्यकाल में, फिर जवानी में तथा बाद में बुजुर्ग अवस्था में चले जाते हैं। कभी हम दुःखी तो कभी सुखी होते हैं, कभी स्वस्थ होते हैं तो कभी बीमार, कभी प्रसन्न तो कभी बेचैन महसूस करते है।

यह हमारे जीवन में विभिन्न प्रकार की अवस्थायें कुंडली में स्थित ग्रहों से प्राप्त होते हैं। जैसे ग्रहों का स्वभाव होता है, वैसी ही हमारी अवस्था होती है। फलित ज्योतिष में हमे ग्रहों के इन्ह बल, दृष्टि और विभिन्न अवस्थाय के अनुसार फल प्राप्त होते है।

१) ग्रहों की वालादि अवस्थाएं:

जिस प्रकार इस जगत में मनुष्यों, पशु–पक्षी अदि की बाल, कुमार, युवा, वृद्ध एवं मृत अवस्थाएं होती हैं, ठीक उसी प्रकार ग्रहों की भी बाल, कुमार, युवा, वृद्ध एवं मृत पांच अवस्थाएं होती हैं । अंशों के आधार पर ग्रहों को पांच आयु वर्गों में बांटा गया है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की ये अवस्थाएं जातक के जन्मांग फलित में ठीक उसी प्रकार प्रभावित करती हैं, जितना मानव के शारीरिक अवस्थाएं उसके जीवन को प्रभावित करता है।

जैसे मनुष्यादि पशु–पक्षी अपनी कुमार व युवावस्था में बलवान व सशक्त होता है। ठीक इसी तरह ग्रह भी अपनी अपनी कुमार व युवावस्था में बलवान होता है। जन्म कुंडली में अगर शुभ ग्रह बलवान होता है, तो वह ग्रहों जातक को अत्यंत शुभ फल प्रदान करता है और यदि शुभ ग्रह निर्बल अर्थात वाल, मृत वृद्ध अवस्थाओं में हुआ तो वह जातक को उतना शुभ फल प्रदान करने में असमर्थ रहता है।

अंत: जातक की कुंडली में शुभ ग्रहों का ग्रहावस्था के अनुसार बलवान व सशक्त होना अतिआवश्यक होता है। मनुष्य कीट–पतंग, पशु–पक्षी अदि की विविध अवस्थाएं उसकी

आयु के अनुसार तय होती हैं। जबकि ग्रहों की विविध अवस्थाएं उनके अंशों के अनुसार निर्धारित होता है।

✓ **ग्रहों की पाँच प्रकार की अवस्थाएं:- १) वाल २) कुमार ३) युवा ४) वृद्ध और ५) मृत अवस्था।**

ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक राशि को ३० अंश का माना गया है, इसलिए प्रत्येक ग्रह ० से ३० अंश के बीच ही होता है, इसके ऊपर ही ग्रहो की वालादि पांच अवस्थाय होती है। ३० भागों को ६ से विभाजित करने पर ५ भाग होते हैं। विषम राशियों में बढ़ते हुए अंशों में बालक से मृत तथा सम राशियों में घटते हुए अंशों में बालक से मृत के क्रम में ग्रहों की आयु मानी गयी है।

अर्थात विषम राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ) में बैठा ग्रह १ से ६ अंश तक बाल होता है। ७ से १२ अंश तक कुमार, १३ से १८ अंश तक युवा, १९ से २४ अंश तक वृद्ध और २५ से ३० अंश तक मृत अवस्था में होता है।

एवं सम राशि (वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन) में बैठा ग्रह १ से ६ अंश तक मृत, ७ से १२ अंश तक वृद्ध, १३ से १८ अंश तक युवा, १९ से २४ अंश तक कुमार और २५ से ३० अंश तक बाल अवस्था में होता है।

- **बालकग्रह**- सामान्य अर्थात २५% फल देने में सक्षम होता है।
- **कुमारग्रह**- अर्धफल अर्थात ५०% फल देने में सक्षम होता है।
- **युवा ग्रह**- पूर्ण फल अर्थात १००% फल देने में सक्षम होता है।
- **बृद्धाग्रह**- नगण्य फल देता है।
- **मृतग्रह** – अशुभ परिणाम अथवा निष्फल होता है।

- **बाल अवस्था:** जन्मकुंडली में यदि कोई भी ग्रह बाल अवस्था में स्थित है तब वह ग्रह अपना पूर्ण रूप से फल देने में असमर्थ होता है।
- **कुमार अवस्था:** जन्मकुंडली में ग्रह यदि कुमार अवस्था में हो तब यह स्थिति बाल अवस्था ग्रह से कुछ बेहतर होती है। इस अवस्था में ग्रह अपनी राशिनुसार स्थिति में भी बलबान हो तब इस अवस्था में ग्रह अपना एक तिहाई फल प्रदान करने में समर्थ होता है।
- **युवा अवस्था:** ग्रह की युवा अवस्था अत्यधिक शुभ व बली अवस्था होती है। इस अवस्था में ग्रह राशिनुसार भी बलिष्ठ हो तो अपने पूर्ण फल प्रदान करता है। इस अवस्था में ग्रह अंशानुसार पूर्ण बली होता है।

- **वृद्ध अवस्था:** वृद्ध अवस्था में बेठा ग्रह अपने पूर्ण फल देने में समर्थ नही होता है और यदि इस अवस्था में ग्रह अपनी राशि स्थिति के अनुसार बली भी हो तब भी वह अपने अधिक शुभ फल देने में असमर्थ होता है।
- **मृत अवस्था:** मृत अवस्था में बेठा ग्रह अत्यधिक निर्बल अवस्था में होता है, इस अवस्था में बेठे ग्रह से अधिक फल प्राप्ति की आशा व्यर्थ है।

✓ अर्थात बाल्यावस्था मे ग्रह की शक्ति १/४ होती है, कुमारावस्था मे ग्रह की शक्ति १/२ होती है, युवावस्था मे पूर्ण शक्ति, वृद्धावस्था मे न्यूनतम शक्ति होती है। एवं मृतावस्था मे ग्रहों कोई परिणाम देने में सामर्थ्य नहीं होते है।

जब कोई ग्रह बाल अवस्था में होता है तो उसका सूक्ष्म फल मिलता है। यह मनुष्य को चंचल बनाता है और जब कोइ ग्रह कुमार अवस्था में होता है तो वह मनुष्य को गैर जिम्मेदार बनाता है। जब कोई ग्रह युवा अवस्था में होता है तो वह मनुष्य को ऊर्जावान, सशक्त और कार्यशील बनाता है। वृद्धावस्था में ग्रह के होने पर वह जातक को गंभीर और अनुभवी बनाता है, परन्तु मनुष्य शक्तिशाली नहीं रहता है। एवं मृत अवस्था के ग्रह का कोई फल नहीं मिलता है।

बहुत विद्जन राशि के द्रेष्काण अनुसार ग्रहो की शारीरिक अवस्था मानते है। तीन द्रेष्काण अनुसार तीन बाल्य, मध्य, वृद्धावस्था मानते है। सम राशियो में विपरीत क्रम से गणना करते है, यानि प्रथम द्रेष्काण वृद्धावस्था, द्वितीय द्रेष्काण मध्यावस्था और तृतीय द्रेष्काण बाल्यावस्था होती है। सूर्य और मंगल बाल्यावस्था मे श्रेष्ठ परिणाम देते है, गुरु और शुक्र मध्यावस्था में श्रेष्ठ परिणाम देते है। एवं चन्द्र और शनि वृद्धावस्था मे श्रेष्ठ परिणाम देते है, तथा बुध तीनो अवस्थाओ में श्रेष्ट परिणाम देता है।

२) ग्रहों की दीप्तादि अवस्थाएं:

वैदिक ज्योतिष में ग्रहो की स्वभाव या प्रकृति के अनुसार दीप्तादि दस अवस्था बताई गई है। जैसे कि नाम से ही पता चलता है कि ये अवस्थाएँ ग्रह के प्रकाश को बताती हैं। जब ग्रह अपनी उच्च राशि, मूल त्रिकोण राशि और स्वराशि में होते हैं तो राशियों की स्थिति के अनुकूल फल देते हैं और इन्हें ही दीप्तादि अवस्था कहते हैं। कई विद्जन इन दस अवस्थाओ मे से नौ को ही व्यवहार मे लाते है, पर दीप्तादि दस अवस्था द्वारा भविष्यवाणी करनी चाहिए, इससे भविष्यवाणी कभी भी गलत नही होगी। ग्रह अपनी दीप्तादि अवस्थाओं के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं, इसलिए ग्रहो की इन्ह स्थितिओ पर विशेष रूप से विचार किया जाना चाहिए, जिससे कि सटीक फलादेश हो सके। जातक के जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के अनुसार निम्नलिखित दीप्तादि दस अवस्था बताई गई हैं।

✓ **दीप्तादि दस अवस्था: १. दीप्त २. स्वस्थ ३. मुदित ४. शांत ५. गर्वित ६. पीड़ित ७. दीन ८. खल ९. भीत एवं १०. विकल।**

१) **दीप्त ग्रह:** जब भी कोई ग्रह कुण्डली में उच्च का हो या अपनी उच्च राशि में स्थित हो अथवा उच्च के अंश में स्थित हो तो वह ग्रहों की दीप्त अवस्था होती है। इस अवस्था में ग्रह अपने पूर्ण प्रकाश युक्त होता है, इसलिए अपने सम्पूर्ण फल देने में सक्षम होता है। दीप्त ग्रह की स्वदशा या अंतर्दशा में जातक के प्रभुत्व, प्रभाव, सम्मान और पद में वृद्धि होती है, अध्ययन एवं अनुसंधान के क्षेत्र में अच्छे परिणाम, सम्मान एवं मान्यता प्राप्त होती है। साहस, वैभव, धन संपत्ति, भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति, दीर्घकालिक खुशी, राजकीय मान सम्मान तथा राजकृपा मिलता है। व्यक्ति शक्तिशाली, गुणवान व पुरूषार्थी होता है तथा उसके कार्यों में शालीनता होती है।

२) **स्वस्थ ग्रह:** अपनी राशि मे स्थित ग्रह को स्वस्थ कहलाता है। स्वस्थ ग्रह की दशा में मनुष्य भी स्वस्थ होता है, तथा राजमान्य, धन आदि सुख से सुखी, विद्या, यश और स्त्रीपुत्र, भूमि आदि सम्पत्ति शाली धर्मात्मा होता है। ऐसे ग्रह की स्वदशा या अंतर्दशा में राज्य स्रोतों से धन, सम्मान और सुख की प्राप्ति का संकेत मिलता है।

३) **मुदित ग्रह:** जन्म कुण्डली में कोई भी ग्रह यदि अपनी मित्र की राशि में स्थित होता है तब वह उस ग्रह की मुदित अवस्था होती है। जो ग्रह गुरु से युक्त या दृष्ट हो तो भी वह ग्रह मुदित कहलाता है। जिस प्रकार व्यक्ति अपने अच्छे मित्रों के साथ खुश रहता है ठीक उसी प्रकार ग्रह भी अपनी मित्र राशि में मुदित अर्थात प्रसन्न रहते हैं। मुदिताग्रह की स्वदशा और अंतर्दशा में भूमि, वस्त्र और आभूषण की प्राप्ति होती है। पराक्रम, संतान प्राप्ति और वाहन प्राप्ति की भी संभावना बताई गई है।

४) **शान्त ग्रह:** कोई ग्रह कुण्डली में शुभ ग्रह की राशि में हो और वर्गो (सप्तमांश्, नवांश, दशमाशं इत्यादि) में अपने शुभ वर्गों में होता है तो वह उसकी शान्त अवस्था होती है। शांतग्रह की स्वदशा और अंतर्दशा में; जातक धैर्यवान व शान्त प्रकृति का होता है, तथा शास्त्रों का ज्ञाता और दानी होता है। संतान लाभ, सुख, सम्मान, विवाह, धन का लाभ, वाहन का लाभ और राज्य सम्मान की प्राप्ति होती है। शांत ग्रहों की दशा एवं अंतर्दशाकाल को शिक्षा के क्षेत्र के लिए अति शुभ माना जाता है।

५) **गर्वित ग्रह:** जो ग्रह कुण्डली में मूल त्रिकोण राशि में हो तो गर्वित कहलाता है। यह बहुत ही शुभफलदायक होता है, व्यक्ति को आर्थिक लाभ और धन की प्राप्ति होती है, उसे आभूषण, वस्त्र, वाहन आदि का सुख मिलता है। व्यक्ति सभ्य व्यवहार करने वाला होता है और उसे मानसिक संतोष की प्राप्ति होती है। धार्मिक प्रवृति जागृत होती है और मित्र के व्यवहार द्वारा अच्छे गुणों की प्राप्ति होती है।

६) **पीड़ित ग्रह:** ग्रहो से पराजित होने पर अर्थात शत्रु भाव में स्थित ग्रह पीड़ित कहलाता है, अर्थात जो ग्रह पापी ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो ऐसा ग्रह पीड़ित होता है। ऐसा ग्रह अपनी दशान्तरदशा में अच्छा फल नहीं देता है। अत्यंत दु:ख–भय, विघ्न, हानि, सरकारी यातना का भय, वरिष्ठों से अशांति, मुक़दमे में हानि तथा मित्रहीन स्थितियों का संकेत देता है।

७) **दीन ग्रह:** सम ग्रह की भाव में स्थित ग्रह को दिन ग्रह कहा जाता है। अशांति, विवाद, नौकरी में बदलाव, रिश्तेदारों और दोस्तों के साथ मनमुटाव का संकेत देती है। ऐसा ग्रह अपनी दशान्तद्र्शा में स्थान में बदलाव, निन्दित, हीन स्वभाव एवं जातक को रोग होने की संभावनाएं बनती है।

८) **खल ग्रह:** जब भी कुण्डली के किसी भी भाव या राशि में दो ग्रह या दो से अधिक ग्रह आपस में १ अंश के अन्तर में हों तो यह गृह युद्ध की स्थिति होती है एवं अधिक अंशो वाला ग्रह युद्ध में परास्त होता है। अथवा अतिपाप ग्रह की राशि में स्थित अथवा क्रूर ग्रहो से दृष्टि वाला ग्रह खल ग्रह कहलाता है। ऐसे ग्रह अपनी दशा अन्तद्र्शा में कलह, मित्रों, माता और पिता आदि की मृत्यु के कारण वियोग देता है। खल ग्रहों की दशा में व्यक्ति को शत्रुओं से पराजय, धन, भूमि और वाहन हानि होती है।

९) **भीत ग्रह:** जो ग्रह नीच राशि में बैठा हो अथवा बहुत ही तीव्र गति से भ्रमण कर रहा हो तो ऐसा ग्रह भीत कहलाता है। तथा नीच ग्रहो के साथ पड़ा ग्रह भी भीत कहलाता है। भीत ग्रह की स्वदशा और अंतर्दशा में; कार्यस्थल पर अशांति, धन और भूमि की हानि, विभिन्न उपद्रव, पिता के व्यवहार या कार्यों से समाज में बदनामी का भय और शत्रुओं की वृद्धि होती है।

१०) **विकल ग्रह:** जो ग्रह कुंडली में अस्त होकर स्थित हो वह ग्रह विकल कहलाता है। कुण्डली में जब भी ग्रह सूर्य के समीप आते है, तब वह अस्त हो जाते है। अस्त अवस्था में ग्रह अपना प्रभाव खो देते है, एवं अच्छा फल देने में सक्षम नहीं होता है। अस्त ग्रह की अवस्था उसकी पीडित अवस्था होती है, इस करण ग्रह अशुभ फल प्रदान करता है। अस्त ग्रह की दशान्तद्र्शा में विद्या, धन, भूमि, वाहन, पुत्र, स्त्री व बन्धुओं से पीड़ा होती हैं और अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते हैं।

३) ग्रहों की जागृतादि अवस्थाएं:

वैदिक ज्योतिष में ग्रहों की चैतन्यता के आधार पर जागृतादि तिन अवस्थाएं होती है, जैसे: १) जागृत अवस्था, २) स्वप्ना (तन्द्रा)अवस्था एवं ३) सुषुप्ति अवस्था। विषम राशि की १० डिग्री तक जागृत, १०–२० अंश तक स्वप्ना एवं २०–३० डिग्री तक सुषुप्ति अवस्था होती है। सम राशि की १० डिग्री तक सुषुप्ति, १०–२० अंश तक स्वप्ना तथा २०–३० डिग्री तक जागृत

अवस्था होती है। अन्यमत से उच्चांश और तथा स्वनवांश मे ग्रह जाग्रत अवस्था, मित्र के नवांश मे स्वप्नावस्था तथा शत्रु के नवांश मे सुप्तावस्था मे होता है। जागृत अवस्था में ग्रह अच्छा फल देता है, तन्द्रा अवस्था में मध्यम फल करता है, तथा सुप्त अवस्था में ग्रह निष्फली होता है।

१) **जाग्रत अवस्था:** फलित ज्योतिष में ग्रहो की उत्तम अवस्था जागृत अवस्थाए होती है। क्योकि इस अवस्था में ग्रह जाग्रत अर्थात जागा हुआ होने के कारण अपना सौ प्रतिशत फल देने में सक्षम होता है। जागृत ग्रह अपनी मूलत्रिकोण राशि में या स्वराशि अर्थात अपनी राशि में रहने से दशान्तर्दशा में जातक को सुंदर वस्त्र एवं आभूषणों की प्राप्ति होती है, शिक्षा एवं ज्ञान में वृद्धि होती है। शत्रुओं का नाश होता है, और भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति होती है। व्यक्ति विचारशील होकर कार्य करता है, राजकीय सम्मान, भू-संपत्ति एवं पद की प्राप्ति होती है।

२) **तन्द्रा अवस्था:** इस अवस्था में ग्रह मध्यम बल का होता है। हालाकी तन्द्रा अर्थात स्वप्न अवस्था में ग्रह की स्थिति मित्र राशि में होता है या शुभ वर्गों के साथ युति में हो अथवा उनके द्वारा दृष्ट हो रहा हो तथा उस ग्रह को गुरू से युक्त हो तो; दशान्तर्दशा में व्यक्ति शांत प्रकृति के होते है। व्यक्ति के अंदर दान करने की चाहत तथा शास्त्रों के प्रति रुचि एवं लगाव होता है।

३) **सुषुप्ति अवस्था:** इस अवस्था में ग्रह अधम अर्थात फल देने में अक्षम होता है। इस अवस्था में ग्रह नीच का, शत्रु राशिस्थ, अथवा अशुभ ग्रहों के साथ हो तब इस अवस्था में ग्रहो के दशान्तर्दशा जातक के लिए अति अशुभ होता है। जातक की धार्मिक भावनाए लोप पाता है एवं नीच कर्म करने वाला होता है। सोचने समझने की ताकत कम होती है, विवेक पूर्ण कार्य नहीं कर पाता है। व्यक्ति जीवन में लक्ष्यहीन सा महसूस करता है, झगडालू प्रवृत्ति होने लगता है। धन की हानी होती है, और प्रताड़ना भी मिलती है।

४) ग्रहों की लज्जितादि अवस्थाएं:

ग्रहों की कई प्रकार की अवस्थाएँ में से लज्जितादि अवस्थाए भी होती है। जैसे मनुष्यादि प्राणी की बिबिध मानसिक अवस्थाए होती है, ऐसे ही ग्रहों के अंश और अन्य कई नियमों के आधार पर कुल छः प्रकार की लज्जितादि अवस्थाए होती है। इन अवस्थाओं के आधार पर ग्रह विभिन्न फलों का प्रतिपादन करते हैं, एवं ग्रहों अपनी दशाओं में लज्जितादि अवस्था के अनुरुप फल प्रदान करता है। ग्रहों की लज्जित, गर्वित, क्षुदित, त्रिशित, मुदित एवं क्षोभित यह छः प्रकार की लज्जितादि अवस्थाए होती है।

१) **लज्जित अवस्थाएं:** जब कोई ग्रह कुंडली में पंचम भाव में या किसी भी भाव में पाप ग्रहो (सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु) से युक्त हो तो वह ग्रह का लज्जित अवस्था होती है

। लज्जित अवस्था ग्रह की दशा के दौरान जातक सही रास्ते से विहीन अर्थात बुद्धि की हानि से पीड़ित हो सकता है। जातक झगड़ालू प्रवृत्ति का तथा अच्छे कार्यों से विरत रहने वाला हो सकता है। यदि पंचम (पुत्र) भाव मे ग्रह लज्जित अवस्था मे है तो संतान का विनाश होता है, या तो केवल एक ही बच्चा जीवित रहता है।

२) **गर्वित अवस्थाएं:** कुंडली में जब कोई ग्रह अपनी उच्च या मूल त्रिकोण राशि में हो तो वह ग्रह का गर्वित अवस्था होता है। गर्वित अवस्था ग्रह की दशा के दौरान जातक को नए घर का सुख मिल सकता है। विभिन्न कलाओं का कौशल और अच्छे ज्ञान की प्राप्ति होती हैं। जातक हर जगह से लाभान्वित होते हैं तथा व्यावसाय में भी जातक को सफलता मिलता हैं।

३) **क्षुदित अवस्थाएं:** जब कोई ग्रह अपनी शत्रु राशि में हो, अपने शत्रु से दृष्ट या युत हो तथा शनि से युक्त हो तो यह ग्रहों की क्षुदित अवस्था होती हैं। क्षुदित ग्रह की दशा में जातक को दुःख, मानसिक तनाव, बीमारी, परिवार में क्लेश, कलह, शक्ति की हानि, शत्रु से परीशान, आर्थिक समस्या और कुटिल मानसिकता का सामना करना पड़ता है। क्षोभित अवस्था मे ग्रह सप्तम भावस्थ होने से जातक की पत्नी–पति के लिए हानिकारक होता है।

४) **त्रिशित अवस्थाएं:** जन्म कुंडली में कोई ग्रह जल राशि में हो और अपने शत्रु या पाप ग्रह से दृष्ट हो और उस पर कोई शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो ग्रह त्रिशित अवस्था में होता है। तृषित ग्रह की दशा के मध्य भाग में जातक को बहुत नारी संग प्राप्त होती है। हालाकी इस अवस्था मे ग्रह सप्तम भाव मे रहने से पत्नी–पति के लिए हानिकारक रहता है। तथा तृषित अवस्था ग्रह की दशा के दौरान दुष्ट कार्यों में शामिल होना, बदनामी, धन की हानि, दुष्ट लोगों से पीड़ा और अपमान का सामना करना पड़ सकता है।

५) **मुदित अवस्थाएं:** अगर कोई ग्रह अपनी मित्र ग्रहो की राशि में होते हुए, मित्र ग्रहों से दृष्ट हो, मित्र ग्रहों से युक्त हो या बृहस्पति (गुरु) ग्रह से युक्त हो तो वह ग्रह की मुदित अवस्था होती है। मुदित ग्रह की दशा के दौरान जातक को अपना घर, वस्त्र, आभूषण, स्त्री, भूमि और अन्य भौतिक सुखो की प्राप्ति होती है। शत्रुओं पर विजय मिलता हैं, जातक की बुद्धि और ज्ञान में वृद्धि होती है।

६) **क्षोभित अवस्थाएं:** जब कोई ग्रह सूर्य के साथ हो और उस पर कई नैसर्गिक पाप ग्रह या उसके शत्रु ग्रह की दृष्टि हो तो वह ग्रह क्षोभित अवस्था में होती है। ग्रह की क्षोभित स्थिति में, व्यक्ति दुःख, मूर्खता, आर्थिक समस्याओं और भय से पीड़ित हो सकता है। क्षुदित या क्षोभित ग्रह जिस भाव मे हो उस भाव का नाश करता है। यदि दशम अर्थात कर्म भाव मे ग्रह लज्जित, क्षुदित या क्षोभित अवस्था मे हो तो जातक हमेशा दुःखो का शिकार होता है। मुदित और गर्वित ग्रहों की दशान्तर्दशा सर्वदा सुखप्रद रहता है। जातक बहुत उन्नति करता है और उसे अनेको प्रकार की सुखो की प्राप्ति होता है।

५) ग्रहों की शयनादि अवस्थाएं:

ग्रहो की नक्षत्र मे स्थिति के अनुसार शयनादि द्वादश अवस्थाए बनती है, यह ग्रहों की व्यावहारिक अवस्थाए होती है। फलित ज्योतिष में ग्रहों की शयनादि अवस्थाओ के माध्यम से फलकथन अत्यंत सरल व सटीक होता है। हालाकी शयनादि अवस्था का प्रयोग करते समय जहां तक स्त्री/पति, संतान व रोगादि सुख–दुःख की बात है, तो उस विषय में स्त्री/पति, संतान, रोगादि, सुख–दुःख योग भी देखना आवश्यक है। ज्योतिष के किसी भी भाग व अंगादि को ज्योतिष नियमों के अंतर्गत ही प्रयोग करना चाहिए। इसके साथ ही ज्योतिष योग फल में शास्त्रों द्वारा वर्णित फलकथन में केवल संकेत के रूप में ही ग्रहण करना चाहिए न कि संपूर्ण शब्दार्थ।

➢ **ज्योतिष शास्त्रानुसार ग्रहों की शयनादि १२ अवस्थाएँ:–**

१. **शयन अवस्था:** अर्थात निद्रा अथवा सम्भोग से पूर्व विश्राम/आनन्द हेतु लेटी हुई अवस्था।

२. **उपवेशन अवस्था:** अर्थात बैठी हुई अवस्था।

३. **नेत्रपाणि अवस्था:** अर्थात नेत्रों पर हाथ रखे हुए अवस्था।

४. **प्रकाशन अवस्था:** अर्थात रोशन व प्रज्वलित अथवा जागें हुए अवस्था।

५. **गमन अवस्था:** अर्थात प्रस्थान अवस्था।

६. **आगमन अवस्था:** अर्थात आना/प्रस्तावना अवस्था।

७. **सभावसति अवस्था:** अर्थात सम्मेलन अवस्था।

८. **आगमावस्था:** अर्थात वृद्ध/बढ़ना अवस्था।

९. **भोजन अवस्था:** अर्थात भोजन ग्रहण करना अवस्था।

१०. **नृत्यलिप्सा अवस्था:** अर्थात नृत्य करने की इच्छा/लोलुपता अवस्था।

११. **कौतुक अवस्था:** अर्थात जिज्ञासा अवस्था।

१२. **निद्रा अवस्था:** अर्थात सोई हुई अवस्था।

❖ **ग्रहों की शयनादि अवस्था निर्णय प्रणाली:** ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्थाय निर्णय करने के लिए वैदिक ज्योतिष में दो मत बिशेष प्रचलन में है, इसलिए दोनों मत अर्थात नियमो का उल्लेख किया गया है।

- **पहला नियम:–** जो गृह जिस नक्षत्र पर हो उसकी संख्या से ग्रह की संख्या गुना करे। गुणनफल को ग्रह के अंशो (कुंडली में ग्रह जितने अंश पर हो) से गुना करे। उसके वाद गुणनफल मे जन्म इष्ट घटी, जन्म नक्षत्र की संख्या और जन्म लग्न की संख्या

जोड़ दे। योगांक (योगफल) को १२ संख्या से भाग देने पर जो शेष बचे उसी अंक के उपरोक्त अनुसार द्वादश अवस्था होती है।

- **दूसरा नियम:–** ग्रह जिस नक्षत्र मे हो उसकी संख्या से ग्रह की संख्या का गुणा करे। गुणनफल को ग्रह जिस नवांश मे हो उस नवांश क्रम की संख्या से गुना करे। गुणनफल मे इष्ट घटी, जन्म नक्षत्र की संख्या और जन्म लग्न की संख्या जोड़े। योगांक को १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उसी अंक के अनुसार शयनादि द्वादश अवस्थाए माना जाना चाहिए।

✓ **नोट:** ग्रहो की संख्या इस प्रकार होती है:- सूर्य = १, चंद्र = २, मंगल = ३, बुध = ४, गुरु = ५, शुक्र = ६, शनि = ७, राहु = ८ एवं केतु = ९

शयनादि ग्रहो की उप विशिष्टावस्था

शयनादि अवस्थाओ की प्रत्येक की तीन उप अवस्थाए भी होती है। जैसे: १) चेष्टा, २)दृष्टि एवं ३)विचेष्टा। चेष्टा उप अवस्था मे ग्रह का प्रभाव पूर्ण, दृष्टि अवस्था मे मध्यम और विचेष्टा अवस्था मे नगण्य होता है।

ग्रहो की उप अवस्था निर्णय करने के लिए ग्रह की शयनादि अवस्था में प्राप्त अंक से उसी अंक का परस्पर गुना करे। गुणनफल को जातक के नाम के पहले अक्षर के अंक मान से जोड़े एवं योगफल को १२ से भाग करे शेष को ग्रह योजक (सूर्य = ०५, चंद्र = ०२, मंगल = ०२, बुध = ०३, गुरु = ०५, शुक्र = ०३, शनि = ०३, राहु व् केतु = ०४०) से योग करे।

योगांक को ३ अंक से भाग देने पर यदि शेष १ (एक) अंक बचे तो दृष्टि अवस्था, २ (दी) अंक बचे तो चेष्टा अवस्था और ० (शून्य) अंक बचे तो विचेष्टा अवस्था होती है।

❖ **अक्षर के अंक मान निम्नरूप:-**

- अ, क, च, ए, ध, भ और व अक्षर का अंक मान १ अंक होती है।
- इ, ख, ज, न, म और श अक्षर का अंक मान २ अंक होती है।
- उ, ग, झ, त, प, य, और ष अक्षर का अंक मान ३ अंक होती है।
- ऐ, घ, ट, थ, फ, र और स अक्षर का अंक मान ४ अंक होती है।
- ओ, के, द, ब, ल और ह अक्षर का अंक मान ५ अंक होती है।

शयनादि अवस्थाओं का फल

१) सूर्या ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में सूर्य शयन अवस्था में होने से जातक को सदा मन्दाग्नि रहती है, पित्त जन्य रोग से दुखी रहता है, भगन्दर हो सकता है व हृदय शूल रोग से भी पीड़ित हो सकता है।
- **उपवेशन अवस्था:** जिसके जन्म समय में सूर्य उपवेशन अवस्था में हो तो वह मनुष्य दरिद्रता भोगी, कलह प्रपंच में निरत व कठोर चित्त होता है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** सूर्य नेत्रपाणि अवस्था में ५, ७, ९, १० भावो मे हो तो जातक सुखी, धनी, मानी और विद्वान् होता है। यदि अन्य भावो मे हो तो क्रूर स्वभाव, नेत्ररोगी, क्रोधी, द्वेषशील व पानी के रोगो से पीड़ित होता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** प्रकाशन अवस्था में सूर्य होने से जातक उदार चित्तवाला, धनी, सभा में उचित वाणी बोलने वाला, विशेष पुण्य करने वाला, बली और सुन्दर शरीर वाला होता है।
- **गमन अवस्था:** गमन अवस्थागत सूर्य होने से मनुष्य परदेश अथवा घर से दूर रहने वाला, अनेक कष्ट भोगने वाला, आलसी, बुद्धि और धन से हीन, क्रोधी किन्तु भय से विह्वल रहने वाला होता है।
- **आगमन अवस्था:** आगमन अवस्थागत सूर्य होने से जातक परस्त्री भोगी, अपने परिवार से अलग रहने वाला, विशेष लाभार्थ लोभ करने वाला, यात्रा करने वाला, कृपण, नीच कर्म करने वाला और दुष्टमति वाला होता है।
- **सभा अवस्था:** सूर्य सभा अवस्थागत होने से जातक परोपकारी, सदा रत्नादि धनों से युक्त, धनी, गुणी, दयालु, मित्र तथा परिवारों का पालन करने वाला, पृथवी, भूषण और नए नए वस्त्रों का सुख भोगने वाला होता है।
- **आगम अवस्था:** सूर्य के आगम अवस्था में होने से जातक शत्रुओं के झण्झट से सदा व्याकुल होने वाला, चंचल, दुर्बल, दुष्टबुद्धि, धर्म–कर्म से हीन तथा मदान्ध होता है।
- **भोजन अवस्था:** सूर्य भोजन अवस्था में हो तो जातक वायु–गठिया रोगादि से पीड़ित होता है। तथा व्याभिचारी (वेश्यागामी), और धन और बल का नाश करने वाला होता है। निन्दित कार्य व शराब/नशीले पदार्थ, ग्रहण करने में रुझान रख सकता है।

- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** सूर्य नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक विद्वान, साहित्य शास्त्र का प्रेमी और सदा राजकुल से विशेष आदर पाने वाला होता है।
- **कौतक अवस्था:** सूर्य कौतक अवस्था में रहने से मनुष्य सदा प्रसन्नचित्त, ज्ञानी, यज्ञ करने वाल तथा प्रसन्नता से साहित्य शास्त्र में कला कौशल दिखाने वाला होता है।
- **निद्रा अवस्था:** यदि सूर्य निद्रावस्थागत हो तो जातक परदेश अथवा घर से दूर रहना विशेष पसन्द करता है, स्त्री व संचित धन की हानी होती है। गुदा व लिंग रोगी, दरिद्र, विकलांग, सुख से वंचित होता है।

२) चन्द्रा ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में चन्द्र शयन अवस्था में होने से जातक स्वाभिमानी, सर्दी से पीड़ित, कामुक व धन नाशक और अधिक प्रतिष्ठा चाहने वाला होता है।
- **उपवेशन अवस्था:** जन्म समय में चन्द्र उपवेशन अवस्था में हो तो जातक रोगी, निर्धन, चालाक, मंदबुद्धि, निर्दयी, अपना धन नाश करने वाला और दूसरे के धन को लूटने वाला (ठग, लूटेरा इत्यादि) हो सकता है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** चन्द्र कुंडली में नेत्रपाणि अवस्था में होने से जातक रोगी, अत्यन्त झूठ बोलने वाला, धूर्त तथा सदा कुकर्म करने वाला होता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** प्रकाशन अवस्था में शुक्ल पक्ष में अष्टमी के बाद का जन्म हो तो जातक धनी, मजबूत शरीर वाला, तीर्थ यात्री तथा अपने सदगुणों से राजकुल में प्रतिष्ठा लाभ करने वाला होता है।
- **गमन अवस्था:** कृष्णपक्ष की चन्द्रमा गमन अवस्थागत होने से मनुष्य अत्यन्त पाप करने वाला, दूसरे को सुखी देख द्वेश करने वाला, प्रवासी, निर्धन, क्रूर कार्य करने वाला एवं नेत्र रोग से कष्ट पाने वाला होता है। शुक्लपक्ष मे विपरीत फल होता है लेकिन जातक भयभीत रहता है।
- **आगमन अवस्था:** आगमन अवस्थागत चन्द्र होने से जातक व्यर्थ अभिमानी, पैरों के रोग से दुखी, छिप कर पाप करने वाला व् दरिद्र होता है।
- **सभा अवस्था:** कुंडली में पूर्ण चन्द्रमा सभा अवस्थागत होने से जातक अति बुद्धिमान, गुणवान, कामदेव के समान सुन्दर कान्ति पाने वाला, स्त्री के कामवेग को शीघ्र शान्त करने वाला, दानी, धार्मिक व् समाज में प्रतिष्ठित होता है।

- **आगम अवस्था:** शुक्ल पक्षगत चन्द्र के आगम अवस्था में होने से जातक विशेष धर्मात्मा होता है। कृष्णपक्ष का चन्द्रमा हो तो दो पत्नियों वाला व अधिक पुत्रियो वाला होता है।
- **भोजन अवस्था:** पूर्ण चन्द्र भोजन अवस्था में हो जातक प्रतिष्ठावान, धनी, सुखी, स्त्री सुख, वाहन युक्त होता है। यदि इस अवस्था में चन्द्रमा कृष्ण पक्ष का हो तो सब सुखों को नष्ट कर देता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** यदि शुक्ल पक्ष का चन्द्र नृत्यलिप्सा अवस्थागत हो तो जातक बलवान, गीत गाने वाला व रसायन शास्त्र का ज्ञान रखने वाला होता है।
- **कौतुक अवस्था:** यदि चन्द्र कौतक अवस्था में हो तो वह मनुष्य उच्च पदाधिकारी, धनवान, रति क्रीड़ा में सर्वदा कुशल और नारियो के साथ रमण करने में अति चतुर होता है।
- **निद्रा अवस्था:** बृहस्पति के साथ चन्द्रमा निद्रावस्थागत हो तो मनुष्य सब प्रकार से सुखी होता है। यदि राहु के साथ कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा निद्रा अवस्थागत हो तो सञ्चित धन का नाश होता है और उसका घर खंडहर बन जाता है।

३) मंगल ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में मंगल शयन अवस्था में हो तो जातक दाद, खाज–खुजली रोग से विशेष पीड़ित होता है। पंचम भाव में हो तो पहली संतान की हानि और सप्तम मे हो तो पत्नी की हानि होती है।
- **उपवेशन अवस्था:** जिसके जन्म समय में मंगल उपवेशन अवस्था में हो तो तो वह मनुष्य बलवान, सदा पापकर्म करने वाला, झूठ बोलने वाला और सदा प्रपञ्च करने वाला होता है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** यदि मंगल नेत्रपाणि अवस्था में लग्न में हो तो जातक को दरिद्र होता है, यदि उक्त अवस्था अन्य भावो मे होता है जातक धनवान होता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** इस अवस्था में मंगल होने से जातक के गुण का प्रकाश होता है, वह परदेश अर्थात जन्म स्थल से दूर रहता है, राजा से सर्वदा आदर पाता है। यदि मंगल उक्त अवस्थागत पांचवें घर में बैठा हो तो वह मनुष्य अपने स्त्री–पित्र से अलग होकर रहता है।

- **गमन अवस्था:** यदि मंगल गमन अवस्थागत हो तो वह मनुष्य प्रतिदिन सफ़र में रहता है, स्त्री से कलह करता है और चर्म रोग से विशेष कष्ट पाता है तथा धन का नाश करने वाला होता है।
- **आगमन अवस्था:** आगमन अवस्थागत मंगल होने से जातक विशेष गुणवान होता है। हथियार रखने का सौखीन हो सकता है, मणियों की माला पहनता है, वाहन सुख देता है, शत्रुओ का नाश करता है व स्वजनों का कष्ट दूर करता है।
- **सभा अवस्था:** मंगल उच्चस्थ सभा अवस्थागत होने से जातक युद्ध कला में पारदर्शी और धार्मिक होता है। यदि उक्त अवस्थागत होकर मंगल पांचवें या नौंवे भाव में हो तो तो जातक मूर्ख होता है। और बारहवें भाव में हो तो स्त्री–पुत्र व मित्र से हीन होता है।
- **आगम अवस्था:** मंगल के आगम अवस्था में होने से जातक धर्म–कर्म से हीन होता है, रोगी रहता है, परिश्रम से डरता है और नीच जनों के संग रहता है।
- **भोजन अवस्था:** यदि मंगल भोजन अव्स्था में हो तो उस मनुष्य को मीठा आहार अधिक अच्छा लगता है और सदा निन्दित कर्म करने वाला होता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** मंगल नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक को राजा से विशेष धन प्राप्त होता है, सदा आभूषण युक्त रहता है और उसको उत्तम गृह सुख मिलता है।
- **कौतक अवस्था:** मंगल कौतक अवस्था में हो तो मनुष्य मित्र, पुत्र, परिवार से युक्त रहता है। यदि मंगल उच्च का होकर कौतुक अव्स्थागत हो तो मनुष्य राज दरबार का पंडित व बुद्धिमानों में आदरणीय होता है।
- **निद्रा अवस्था:** निद्रावस्थागत मंगल होने से जातक क्रोधी होता है, बुद्धि और धन से हीन होता है, तथा धूर्त, हीन कर्म करने वाला और रोगी होता है।

४) बुध ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में बुध शयन अवस्था में लगन में हो तो वह मनुष्य भूख से व्याकुल और लंगड़ा होता है। यदि उक्त अवस्थागत अन्य भावों में हो तो जातक लम्पट और धूर्त होता है।
- **उपवेशन अवस्था:** जिसके जन्म समय में बुध उपवेशन अवस्था में हो तो वह जातक सदगुणों से पूर्ण होता है, यदि बुध पाप ग्रह से युक्त हो तो मनुष्य दरिद्र होता है। यदि वह बुध मित्र गृह अथवा अपने उच्च में बैठा हो तो मनुष्य धनी होता है।

- **नेत्रपाणि अवस्था:** बुध नेत्रपाणि अवस्था में होने से जातक विद्या और बुद्धि से हीन होता है, किसी के साथ सद व्यवहार नहीं करता है। यदि उक्त अवस्थागत बुध पांचवें भाव में हो तो पुत्र और स्त्री का सुख नहीं मिलता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** प्रकाशन अवस्था में बुध होने से जातक दान और दया शील होता है। अनेक विद्याओं का विद्वान, ज्ञान पूर्ण और दुष्टों का घमण्ड तोड़ने वाला होता है।
- **गमन अवस्था:** गमन अवस्थागत बुध होने से मनुष्य का सर्वदा राजकुल से विशेष लाभ मिलती है, अच्छा सुन्दर महल मिलता है और उसके घर में लक्षमी की वास होती है।
- **आगमन अवस्था:** आगमन अवस्थागत बुध होने से गमन अवस्था जैसा फल ही प्राप्त होता है। जातक धनी–मानी और वाक्पटु भी होता है।
- **सभा अवस्था:** जन्म काल में बुध अपने उच्च का होकर सभा अवस्थागत हो तो उस मनुष्य का शीघ्र धनी वनता है। जातक अत्यंत धार्मिक होता है व अन्त में प्रभु भक्ति में लीन होने से मोक्ष को प्राप्त करता है।
- **आगम अवस्था:** बुध के आगम अवस्था में होने से जातक नीच जनों की सेवा से कार्य सिद्धि पाता है, उसको दो पुत्र होने का योग होते हैं तथा प्रतिष्ठा देने वाली एक कन्या भी होती है।
- **भोजन अवस्था:** बुध भोजन अव्स्था में हो तो उस मनुष्य क सर्वदा वाद–विवाद से धन नाश हुआ होता है, स्त्री तथा धन का सुख नहीं मिलता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** बुध नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक प्रतिष्ठित होकर अनेक तरह की वाहनों व रत्नों आदि से सुखी, मित्र व पुत्रों से युक्त होता है। बुध पाप ग्रहों की राशि में बैठा हो तो वह मनुष्य पर पुरुष/स्त्री के साथ कुकर्म करने वाला होता है।
- **कौतक अवस्था:** जन्म समय बुध लग्न गत कौतुक अव्स्था में हो तो जातक विद्यान होता है। यदि उक्त अवस्थागत बुध सातवें या आठवें भाव में हो तो वह वेश्या के साथ रमण करने वाला होता है। और यदि वह नौवें भाव में हो तो मनुष्य जन्म पर्यन्त पुण्य करके अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है।
- **निद्रा अवस्था:** निद्रावस्थागत बुध हो तो वह मनुष्य सर्वदा कष्ट से पीड़ित रहता है। भाइयों के साथ विरोध रहता है, परिवार में कलह रहता है और उसकी प्रतिष्ठा तथा धन का नाश होता है।

५) गुरु ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में गुरु शयन अवस्था में हो तो मनुष्य बलवान होता है और मधुर वाणी बोलने वाला होता है।
- **उपवेशन अवस्था:** गुरु उपवेशन अवस्था में होने से जातक चालबाज़ और घमण्डी होता है। राजकुल और शत्रुवर्गों के कलह से सदा संतप्त रहता है, और पैर, जंघा, मुंह या हाथो के फ़ुंसी–फ़ोड़ा से दुखी रहता है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** गुरु की नेत्रपाणि अवस्था में जातक रोगी रहता है और संपत्ति से हीन होता है। जातक नाच–गान में विशेष प्रेम रखता है, और कुलहीन स्त्री (वेश्या) से प्रेम रखने वाला होता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** प्रकाशन अवस्था में गुरु होने से जातक अच्छे सुखों को भोगने वाला होता है। जातक सर्वदा अपनी शान से रहते है और ईश्वर में आस्था रखते हुए उच्च पदवी पर पहुंचता है।
- **गमन अवस्था:** गमन अवस्थागत गुरु होने से मनुष्य वहुत ही साहसी होता है। सर्वदा स्त्री–पुत्र और मित्र गणों के सुख से युक्त रहता है, प्रसन्नचित्त वाला विद्वान और अनेक प्रकार के धनों से युक्त होता है।
- **आगमन अवस्था:** आगमन अवस्थागत गुरु होने से जातक की स्त्री अति सुन्दर होती है और उसके घर में सदा धन–लक्षमी विराजमान रहते हैं।
- **सभा अवस्था:** सभा अवस्थागत गुरु होने से जातक बृहस्पति के समान ज्ञानी, धन, मणि–आभूषण, वाहन का सुख भोगने वाला और अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है।
- **आगम अवस्था:** गुरु के आगम अवस्था में होने से जातक को विभिन्न वहनों का सुख व नौकर, स्त्री, पुत्र, मित्र का यथेष्ट सुख मिलता है। जातक शास्त्रज्ञ होता है, और सर्वत्र उसकी प्रतिष्ठा होती है।
- **भोजन अवस्था:** यदि गुरु भोजन अव्स्था में हो तो उस मनुष्य को सदा उतकृष्ट भोजन मिलता है, तथा धनी, सुखी व विभिन्न वाहन सुख भोगता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** गुरु नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक राजा से प्रतिष्ठा पाने वाला होता है। तथा सदा धर्म में तत्पर रहने वाला, तन्त्र शास्त्र का जानकारी रखने वाला पण्डित होता है।

- **कौतक अवस्था:** गुरु कौतक अवस्था में हो तो जातक विशेष धनवां, कुलदीपक, अत्यन्त दया करने वाला, सर्वदा सुख भोगने वाला, पुत्र और भूमी से युक्त, नम्र स्वभाव वाला पंडित होता है।
- **निद्रा अवस्था:** गुरु निद्रावस्थागत होने से मनुष्य हर कार्य मूर्ख और दरिद्र होता है, और उसके घर से पुण्य विमुख होकर अरण्य रोदन करते हैं।

६) शुक्र ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल :

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में शुक्र शयन अवस्था में हो तो जातक बलवान होने पर भी दांत के रोग से दुखी, महाक्रोधी, धनहीन होता है। और वेश्या के साथ प्रेम होने पर भी उस से संयुक्त नहीं होता है।
- **उपवेशन अवस्था:** शुक्र उपवेशन अवस्था में हो तो वह मनुष्य आभूषणों से सुशोभित रहता है। उसके शत्रुओं का नाश हो जाता है और वह आदर पूर्वक राजा से अपनी प्रतिष्ठा लाभ करता है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** नेत्रपाणि अवस्था में यदि शुक्र लग्न, सातवें या दस्वें भाव में हो तो उस मनुष्य को आंखों की हानी हो सकती है, तथा धन का नाश भी होता है। अन्य भावों में हो तो जातक को सदा रहने के लिए उत्तम घर मिल जाता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** शुक्र प्रकाशन अवस्था में होने से जातक बहुत चतुर होता है, राजा की तरह सुखी, साहित्य शास्त्र–कला कौशल का जानने वाला और भजन गाने वाला होता है।
- **गमन अवस्था:** गमन अवस्थागत शुक्र चतुर्थ भाव होने से जातक की माता की शीघ्र मृत्यु होती है, और जातक सदा शत्रुओं से घेरा हुआ रहता है।
- **आगमन अवस्था:** आगमन अवस्थागत शुक्र होने से जातक अत्यन्त धनी होता है और तीर्थ यात्रा करता रहता है।
- **सभा अवस्था:** सभा अवस्थागत शुक्र होने से जातक जल्दी ही राज सभा में पहुंच कर अपनी विद्या से पूर्ण प्रतिष्ठा पाता है, प्रबल श्त्रुओं के समूह को मारने वाला होता है, अच्छे वाहन युक्त व अति धनी श्रेष्ट होता है।
- **आगम अवस्था:** शुक्र के आगम अवस्था में होने से जातक को शत्रुओं के साथ विवाद से संचित धन का नाश होता है, पुत्र व परिवार की हानि होती है, शरीर में कष्ट और स्त्री के भोग विलास से रहित अर्थात नपुंसक होता है।

- **भोजन अवस्था:** शुक्र भोजन अवस्था में हो तो उस मनुष्य भूख से पीड़ित रहता है, शरीर से कष्ट पाता है। पर स्त्री सम्बन्ध (ससुराल) से विशेष धन पाता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** शुक्र नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक काव्य शास्त्र में प्रवीण और ताल–सुर व संगीत आदि में पारदर्शी होता है।
- **कौतक अवस्था:** शुक्र कौतक अवस्था में हो तो जातक इन्द्र की तरह सभा में आदर पाता है ता है और वह धनवान होता है।
- **निद्रा अवस्था:** शुक्र निद्रावस्थागत हो तो वह मनुष्य दूसरे की सेवा/नौकरी करता है, दूसरे की निन्दा करता है, एवं वाचाल अर्थात दुष्ट बुद्धि का होता है।

७) शनि ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में शनि शयन अवस्था में हो तो जातक भूख और प्यास से पीड़ित रहता है। अति परिश्रम से थका हुआ रहता है, प्रथम जीवन में रोगी, उसके बाद धनी और सुखी होता है।
- **उपवेशन अवस्था:** जन्म समय में शनि उपवेशन अवस्था में हो तो वह जातक प्रचण्ड शत्रुओं के झंझट से अति दुखी और सदा धन का नाश करने वाला होता है। चर्म रोग से पीड़ित, अभिमानी और राज दण्ड से सदा संतप्त रहता है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** नेत्रपाणि अवस्था में जातक दूसरे के द्रव्य से अति धनि होता है। राजा की प्रसन्नता के लिए कला–कौशल दिखा कर सदा शुद्ध बुद्धि से काम करने वाला चतुर होता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** प्रकाशन अवस्था में शनि होने से जातक अनेक सदगुणों से युक्त तथा भूमी और धन से सदा सदविचार करने वाला ईश्वर का भक्त होता है।
- **गमन अवस्था:** गमन अवस्थागत शनि होने से जातक धन्वान, संतान युक्त, पापकर्मों से डरने वाला, शत्रुओं को दबाकर राज्य जीतने वाला और राज सभा में विशेष आदर पाने वाला होता है।
- **आगमन अवस्था:** जन्म समय में आगमन अवस्थागत शनि होने से जातक पैर के रोग से दुखी होता है। पुत्र–स्त्री के सुख से रहित दरिद्र होता है, व एकान्त स्थान में वास करने के लिए पृथवी में भटकता फ़िरता है।
- **सभा अवस्था:** सभा अवस्थागत शनि होने से जातक रत्न–आभूषण पहन कर प्रसन्नता प्राप्त करने वाला नीतिज्ञ होता है।

- **आगम अवस्था:** शनि के आगम अवस्था में होने से जातक रोगी होता है, उसके काम करने की गति धीमी होती है।
- **भोजन अवस्था:** शनि भोजन अवस्था में हो तो उस मनुष्य षटरस भोजन करता है, नेत्ररोगी होता है और मूर्खता से भ्रम जाल में फ़ंसकर उसकी बुद्धि नष्ट होता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** शनि नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक धार्मिक, धनी, राजा से आदर पाने वाला, गम्भीर और युद्ध में अति बलवान होता है।
- **कौतक अवस्था:** यदि शनि कौतक अवस्था में हो तो जातक धन से परिपूर्ण, शरीर से अति सुखी, सुन्दर स्त्री से युक्त और काव्य शास्त्रों में प्रवीन होता है।
- **निद्रा अवस्था:** यदि शनि निद्रावस्थागत हो तो वह मनुष्य सदा धनी, सद्गुणों से युक्त, साहस करने वाला, प्रचण्ड शत्रुपक्ष को विध्वंस करने वाला और अति सुंदर वेश्याओं के साथ रमण करने में होता है।

८) राहु ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** जन्म समय में राहू शयन अवस्था में हो उस जातक अनेक रोग-कष्टों से दुखी रहता है। यदि राहू उक्त अवस्था में मेष, वृष, मिथुन व कन्या राशि में हो तो वह व्यक्ति धन्वान होता है।
- **उपवेशन अवस्था:** राहू उपवेशन अवस्था में हो तो मनुष्य दाद आदि चर्म रोगों से दुखी तथा दरिद्र होता है किन्तु राज सभा में आदर पाता है और मानी होता है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** नेत्रपाणि अवस्था में राहु हो तो जातक के नेत्रों में कष्ट रहता है, नीच मनुष्य, सर्प, शत्रु व चोरी का भय रहता है और उसका संचित धन नष्ट होता है।
- **प्रकाशन अवस्था:** प्रकाशन अवस्था में राहू होने से जातक को उच्च पद मिलता है। श्रेष्ट कर्म करने के कारण राजकुल से उसको बहुत प्रतिष्ठा मिलती है।
- **गमन अवस्था:** गमन अवस्थागत राहू मनुष्य को बहुत संतानवाला, पंडित, धनवान, राजा से आदर पानेवाला श्रेष्ठ जातक होता है।
- **आगमन अवस्था:** आगमन अवस्थागत राहू होने से जातक क्रोधी, सदा बुद्धि और धन से हीन, खल, कृपण और अति कामूक स्वाभाव के होता है।
- **सभा अवस्था:** सभा अवस्थागत राहू होने से जातक पंडित, कृपण, अनेक गुणों से युक्त, धन व शरीर सुख से संपन्न होता है।

- **आगम अवस्था:** राहु के आगम अवस्था में होने से जातक शत्रुओं से भयभीत रहता है। बन्धु वर्ग से बहुत ही विवाद रहता है, धन की हानि होती है, कृपण और शरीर से बहुत कमज़ोर रहता है।
- **भोजन अवस्था:** राहू भोजन अव्स्था में होने से तो उस मनुष्य बुद्धि हीन, कर्म–धर्म से हीन, स्त्री–पुत्र सुख से बंचित होता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** राहू नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक को रोग कष्टकारक होते हैं, आंखों मे कष्ट, शत्रु से भय व धर्म-कर्म में हीन होता है।
- **कौतक अवस्था:** कौतक अवस्था में हो तो उस मनुष्य परस्त्रीगामी और पराये धन का अपहरण करनेवाला होता है।
- **निद्रा अवस्था:** यदि राहू निद्रावस्थागत हो तो वह मनुष्य स्त्री–पुत्र और अनेक गुणों से धनी होता है।

९) केतू ग्रहों की शयनादि द्वादश अवस्था फल:

- **शयन अवस्था:** केतु जन्म समय मेष, वृष, मिथुन अथवा कन्या राशि मे शयनागत अव्स्था में होने से जातक बिशेष धनी होता है और अन्य राशिगत होने से रोगी होता है।
- **उपवेशन अवस्था:** जन्म समय में केतू उपवेशन अवस्था में हो तो उस जातक को चर्म रोग रहता है और शत्रु, राजा, सर्प तथा चोंरों से कष्ट पाने की आशंका सदा बनी रहती है।
- **नेत्रपाणि अवस्था:** केतू नेत्रपाणि अवस्था में होने से जातक नेत्र रोगी होता है। दुष्टजन, सर्प इत्यादि से भय रहता है, धन का नाश होता है और जातक की बुद्धि अत्यन्त चंचल हो जाती है।
- **प्रकाशन अवस्था:** प्रकाशन अवस्था में केतू होने से जातक के धन–धान्य की वृद्धि होती है, राज दरबार में प्रतिष्टा पाता है, उसका यश दूर दूर तक फ़ैलता है।
- **गमन अवस्था:** गमन अवस्थागत केतू से मनुष्य संतान और धन से युक्त होता है। राजकुल से प्रतिष्ठा पाता है और बहुत बड़ा धनवान होता है।
- **आगमन अवस्था:** केतु आगमन अवस्थागत होने से जातक दुष्ट स्वभाव वाला, धनहीन, कामातुर, बुद्धि तथा धर्म से रहित, क्रोधी और कृपण होता है।
- **सभा अवस्था:** सभा अवस्थागत केतू होने से जातक कुटिल, घमण्डी, कृपण, कामुक और धुर्तामी में अति निपुण होता है।

- **आगम अवस्था:** केतू के आगम अवस्था में होने से जातक महापापी होता है। परिवारों से विरोध करने वाला दुष्ट स्वभाव के होता है और शत्रु तथा रोग से सदा पीड़ित रहता है।
- **भोजन अवस्था:** केतू भोजन अवस्था में हो तो वह मनुष्य क्षुधा से नित्य दुखी रहता है, और दरिद्रता के कारण जीवन भर इधर उधर भटकता रहता है।
- **नृत्यलिप्सा अवस्था:** केतू नृत्यलिप्सा अवस्थागत होने से जातक रोग से पीड़ित रहता है। तथा अत्यन्त साहसी, वाचाल व नीच कर्म करने वाला होता है।
- **कौतक अवस्था**: केतू कौतक अवस्था में हो तो जातक नर्तकी स्त्रियों के साथ भोग विलास करने वाला होता है। दुष्ट कर्म में रत रहने वाला और धनहीन होकर जहां तहां ठोकरें खाता फ़िरता है।
- **निद्रा अवस्था:** अगर केतू निद्रावस्थागत हो तो वह मनुष्य अति सुखी होता है, अनेक प्रकार के गुणों तथा व्यवसायों में लाभान्वित होता है।

ग्रहो की दृष्टियां

वैदिक ज्योतिष में ग्रहों की दृष्टि का बहुत ही महत्व होता है। कुंडली विचार करते समय ग्रहों की दृष्टि और उसके अन्य ग्रहों से दृष्टि संबंध को गहराई से विचार करना चाहिए। क्यौकी फलकथन की सठीकता के लिए कौन सा ग्रह किस घर को देख रहा है, और वहां स्थित किस ग्रह को प्रभावित कर रहा है यह देखना नितान्त आवश्यक है। नवग्रहों में सभी ग्रहो की अपनी दृष्टियां होती है, ग्रह अपनी दृष्टि कुंडली के जिस भाव, जिस ग्रह पर डालते है, उस भाव और उस ग्रह को ग्रहो की दृष्टियां प्रभावित करती है।

वैदिक ज्योतिष शास्त्रानुसार सूर्य और मंगल की उर्ध्व दृष्टि है, बुध और शुक्र की तिरछी, चंद्रमा और गुरु की बराबर की तथा राहु और शनि की नीच दृष्टि होती है।सभी ग्रहो की पूर्ण दृष्टि के अलावा एकपाद, द्विपाद व त्रिपाद दृष्टिया भी होती है, परन्तु विशेष प्रभाव पूर्ण दृष्टि का ही होता है। एकपाद, द्विपाद व त्रिपाद दृष्टियां की कोई विशेष प्रभाव ना रहने के कारण ज्योतिष विचार में केवल पूर्ण दृष्टि को ही लिया जाता है।

✓ पूर्ण दृष्टि की परिमाण ६० कला, त्रिपाद दृष्टि की परिमाण ४५ कला, द्विपाद दृष्टि की परिमाण ३० कला एवं एकपाद दृष्टि की परिमाण १५ कला माना जाता है।

❖ ग्रहों की दृष्टियों को ऐसे समझें:–

ग्रह जिस भाव में बैठता है वहाँ से तीसरे और दसवे भाव को एक चरण दृष्टि से, पाचवे और नवे को दो चरण दृष्टि से, चोथे और आठवे भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है। प्रत्येतक ग्रह अपने स्थान से सातवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखता है। सूर्य, चंद्र, बुध, शुक्र इनकी केवल सातवी पूर्ण दृष्टि होती है। परन्तु मंगल, गुरु, शनि की सातवी पूर्ण दृष्टि के आलावा भी अन्य दो–दो पूर्ण दृष्टियां ओर होती है, एवं राहु और केतु ग्रहो की चार चार पूर्ण दृष्टियाँ होती है।

मंगल कुंडली के जिस भाव में बैठता है वहाँ से सातवे भाव के आलावा चोथे और आठवे भाव को, गुरु अपने स्थान से सातवे भाव के आलावा पाचवे और नवे भाव को, शनि तीसरे, सातवे और दसवे भाव को, और राहु–केतु अपने स्थान से पाचवे, सातवे, नवे और द्वादश स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखते है।

राहु–केतु ग्रहो की गति दक्षिणावर्ते होने की वजह से इनकी दृष्टि की गणना दक्षिणावर्ती अर्थात घड़ी की काटा की दिशा की तरफ होती है। हालाँकि कुछ विद्वान केतु ग्रहो का कोई दृष्टि नहीं मानते है।

कुंडली में उच्च ग्रह की दृष्टि शुभ और बलवर्धक मानी जाती है, जबकि नीच ग्रह की दृष्टि पापपूर्ण और कमजोर होती है। यदि ग्रह अपने मित्र ग्रह या राशि पर दृष्टि डालता है, तो इसे मित्र दृष्टि कहते हैं, जो शुभ और वृद्धि देने वाली होती है। वहीं, यदि ग्रह अपने शत्रु ग्रह या राशि पर दृष्टि डालता है, तो इसे शत्रु दृष्टि कहते हैं, जो हानिकारक होती है। सम ग्रह या समान राशि पर सम दृष्टि डालने से स्थिति सामान्य रहती है।

सभी ग्रहों की दृष्टि जातक के जीवन पर शुभ या अशुभ प्रभाव डालती है। अगर शुभ ग्रह की दृष्टि होती है, तो यह शुभ फल देती है, जबकि पाप ग्रह की दृष्टि हानिकारक होती है। हालांकि, यह पाप ग्रह योगकारक हैं तो उनकी दृष्टि भी कल्याणकारी हो सकती है। इसी तरह, यदि शुभ ग्रह अशुभ भाव के स्वामी होते हैं, तो वे कुछ हानि भी कर सकते हैं।

ग्रहों की साधारण दृष्टि फल

१. **सूर्य ग्रह की ऊपर दूसरे ग्रहो की दृष्टि:** अगर कुण्डली में सूर्य ग्रह के ऊपर पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो राजसेवा (सरकारी कार्य) एवं आर्थिक लाभ होता है। यदि सूर्य पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि होने से दुःख, झगड़े, पेट के रोग तथा नेत्र रोग आदि होने का संभावना रहता है।

२. **चंद्रमा ग्रह की ऊपर दूसरे ग्रहो की दृष्टि:** यदि चंद्रमा पर किसी पाप ग्रह की दृष्टि हो तो यह वित्तीय हानि, सिरदर्द, नेत्र रोग आदि का संकेत देता है। धन हानि और अनावश्यक यात्रा जैसे अशुभ परिणाम प्राप्त होता है। और यदि चंद्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो इलाज, धनलाभ, मित्रता, विजय या सफलता, भूमि लाभ आदि शुभ फल प्राप्त होते है।

३. **मंगल ग्रह की ऊपर दूसरे ग्रहो की दृष्टि:** यदि मंगल किसी पाप ग्रह से दृष्ट हो तो भूमि, धान्य या धन की हानि होती है, बंधन, रोग, कष्ट और दूर या निर्वासन में रहना पड़ता है। मंगल किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो सफलता, भूमि अधिग्रहण, भूमि लाभ और मित्रता आदि अच्छे परिणाम, धन और सफलता प्राप्त होते हैं।

४. **बुध ग्रह की ऊपर दूसरे ग्रहो की दृष्टि:** बुध पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो यह लेखन (साहित्य) में कौशल, विद्या और कौशल का संकेत देता है। जातक को धन एवं रत्न की प्राप्ति होती है। यदि बुध पर शत्रुग्रह की दृष्टि हो तो अतिसार (दस्त), अवसाद, सूजाक और शूल तथा कुबुद्धि उत्पन्न होती है।

५. **बृहस्पति ग्रह की ऊपर दूसरे ग्रहो की दृष्टि:** यदि बृहस्पति किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो धार्मिक कार्य, सुख, सफलता और धन की प्राप्ति, सुन्दर पत्नी और भूमि लाभ होती है। शत्रु ग्रह की दृष्टि होने से कलह, मुँहासे, कुष्ठ रोग जटिल त्वचा रोग, पराजय या विफलता और भूमि का विनाश होता है।

६. **शुक्र ग्रह की ऊपर दूसरे ग्रहो की दृष्टि:** यदि शुक्र किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो पत्नी, धन–संपत्ति का लाभ, वस्त्र लाभ तथा देश और गांव पर प्रभुत्व प्राप्त होता है। यदि शुक्र किसी अशुभ या क्रूर ग्रह से दृष्ट हो तो अपयश या पराजय, पत्नी हानि तथा धन हानि, कठिन रोग और मूत्र संबंधी कष्ट होता है।

७. **शनि ग्रह की ऊपर दूसरे ग्रहो की दृष्टि:** यदि शनि किसी पाप ग्रह या पाप ग्रह से दृष्ट होने से स्त्री रोग, बंधन और क्षय के कारण कष्ट, कार्य हानि, शत्रु से पराजय या विफलता मिलता है। शनि ग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो अच्छे परिणाम मिलते हैं, घर में मित्रों का जमावड़ा भी रहता है।

ग्रहों की पारंपरिक शत्रुता व मित्रता

जिस प्रकार समाज में व्यक्ति एक–दूसरे के मित्र या शत्रु होते हैं; उसी प्रकार ग्रह भी आपस में मित्रता, शत्रुता या समभाव का समंध रखते हैं। ग्रहों की यह अवस्थाएँ समझने के लिए वैदिक ज्योतिष में १. नैसर्गिक शत्रु–मित्र २. तात्कालिक शत्रु–मित्रता एवं ३. पंचधा मैत्री चक्र की अवधारणा किया गया है।

ग्रहो के पारंपरिक शत्रुता व मित्रता संबंधों के बारे में जानना जरुरी है, क्यौकी उसी के अनुसार वे फल भी देते है। जो ग्रह किसी दुसरे ग्रशो का न शत्रु हो न मित्र हो उसे सम ग्रह कहा जाता हैं। नैसर्गिक शत्रु, मित्र और सम ग्रह जानने के लिए एक तालिका दिया गया है।

नैसर्गिक शत्रु मैत्री चक्र

ग्रहों	मित्र ग्रह	शत्रु ग्रह	समग्रह
सूर्य	चंद्र, मंगल, गुरु	शुक्र, शनि	बुध
चन्द्रमा	सूर्य, बुध	X	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चंद्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	चंद्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	सूर्य, चंद्र, मंगल	बुध, शुक्र	शनि
शुक्र	बुध, शनि	सूर्य, चंद्र	मंगल, गुरु
शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चंद्र, मंगल	गुरु
राहु	शुक्र, शनि	सूर्य, चंद्र, मंगल	बुध, गुरु
केतु	सूर्य, चंद्र, मंगल	शुक्र, शनि	बुध, गुरु

तात्कालिक मैत्री

तात्कालिक अर्थात अभीष्ट काल में स्थित ग्रहों के स्थान के आधार पर मित्र व शत्रु का निर्धारण की अभिप्राय होता है। तात्कालिक मैत्री को समझने के लिए एक सीधा नियम है कि कुंडली में जिस ग्रह के बारे में विचार करना हो; उस ग्रह से दूसरे, तीसरे, चौथे, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें घर में जो ग्रह होते है वो उसके मित्र ग्रह कहलाते हैं। इसी तरह जिस ग्रह का विचार किया जा रहा है; उस ग्रह से पहले, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें और नवें घर में अगर कोई ग्रह बैठे हों वो ग्रहों उसके शत्रु ग्रह कहलाते हैं।

- ✓ **तात्कालिक मित्र स्थान:-** २, ३, ४, १०, ११ व १२।
- ✓ **तात्कालिक शत्रु स्थान:-** १, ५, ६, ७, ८ व ९।

- ग्रहों की तात्कालिक शत्रुता–मित्रता समंध कुंडली विशेष बदलती रहती है, अर्थात जन्म कुंडली मे विद्यमान ग्रहो की परिस्थिति के अनुसार अलग–अलग होती है। और ग्रहों की नैसर्गिक शत्रुता मित्रता वाला समंध सभी कुंडली के लिए एक जैसा ही रहता है इसमें कोई परिवर्तन नहीं होती है।

पञ्चधा मैत्री

ग्रहों की बास्तविक समंध को समझने के लिए "नैसर्गिक शत्रु–मित्र" समंध और "तात्कालिक शत्रु–मित्र" समंध के ऊपर अच्छे से विचार करके ही निर्णय लेना चाइए। इसीलिए नैसर्गिक शत्रु–मित्र चक्र एवं तात्कालिक शत्रु–मित्र चक्र मिलाकर पञ्चधा मैत्री चक्र बनया जाता है। इसी चक्र से पता चलता है कि कौन ग्रह जातक लिए शुभ है और कौन ग्रह अशुभ है।

- ➢ पञ्चधा मैत्री चक्र में १. शत्रु २. अधिशत्रु ३.मित्र ४.अधिमित्र एवं ५. सम यह पाँच प्रकार की संमंध होती है।
- ✓ **पंचधा मैत्री चक्र सूत्र इस प्रकार है:** मित्र + मित्र = अधिमित्र, मित्र + सम = मित्र, मित्र + शत्रु = सम, शत्रु + मित्र = सम, शत्रु + सम = शत्रु, शत्रु + शत्रु = अधिशत्रु।

कुंडली में अगर कोई ग्रह नैसर्गिक मैत्री चक्र में मित्र है और तात्कालिक मैत्री चक्र में भी मित्र है, तो मित्र–मित्र मिलकर अधिमित्र बन जाते है। यदि कोई ग्रह नैसर्गिक में सम है और तात्कालिक में मित्र है तो उस ग्रह को मित्र ग्रह कहलाता है।

और यदि कोई ग्रह नैसर्गिक में मित्र है और तात्कालिक में शत्रु है तो वो ग्रह सम बन जाते है। ऐसे ही कोई ग्रह नैसर्गिक में सम है और तात्कालिक में शत्रु है तो पंचधा मैत्री चक्र में शत्रु ग्रह माना जायगा। एवं कोई ग्रह नैसर्गिक तथा तात्कालिक दोनों में ही शत्रु है तो उसे अधिशत्रु माना जाता है।

ग्रहों का क्षेत्र, उच्च–नीच एवं त्रिकोणांश

राशिचक्र में सभी ग्रहो के लिए एक एक स्थान निर्दिष्ट किया गया है। प्रत्येक ग्रह राशियों के विशेष अशों पर उच्च, नीच, स्वक्षेत्री अथवा मूलत्रिकोण होता है। मूल त्रिकोणांश को आनंद स्थान भी कहा जाता है। ग्रह अलग–अलग राश्यंशों में स्थिति के अनुसार ही जातक को शुभाशुभ फल प्रदान करता है। ग्रहों का उच्च होना अथवा नीच होना या फिर वक्री और अस्त होना किसी भी जातक की कुंडली का अध्ययन करते समय बहुत महत्वपूर्ण होता है। क्योंकि इन्हीं के आधार पर ग्रहों की अवस्था तथा ग्रहों का बल ज्ञात किया जाता है। उच्च ग्रह सर्वाधिक बलशाली होता

है और नीच ग्रह अत्यधिक कमजोर होता है। जन्म समय में कोई भी ग्रहो स्वक्षेत्र उच्चस्थ अथवा त्रिकोणांश गत होने से शुभ फल दायी होता है।

सभी ग्रह अपनी कक्षा में परिभ्रमण करने के लिए जो परिक्रमा पथ होती है, उस पर एक ऐसा बिंदु होता है जहां से वह ग्रह पृथ्वी के सापेक्ष अत्यधिक प्रभावशाली हो जाता है। उस बिंदु को उस ग्रह विशेष की पूर्ण परमोच्च अवस्था कहा जाता है। हालाँकि यह अवस्था प्रत्येक ग्रह के लिए अलग–अलग होती है। और जब ग्रह अपनी कक्षा में परिभ्रमण करते समय ऐसे बिंदु पर पहुंच जाता है जहां पृथ्वी के सापेक्ष सबसे कम प्रभावशाली होता है। उस बिंदु को उस ग्रह विशेष की पूर्ण नीच अवस्था कहा जाता है। कोई ग्रह जिस राशि में उच्च का होता है उससे ठीक सप्तम राशि में वह ग्रह नीच का होता है। और ग्रह अपने परमोच्च बिंदु से ठीक १८० अंश पर होने से परम नीच अवस्था में माना जाता है।

मेष, वृश्चिक राशि का अधिपति (स्वामी) मंगल ग्रह; वृषभ, तुला राशि का अधिपति शुक्र; मिथुन, कन्या राशि का अधिपति बुध; कर्क राशि का अधिपति चन्द्रमा, सिंह राशि का अधिपति सूर्य; धनु, मीन राशि का अधिपति गुरु एवं मकर व् कुम्भ राशि का अधिपति शनि ग्रह होते है। मूलत्रिकोण राशि विचार में मेष मंगल की, वृषभ चन्द्रमा की, कन्या बुध की, तुला शुक्र की, धनु गुरु की, तथा कुम्भ शनि ग्रह की मूल त्रिकोण राशि होते है। राहू व् केतु ग्रह को क्रमश कुम्भ, सिंह राशि मतान्तर से कन्या व् मीन राशि मूलत्रिकोण राशि माना जाता है। मेष राशि सूर्य ग्रह का उच्चस्थान, वृषभ राशि चन्द्रमाँ का, मिथुन राहू का, कर्क राशि गुरु ग्रह का, कन्या राशि बुध ग्रह का, तुला राशि शनि का, धनु राशि केतु ग्रहों का, मकर राशि मंगल ग्रह का एवं मीन राशि शुक्र ग्रहों का उच्चस्थान होते है।

ग्रह जिस राशि में उच्चस्थ होते है, उसके सप्तमस्थ राशि ग्रहों का नीचस्थान होते है। क्यौकी सातवीं राशि (१८० डिग्री) पर ग्रह विपरीत स्थिति में होते है। नोट:– वृश्चिक राशि में कोई ग्रह उच्च का नहीं होता और सिंह व कुम्भ में कोई ग्रह न उच्च होता न नीच। ग्रहों का बलाबल: परम उच्च, उच्चस्त, मूलत्रिकोण, स्वक्षेत्र, मित्रदृष्ट, मित्रक्षेत्र क्रमश क्षीण होता है।

ग्रहों का सक्षेत्र

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु
सिंह	कर्क	मेष, वृश्चिक	मिथुन, कन्या	धनु, मीन

शुक्र	शनि	राहू	केतु
वृषभ, तुला	मकर, कुम्भ	X	X

ग्रहों का उच्च–नीच एवं त्रिकोणांश चक्र

ग्रह	परम उच्चांश	परम नीचांश	त्रिकोणांश
सूर्य	मेष १०° तक	तुला १०° तक	सिंह ० से २०° तक
चंद्र	वृष ०३° तक	वृश्चिक ०३° तक	वृष ४ से ३०° तक
मंगल	मकर २८° तक	कर्क २८° तक	मेष ० से १२° तक
बुध	कन्या १५° तक	मीन १५° तक	कन्या १५ से २५° तक
गुरु	कर्क ०५° तक	मकर ०५° तक	धनु ० से १०° तक
शुक्र	मीन २७° तक	कन्या २७° तक	तुला ० से १५° तक
शनि	तुला २०° तक	मेष २०° तक	कुम्भ ० से २०° तक
राहु	मिथुन २०° तक	धनु २०° तक	कुम्भ / कन्या
केतु	धनु ०६° तक	मिथुन ०६° तक	सिंह / मीन

आरोही अवरोही ग्रह

ज्योतिष अध्ययन में आरोही अवरोही ग्रह को उच्च अभिमुखी एवं नीच अभिमुखी ग्रहों भी कहते है। एक ग्रह जो अपने उच्च बिन्दु कि तरफ जा रहा होता है उसे आरोही ग्रह कहते हैं। और यदि ग्रह अपने नीच बिन्दु कि तरफ जा रहा हो तो उसे अवरोही ग्रह कहते हैं। अपने उच्च से आगे निकल कर ग्रह आरोही और नीच से आगे अवरोही होता है। आरोही ग्रहो सदा अच्छे फल देता है, जबकि अवरोही ग्रहो अपनी दशा मैं अनिष्ट फल देता है।

उच्चस्थ ग्रहो का फल

- **सूर्य:** जन्म कुंडली में सूर्य ग्रह उच्चस्थ होने से जातक भाग्यवान, धनी, नेतृत्व शक्ति संपन्न, विद्वान, सरकार या समाज में उच्च पद प्राप्त करनेवाला, प्रतिष्ठित व यशस्वी होता है। परन्तु जातक को अन्याय, अधर्म, दुराचार, हत्या, व्यभिचार नहीं करना चाहिए नहीं तो सूर्य अपना शुभ प्रभाव देना छोड़ देते हैं।
- **चंद्र:** जन्म कुंडली में यदि चन्द्रमा उच्चस्थ होने से व्यक्ति अलंकारादि प्रिय, मिष्ठान भोजी, विलासी, कोमल ह्रदय वाला, यात्रा प्रिय और सुखी होता है। परन्तु जातक को अपमी माता, सास, दादी या किसी औरत के साथ अन्याय या अपमान नहीं करना चाहिये नहीं तो उच्चस्त चन्द्रमा का शुभ प्रभाव कम ही प्राप्त होगा।
- **मंगल:** जन्म कुंडली में यदि मंगल उच्चस्थ होने से जातक शक्तिमान, परिश्रमी, धैर्यवान, सरकार द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला, पुलिस या सेना में कार्य करने वाला, विजेता, साहसी

और क्रोधी होता है। परन्तु जातक को अपने सगे भाई, मित्र, साला, बहनोई, रिश्तेदार और गुरु के साथ विश्वासघात या अपमान नहीं करना चाहिए, नहीं तो उसके उच्च ग्रह अपना शुभ प्रभाव देना छोड़ देते हैं।

- **बुध:** जन्म कुंडली में यदि बुध ग्रह उच्चस्थ होने से जातक बुद्धिमान, लेखक, प्रकाशन संबंधी कार्य करने वाला, प्रसन्न रहने वाला, गणितज्ञ, व्यापारी, शत्रुनाशक और भौतिक सुख भोगनेवाला होता है। परन्तु उच्चस्त बुध ग्रहों का शुभ फल प्राप्त करने के लिए जातक को अपनी पुत्री, बहन, साली, बुआ या किसी भी कन्या को कष्ट नहीं देना चाहिये।
- **गुरु:** जन्म कुंडली में यदि गुरु ग्रह उच्चस्थ होने से जातक विद्वान, मंत्री, शासनप्रिय, सुशील, उदार, सुखी, ऐश्वर्यशाली, न्याय प्रिय, प्रशासनिक अधिकारी, न्यायाधीश आदि होता है। परन्तु जातक को धर्म, देवी–देवता, ब्राह्मण, गुरु, साधु–सन्यासी, पिता, चाचा, दादा और श्रेठ जनों को कष्ट या अपमान नहीं करना चाहिये, नहीं तो गुरु ग्रहों का शुभ फल उतना नहीं प्राप्त होती हैं।
- **शुक्र:** जन्म कुंडली में यदि शुक्र ग्रह उच्चस्थ होने से जातक सुन्दर, प्रेमी, कामी, भोग–विलासी, भाग्यवान, संगीतप्रिय, खुशबू का प्रेमी, ऐश्वर्यशाली, भूमि–भवन से युक्त, कई वाहनों का स्वामी, सुखी और धनी होता है। शुक्र ग्रहों उच्च होने पर जातक को अपनी स्त्री को कष्ट नहीं देनी चाहिये और ना ही किसी महिलाओ का भी अपमान नहीं करनी चाहिए।
- **शनि:** जन्म कुंडली में यदि शनि ग्रह उच्चस्थ होने से जातक अधिपति, जमींदार, राजा तुल्य शक्तिमान, यशस्वी, परम शक्तिशाली, भाग्यशाली, जादूगर, इंजिनियर, रसायन शास्त्री, दार्शनिक, वैज्ञानिक आदि होता है। हालंकि शनि ग्रहों उच्च होने पर जातक को अपनी चाचा और निम्न वर्ग के लोगों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं देना चाहिये साथ हीं उसे मांस–मदिरा तथा परस्त्री गमन से बचना चाहिए।
- **राहु:** जन्म कुंडली में यदि राहु उच्चस्थ अर्थात मिथुन राशि में होने से जातक शूरवीर, पराक्रमी, कठोर एवं उद्दत स्वभाव वाला, साहसी, ताकतवर, धनी और किसी का परवाह नहीं करनेवाला होता है। राहू ग्रहों उच्च होने पर जातक को अपनी ताकत के बल पर किसी को सताना नहीं चाहिए तथा अवैध सम्बन्ध से बचना चाहिये, नहीं तो उच्च राहु का शुभ फल शीघ्र हीं समाप्त हो जाता है।
- **केतु:** जन्म कुंडली में यदि केतु उच्च अर्थात धनु राशि में होने से जातक धनी, भौतिक उन्नति करनेवाला, भ्रमणशील होता है। परन्तु केतु ग्रहों उच्च होने पर जातक को नीच कर्म से बचना चाहिए।

ग्रहों का दीप्तांश एवं अस्त ग्रह

कुंडली में ग्रहो राशि की जिस अंश अर्थात विंदु पर रहता है वहां से जितने अंश पर ग्रहो का रश्मि प्रस्फुरित होता है, उतने अंश को ग्रहो का दीप्त्यांश कहाँ जाता है।

ग्रहों का दीप्तांश

ग्रह	आगे और पीछे	ग्रह	आगे और पीछे
सूर्य का दीप्तांश	१५ ° अंश तक	बुध का दीप्तांश	०७ ° अंश तक
चंद्र का दीप्तांश	१२ ° अंश तक	गुरु का दीप्तांश	०९ ° अंश तक
मंगल का दीप्तांश	०८ ° अंश तक	शुक्र का दीप्तांश	०७ ° अंश तक
		शनि का दीप्तांश	०९ ° अंश तक

वैदिक ज्योतिष शास्त्रानुसार सूर्य ग्रहो का तेज और दीप्त्यांश सबसे ज्यादा होती है। इसलिए सौरमंडल में कोई ग्रह परिक्रमा करते–करते जब सूर्य के बहुत नजदीक हो जाते हैं तो वे ग्रह अस्त हो जाते हैं। परन्तु राहु व् केतु छाया ग्रह होने के कारण कभी भी अस्त नहीं होते है। एवं बुध ग्रह हमेशा सूर्य के नजदीक रहता है, इसलिए कुंडली में बुध ग्रह सूर्य ग्रहों के दीप्त्यांश में रहने पर भी अस्त ग्रह नहीं माना जाता है।

ग्रहों का दैनिक उदय और अस्त होना पृथ्वी की परिक्रमा के कारण होता है। जब कोई ग्रह अस्त अवस्था में कुंडली में होता है, तो उसका प्रभाव लगभग नगण्य हो जाता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो जब कोई ग्रह सूर्य के निकटस्थ होता है तो सूर्य की ऊष्मा और प्रकाश के आगे उस ग्रह की स्वयं की चमक फीकी पड़ जाती है; और वह ग्रह आकाश में दृष्टिगोचर नहीं होता है। इस स्थिति को ही ग्रह का अस्त होना कहते हैं।

जब ग्रह अस्त होता है तो उसके मुख्य कारकत्वों में कमी आती है और वह सूर्य की स्थिति के अनुसार फल देता है। ऐसे ग्रह को ज्योतिष शास्त्र में विकल अवस्था में माना जाता है। परन्तु वक्री ग्रह को चेष्टा बल प्राप्त हो जाता है अर्थात ये और अधिक बली होते हैं। अगर कोई पापी ग्रह अथवा कुंडली के छठे, आठवे और द्वादश भाव के स्वामी अस्त हो तो जातक को शुभ परिणाम मिलता है। यानी की वो प्रभावहीन होकर उस भाव के अशुभ परिणाम नहीं देंगे और जातक को आसानी से उस भाव से जुडी अच्छी फल मिलेगा।

- **अस्तगत ग्रह:–** चंद्रमा सूर्य से १२° , मंगल १०° , वक्री बुध १२° , मार्गी बुध १४° , गुरु ११° , वक्री शुक्र ८° , मार्गी शुक्र १०° तथा शनि १५° की दूरी तक सूर्य की प्रखर किरणों के कारण अस्तगत होते हैं।
  - ✓ **उदयी ग्रह:** सूर्य से उपरोक्त अंशों से अधिक दूर हो जाने पर ग्रह उदय हो जाते हैं।

- ✓ **पूर्वोदयी ग्रह:** जो ग्रह सूर्य से धीमा हो तथा सूर्य से अंशों में कम हो उसका उदय पूर्व में होता है।
- ✓ **पश्चिमोदयी ग्रह:** जो ग्रह सूर्य की अपेक्षा तीव्र हों तथा सूर्य से अधिक अंशों पर हो, उसका उदय पश्चिम से होता है।
- ✓ **पूर्वास्त ग्रह:** जो ग्रह सूर्य की अपेक्षा तीव्र हों और सूर्य से कम अंशों में हों, उसका अस्त पूर्व में होता है।
- ✓ **पश्चिमास्त ग्रह:** जो ग्रह सूर्य की अपेक्षा धीमा हो और सूर्य से अधिक अंशों में हों, उस ग्रह का अस्त पश्चिम में होता है।

अस्त ग्रहों का फल

- ➢ **चन्द्रमा:** कुंडली में अगर किसी जातक के चन्द्रमा अस्त होता है, तो जातक को मां के सुख में कमी और संपत्ति मिलने में देरी होती है। पैतृक संपत्ति का नष्ट होना, मानसिक अशांति आदि घटनाएं घटित होती रहती हैं।
- ➢ **मंगल:** मंगल ग्रह के अस्त होने पर जातक को नसों में दर्द, अवसाद, खून का दूषित होना आदि बीमारियां हो सकती हैं। अस्त मंगल ग्रह पर षष्ठेश के पाप प्रभाव होने से जातक को गंभीर बीमारी, विवाद में हानि चोटग्रस्त आदि कष्ट होते हैं, तथा साहस में कमी और प्रॉपर्टी से फायदा नहीं होता है। अस्त मंगल पर राहु–केतु का प्रभाव होता है तो, जातक किसी मुकदमें आदि में भी फंस सकता है।
- ➢ **बुध:** इस ग्रह को अस्त होने का दोष नहीं होगा फिर भी अगर कुंडली में बुध ग्रह सूर्य के ३ डिग्री के भीतर रहता है तो यह ग्रह कोई खास लाभ नहीं देता है। मानसिक अवसाद आदि से गुजरना पड़ सकता है एवं अस्त बुध की अंतर्दशा में जातक धोखे का शिकार हो सकता है।
- ➢ **गुरु:** गुरु अस्त होने से व्यक्ति के चरित्र पर लांछन लगते हैं। ज्ञानी होने के बाद भी उच्च पद नहीं मिलता है, तथा जातक मुधवेह, ज्वर, पाचन तंत्र अदि के रोग से ग्रस्त हो सकता है।
- ➢ **शुक्र:** कुंडली में शुक्र अस्त होने पर काम में बाधा आती है, पत्नी सुख में कमी और यौन रोग की सम्भावना होती है। ऐसा व्यक्ति लम्पट प्रकृति के होता है तथा संतान सुख में बाधा रहता है।
- ➢ **शनि:** कुंडली में शनि अस्त हो तो सरकारी कार्यो में बाधाएं आती हैं। अस्त शनि ग्रह की अंतर्दशा आने पर जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी आती है, व्यक्ति कार्य एवं व्यवहार

नीच प्रकृति का हो जाता है। अस्त शनि ग्रह का षष्ठेश की प्रभाव में होना रीढ़ की हड्डी में परेशानी, जोड़ों एवं घुटना में दर्द की समस्या हो सकता है।

वक्री, मार्गी और अतिचारी ग्रह

सौरमंडल में सभी ग्रहो अपनी मार्ग पर एक निर्दिष्ट गति पर ही चलते है, ग्रह जब सामान्य गति से भ्रमण करता है तो उसको मार्गी कहते हैं। जब ग्रह तीव्र गति से चलता है तब उसको अतिचारी कहते हैं और जब इसी तीव्रता में वह पीछे की ओर चलने लगता है तो उसको वक्री कहते हैं। वक्री ग्रह से आशय जब कोई भी ग्रह अपनी सामान्य दिशा की बजाए उल्टी दिशा में चल रहा है।

वास्तव में कोई ग्रह कभी पीछे या उल्टे नहीं चलते है, बल्कि उनकी गति के कारण ऐसा केवल आभास होता है, हालांकि सूर्य और चंद्रमा कभी भी वक्री नहीं होते हैं। एवं सौरमंडल में राहु और केतु छाया ग्रह होने की वजाए से सदा दूसरे ग्रहो से उलटी दिशा में अर्थात वक्री चलते है, इसलिए राहु व् केतु ग्रह को वक्री ग्रह नहीं कहा जाता है, क्योकि वक्री चलना इनका स्वाभाविक गति होती है।

वक्री ग्रह जब तक वक्र रहते है तब तक उनकी गति काफी धीमी होती हैं, और इसी धीमी गति को गोचर मे उनकी सामान्य गति से संतुलन बैठाने के लिए वक्री ग्रहो की डिग्री को पीछे ले जाया जाता हैं। कुंडली में ग्रहों का वक्री होना सामान्य रूप से अच्छा नहीं माना जाता है।

वक्री ग्रह सदा अनिष्टकारी नहीं होते कभी–कभी बहुत शुभ भी होते हैं। कुछ बिशेष स्थितियों में तो वक्री ग्रह राजयोग निर्माण द्वारा जातक को उच्च शिखर पर पहुंचाने में अत्यंत सहायक होते हैं। ऐसी स्थिति में जातक को धन, यश व अच्छी सेहत की प्राप्ति होती है। वक्री ग्रहों की प्रभाव वृषभ, कन्या, धनु और मीन राशियों में सबसे अधिक महसूस होता है; जबकि मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, मकर और कुंभ राशियों में कम महसूस होता है। ग्रहों के वक्री होने का प्रभाव उनकी स्थिति, राशि, भाव और योगों पर निर्भर करता है।

उच्च राशिगत कोई ग्रह वक्री हो तो, नीच राशिगत होने का फल प्रदान करता है। इसी प्रकार से जब कोई नीच राशिगत ग्रह वक्री होता है तो, अपनी उच्च राशि में स्थित होने का फल प्रदान करता है। कोई शुभ अथवा पाप ग्रह यदि नीच राशिगत हो परन्तु नवांश मे अपनी उच्च राशि में स्थित हो तो वह उच्च राशि का ही फल प्रदान करता है। यदि वक्री ग्रह के साथ कोई ग्रह स्थित हो, तो उसके सानिध्य में वह और बलवान हो जाता है। अगर अशुभ ग्रह अशुभ भाव में वक्री हो, तो अशुभता में वृद्धि हो जाती है एवं शुभ भाव में अशुभता में कमी होती है।

यदि कुंडली में लग्नेश केंद्रस्थ होकर वक्री हो जाए, तो यह अत्यंत शुभकारी होता है। अगर वक्री ग्रह का संबंध केंद्र या त्रिकोण से हो अथवा त्रिकोण या केंद्र का स्वामी वक्री होकर शुभ भाव में हो, तो यह अति शुभ फल का संकेत देता है। वक्री ग्रह का संबंध यदि सप्तम भाव से होने से जातक के विवाह में विलंब होता है।

❖ गति के अनुसार ग्रहों की अवस्थाए:–

- सूर्य तथा चंद्रमा सदैव मार्गी रहते हैं एवं राशि चक्र के दिशा में चलते है।
- राहु और केतु सदैव वक्री रहते हैं, एवं राशि चक्र के विपरीत दिशा में चलते है।
- मंगल, बुध, गुरु व शनि सामान्यत: मार्गी होते हैं; परन्तु बीच–बीच में वक्री हो जाते हैं। इन ग्रहों की गति मार्गी से वक्री तथा मार्गी से वक्री होते समय अति मंद हो जाती है। एवं यह ग्रह वक्री होने के कुछ दिन पहले व कुछ दिन बाद तक स्थिर अवस्था में होते हैं।
- क्रूर ग्रह वक्री होने पर अधिक क्रूर फल देते हैं, परन्तु सौम्य ग्रह वक्री होने पर शुभ फल देते हैं।

स्तंभित व् मंदगामी अवस्था

सूर्य से दूरी के अनुसार जब कोई ग्रह अपनी सामान्य गति से धीमी गति में चलता है, तब उस ग्रह को मंदगामी अवस्था में माना जाता हैं। मार्गी से वक्री और वक्री से मार्गी होते समय कुछ समय के लिए अपनी गति को स्थिर करते हैं, उसको ही ग्रहों का स्तंभित अवस्था कहते हैं।

❖ सूर्य से दूरी के अनुसार ग्रहों की गति:–

- सूर्य से दूसरे स्थान पर ग्रहों की गति तीव्र हो जाती है।
- सूर्य से तीसरे स्थान पर सम तथा चौथे स्थान पर गति मंद हो जाती है।
- सूर्य से पांचवे व छठे स्थान पर ग्रह वक्री होते है।
- सूर्य से सातवें व आठवें स्थान पर ग्रह अतिवक्री होते है।
- सूर्य से नवें व दसवें स्थान पर ग्रह मार्गी होते है।
- सूर्य से ग्यारहवें व बारहवें स्थान पर ग्रह पुनः तीव्र हो जाते है।

वक्री ग्रहों का फल

- **वक्री मंगल का प्रभाव:** कुंडली में मंगल ग्रह वक्री होने से जातक जल्दी क्रोधित और उत्तेजित होता है। वक्री मंगल जातक को सामान्य से अधिक शारीरिक और मानसिक ऊर्जा प्रदान करता है। हालांकि, इस अतिरिक्त ऊर्जा का सही उपयोग करना अक्सर मुश्किल होता है, जिससे जातक परेशान महसूस कर सकता हैं। क्यौकी यह ऊर्जा कभी–कभी अचानक क्रोध या चिड़चिड़ापन के रूप में प्रकट होती है। महिलाओं की जन्म कुंडली में वक्री मंगल अक्सर उन्हें पुरुषों की विशेषताएँ प्रदान करता है। ऐसी महिलाएं पुरुषों के कार्यक्षेत्रों में सफलतापूर्वक काम करने और उन्हें नियंत्रित करने में सक्षम होती हैं।
- **वक्री बुध का प्रभाव:** कुंडली में बुध वक्री होने से व्यक्ति आमतौर पर कमजोर स्वभाव का या मुसीबत में घबरा जाने वाला होता है। लेकिन जब गोचर में बुध वक्री होता है, तो ऐसे व्यक्ति की बुद्धिमत्ता तीक्ष्ण होती है, और वे समाज की समस्याओं को आश्चर्यजनक तरीके से सुलझाने में सक्षम होते हैं। वक्री बुध के प्रभाव से व्यक्ति की बातचीत करने और निर्णय लेने की क्षमता में बदलाव आ सकता है। ऐसे लोग या तो बहुत अधिक बोलने वाले होते हैं या फिर पूरी तरह से चुप रहते हैं। वक्री बुध के प्रभाव में, वे कई बार अप्रत्याशित और अटपटे निर्णय ले लेते हैं, जो सामान्य परिस्थितियों में ठीक विपरीत हो सकते हैं।
- **वक्री गुरु का प्रभाव:** वक्री गुरु ग्रह जातकों को शुभ फल देने की क्षमता रखता है। जातक के अन्दर में अद्भुत क्षमताएँ विकसित होती हैं और उनकी कार्यशैली में एक विशिष्टता होती है। भले ही उनके कार्य अधूरे रह जाएँ, लेकिन वे अंततः उन्हें पूरा करने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त, वक्री गुरु जातकों को अक्सर बिना मांगी सलाह देने की प्रवृत्ति प्रदान करते हैं। इस कारण, वे अपने ज्ञान का सही उपयोग नहीं कर पाते और आसपास के लोगों को अनावश्यक रूप से उपदेश देने लग जाते हैं।
- **वक्री शुक्र का प्रभाव**: जन्म के समय शुक्र ग्रह वक्री होनी से जातक का स्वभाव धार्मिक और आस्था से भरा होता है, और उन्हें लोकप्रियता भी प्राप्त होती है। गोचर के दौरान वक्री शुक्र जातक को सत्यवादी बनाता है, लेकिन साथ ही उनके स्वभाव में क्रूरता भी ला सकती है। वक्री शुक्र पुरुषों में प्रेम संबंधों और जीवन साथी के प्रति सामान्य से अधिक संवेदनशील बनाता है, जबकि महिलाओं में यह आक्रामकता ला सकता है। महिलाएं अपने प्रेमी या जीवन साथी पर नियंत्रण रखने की कोशिश करती हैं और संबंध टूटने पर आसानी से पीछा नहीं छोड़तीं है। कभी कभी वे प्रतिशोध की भावना से भी प्रेरित हो जाती हैं।

- **वक्री शनि का प्रभाव:** जब जन्म कुंडली में शनि वक्री होता है, तो व्यक्ति अक्सर शक्की और स्वार्थी स्वभाव का होता है। ऐसे लोग बाहरी रूप से साहसी, कठोर सिद्धांतवादी और अनुशासनप्रिय दिखते हैं, लेकिन अंदर से वे डरपोक, खोखले और लचीले होते हैं। वक्री शनि के प्रभाव में नकारात्मकता बढ़ जाती है, जो जातक के लिए समस्याओं से लेकर गंभीर विपत्तियों का कारण बन सकती है। यदि शनि सामान्यतः शुभ फल देने वाला होकर वक्री है, तो यह जातक को अपेक्षाकृत कम नुकसान पहुँचाता है। तुला राशिगत शनि वक्री होने से यह अतिरिक्त बल प्राप्त करता है, और इसके अशुभ होने पर यह सामान्य से अधिक नुकसान पहुँचाने में सक्षम होता है।

ग्रहों का चतुर्विद सम्बन्ध

१)	क्षेत्र सम्बन्ध	यदि दो ग्रह एक दूसरे की राशि में हों।
२)	दृष्टि सम्बन्ध	यदि दो ग्रह एक दूसरे को पूर्ण दृष्टि से देखते हों।
३)	अधिष्ठित राशीश दृष्टि सम्बन्ध	जिस राशि में ग्रह हो उस राशि के स्वामी से पूर्ण दृष्ट हो।
४)	युति सम्बन्ध	यदि दो ग्रह एक ही राशि में स्थित हों।

इन्ह चतुर्विध संमंध के आलावा केन्द्र व त्रिकोण में स्थित ग्रह भी परस्पर संबंधी होते हैं। तथा उपरोक्त चातिर्विध संबंधों का बल व प्रभाव क्रमशः क्षीणतर होता जाता है। जैसे: क्षेत्र सम्बन्ध सर्वश्रेष्ठ है, दृष्टि सम्बन्ध श्रेष्ठ है, अधिष्ठित राशीश दृष्टि सम्बन्ध मध्यम है एवं युति सम्बन्ध सामान्य होते है।

वैदिक ज्योतिष में नव ग्रहों का बहुत महत्व है जिनमें पूरी पृथ्वी समाई हुई है और इसी ग्रहों के माध्यम से हम जीवन को समझते हैं। ग्रहों का प्रयोजन किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली जानने के लिए बहुत ही आवश्यक होता है।

प्रत्येक ग्रह की अपनी विशेष विशेषताएं, शक्ति और प्रभाव होते हैं; जो व्यक्ति के व्यवहार, व्यक्तित्व और जीवन के अनुभवों के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करते हैं। शास्त्रोक्त इन्ह नव ग्रहो के आलावा भी उपग्रहों का भी उल्लेख मिलता है, कुछ विशेष ज्योतिष विचार में उपग्रहों के बारे में भी ज्ञान होना आवश्यक है।

उपग्रह परिचय एवं फल

भारतीय वैदिक ज्योतिष के ग्रंथो में मुख्य रूप से नव ९ उपग्रहों का वर्णन मिलता है। प्रत्येक ग्रह के तृतीयक ग्रह भी होते हैं जिन्हें उपग्रह कहते हैं। ये ग्रह अदृश्य होते हैं तथा इनका भौतिक अस्तित्व ब्रम्हाण्ड मे ही लुप्त है। उपग्रह वस्तुत: गणितीय विधि से निकाले गये बिन्दु होते हैं। एवं इन बिन्दुओं का जातक की कुण्डली में तथा व्यक्ति विशेष की या देश की वर्ष कुण्डली में महत्वपूर्ण स्थान माना जाता है।

ज्योतिष में ९ उपग्रह

ग्रह – उपग्रह	ग्रह – उपग्रह
○ सूर्य – काल	○ शुक्र – इन्द्रचाप या कोदण्ड
○ चंद्र – परिध	○ शनि – मांदि या गुलिक
○ मंगल – धूम या मृत्यु	○ राहु – पात या व्यतिपात
○ बुध – अर्धप्रहर	○ केतु – उपकेतु या शिखी
○ गुरु – यमघण्टक	

जिस प्रकार ग्रह जिस भाव में होता है, अपने सामर्थ्यानुसार उस भाव से सम्बंधित फल देता है। उसी प्रकार उपग्रह भी जन्मकुंडली के जिस भाव में होगा उसके अनुसार शुभ और अशुभ फल प्रदान करता है। उपग्रह नौ ग्रहो के उन प्रभावो का उदघोष करती है, जो जीवन मे हर प्रकार के दुःख का निर्माण करते है। प्रकाश हीन रहते हुए भी नवग्रह की ये परछाईया मानव जीवन मे अपना खतरनाक खेल ख़ामोशी से खेलती रहती है। कुछ बिशेष स्थितियो को छोड़कर सभी उपग्रह अशुभ फल प्रदाता है। हालाकी फलित मे इनका विचार बहुत कम किया जाता है।

वैदिक ज्योतिष शास्त्रो मे इन उपग्रहो को दो समूहो मे बांटा गया है, धूमादि एवं गुलिकादि। धूमादि समूह मे धूम, व्यतिपात, परिध, इन्द्रचाप, उपकेतु ये पांच उप ग्रह आते है, जिनकी गणना सूर्य की स्थिति से की जाती है। उपग्रहों में से पात और शिखि अर्थात राहू और केतु सूर्यदी सप्त ग्रहों की तरह राशि चक्र में अवस्थान करके फल प्रदान करता है। एवं शेष तीन उपग्रह – धूल, परिधि और चाप घटीकांशे अपना फल प्रदानकर्ता है।

अर्थात् किसी विशेष समय या जन्म के समय ये तीनों अदृश्य ग्रह जिस राशि में स्थित होंगे, उसकी गणना करके परिणाम का निर्णय करना पड़ता है। यह तीन अदृश्य ग्रहों की स्थिति का निर्धारण सूर्य के अक्ष से किसी विशेष राशि के अक्ष की दूरी के भीतर किया जाता है। फिर ये तीनों उपग्रह समय के साथ अपनी विशिष्ट स्थिति के आधार पर परिणाम देते हैं।

ये अव्यक्त ग्रह राशि चक्र के सात ग्रहों के साथ मिलकर मानव जीवन और ब्रह्मांड पर अचानक शुभाशुभ परिणाम प्रदान करते हैं। वे स्वाभाविक रूप से अचानक महामारी, राज्य

क्रांति, भूमि आपदाओं आदि का कारण बनते हैं। वे प्रायः अप्रत्याशित रूप से मानव जीवन में विभिन्न रहस्यमय फल प्रदान करते है।

- ✓ - स्पष्ट सूर्य मे ४ राशि १३ अंश २० कला जोड़ने पर धूम स्पष्ट होता है।
- ✓ - धूम स्पष्ट को १२ राशि मे से घटाने पर व्यतिपात स्पष्ट होता है।
- ✓ - व्यतिपात स्पष्ट मे छह राशि जोड़ने पर परिवेष स्पष्ट होता है।
- ✓ - परिवेश स्पष्ट को १२ राशि मे से घटाने पर इंद्रचाप स्पष्ट होता है।
- ✓ - इन्द्र चाप मे १६ अंश ४० कला जोड़ने पर ध्वज स्पष्ट होता है।

धुमादि समूह मे धूम के धुंए मे मृत्यु का रूप छिपा होता है, तो व्यतिपात की छाया अचानक टूट पड़ने वाले दुःखो के पहाड़ की ओर संकेत करती है। परिध मानव जीवन मे तमस भरे आलस्य भर देता है जो दशम भाव पर पड़ी छाया मे उत्पन्न जातक समय पर कोई भी कार्य नही कर पाते है। इंद्रचाप जीवन मे सुख–सुविधा की वजह से अशान्ति के भेद खोलता है, तो उपकेतु विफलता के कारण असमय मन की विरक्ति की ओर संकेत करता है।

गुलिकादि समूह मे चार उपग्रह काल, अर्द्ध प्रहार, यमघण्ट और गुलिक की गणना दिन या रात के आठ भागो पर ग्रहो के स्वामित्व के आधार पर की जाती है। शनि का अंश गुलिक, बृहस्पति का अंश यमघंट, मंगल का अंश धूम, सूर्य का अंश काल और बुध का अंश अर्द्ध प्रहार होता है। ये उपग्रह सूर्य, बुध, गुरु, शनि की उन विपरीत शक्तियो की और संकेत करते है, जो जीवन में अवरोध पैदा करने वाला होता है।

❖ उपग्रह स्पष्ट करने हेतु:–

i) जो वारेश है उससे गणना की जाती है। दिन मे वारेश के उपग्रह से गणना तथा रात्रि मे वारेश से पांचवे वारेश के उपग्रह से गणना की जाती है।

ii) दिनमान मे ८ अंक का भाग देने पर लब्धि घटी पल मे वारेश अनुसार उपग्रहो की गणना होती है। घटी पल अनुसार जो लग्न राशि स्पष्ट हो उस पर वह उपग्रह होता है।

iii) इसी प्रकार रात्रिमान मे ८ अंक का भाग देने पर लब्धि घटी पल मे वारेश अनुसार उपग्रहो की गणना पांचवे खण्ड से होती है।

iv) एक एक खण्ड एक-एक ग्रह का उपग्रह है। आठवे खण्ड का कोई स्वामी नही होता है इसे निरीश कहा जाता है।

- ✓ **वार एवं उपग्रहो का क्रम इस प्रकार है:–** सूर्य – काल, चंद्र – परिध,

ग्रह तत्व

मंगल – धूम, बुध – अर्द्ध प्रहार, गुरु – यमघण्ट, शुक्र – इंद्रचाप एवं शनि – गुलिक।

दिन मे उपग्रह सरणी

खंड	रवि	सोम	मंगल	बुध
१	काल	परिध	धूम	अर्द्धप्रहार
२	परिध	धूम	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट
३	धूम	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट	इंद्रचाप
४	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट	इंद्रचाप	गुलिक
५	यमघण्ट	इंद्रचाप	गुलिक	काल
६	इंद्रचाप	गुलिक	काल	परिध
७	गुलिक	काल	परिध	धूम
८	निरीश	निरीश	निरीश	निरीश

खंड	गुरु	शुक्र	शनि
१	यमघण्ट	इंद्रचाप	गुलिक
२	इंद्रचाप	गुलिक	काल
३	गुलिक	काल	परिध
४	काल	परिध	धूम
५	परिध	धूम	अ.प्रहार
६	धूम	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट
७	अ. प्रहार	यमघण्ट	इंद्रचाप
८	निरीश	निरीश	निरीश

रात्रि मे उपग्रह सारिणी

खंड	रवि	सोम	मंगल	बुध
१	यमघण्ट	इंद्रचाप	गुलिक	काल
२	इंद्रचाप	गुलिक	काल	परिध
३	गुलिक	काल	परिध	धूम
४	काल	परिध	धूम	अर्द्धप्रहार
५	परिध	धूम	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट
६	धूम	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट	इंद्रचाप
७	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट	इंद्रचाप	गुलिक
८	निरीश	निरीश	निरीश	निरीश

खंड	गुरु	शुक्र	शनि
१	परिध	धूम	अर्द्धप्रहार
२	धूम	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट
३	अर्द्धप्रहार	यमघण्ट	इंद्रचाप
४	यमघण्ट	इंद्रचाप	गुलिक
५	इंद्रचाप	गुलिक	काल
६	गुलिक	काल	परिध
७	काल	परिध	धूम
८	निरीश	निरीश	निरीश

उपग्रह फल

शास्त्रानुसार धूमादि (धूम, परिध, इंद्रचाप, व्यतिपात, उपकेतु) उपग्रहो का प्रभाव लग्न, सूर्य, चंद्र पर होता है, तो ये जातक के भाग्य, बुद्धि तथा आयु का नाश करते है। कर्म क्षेत्र अथवा दशम स्थान मे परिध हो, तो जातक समय पर काम नही कर पाता है। एवं गुलिकादि समूह (गुलिक, काल, अर्द्ध प्रहार, यमघण्ट) उपग्रहो का लग्न, सूर्य, चंद्र पर प्रभाव जातक को बीमारिया, असाध्य रोग और यहा तक कि मृत्यु तुल्य कष्ट देती है। शुभ–अशुभ परिणाम ये जिस भाव मे स्थित हो उस भाव के स्वामी की दशा मे भाव स्वामी के बल अनुसार होता है।

i) **काल:** इसका स्वभाव राहू कि ही तरह होता है, या यू कहे की काल राहु का उपग्रह है।

ii) **परिध:** यदि परिधि का सम्बन्ध लग्न/लग्नेश से होता है तो जातक को लीवर, किडनी कि समस्या, जलोदर रोग, जल से दुर्घटना, पेट में पानी भर जाना, धातु कि बीमारी, जल में डूबने का भय, कारावास आदि का संभावना रहता है।

iii) **धूम:** धूम उपग्रह का गुण मंगल ग्रह की तरह होता है। इसके प्रभाव से अग्नि, विस्फोट, देह में जलन, गर्मी, मन में घबराहट, बेचैनी आदि होता है।

iv) **अर्धप्रहर:** अर्धप्रहर उपग्रह का स्वभाव बुध ग्रह कि तरह होता है। अर्धप्रहर जिस भाव में हो यदि उस भाव कोअष्टक वर्ग में अधिक बिंदु प्राप्त है तब उस भाव के शुभ फलो कि वृद्धि होती है।

v) **यमघण्टक:** यमकंटक या यमघंटक गुरु ग्रह कि तरह ही शुभ फल प्रदान करता है। यमकंटक जिस भाव या ग्रह से सम्बन्ध बनाता है, उस भाव/ग्रह आदि के शुभ फलो कि वृद्धि करता है।

vi) **इंद्रचाप:** इसका प्रभाव लग्न या लग्नेश पर होने से, जातक की किसी भारी वस्तु शरीर के ऊपर गिर जाने से या किसी वाहन से गिर कर चोट लगने कि सम्भावना होती है।

vii) **गुलिक अथवा मांदी:** गुलिक को मान्दी, प्राणहर, यमात्मज, मन्दपुत्र व् शनिसूत नाम से भी जाना जाता है। गुलिक वा मांदी को पापी, क्रूर तथा कष्ट देने वाला उपग्रह माना गया है, परन्तु छठे तथा ग्यारहवे भाव में शुभ फल प्रदान करता है।

गुलिक केंद्र या त्रिकोण मे स्वराशि या उच्चराशि या मित्रराशि मे हो तो जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला, लोकप्रिय और प्रसिद्ध, राज योग के आनंद का लाभ लेने वाला प्रभावशाली शासक होता है।

अथवा गुलिक का राश्याधीश अथवा नवांशपति अथवा दोनों यदि जन्मकुंडली के केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों, स्वराशि अथवा उच्चराशि के हों तो गुलिक प्रदत्त दोष समाप्त हो कर राजयोग फलित होता है।

viii) **व्यतीपात:** जिस प्रकार किसी धारदार हथियार से कष्ट होता है उसी तरह व्यतिपात उपग्रह का प्रभाव होता है। व्यतिपात हमें वाहन दुर्घटना, जानवरों से कष्ट इत्यादि की ओर संकेत करता है। यदि लग्न अथवा लग्नेश या दोनों पर व्यतिपात का प्रभाव है तो ऐसे फल कि सम्भावना बढ़ जाती है।

ix) **उप केतु:** यदि उपग्रह किसी भी तरह लग्न अथवा लग्नेश से होता है तो वह जातक धोखा, षड्यंत्र, बिजली के गिरने से कष्ट इत्यादि का शिकार होता है।

गुलिक विशेष

गुलिक स्पष्ट से १८० डिग्री दूर स्थित बिंदु को भी जन्म कुंडली में बहुत ही अशुभ माना जाता है । अर्थात गुलिक स्पष्ट के ठीक ६ राशि आगे स्थित राशि में गुलिक स्पष्ट के समान अंश कला–विकला में भी गुलिक जैसे ही दुष्प्रभावों की स्थिति मानी गयी है। इसे भारतीय ज्योतिष में प्रमाण गुलिक कहा गया है।

गुलिक तथा प्रमाण गुलिक दोनों के ही राश्याधीश एवं नवांशपति अपनी–अपनी महादशा तथा अंतर्दशाओं में अशुभ फल देने वाला होता हैं। गुलिक अगर त्याज्य काल में हो तो व्यक्ति राजा के घर में भी पैदा होकर भी दरिद्र होता है।

गुलिक जिस ग्रह के साथ होता है, वह कितना ही कारक जीवन के लिये क्यों न हो उसे निष्फल कर देता है। ग्रह के कारकत्व को समाप्त करने में गुलिक की मुख्य भूमिका होती है।

जैसे:–

✓ सूर्य के प्रभाव से पिता की अल्पायु और पुत्र के नाश का कारण बनता है। यह आंखों में रोग पैदा करता है और अंधेपन के जोखिम बढ़ाता है।

✓ चंद्रमा के साथ होने पर, यह माता के सुख में कमी लाता है, पानी से संबंधित बीमारियों का कारण बनता है, और धोखेबाज लोगों से संबंध स्थापित कराता है और जातक की माता भी अल्पायु के होती है।

✓ मंगल के प्रभाव से जातक को भाइयों का सुख नहीं मिलता, और भाई उसकी सम्पत्ति का विनाश कर देते हैं, जो स्वयं भी अल्पायु होते हैं।

✓ बुध के साथ होने पर जातक दौरे और मानसिक बीमारियों का शिकार होता है । वह लगातार बोलने का आदी हो जाता है, और इसका संबंध बड़े भाई के जीवनसाथी से बनता है, जिससे अवैध संतान उत्पन्न होने और पितृ दोष की स्थिति बन सकती है।

✓ गुरु के साथ होने से जातक धर्म से भटकता है और शिक्षा अधूरी रहती है। शुक्र के प्रभाव में, जातक बहु स्त्रियों या पुरुषों के साथ संबंध बनाता है, अक्सर नीच स्त्रियों या पुरुषों के साथ संबंध स्थापित करता है।

✓ गुलिक का शनि के साथ होने से अधिकतर कोढ़ की स्थिति बनती है, जबकि राहु के साथ होने पर जातक को रक्त संबंधी बीमारियाँ होती हैं, और मृत्यु का कारण जहर बन सकता है।

✓ गुलिक का केतु के साथ होना जातक के लिए अग्नि संबंधी घटनाओं से मृत्यु का संकेत देता है।

- **गुलिकायुर्दायः–** किसी जातक की आयु गणना के लिए सूर्य, चंद्र, गुलिक एवं लग्न से प्राण, देह तथा मृत्यु स्फुट निकालकर और फिर प्राण तथा देह स्फुट का योग करें। यदि यह योग मृत्यु स्फुट से अधिक है, तो जातक को दीर्घायु माना जाना चाहिए। लेकिन यदि मृत्यु स्फुट प्राण और देह स्फुट के योग से अधिक है, तो यह संकेत करता है कि जातक की अकाल मृत्यु हो सकती है।

  - ✓ **प्राण, देह एवं मृत्यु स्फुट निम्न प्रकार समझनी चाहिए:**
  - ❖ प्राण स्फुट = लग्न स्पष्टांश × ५ गुलिक स्पष्ट।
  - ❖ देह स्फुट = चंद्र स्पष्टांश × ८ गुलिक स्पष्ट।
  - ❖ मृत्यु स्फुट = गुलिक स्पष्ट × ७ सूर्य स्पष्टांश।

उपग्रह दोष

विवाहादि मुहूर्त निकलने में विशेष रूप से उपग्रह दोष देखा जाता है। उपग्रह दोष गणना में अभिजित नक्षत्र को भी शामिल किया जाता है। जिस दिन विवाह का मुहूर्त निकालना है, उस दिन सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनकर यदि चन्द्रमा का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४, २५ वें स्थान पर है तो यह उपग्रह दोष कहलाता है।

====✂====

चतुर्थ अध्याय

नक्षत्र तत्व

सौरमंडल में तारों के समूह को नक्षत्र बोला जाता है। सभी ग्रहों की गति क्रांतिवृत्त के आसपास के नक्षत्र मंडल में होती है। वेद जैसे प्राचीन ग्रंथों में भी नक्षत्रों के बारे में विशेष की जानकारी दी गयी है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्र का अर्थ स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। यह एक वैदिक शब्द है जिसका उपयोग नक्षत्रों या सितारों के समूहों का वर्णन करने के लिए किया जाता है। नक्षत्र दो शब्दों से बना है– "नक्ष" और "तारा"। "नक्ष" का अर्थ है नक्शा और "तारा" का अर्थ है तारा तो, सामूहिक रूप से उनका मतलब है "सितारों की मानचित्र अथवा समूह"। आकाश में जितने ज्योतिः बिम्ब दिखते है उनमे से कुछ का नाम नक्षत्र है, तथा कुछ को ग्रह कहते है।

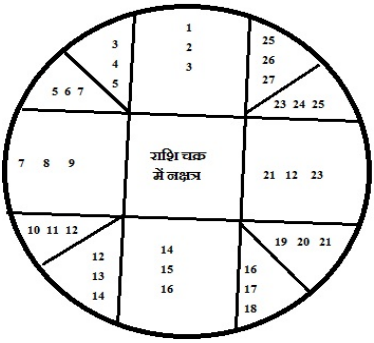

सभी ग्रह इन्हीं नक्षत्रों में गतिमान रहते है, नक्षत्र ही राशियों का आधार है। नक्षत्रों की महत्ता तो यहाँ तक है की प्राचीन समय में राशियाँ नहीं होती थी बल्कि सभी ग्रह स्थिति का वर्णन नक्षत्रों को आधार मानकर ही किया जाता था। नक्षत्रो के पास अपनी खुद का प्रकाश होती है, इसलिए ये ग्रहो की तरह सूर्य की रश्मि से नहीं चमकती है। और ब्रम्माण्ड में नक्षत्रो का अवस्थान हमारे सूर्य मंडल से काफी दूर में होती है। नक्षत्र हमेशा अपने स्थान पर स्थिर रहते है और इन्ह में परस्पर अंतर सदैव समान रहता है।

यह परिक्रमा मार्ग में १३ डिग्री २० कला पर एक निश्चित दुरी पर होते है अर्थात एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र की दुरी १३ डिग्री २० कला होती है। आकाश मंडल में कुल २८ नक्षत्रो होती है, पर मानव जीवन में कुल २७ नक्षत्रो का ही प्रभाव पड़ता है, शेष अंतिम नक्षत्रो अभिजीत का कोई भी प्रभाव मानव जीवन के ऊपर नहीं पड़ता है, इसलिए वैदिक ज्योतिष की गणना में कुल २७ नक्षत्र माना जाता है। एवं अभिजीत नक्षत्रो की ३ तारा संख्या होते हुए भी गणना से बाहर रखा जाता है। चन्द्रमा पृथ्वी का पूरा एक चक्कर २७.३२१६६२ दिन या २७ दिन ७ घंटे ४३ मिनट ११.६ सेकंड में करता है। इसी के आधार भचक्र को २८ भागों में विभाजित किया गया है।

एक नक्षत्र का कोणीय मान १३ अंश २० कला होता है। एक नक्षत्र में ४ चरण होते है, और एक राशी में ९ चरण होते है। एक नक्षत्र में चन्द्रमा १.०११९१३३८९ या २४ घंटे १७

मिनट ९.३१७३ सेकंड रहता है(औसतन)। एक चरण में चन्द्रमा लगभग १.०११९१३३८९ / ४=०.२५२९७८३४७ दिन या ६ घंटे ४ मिनट १७.३३ सेकंड रहता है। परन्तु यहाँ एक बात ध्यान में रखनी चाहिए की चन्द्र की गति बदलती रहती है। चन्द्रमा को एक नक्षत्र पार करने में अधिकतम समय = २७ घंटे १० मिनट व न्यूनतम समय २० घंटे ५५ मिनट लगते है।

❖ २८ नक्षत्रो का नाम इस प्रकार है:–

१)अश्विनी २)भरणी ३)कृत्तिका ३)रोहिणी ४)मृगशिरा ६)आद्रा ७)पुनर्वसु ८)पुष्य ९)अश्लेशा १०)मघा ११)पूर्वाफाल्गुनी १२)उत्तराफाल्गुनी १३)हस्त १४)चित्रा १५)स्वाति १६)विशाखा १७)अनुराधा १८)ज्येष्ठा १९)मूल २०)पूर्वाषाढा २१)उत्तराषाढा २२)श्रवण २३)धनिष्ठा २४)शतभिषा २५)पूर्वाभाद्रपद २६)उत्तराभाद्रपद २७)रेवती और २८)अभिजीत नक्षत्र।

२७ नक्षत्रों का वैदिक मंत्र

१. **अश्विनी:** ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षु: प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम। ॐ अश्विनी कुमाराभ्यो नम:। जप संख्या: मिट्टी की माला में २७,०००।

२. **भरणी:** ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथ्विया स गवं स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसी। ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्यते पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मपित्रे। जप संख्या: स्फटिक की माला में २१,०००।

३. **कृतिका:** ॐ अयमग्नि सहत्रिणो वाजस्य शांति गवं वनस्पति: मूर्द्धा कबोरीणाम। ॐ अग्नये नम:। जप संख्या: लाल गुंजा की माला में १२,०००।

४. **रोहिणी:** ॐ ब्रहमजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमत: सूरुचोवेन आव: सबुधन्या उपमा अस्यविष्टा: स्तश्चयोनिम मतश्चविवाह। ॐ ब्रहमणे नम:। जप संख्या: मोती की माला में २१,०००।

५. **मृगशिरा:** ॐ सोमधेनु गवं सोमाअवन्तुमाशु गवं सोमोवीर: कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य गवं सभेयम्पितृ श्रवणयोम। ॐ चन्द्रमसे नम: ।जप संख्या: मूंगा की माला में २१,०००।

६. **आर्द्रा:** ॐ नमस्ते रूद्र मन्यवSउतोत इषवे नम: बाहुभ्यांमुतते नम:। ॐ रुद्राय नम:। जप संख्या: बांवी की मिट्टी की माला में ३६,०००।

७. **पुनर्वसु:** ॐ अदितिद्योरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माता: स पिता स पुत्र: विश्वेदेवा अदिति: पंचजना अदितिजातम अदितिर्रजनित्वम। ॐ आदित्याय नम:। जप संख्या: हल्दी की माला में ३१,०००।

८. **पुष्य:** ॐ बृहस्पते अतियदर्यौ अर्हाद द्युमद्विभाति क्रतमज्जनेषु। यदीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणम धेहि चित्रम। ॐ बृहस्पतये नम:। जप संख्या: पीपल की जड़ की माला में ४१,००० ।

९. **अश्लेषा:** ॐ नमोSस्तु सर्पेभ्योये के च पृथ्विमनु:। ये अन्तरिक्षे यो देवितेभ्य: सर्पेभ्यो नम:। ॐ सर्पेभ्यो नमः। जप संख्या: तुलसी की माला में १,२५,०००।

१०. **मघा:** ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य स्वधानम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: । प्रपितामहेभ्य स्वधायिभ्य स्वधानम: अक्षन्न पितरोSमीमदन्त:पितरोतितृपन्त पितर:शुन्धव्म। ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य स्वाधानम:। ॐ पितरेभ्यो नम:। जप संख्या: मिट्टी की माला में २७,०००।

११. **पू.फाल्गुनी:** ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्न: । भगप्रजाननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्त: स्याम:। ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो। ॐ भगाय नम:। जप संख्या: स्फटिक की माला में २१,०००।

१२. **उ.फाल्गुनी:** ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत गवं रथेन सूर्य्यतव्चा। मध्वायज्ञ (गुं) समञ्जायतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम। ॐ अर्यमणे नम:। जप संख्या: लाल गुंजा की माला में १२,०००।

१३. **हस्त:** ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोष: पुरुधाविराजति। ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं। ॐ सावित्रे नम:। जप संख्या: मोती की माला में २१,०००।

१४. **चित्रा:** ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्रागी पुष्टिवर्द्धनम। द्विपदापदाया: च्छन्द इन्द्रियमुक्षा गौत्र वयोदधु: त्वष्ट्रेनम:। ॐ विश्वकर्मणे नम:। जप संख्या: मूंगा की माला में २१,०००।

१५. **स्वाती:** ॐ वायरन्नरदि बुध: सुमेध श्वेत सिशिक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनर: स्वपत्थ्या निचक्रु:। ॐ वायरन्नरदि बुध: सुमेध। ॐ वायवे नम:। जप संख्या: बांवी की मिट्टी की माला में ३६,०००।

१६. **विशाखा:** ॐ इन्द्रान्गी आगत (गुं) सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम। अस्य पात घियोषिता।ॐ इन्द्राग्निभ्यां नम:। जप संख्या: हल्दी की माला में ३१,०००।

१७. **अनुराधा:** ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत (गुं) सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश (गुं) सत। ॐ मित्राय नम:। जप संख्या: पीपल की जड़ की मिट्टी में बनी माला में ४१,०००।

१८. **ज्येष्ठा:** ॐ त्रातारभिंद्रमबितारमिंद्र (गुं) हवेसुहव (गुं) शूरमिंद्रम वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र (गुं) स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्र:। ॐ त्राताभिंद्रमबितारमिंद्र। ॐ इन्द्राय नम:। जप

संख्या: तुलसी या रुद्राक्ष की माला में १,२५,०००।

१९. **मूल:** ॐ मातेवपुत्रम पृथिवी पुरीष्यमग्नि (गुं) स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभि: संविदान: प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्च्त। ॐ मातेवपुत्रम पृथिवी पुरीष्यम। ॐ निऋतये नम:। जप संख्या: रुद्राक्ष की माला में १,२५,०००।

२०. **पूर्वाषाढ़ा:** ॐ अपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरप: अपामार्गत्वमस्मद यदु: स्वपन्य–सुव:। ॐ अदुभ्यो नम:। जप संख्या: स्फटिक या तुलसी की माला में २१,०००।

२१. **उत्तराषाढ़ा:** ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वSउतो विश्वे भवत्यग्नय: समिद्धा: विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै। जप संख्या: लाल गुंजा की माला में १२,०००।

२२. **श्रवण:** ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो धुर्वोसि वैष्णवमसि विष्नवेत्वा। ॐ विष्णवे नम:। जप संख्या: मोती की माला में २१,०००।

२३. **धनिष्ठा:** ॐ वसो:पवित्रमसि शतधारंवसो: पवित्रमसि सहत्रधारम। देवस्त्वासविता पुनातुवसो: पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्ष:। ॐ वसुभ्यो नम:। जप संख्या: मूंगा की माला में २१,०००।

२४. **शतभिषा:** ॐ वरुणस्योत्त्मभनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरुणाय नम:। जप संख्या: बांवी की मिट्टी की माला में ३६,०००।

२५. **पू.भाद्रपद:** ॐ उतनाहिर्वुधन्य: श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्र: विश्वेदेवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्रा कविशस्ता अवन्तु। ॐ अजैकपदे नम:। जप संख्या: हल्दी की माला में ३१,०००।

२६. **उ.भाद्रपद:** ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेSस्तुमामाहि गवं सो निर्वत्तयाम्यायुषेSत्राद्याय प्रजननायर रायपोषाय (सुप्रजास्वाय)। ॐ अहिर्बुधाय नम:। जप संख्या: पीपल की जड़ की मिट्टी की माला में ४१,०००।

२७. **रेवती:** ॐ पूषन तव व्रते वय नरिषेभ्य कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि। ॐ पूषणे नम:। जप संख्या: तुलसी की माला में २७,०००।

२७ नक्षत्रों का सहज मंत्र

१. अश्विनी: ॐ अश्विन्यौ नमः
२. भरनी: ॐ भराण्यै नमः
३. कृत्तिका: ॐ कृत्तिकायै नमः
४. रोहिणी: ॐ रोहिण्यै नमः
५. मृगशिरा: ॐ मृगशिरसा नमः
६. आर्द्रा: ॐ आर्द्रायै नमः
७. पुनर्वसु: ॐ पुनर्वसुप्रभृत्यै नमः
८. पुष्य: ॐ पुष्याय नमः
९. अश्लेषा: ॐ अश्लेषाय नमः
१०. मघा: ॐ मघायै नमः
११. पू.फा: ॐ पूर्व फाल्गुन्यै नमः
१२. उ.फा: ॐ उत्तर फाल्गुन्यै नमः
१३. हस्त: ॐ हस्ताय नमः
१४. चित्रा: ॐ चित्राय नमः
१५. स्वाति: ॐ स्वात्यै नमः
१६. विशाखा: ॐ विशाखाय नमः
१७. अनुराधा: ॐ अनुराधाय नमः
१८. ज्येष्ठा: ॐ ज्येष्ठाय नमः
१९. मूला: ॐ मूलाय नमः
२०. पूर्वाषाढा: ॐ पूर्वाषाढाय नमः
२१. उत्तरषाढा: ॐ उत्तरषाढाय नमः
२२. श्रवण: ॐ श्रवणाय नमः
२३. धनिष्ठा: ॐ धनिष्ठाय नमः
२४. शतभिषा: ॐ शतभिषाय नमः
२५. पू.भा: ॐ पूर्व भाद्रपदाय नमः
२६. उ.भा: ॐ उत्तर भाद्रपदाय नमः
२७. रेवती: ॐ रेवत्यै नमः

नक्षत्रों की पौराणिक कहानी

पुराणों में २७ नक्षत्रों को दक्ष प्रजापति की २७ कन्या के रूप में बताया गया है। एवं इन्ह नक्षत्रो का विवाह सोम देव अर्थात चन्द्रमा के साथ हुआ था। चन्द्रमा को इन सभी रानियों में सबसे प्रिय थी रोहिणी, इसलिए रोहिणी नक्षत्र को चन्द्रमा का उत्कर्ष विन्दु भी माना जाता है। पर राजा के अन्य २६ पुत्रियों ने पिता दक्ष से शिकायत की अपने पति चन्द्रमा के वारे में, राजा ने चंद्रमा से बार–बार अनुरोध किया, फिर भी चंद्रमा ने अपना स्वभाव नहीं बदला।

इससे राजा क्रूद्ध होकर चंद्रमा को शाप दे दिया, जिससे उसका आकार छोटा हो गया। शाप की भयावहता देखते हुए सभी देवताओं ने राजा दक्ष को अपना शाप वापस लेने के लिए कहा और सभी देवताओं ने मिलकर राजा को यह आश्वासन भी दिया कि चंद्रमा समान रूप से अपनी सभी पत्नियों के साथ समय बिताएगा। लेकिन चूंकि शाप को पूरी तरह से वापस नहीं लिया जा सकता था, इसलिए राजा दक्ष ने कहा कि चंद्रमा केवल आधे महीने के लिए अपनी शक्ति बनाये रखने में सक्षम हो पाएगा, अतः यह प्रमुख कारण है कि चंद्रमा सभी राशि चक्रों की

परिक्रमा को समाप्त करके एक महीने में सभी २७ नक्षत्रों को पार करता है, चन्द्रमा की आकार में वृद्धि और कमी के कारण पूर्णिमा और अमावस्या होता है।

जन्म नक्षत्र क्या होते हैं ?

अंतरिक्ष में चंद्रमा की गति और पृथ्वी के चारों ओर घूमने की या परिक्रमा करने की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। चंद्रमा पृथ्वी की पूरी परिक्रमा २७.३ दिनों में करता है, और ३६० डिग्री की इस परिक्रमा के दौरान नक्षत्रो के २७ समूहों के बीच से गुजरता है। जिन्ह २७ नक्षत्रो के समूह के बीच से चंद्रमा गुजरता है वही अलग अलग २७ नक्षत्र के नाम से जाने जाते हैं। यानी हमारा पूरा तारामंडल को २७ नक्षत्रो के समूहों में बंटा गया है।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार, राशि चक्र में कुल ३६० डिग्री का होता हैं। इसमें विशेष रूप से २७ नक्षत्र–मंडल या नक्षत्र होते हैं। इस प्रकार, प्रत्येक नक्षत्र १३ डिग्री और २० मिनट का होता है। इसके बाद प्रत्येक नक्षत्र को चरण या पाद में समान रूप से विभाजित किया जाता है, प्रत्येक नक्षत्र में ४ पाद होते हैं। ये सभी २७ नक्षत्र मिलकर राशि चक्र के ३६० डिग्री के एक चक्र को पूरा करते हैं। चन्द्रमा आमतौर पे एक नक्षत्र में ५४ दंड से ५६ दंड तक स्थित रहता है।

किसी जातक का जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र में होती है, वही उस व्यक्ति का जन्म नक्षत्र होता है। मनुष्य का स्वभाव, गुण–धर्म, जीवन शैली जन्म नक्षत्र से जुडी हुई होती है। प्रभावी ज्योतिषीय विश्लेषण और सटीक भविष्यवाणियों के लिए वैदिक ज्योतिष में नक्षत्रों का अत्यधिक महत्व होते है।

जन्म नक्षत्र से ही किसी व्यक्ति की विशेषताओं, लक्षणों, विचार स्वरूप में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, और दशा अवधि की गणना किया जाता है। नक्षत्र अपने प्रभाव से किसी भी व्यक्ति के जीवन को बदलने की क्षमता रखता है। विवाह के समय भी वर और वधू का कुंडली मिलान करते समय नक्षत्र का सबसे अधिक महत्व होता है। सभी नक्षत्रों के अपने शासक ग्रह और देवता होते हैं।

राशियों में नक्षत्रो का स्थान

मेषादि १२ राशि मिलकर ३६० डिग्री का राशिचक्र बनता है। ज्योतिष शास्त्रों में २७ नक्षत्र माना गया है, तो पुरे राशि चक्र के मान ३६० डिग्री को नक्षत्रो की संख्या २७ से भाग करने पर एक नक्षत्रो की पूर्ण मान १३ डिग्री २० कला होती है। जो एक राशि में ३ नक्षत्रो की स्थान होती है। इस बात को आसानी समझने के लिए अगले पृष्ठ में एक चार्ट दिया गया है:–

राशियों में नक्षत्रो की कलाय

मेष ०-३०^0	अश्विनी १३^{0}२०"	भरणी १३^{0}२०"	कृतिका ३^{0}२०"
वृष ३०–६०^0	कृतिका १०^0	रोहिणी १३^{0}२०"	मृगाशिरा ६^{0}४०"
मिथुन ५०–९०^0	मृगाशिरा ६^{0}४०"	आर्द्र १३^{0}२०"	पुनर्वसु १०^0
कर्क ९०–१२०^0	पुनर्वसु ३^{0}२०"	पुष्य १३^{0}२०"	अश्लेषा १३^{0}२०"
सिंह १२०–१५०^0	मघा १३^{0}२०"	पू.फा. १३^{0}२०"	उ.फा. ३^{0}२०"
कन्या १५०–१८०^0	उ.फा. १०^0	हस्त १३^{0}२०"	चित्रा ६^{0}४०"
तुला १८०–२१०^0	चित्रा ६^{0}४०"	स्वाति १३^{0}२०"	विशाखा १०^0
वृश्चिक २१०–२४०^0	विशाखा ३^{0}२०"	अनुराधा १३^{0}२०"	ज्येष्ठ १३^{0}२०"
धनु २४०–२७०^0	मूला १३^{0}२०"	पूर्वषाढ़ा १३^{0}२०"	उत्तरषाढ़ा ३^{0}२०"
मकर २७०–३००^0	उत्तरषाढ़ा १०^0	श्रवणा १३^{0}२०"	धनिष्ठा ६^{0}४०"
कुंभ ३००–३३०^0	धनिष्ठा ६^{0}४०"	शतभिषा १३^{0}२०"	पू.भाद्रपद १०^0
मीन ३३०–३६०^0	पू.भा. ३^{0}२०"	उ.भाद्रपद १३^{0}२०"	रेवती १३^{0}२०"

नक्षत्रों के रंग व आकृति

अश्विनी रक्तवर्ण, घोड़े के सिर के समान, भरणी रक्तवर्ण, स्त्री की योनि की भाँति। कृत्तिका श्वेतवर्ण, चाकू या उस्तरे के समान। रोहिणी श्वेतवर्ण, रथ के समान, मृगशिरा हल्का सिलेटी, हिरण के सिर जैसा आकृति। आर्द्रा हरितवर्ण, मनुष्य के सिर के समान, पुनर्वसु गहरा सिलेटी, धनुषबाण जैसा।

पुष्य महरुन (लाल मिश्रित काला) ब्राऊन, फूल, वृत्त और तीर के समान, आश्लेषा लाल मिश्रित काला, सर्पाकार व् मघा क्रीम (हाथी दाँत जैसा रंग) और पालकी के समान आकृति की है। पूर्व फाल्गुनी हल्का भूरा, पलंग या हवन कुंड के समान, उत्तर फाल्गुनी चमकदार नीला, छोटे पलंग के समान खटोले जैसा, हस्त गहरा हरा रंग और हथेली के समान आकृति के होते है।

चित्रा काला, मोती जैसा वर्तुलाकार, स्वाती काला, मूंगे जैसा आकार। विशाखा सुनहरी, कुम्हार के चाक जैसा, अनुराधा लालिमा लिए भूरा रंग, कमल के फूल जैसा आकार के होते है। ज्येष्ठा हल्का पीला, कान के कुण्डल या छल्ले जैसा, मूल भूरापन लिए पीला, अंकुश या शेर की पूँछ जैसा, पूर्वाषाढ़ काला, हाथी के दन्त या सूँड के समान होती है।

नक्षत्र तत्व

उत्तराषाढ़ ताँबे जैसा, खटोले का आकार, अभिजीत भूरापन लिए पीला, पान या त्रिकोण जैसा, श्रवण हल्का नीला, तीर या कान जैसा होता है। धनिष्ठा हल्का सिलेटी, ढोल/मृदंग के जैसा आकार, शतभिषा समुद्री हरा, सौ फूलों का गुच्छा जैसा, पूर्व भाद्रपद हल्का सिलेटी, तलवार के समान, उत्तर भाद्रपद बैंगनी/जामुनी, जुड़याँ यमलाकृति तथा रेवती भूरा रंग, मछली जैसा आकार के होते है।

हमारा भाग्य प्रत्येक नक्षत्र स्वामी चार्ट या नक्षत्र स्वामी सूची से जुड़ा हुआ है, क्योंकि उनके आशीर्वाद और गुण पृथ्वी पर पैदा हुए प्रत्येक व्यक्ति की विशेषताओं को तैयार करते हैं। जन्म नक्षत्र के द्वारा किसी भी व्यक्ति के सोचने की शक्ति, अंतर्दृष्टि और विशेषताओं का विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है। जन्म के समय जो नक्षत्र विधमान रहता है और उस नक्षत्र का जो भी स्वामी ग्रह होता है उसी ग्रह की महादशा उस व्यक्ति के जन्म से शुरू होती है।

नक्षत्रो का आकृतिया

नक्षत्र	नक्षत्र का आकृति	नक्षत्र	नक्षत्र का आकृति
अश्विनी	अश्वमुख के समान	स्वाति	मृगालवकर, मूंगा
भरणी	योनि के समान	विशाखा	तोरण के समान
कृतिका	उष्ट्राकृति, चाकूकृति	अनुराधा	चावल के समान
रोहिणी	शकट के समान	ज्येष्ठ	गोलाकृति, पिण्डल
मृगाशिरा	हिरण का सिर	मूला	सिंह की पुंछ
आर्द्र	मणि सदृश्य आकृति	पूर्वषाढ़ा	हाथी के दाँत
पुनर्वासु	गृह के समान	उत्तरषाढ़ा	मत्स्याकृति
पुष्य	धनुष और तरकश	श्रवणा	वामन के तीन चरन
अश्लेषा	चक्र के समान	धनिष्ठा	ढोल या मृदंग के समान
मेघा	भवन सदृश्य	शतभिषा	खाली घेरा, वृत्ताकार
पू.फाल्गुनी	चारपाई के समान	पू.भाद्रपद	मंचकार
उ.फाल्गुनी	शय्या के समान	उ.भाद्रपद	यमलाकार, युगल तारे
हस्त	हाथ या मुट्ठी	रेवती	मछली का जोड़ा, ढोल
चित्रा	चमकीला रत्न/ मोती	अभिजीत	घोड़े का सिर

नक्षत्रों के देवता

अश्विनी नक्षत्र के देवता अश्विनी कुमार है, भरणी नक्षत्र के यम, कृतिका नक्षत्र के अग्नि, रोहिणी नक्षत्र के ब्रह्मा, मृगशिरा नक्षत्र के चंद्रमा, आर्द्रा नक्षत्र के शिव, पुनर्वसु नक्षत्र के अदिति, पुष्य

नक्षत्र के देवता गुरु है। आश्लेषा नक्षत्र के सर्प, मघा नक्षत्र के पितर, पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के भग, उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र के अर्यमा, हस्त नक्षत्र के सविता, चित्रा नक्षत्र के त्वष्टा, स्वाति नक्षत्र के वायु, विशाखा नक्षत्र के देवता इंद्राग्नि होते है।

अनुराधा नक्षत्र के मित्रा, ज्येष्ठा नक्षत्र के इंद्र, मूल नक्षत्र के निऋति, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के जल, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के विश्वेदेव, श्रवण नक्षत्र के विष्णु, धनिष्ठा नक्षत्र के वसु, शतभिषा नक्षत्र के वरुण, पूर्व भाद्रपद नक्षत्र के अजैकपद, उत्तर भाद्रपद नक्षत्र के अहिर्बुध्न्य एवं रेवती नक्षत्र के पूषा देवता होते है।

नक्षत्रों के स्वामी

अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्रो का स्वामी ग्रह केतु है। शुक्र ग्रह भरणी, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र का स्वामी है। सूर्य ग्रह कृतिका, उत्तर फाल्गुनी तथा उत्तराषाढ़ नक्षत्र का स्वामी है। रोहिणी, हस्त व श्रवण का स्वामी ग्रह चन्द्र है। मंगल ग्रह मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी है। राहू ग्रह आर्द्रा, स्वाती व शतभिषा नक्षत्र का स्वामी है। गुरु ग्रह पुनर्वसु, विशाखा और पूर्व भाद्रपद नक्षत्र का, शनि ग्रह पुष्य, अनुराधा तथा उत्तर भाद्रपद नक्षत्र का स्वामी है। एवं बुध ग्रह आश्लेषा, ज्येष्ठा तथा रेवती नक्षत्र का स्वामी है।

नक्षत्रो के स्वामी, योनि व देवता

नक्षत्र	नक्षत्र के देवता	गृह स्वामी	योनि
अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	अश्व
भरणी	यमराज	शुक्र	गज
कृतिका	अग्निदेव	रवि	छाग
रोहिणी	ब्रह्मा	चांद	नाग
मृगाशिरा	सोमदेव	मंगल	नाग
आर्द्र	रुद्र/शिव	राहु	श्वान
पुनर्वासु	आदित्य	बृहस्पति	मार्जार
पुष्य	बृहस्पति/गुरु	शनि	छाग
अश्लेषा	सर्प या नागा	बुध	मार्जार
मेघा	पितरों या पूर्वजों	केतु	मूषिक
पू.फाल्गुनी	आर्यमन/भग(योनी)	शुक्र	मूषिक
उ.फाल्गुनी	अर्यमा	रवि	गौ
हस्त	सूर्य	चांद	महिष

नक्षत्र तत्व

चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	व्याघ्र
स्वाति	वायु	राहु	महिष
विशाखा	इंद्र और अग्नि	बृहस्पति	व्याघ्र
अनुराधा	सूर्य/मित्र	शनि	मृग
ज्येष्ठ	इंद्र	बुध	मृग
मूला	निरति/राक्षस	केतु	श्वान
पूर्वषाढ़ा	जल	शुक्र	मर्कट
उत्तरषाढ़ा	विश्वेदेवा	रवि	नेउल
श्रवणा	विष्णु	चांद	वानर
धनिष्ठा	आठ वसु	मंगल	सिंह
शतभिषा	वरुण	राहु	अश्व
पू.भाद्रपद	अजैकपाद	बृहस्पति	सिंह
उ.भाद्रपद	अहिर्बुध्न्य	शनि	गौ
रेवती	पुष्या/पूर्वा	बुध	गज
अभिजीत	ब्रह्मा	बुध या केतु	नेउल

नक्षत्रो का वर्गीकरण

आकाश मंडल में स्थित सभी २७ नक्षत्रों को अलग अलग हिस्सों में वर्गीकरण किया गया है। प्रत्येक नक्षत्र की कुछ विशिष्ट विशेषताएं होती है जैसे लिंग, वर्ण, दिशा, गुण आदि, नक्षत्रानुसार कुंडली की गहन विश्लेषण करने के लिए इन्ह विशेषताए के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

स्त्री–पुरुष व नपुंसक नक्षत्र

१) स्त्री संज्ञक नक्षत्र: भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आद्रा, अश्लेशा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, धनिष्ठा और रेवती।

२) पुरुष संज्ञक नक्षत्र: अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद एवं अभिजीत। मतान्तर में पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा नक्षत्र को भी पुरुष संज्ञक माना जाता है। पुत्र प्राप्ति की उद्देश्य से गर्भाधान के लिए पुरुष संज्ञक नक्षत्र अति शुभ माना जाता है।

३) नपुंसक संज्ञक नक्षत्र: मृगशिरा, मूल एवं शतभिषा।

नक्षत्रों का जाति व् वर्ण

कृतिका और तीनों पूर्व नक्षत्र 'ब्राह्मण' माने गए हैं। पुष्य और तीनों उत्तर नक्षत्रों को 'क्षत्रिय' माना जाता है। पुनर्वसु, हस्त, अश्विनी तथा अभिजीत नक्षत्रों को 'वैश्य' तथा रेवती, अनुराधा, मघा और रोहिणी को 'शूद्र' माना गया है। मृगशिरा, ज्येष्ठा, चित्रा, धनिष्ठा को 'शिल्पकार' जाति का माना गया है। मूल, आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा को 'कसाई' तथा आश्लेषा, विशाखा, श्रवण और भरणी को 'चाण्डाल' जाति का माना गया है।

१) **विप्रवर्ण के नक्षत्र:** अश्विनी, पुष्य, आश्लेषा, विशाखा, अनुराधा, शतभिषा एवं पूर्वाभाद्रपद।

२) **क्षत्रिय वर्ण के नक्षत्र:** भरणी, पुनर्वसु, मघा, स्वाती, ज्येष्ठा, धनिष्ठा एवं उत्तराभाद्रपद।

३) **वैश्य वर्ण के नक्षत्र:** कृतिका, आद्रा, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, मूल, श्रवण एवं रेवती।

४) **शूद्र वर्ण के नक्षत्र:** रोहिणी, मृगशिरा, उत्तराफाल्गुनी, हस्ता, पूर्वषाढ़ा एवं उत्तराषाढ़ा।

नक्षत्रो का गण

आकाश मंडल में स्थित २७ नक्षत्र के स्वभाव के आधार पर तीन श्रेणियों में भाग किया गया है। जैसे: १)दे व गण, २) मनुष्य गण एवं ३) राक्षस गण। देवगन नक्षत्र के जातक स्वाभिमानी, सच बोलने वाला, निस्वार्थी, दयालु, परोपकारी, सकारात्मक स्वभाव वाले बुद्धिमान होते है। मनुष्य गण में मानव होने का गुण शामिल है, इसलिए मनुस्य गण के जातक मानी, स्वार्थी, धनवान, विशाल नेत्र, आत्मविश्वास की कमी और इस प्रकार अच्छे एवं बुरे दोनों प्रकार के गुण होते हैं। एवं राक्षस गण के नक्षत्र में जन्म होने वाले जातक कुछ हद तक जिद्दी, क्रूर और आक्रमक स्वभाव के होते हैं। विवाहादि के समय कुंडली विचार में नक्षत्र गण को बहुत प्राधान्य दिया जाता है।

- **देव गण नक्षत्र:** अश्विनी, मृगाशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण और रेवती।
- **मनुष्य गण नक्षत्र:** भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद।
- **राक्षस गण नक्षत्र:** विशाखा, मघा, अश्लेषा, कृत्तिका, चित्रा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा एवं शतभिषा।

नक्षत्रों की दिशाएं

अश्वनी, भरणी, रोहिणी, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, मघा, विशाखा, उत्तरभाद्रपद, पूर्वभाद्रपद यह नक्षत्र आकाश मंडल में उत्तर दिशा में होती है। कृतिका, पुष्य, अश्लेषा, चित्रा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, यह नक्त्र आकाश के मध्य भाग में स्थित है। एवं मृगशिरा, आद्रा, पुनर्वसु, हस्ता, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वषाढ़ा, उत्तरषाढ़ा, अक्ष में दक्षिण दिशा में होती है।

नक्षत्रों का पशुए

वैदिक ज्योतिष में नक्षत्रों का पशुओं से गहरा संबंध होता है। प्रत्येक नक्षत्र एक विशेष पशु से संबंधित होता है, जो यह समझने में मदद करता है कि नक्षत्र के अनुसार जातक के व्यक्तित्व की विशेषताएं कैसी होंगी। इस संबंध के माध्यम से, नक्षत्रों का अध्ययन व्यक्ति के स्वभाव, गुणों और जीवन के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या करने में सहायक होता है।

नक्षत्रों और पशुओ की तालिकाए

पशु	नक्षत्र	नर पशु	मादा पशु
घोड़ा	अश्विनी और शतभिषा	अश्विनी	शतभिषा
हाथी	भरणी और रेवती	भरणी	रेवती
भेड़	कृतिका और पुष्य	कृतिका	पुष्य
साँप	रोहिणी और मृगशिरा	रोहिणी	मृगशिरा
कुत्ता	आर्द्रा और मूल	आर्द्रा	मूल
बिल्ली	पुनर्वसु और अश्लेषा	पुनर्वसु	अश्लेषा
चूहा	मघा और पूर्वाफाल्गुनी	मघा	पूर्वाफाल्गुनी
गाय	उ.फा.और उ.भा.	उत्तर फाल्गुनी	उत्तर भाद्रपद
भैंस	हस्ता और स्वाति	हस्ता	स्वाति
चीता	चित्रा और विशाखा	चित्रा	विशाखा
हिरन	अनुराधा और ज्येष्ठा	अनुराधा	ज्येष्ठा
बंदर	पू.षा. और श्रवण	पूर्वाषाढ़	श्रवण
नेवला	उत्तर आषाढ़	उत्तर आषाढ़	X
शेर	धनिष्ठा और पू.भा.	धनिष्ठा	पूर्वाभाद्रपद

नक्षत्रों की वीथी

'वीथी' का अर्थ नक्षत्रों के परिक्रमा पथ से है। अपने कल्पित मार्ग में जिस गति का वे अनुसरण करते हैं वे ९ प्रकार की होती हैं। तीन–तीन नक्षत्रों की एक वीथी मानी गई है। इनमें लहराकर चलने वाले नक्षत्रों को नाग, झूम कर चलने वाले नक्षत्रो को गज अर्थात हाथी, शान से चलने वाले नक्षत्रो को ऐरावत, मस्ती किन्तु दर्ष से चलने वाले नक्षत्रो को वृषभ, चंचलता से बिदकते हुए बकरी की भाँति चलने वाले नक्षत्रो को अजः, ठिठक–ठिठक कर संशय पूर्वक चलने वाले नक्षत्रो को मृग, अग्नि की भाँति ऊपर को लपकते हुए चलने वाले नक्षत्रो को दहना, मेढक की भाँति उछलकर चलने वाले नक्षत्रो को जरदुगव तथा गाय की भाँति शान्ति से चलने वाले नक्षत्रो को गौ बीथि में रक्षा गया हैं।

अश्विनी, भरणी, कृतिका की नागवीथी है। रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा की गजवीथि; पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा की ऐरावतवी है। मघा, पू. फाल्गुनी, उ. फाल्गुनी की वृषभ वीथी; हस्त, चित्रा, स्वाति की अजावीथी, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा की मृगवीथी, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा की दहना वीथी होती है। श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा की जरदुगववीथी और पू. भाद्रपद, उ. भाद्रपद, रेवती की गौवीची है। इस प्रकार २७ नक्षत्रों को क्रमशः ३–३ के क्रम में इन नों वीथियों में विभाजित किया गया है।

उर्ध्व, अधो और तिर्यकमुख नक्षत्र

१) **उर्ध्वमुख नक्षत्र:** रोहिणी, आद्रा, पुष्य, उत्तरफाल्गुनी, उत्तरषाढा, श्रवणा, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तरभाद्रपद।

२) **अधोमुख नक्षत्र:** भरणी, कृतिका, अश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, विशाखा, मूल, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद।

३) **तिर्यकमुख(पार्श्वमुख) नक्षत्र:** अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, रेवती।

उर्ध्वमुख नक्षत्र में ऊपर चढ़ने या आगे बढ़ने के काम अर्थात उन्नति के कार्य करने चाहिए। मंदिर निर्माण, भवन निर्माण, वायु यात्रा करना, याद करने वाले विषय पढ़ना, नौकरी शुरू करना, बड़े पद पर बैठना, शपथ, ग्रहण करना, राज तिलक आदि कार्य उर्ध्वमुख नक्षत्रों में शुभ मन जाता है। और अधोमुख नक्षत्रों में अधोगमन वाले कार्य प्रशस्त रहता है, अर्थात जिन कामों में ऊपर से निचे की ओर गति हो, वे सब करना ठीक रहता है।

जैसे; बावड़ी, खान में खुदाई अथवा बोरिंग खोदना, गुफा व सुरंग बनाना, भूमिगत सड़कों का निर्माण करना, भूमिगत गृह बनाना या कोई भी खुदाई करना, गणित व ज्योतिष सीखना,

जुआं खेलना, जहाज की लैंडिंग, पहाड़ से उतरना, नदी में छलांग लगाना, तैरना आदि अधोमुख नक्षत्रों मे करना शुभ रहता है। एवं तिर्यक मुख नक्षत्रो में यात्रा करना, हल चलाना, पशुओं का क्रय-विक्रय, प्रशिक्षित करना और वाहन या कोई मशीनरी खरीदना व चालू करना आदि कार्य शुभ होते है।

नक्षत्रों की योनि

ज्योतिष शास्त्रानुसार कुल योनि १४ होते हैं। विवाह विषयक कुंडली मिलान में नक्षत्रों की योनि विशेष रूप से गणना किया जाता है। एक योनि में २-२ नक्षत्र होते है। अश्विनी, शतभिषा की अश्व योनि, भरणी, रेवती की गज योनि; कृतिका, पुष्य की मेष योनि, रोहिणी, मृगशिरा की सर्प योनि; आर्द्रा, मूल की श्वान योनि तथा पुनर्वसु, आश्लेषा की मार्जार योनि होती है। मघा, पूर्व फाल्गुनी की मूषक योनि; उत्तर फाल्गुनी, उत्तर भाद्रपद की गौ योनि; हस्त, स्वाति की महिष योनि; चित्रा, विशाखा की व्याघ्र योनि; अनुराधा, ज्येष्ठा की मृग योनि; पूर्वाषाढ़, श्रवण की वानर योनि; उत्तराषाढ़, अभिजीत की नकुल योनि एवं धनिष्ठा, पूर्व भाद्रपद की सिंह योनि होती है।

नक्षत्रों की नाड़ी

अश्विनी, भरणी,,कृतिका क्रमशः आदि, मध्य व अन्त्य नाड़ी के होते हैं। इसी क्रम से अगले अगले तीन-तीन नक्षत्र भी क्रमशः १)आदि, २)मध्य एवं ३)अन्त्य नाड़ी के होते हैं।

आदि नाड़ी	मध्य नाड़ी	अन्त्य नाड़ी
अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्व भाद्रपद।	भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्व फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा, उत्तर भाद्रपद।	कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती।

नक्षत्रों के वृक्ष

ज्योतिष शास्त्र में हर एक नक्षत्र के लिए अलग अलग वृक्ष निर्धारित किया गया है। नक्षत्रों द्वारा परेशानी उत्पन्न होने पर उनकी शांति को आवश्यक माना गया है। जन्म नक्षत्र के अनुसार वृक्ष की पूजा करके अपने नक्षत्र को ठीक किया जा सकता है। यदि जन्म नक्षत्र अथवा गोचर के समय कोई नक्षत्र पीड़ित चल रहा हो तब उस नक्षत्र से संबंधित वृक्ष की पूजा करने से पीड़ा से राहत मिलती है। निचे चार्ट में नक्षत्रो की वृक्ष उल्लेख किया गया है।

नक्षत्रो का जाति, रंग और गोत्र

नक्षत्र	नक्षत्र के रंग	जाति	गोत्र
अश्विनी	रक्तवर्ण	वैश्य	मरीचि
भरणी	रक्तवर्ण	चंडाल	वशिष्ठ
कृतिका	श्वेत वर्ण	विप्र	अंगिरस
रोहिणी	श्वेत वर्ण	शूद्र	अथ्रि
मृगाशिरा	धुँधला सफ़ेद	शिल्पी	पुलस्थ्यन
आर्द्र	हरितवर्ण	कसाई	पुलहन
पुनर्वसु	सीसे जैसा	वैश्य	क्रिथु
पुष्य	श्याम वर्ण	क्षत्रिय	मरीचि
अश्लेषा	श्यामवर्ण	चंडाल	वशिष्ठ
मघा	दूधिया	शूद्र	अंगिरस
पूर्व फाल्गुनी	हल्के भूरे रंग	विप्र	अथ्रि
उत्तर फाल्गुनी	गहरा भूरा रंग	क्षत्रिय	पुलस्थ्यन
हस्त	हरितवर्ण	वैश्य	पुलहन
चित्रा	चमकीले नीले	शिल्पी	क्रिथु
स्वाति	चमकीले नीले	कसाई	मरीचि
विशाखा	सुनहरे वर्ण	चंडाल	वशिष्ठ
अनुराधा	भूरा रंग	शूद्र	अंगिरस
ज्येष्ठ	दूधिया रंग	शिल्पी	अथ्रि
मूला	भूरे–पीले रंग	कसाई	पुलस्थ्यन
पूर्वषाढ़ा	काले रंग	विप्र	पुलहन
उत्तरषाढ़ा	काले रंग	क्षत्रिय	क्रिथु
श्रवणा	हलके नीले	चंडाल	वशिष्ठ
धनिष्ठा	लाल रंग	शिल्पी	अंगिरस
शतभिषा	भूरा रंग	कसाई	अथ्रि
पूर्व भाद्रपद	पीला या भूरा	विप्र	पुलस्थ्यन
उत्तर भाद्रपद	बैंगनी रंग	क्षत्रिय	पुलहन
रेवती	भूरा रंग	शुद्र	कृथू

नक्षत्रो का तारा संख्या और संबंधित वृक्ष

नक्षत्र	तारा संख्या	नक्षत्रों से संबंधित वृक्ष
अश्विनी	३	वत्सनाग, आक, धतूरा
भरणी	३	केला, आंवला
कृतिका	६	गूलर, बहेड़ा
रोहिणी	५	जामुन, बेल
मृगाशिरा	३	खैर, पीपल
आर्द्र	१	आम, बेल, पिप्पली
पुनर्वसु	४	बांस, बरगद
पुष्य	३	पीपल, अंजीर
अश्लेषा	५	नाग केसर और चंदन
मघा	५	रिठा, बरगद
पूर्व फाल्गुनी	२	ढाक, पलाश, बेल
उत्तर फाल्गुनी	२	श्वेत कनेर, पाकड़
हस्त	५	रीठा, चमेली
चित्रा	१	बेल, बकूल
स्वाति	१	अर्जुन, जरुल
विशाखा	४	नीम, बबूल, पारिजात
अनुराधा	४	मौलसिरी, नागकेशर
ज्येष्ठ	३	रीठा, बेतस, खजूर
मूला	११	राल का पेड़, बबूल
पूर्वषाढ़ा	३	मौलसिरी, गिलोय, जामुन
उत्तरषाढ़ा	२	कटहल, कांचन
श्रवणा	३	अर्क, आम
धनिष्ठा	५	शमी, नीम
शतभिषा	१००	कदम्ब, आपटा
पूर्व भाद्रपद	२	आम, हिरडा
उत्तर भाद्रपद	२	पीपल, नीम, अमला
रेवती	३२	महुआ, इमली

नक्षत्रों का संहारादि तारा

अश्विनी, भरणी, कृतिका क्रमशः 'सृष्टि', 'स्थिति' तथा 'संहार' तारा है। नाड़ी के अनुसार तारा में भी अगले अगले तीन–तीन तारे क्रमशः सृष्टि, स्थिति व संहार तारा होते हैं।

नक्षत्रों की अन्धादि संज्ञाएँ

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में लोचन अर्थात नेत्र के आधार पर भी नक्षत्रो का वर्गीकरण किया गया है। रोहिणी नक्षत्र से आरम्भ करके क्रमशः चार–चार नक्षत्र अंध, मंद, मध्य तथा सुलोचन नक्षत्र कहलाते हैं। चोरी अर्थात खोयी हुई वस्तु सम्बंधित प्रश्न विचार में इनका बिशेष महत्व होता है। क्योकि अंध लोचन नक्षत्र में खोए हुई वस्तु शीघ्र ही मिल जाती है। मंद लोचन नक्षत्रों में खोयी हुई वस्तु प्रयत्न करने पर बड़ी कठिनता से मिलती है। काण अर्थात माध्यक्ष लोचन नक्षत्र में खोयी हुई वस्तु की जानकारी मिल जाती है परन्तु वस्तु नहीं मिलती है। एवं सुलोचन नक्षत्र में खोई हुई वस्तु मिलने की कोई सम्भावना नहीं होती है और न ही खोई वस्तु का कोई पता चलता है।

- **अंध लोचन संज्ञक नक्षत्र:** रोहिणी, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ, धनिष्ठा और रेवती।
- **मंद या मन्दाक्ष संज्ञक नक्षत्र:** अश्विन, मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा और शतभिषा।
- **काण या मध्याक्ष संज्ञक नक्षत्र:** भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, पूर्व भाद्रपद और अभिजित।
- **सुलोचन संज्ञक नक्षत्र:** कृतिका, पुनर्वसु, पूर्व फाल्गुनी, स्वाति, मूल, श्रवण और उत्तरा भाद्रपद।

शुभ अशुभ नक्षत्र

ज्योतिष शास्त्रों में सभी २७ नक्षत्रों को भी तीन हिस्सों में बांटा गया है, जैसेः शुभ नक्षत्र, मध्यम नक्षत्र और अशुभ नक्षत्र। शुभ नक्षत्र वो होते हैं जिनमें किए गए सभी काम सिद्ध और सफल होते हैं। मध्यम नक्षत्र के तहत वह नक्षत्र आते हैं जिसमें आम तौर पर कोई विशेष या बड़ा काम करना उचित नहीं, लेकिन सामान्य कामकाज के लिहाज से कोई नुकसान नहीं होता है। एवं अशुभ नक्षत्र में कभी कोई शुभ काम नहीं करना चाहिए इसके नतीजे हमेशा बुरे होते हैं। लेकिन यह अशुभ नक्षत्र कोई बिल्डिंग गिराना, कब्ज़े हटाना, आग लगाना, पहाड़ काटने के लिए

विस्फोट करना या फिर कोई सैन्य या परमाणु परीक्षण करना आदि विध्वंसक कामकाज के लिए ठीक माने जाते हैं।

- **शुभ नक्षत्र:** चित्रा, श्रवण, स्वाति, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, उत्तराषाढा, उत्तरा फाल्गुनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद, घनिष्ठा, पुनर्वसु यह १५ नक्षत्रों को शुभ नक्षत्र माना जाता है।
- **मध्यम नक्षत्र:** पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, शतभिषा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, आर्द्रा, मूला और ज्येष्ठा यह ८ नक्षत्र को माध्यम नक्षत्र होते है।
- **अशुभ नक्षत्र:** ज्योतिष शास्त्र अनुसार मघा, भरणी, कृतिका और आश्लेषा यह ४ नक्षत्र अशुभ होते है।

त्रिगुणात्मक नक्षत्र

नक्षत्रों के गुण प्रकृति को देखते हुए सतोगुणी (सृजनात्मक), रजोगुणी (व्यवस्थात्मक) और तमोगुणी (विनाशात्मक) यह तीन गुणों के आधार पर भाग किया गया है।

जैसे:

१. **सतोगुणी नक्षत्र:** कृतिका, रोहिणी, हस्ता, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, श्रवणा, पुनर्वसु, विशाखा और पूर्वा भाद्रपद नक्षत्रों को सतोगुणी नक्षत्र कहलाते है।

२. **रजोगुणी नक्षत्र:** अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, भरणी, पूर्वा फाल्गुनी और पूर्वा षाढा नक्षत्रों को रजोगुणी नक्षत्र कहलाते है।

३. **तमोगुणी नक्षत्र:** मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा, पुष्य, अनुराधा, उत्तरा भाद्रपद, आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा, अश्विनी, मघा और मूल नक्षत्रों को तमोगुणी नक्षत्र कहलाते है।

सतोगुण नक्षत्र में जन्मे जातक में दैवीय गुणों की अधिकता होती है। जातक देव भक्त, निर्मल ह्रदय, सत्य वक्ता, ईमानदार, क्षमावान, निष्कपट, निस्वार्थी, परोपकारी, धैर्यवान, सत्कर्मी और संतोषी होता है। रजोगुणी नक्षत्र के जातक में देव और असुर दोनों के गुणों का मेल होता है।

जातक भौतिकतावादी होता है, धन, भोग और विलास का इच्छुक होता है। एवं तमोगुण नक्षत्र में जन्मे जातक के अंदर आसुरी प्रवृत्तियां ज्यादा होती है। ऐसे जातक में क्रोध, क्रूरता, कुबुद्धि, असत्य, घमंड, ढोंग, बेईमानी, छल आदि दुर्गुण भरे होते है। ऐसे लोग स्वार्थ सिद्धि के लिए दूसरों को तकलीफ भी पहुंचाते है।

कुलाकुल संज्ञक नक्षत्र

अश्वनी, कृतिका, मृगशिरा, पुष्य, चित्रा, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ, उत्तराभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, विशाखा कुल संज्ञक नक्षत्र हैं। इन्ह नक्षत्रो में अदालत में मुकद्दमा दायर करने वाला व्यक्ति हार जाता है तथा युद्ध के लिए प्रयाण करने वाले की पराजय होती है।

रोहिणी, ज्येष्ठा, रेवती, पुनर्वसु, स्वाति, हस्त, अनुराधा, भरणीं, पूर्वा भाद्रपद, आश्लेषा अकुल संज्ञक नक्षत्र हैं। इन्ह नक्षत्रो में आक्रमणकारी शत्रु पर विजय प्राप्त करता है और अदालत में मुकद्दमा दायर करने वाले व्यक्ति का जीत होता है। एवं आर्द्रा, शतभिषा, पूर्वाषाढ़ कुलाकुल नक्षत्र है जिनमें मुकद्दमा दायर करने अथवा युद्ध आरम्भ करने पर दोनों पक्षों में संधि की संभावना रहती है।

गण्डमूल संज्ञक नक्षत्र

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, जेष्ठा, मूल और रेवती नक्षत्र को गण्डमूल नक्षत्र कहा जाता है। रेवती नक्षत्र की अंतिम चार घड़ियाँ, अश्वनी नक्षत्र की पहली चार घड़ियाँ गंडांत कही गई हैं। मघा, आश्लेषा, ज्येष्ठा एवं मूल नक्षत्र भी गंडांत हैं। विशेषतः ज्येष्ठा तथा मूल के मध्य का एक प्रहर अत्यंत अशुभ फल देने वाला है। इस अवधि में उत्पन्न बालक/बालिका व उसके माता–पिता को जीवन का भय होता है। गंडांत नक्षत्रों को सभी शुभ कार्यों में त्याग देना उचित रहता है।

नक्षत्रों की भूकंपादि संज्ञाएँ

विचारणीय काल में सूर्य जिस नक्षत्र में स्थित हो उस से पांचवें को विद्युत्, सातवें नक्षत्र को भूकंप, आठवें को शूल, दसवें को अशनि, चौदहवें की निर्घातपात, पन्द्रहवें को दण्ड, अठारहवें को केतु, उन्नीसवें को उल्का, इक्कीसवें की मोह, बाइसवें की निर्घात, तेइसवें की कंप, चौबीसवें की कुलिश तथा पच्चीसवें की परिवेश संज्ञा होती है, इन नक्षत्रों में कार्य आरम्भ करने पर प्रायः सफलता नहीं मिलती।

पंचक नक्षत्र

२७ नक्षत्रो में से धनिष्ठा का उत्तरार्ध अर्थात अंतिम दो चरण, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद और रेवती इन पांच नक्षत्रों के समूह को पंचक कहा जाता है। यह पांचो नक्षत्र कुम्भ तथा मीन राशि के अंतर्गत होते है। जब चंद्रमा कुंभ और मीन राशि पर होता है, तब उस समय पंचक लगता हैं (इस विषय पर पंचांग तत्व अध्याय में विस्तार से बताया गया है)।

जन्म राशि और नक्षत्र के अनुसार नाम का पहला अक्षर:

प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, प्रत्येक चरण का एक अक्षर निश्चित होता है। चंद्रमा विभिन्न नक्षत्रों के माध्यम से यात्रा करता है, तो यह स्वचालित रूप से एक के बाद एक सभी नक्षत्रों का दौरा करता है। जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र के जिस चरण में होता है, उस से सम्बंधित अक्षर पर ही जातक जातिकाओ का नामकरण किया जाता है। हिन्दी वर्णमाला के सभी स्वरो और व्यंजनो को आठ वर्गो में क्रमानुसार बांटा गया है।

नक्षत्रों के राशि और चरणाक्षर

जन्म का नक्षत्र	राशि	नाम का पहला अक्षर
अश्विनि, भरणी, कृतिका	मेष	चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ
कृतिका, रोहिणी, मृगशिरा	वृष	ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो
मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु	मिथुन	का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, ह
पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा	कर्क	ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो
मघा, पू.फा., उ.फा.	सिंह	मा, मी, मू, में, मो, टा, टी, टू, टे
उ.फा., हस्त, चित्रा	कन्या	ढो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो
चित्रा, स्वाती, विशाखा	तुला	रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते
विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा	वृश्चिक	तो, ना, नी, नू, ने, नौ, या, यी, यू
मूल, पू.षा., उ.षा.	धनु	ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे
उ.षा., श्रवण, घनिष्ठा	मकर	भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी
घनिष्ठा, शतभिषा, पू.भा.	कुंभ	गू, गे,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा
पू.भा., उ.भा., रेवती	मीन	दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची

ध्रुव व चर संज्ञक नक्षत्र

ज्योतिष शास्त्र में नक्षत्रो की स्वभाव के अनुसार सात भेद वताया गया है। जैसे: ध्रुव (स्थिर), चर (चंचल/चल), उग्र(क्रूर), मिश्र, लघु(क्षिप्र), मृदु एवं तीक्ष्ण। जन्म नक्षत्र के इन्ह स्वभाव के दारुण व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव का गठन होता है। क्योकि जन्म नक्षत्र का प्रभाव व्यक्ति पर सवसे ज्यादा होता है।

१) ध्रुव नक्षत्र: उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी नक्षत्र ध्रुव संज्ञक होते है। ध्रुव नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति स्थिर स्वभाव का दृढ़ निश्चयी और क्षमाशील होता है। ऐसे लोग किसी भी काम में अधीर नहीं होते है।

विशेषताएँ: रविवार के दिन ध्रुव संज्ञक नक्षत्र होने से स्थिर स्वभाव के कार्य जैसे मकान की नींव रखना, कुंआ खोदना, संस्कार, नौकरी आरम्भ करना, बीजवपन, शुभकार्य, वस्त्र, भवन निर्माण कार्य, कृषि कार्य, बाग़ बगीचे लगाने, गृह प्रवेश, उपनयन, आभूषण धारण, नृत्य व मैत्री आदि कार्य उत्तम माना जाता है।

२) चर नक्षत्र: स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्र को चर संज्ञक होते है। चर नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति आमतौर पर बहुत बेचैन रहतते है, और किसी विषय निर्णय लेने में जल्दबाजी करते हैं। ऐसे लोग खाने-पीने और दूसरे कामों में तेज होते हैं।

विशेषताएँ: सोमवार के दिन चर संज्ञक नक्षत्र होने से वाहन क्रय-विक्रय, कला, शिक्षा इत्यादि कार्य उत्तम माने जाते हैं। सभी चर अथवा चल स्वभाव के कार्य जैसे वाहन चलाना, हाथी और घोड़े की सवारी करना, मोटर या कार आदि चलाना सीखना, मशीन चलाना, यात्रा करना आदि गतिशील कार्यों के लिए शुभ होते हैं।

३) उग्र-क्रूर नक्षत्र: पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा नक्षत्र उग्र अर्थात क्रूर संज्ञक होते है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हिंसक और आक्रामक स्वभाव के होते है। ऐसा व्यक्ति आमतौर पर लड़ाई-झगड़े और अन्य साहसिक कार्यों में रुचि रखते है।

विशेषताएँ: मंगलवार के दिन उग्र संज्ञक नक्षत्र होने से निन्दित व् आक्रामक स्वभाव के कार्य करने के लिए उत्तम माना जाता है। ह्त्या, विश्वासघात, अग्नि से संबंधित अशुभ कार्य, चोरी, विष देना, दवाईयों पर खोज, शल्य चिकित्सा, हथियारों का क्रय-विक्रय, अथवा प्रयोग आदि सभी क्रूर प्रवृत्ति के कार्यों के लिए ये अनुकूल नक्षत्र माने गए हैं। भट्टे लगाना, गैस जलाना, सर्जरी करना, मारपीट करना, अस्त्र-शस्त्र चलाना, व्यापार करना, शोध कार्य करना आदि कार्य शुभ होते हैं।

४) मिश्र नक्षत्र: विशाखा तथा कृत्तिका नक्षत्र को मिश्र अर्थात साधारण नक्षत्र की श्रेणी में रखा गया है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग मिश्रित स्वभाव के होते हैं। किसी भी कार्य को करते समय ये संतुलित नहीं रहते। वे कभी तेज़ और कभी धीमे होते हैं।

विशेषताएँ: बुधवार के दिन मिश्र संज्ञक नक्षत्र होने से व्यापा, शस्त्र, विष घात व मांगलिक कार्य उत्तम माने जाते हैं। अग्नि संबंधित कार्य, धातुओं को गरम करके अथवा उन्हें गलाकर ढालने का काम, सजाने-संवारने के कार्य किए जाते हैं। लोहा व गैस भट्टी के कार्य, भाप इंजन, बिजली सम्बन्धी कार्य, दवाइयां बनाने आदि हेतु शुभ रहता हैं।

५) क्षिप्र-लघु नक्षत्र: हस्ता, अश्विनी, पुष्य और अभिजित नक्षत्र को क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र कहा गया है। इस नक्षत्र में जन्मे लोगों को भौतिक लाभ में रुचि नहीं होती है। वे आमतौर पर बहुत अधिक पैसा खर्च नहीं करते हैं और ढेर सारा भौतिक लाभ मिलने पर तनाव में भी रहते हैं।

विशेषताएँ: गुरुवार के दिन लघु अर्थात क्षिप्र संज्ञक नक्षत्र होने से रतिकार्य, शिल्प, चित्रकला, ज्ञानार्जन आदि उत्तम माना जाता है। नृत्य, गायन, रूप सज्जा, नाटक, नौटंकी आदि कार्य करना, आभूषण बनाना, शिक्षा कार्य, लेखन, प्रकाशन हेतु शुभ होते हैं। इन नक्षत्रों में दुकान का प्रारम्भ तथा निर्माण किया जाता है, विक्रय करने, गहने अथवा जवाहरात बनाने, मैत्री अथवा साझेदारी का काम, किसी नए काम को सीखने के लिए इन नक्षत्रों को उपयुक्त माना गया है।

६) मृदु नक्षत्र: मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा नक्षत्र मृदु संज्ञक नक्षत्र होते है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति आमतौर पर बहुत कोमल और संवेदनशील होते है। वे लोग अहिंसक और वाणी से विनम्र होते हैं। इन्हें सुगंध पसंद होती है और ये आभूषण पहनने और सजने-संवरने में रुचि रखते हैं।

विशेषताएँ: शुक्रवार के दिन मृदु संज्ञक नक्षत्र होने से गृह संबंधी कार्य, बीजवपन, शपथ व उत्सवादि कार्य उत्तम माना जाता है। सिलाई कार्य, कपडे पहनना, खेल, आभूषण बनाना एवं पहनना, व्यापार करना, सेवा कार्य, सत्संगति आदि हेतु शुभ होते हैं। संगीत सीखना, मित्र बनाना, गहने बनाना अथवा पहनना आदि इन नक्षत्रों में किया जाता है।

७) तीक्ष्ण नक्षत्र: मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और आश्लेषा नक्षत्र तीक्षण संज्ञक नक्षत्र होते है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग आमतौर पर आक्रामक होते हैं। वे गुस्सैल स्वभाव के होते हैं और उनकी आवाज कठोर होती है तथा इन्हें आमतौर पर गंदे कपड़ों में देखा जा सकता है।

विशेषताएँ: शनिवार के दिन दारुण अर्थात तीक्षण संज्ञक नक्षत्र होने से हानिकारक और निन्दित कार्य उत्तम माना जाता है। लड़ाई झगडे करना, तांत्रिक क्रियाएं, हत्या, काला जादू, आक्रामक व मृत्यु तुल्य कृत्यों को करना, जानवरों को प्रशिक्षण देना तथा उन्हें वश में करना, साधना-हठ योग आदि कार्य किए जाते हैं।

नक्षत्रों का भूतवर्ग

वैवाहिक जीवन प्रेमपूर्ण और सुखमय हो इसलिए, दक्षिण भारतीय पद्धति में शादी के समय नक्षत्रो के भूतवर्ग के माध्यम से वर वधु के कुंडली मिलान किया जाता है। ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार २७ नक्षत्रों को पंच महाभूतों में भाग किया गया है। यह पंच भूत हैं, क्रमशः १.पृथ्वी तत्व, २.जल तत्व, ३.अग्नि तत्व, ४.वायु तत्व और ५. आकाश तत्व। सभी भूतवर्ग में नक्षत्रों को क्रमशः ५,६,५,६,५ के क्रम में रखा जाता है।

१) **पृथ्वी तत्व के नक्षत्र:** अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी और मृगशिरा।

२) **जल तत्व के नक्षत्र:** आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा और पू.फाल्गुनी।

३) **अग्नि तत्व नक्षत्र:** उ.फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती और विशाखा।

४) **वायु तत्व के नक्षत्र**: अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा और श्रवणा।

५) **आकाश तत्व के नक्षत्र:** धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्र, उ.भाद्रपद और रेवती।

वर–वधू दोनों का जन्म नक्षत्र एक ही भूतवर्ग में हो तो बहुत ही अच्छा माना जाता है। पृथ्वी तत्व अन्य सभी तत्व के साथ शुभ सम्बन्ध बनाता है, अंत: इसे भी अच्छा माना जाता है। अगर स्त्री–पुरूष में से कोई भी पृथ्वी तत्व का है तो विवाह किया जा सकता है। पृथ्वी तत्व के पश्चात आकाश तत्व को सामान्य माना जाता है। मेलापक की दृष्टि से भूतवर्ग में जल और अग्नि तत्व में नक्षत्र होने पर अशुभ होता है अर्थात विवाह की इज़ाजत नहीं दी जाती है क्योंकि यह घातक होता है।

जन्म के अनुसार नक्षत्रों की पाया

किसी बच्चे की जन्म के समय नक्षत्रो के अनुसार भी पाद अर्थात पाया विचार किया जाता है। नक्षत्रानुसार पाया का वर्गीकरण निम्न प्रकार से है:– **१) स्वर्णपाद २) रजतपाद ३) ताम्रपाद और ४) लौहपाद।**

❖ प्रथम मत:

१) **स्वर्णपाद नक्षत्र:** रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी एवं मृगशिरा नक्षत्र स्वर्ण पाद के नक्षत्र होते हैं।

२) **रजतपाद नक्षत्र:** आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पू. फाल्गुनी, उ. फाल्गुनी, हस्ता, चित्रा व स्वाती यह रजतपाद के नक्षत्र होते हैं।

३) **ताम्रपाद नक्षत्र:** उ.षा., पू.षा., श्रवण, धनिष्ठा, शतमिषा, पू.भा., उ.भा. ताम्रपाद कहलाते हैं।

४) **लौहपाद नक्षत्र:** विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, लौहपाद नक्षत्र हैं।

❖ द्वितीय मत:

१) **स्वर्ण पाया:** रेवती, अश्विनी और भरणी नक्षत्र में जन्म हो तो बच्चे के पाये स्वर्ण के माने जाते हैं।

२) **रजत पाया:** आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा और अनुराधा नक्षत्र में जन्म रजत पाया जन्म होता है।

३) **ताम्र पाया:** ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का जन्म ताम्र पाया कहलाता है।

४) **लौह पाया:** कृतिका, रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र का जन्म लौह पाया कहलाता है ।

जन्म नक्षत्र की विशेषताएं

मनुष्य का स्वभाव, गुण–धर्म, जीवन शैली जन्म नक्षत्र से जुड़ी हुई होती है। ये सत्य है कि जिस नक्षत्र में मनुष्य जन्म लेता है वह नक्षत्र उसके स्वभाव और आने वाले जीवन पर अपना प्रभाव अवश्य डालता है। भारतीय वैदिक ज्योतिष की गणनाओं में महत्वपूर्ण माने जाने वाले सभी नक्षत्रों का विवरण निचे दिया गया है।

१) **अश्विनी नक्षत्र:** अश्विनी नक्षत्र में जन्मे जातक सामान्यतः सुन्दर, चतुर, सौभाग्यशाली एवं स्वतंत्र विचारों वाले और आधुनिक सोच के लिए मित्रों में प्रसिद्ध होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत ऊर्जावान होने के साथ साथ सदा सक्रिय रहता है। ये लोग सभी से बहुत प्रेम करने वाले, और रहस्यमयी प्रवृत्ति के होते हैं। ये लोग हमेशा अच्छे जीवनसाथी और एक आदर्श मित्र साबित होते हैं।

२) **भरणी नक्षत्र:** भरणी नक्षत्र में जन्मे लोग काफी आकर्षक और सुंदर होते हैं, इनका स्वभाव लोगों को आकर्षित करता है। इनके अनेक मित्र होंगे और मित्रों में बहुत अधिक लोकप्रिय भी होते हैं। इनके जीवन में प्रेम सर्वोपरी होता है और जो भी ये ठान लेते हैं उसे पूरा करने के बाद ही चैन से बैठते हैं। इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा और सम्मान हमेशा बना रहता है।

३) **कृतिका नक्षत्र:** कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग आत्म गौरव करने वाले होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे जातक सुन्दर और मनमोहक छवि वाला होता है। इन लोगों का व्यक्तित्व राजा के समान ओजपूर्ण एवं पराक्रमी होता है। ये तेजस्वी एवं तीक्ष्ण बुद्धि के स्वामी, स्वाभिमानी, तुनक मिजाजी और बहुत उत्साहित रहने वाले होते हैं।

४) **रोहिणी नक्षत्र:** रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चंद्रमा होता है और चंद्रमा के प्रभाव के कारण ये लोग बहुत कल्पनाशील और चंचल स्वभाव के होते हैं। ये लोग स्वभाव से बहुत मिलनसार तो होते ही हैं लेकिन साथ साथ दूसरों की गलतियां ढूँढते रहते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति इनके अन्दर विशेष आकर्षण रहता है।

५) **मृगशिरा नक्षत्र:** इस नक्षत्र के जातक स्वभाव से बहुत साहसी, दृढ़ निश्चय चतुर एवं चंचल स्वभाव के अध्ययन में अधिक रूचि, माता पिता के आज्ञाकारी और सदैव साफ़ सुथरे

आकर्षक वस्त्र पहनने वाले होते हैं। इनका व्यक्तित्व बहुत आकर्षक होता है, बुद्धिमान होने के साथ साथ मानसिक रूप से भी मजबूत होते हैं।

६) **आर्द्रा नक्षत्र:** आद्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों पर अध्ययन में रूचि अधिक और किताबों से विशेष लगाव रहती है। सदैव ही अपने आसपास की घटनाओं के बारे में जागरूक और व्यापार करने की समझ इनकी महान विशेषता है। ये लोग दूसरों का दिमाग पढ़कर काम निकलवाने में माहिर होते हैं।

७) **पुनर्वसु नक्षत्र:** इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के भीतर दैवीय शक्तियां होती हैं। इन पर कोई विपत्ति आती है तो कोई अदृश्य शक्ति इनकी सहायता करने अवश्य आती है। ये लोग काफी मिलनसार और प्रेमपूर्वक व्यवहार रखने वाले होते हैं।

८) **पुष्य नक्षत्र:** पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग दूसरों की भलाई के लिए सदैव तैयार रहते हैं और इनके भीतर सेवा भावना भी बहुत प्रबल होती है। ये बहुत परिश्रमी होते हैं और अपनी मेहनत के बल पर धीरे धीरे ही सही तरक्की हासिल कर ही लेते हैं। ये लोग विपरीत लिंग के प्रति विशेष आकर्षण भी रखते हैं।

९) **अश्लेषा नक्षत्र:** अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे व्यक्तियों का आँखों एवं वचनों में विशेष आकर्षण होता है। ये लोग कुशल व्यवसायी भी होते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे जातक बहुत चतुर बुद्धि के होने के कारन आसानी से दूसरों का मन पढ़कर उनसे अपना काम निकल सकते हैं।

१०) **मघा नक्षत्र:** इस नक्षत्र वाले जातक के भीतर ईश्वरीय आस्था बहुत अधिक होती है। इनके भीतर स्वाभिमान की भावना प्रबल होती है और बहुत ही जल्दी इनका दबदबा भी कायम हो जाता है। ये कर्मठ होने के कारण किसी भी काम को जल्दी से जल्दी पूरा करने की कोशिश करते हैं। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति प्रायः अपने पौरुष और पुरुषार्थ के प्रदर्शन के लिए जाना जाते हैं।

११) **पू.फाल्गुनी नक्षत्र:** पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति बहुत ही भाग्यशाली होते हैं। ये लोग नैतिकता और ईमानदारी के रास्ते पर चलकर ही अपना जीवन व्यतीत करना पचंद करते हैं। किसी भी तरह के विवाद या लड़ाई झगड़े में पड़ना पसंद नहीं करते है। इनके पास धन की मात्रा अच्छी खासी होती है जिसकी वजह से ये भौतिक सुखों का आनंद उठाते हैं।

१२) **उ.फाल्गुनी:** नक्षत्र: इस नक्षत्र में जन्मा जातक दूसरों के इशारों पर चलना पसंद नहीं करते और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए भरपूर प्रयास करते हैं। इस नक्षत्र में जन्मे लोग समझदार, बुद्धिमान, युद्ध विद्या में निपुण होते हैं। नेतृत्व के गुण इनके अंदर जन्म से ही होते हैं, सरकारी क्षेत्र में भी इनको सफ़लत मिलती है।

१३) **हस्त नक्षत्र:** हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक संसार को जीतने और उस पर शासन करने का पूरा पूरा सामर्थ्य एवं शक्ति रखते है। इन्हें हर प्रकार की सुख-सुविधाएं मिलती हैं और इनका जीवन आनंद में व्यतीत होता है। दृढ़ता और विचारों की स्थिरता इनको आम आदमी से भिन्नता और श्रेष्ठता प्रदान करती है।

१४) **चित्रा नक्षत्र:** इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्तियों वलिष्ट शरीर वाले व् साहसी होते है। ये लोग आकर्षक व्यक्तित्व वाले एवं शारीरिक रूप से संतुलित मनमोहक एवं सुन्दर आँखों वाले, साज–सज्जा को पसंद करने वाले और नए आभूषण एवं वस्त्र पहने वाले होते हैं।

१५) **स्वाति नक्षत्र:** स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक का स्वभाव और आचरण स्वच्छ होता है। एक आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। ये लोग राजनीतियो में बहुत रूचि रखते है और अपने प्रतिद्वंदियों पर हमेशा जीत हासिल करते हैं।

१६) **विशाखा नक्षत्र:** विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति शारीरिक श्रम के स्थान पर मानसिक कार्यों को अधिक मानते हैं। ये लोग मानसिक रूप से सक्षम व्यक्ति होते है और कठिन से कठिन कार्य को भी अपनी सूझ–बूझ से कर लेते हैं। अपनी बुद्धि के प्रयोग से सभी को पराजित करते हैं। इनका सामाजिक क्षेत्र भी बहुत विस्तृत होता है। ये लोग महत्वाकांक्षी होते हैं और अपनी हर महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए बहुत परिश्रम करते हैं।

१७) **अनुराधा नक्षत्र:** इस नक्षत्र में जन्मे लोग अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर चलना पछन्द करते हैं। ये लोग अक्सर अपने गुस्से को नियंत्रित नहीं कर पाते इस कारण इन्हें कई बार बड़ी हानि उठानी पड़ती हैं। ये लोग अपने दिमाग से ज्यादा दिल से काम करते हैं, और अपनी भावनाओं को छिपाकर नहीं रख पाते है।

१८) **ज्येष्ठ नक्षत्र:** ज्येष्ठा नक्षत्र के जातक दृढ़ निश्चयी और मज़बूत व्यक्तित्व के स्वामी होते हैं। शारीरिक रूप से भी गठीले और मज़बूत होते हैं। इनके दिनचर्या बहुत ही अनुशासित और सुव्यवस्थित होती है। खुली मानसिकता वाले ये लोग सीमाओं में बंधकर रहना पछन्द नहीं करते है।

१९) **मूल नक्षत्र:** मूल नक्षत्र के जातक के जीवन सुख समृद्धि के साथ बीतता है। धन की कमी न होने के कारण ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जीते हैं। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के परिवार को इनके दोष का भी सामना करना पड़ता है। ये कोमल हृदयी परन्तु अस्थिर दिमाग के व्यक्ति होते हैं।

२०) **पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र:** पूर्वाषाढ़ा में जन्म लेने वाला जातक थोडा उग्र स्वभाव का होने के साथ कोमल हृदयी होते है। ये लोग ईमानदार, प्रसन्नचित, कला, सहित्य और अभिनय प्रेमी, अच्छा दोस्त और आदर्श जीवनसाथी होते हैं। जीवन में सकारत्मक विचारधारा से अपने लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। परन्तु अपनी चंचल बुद्धि के कारण कभी-कभी अनैतिक कार्यों में भी लिप्त हो जाते हैं।

२१) **उत्तराषाढ़ा नक्षत्र:** उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक ऊँचे कद, गठीले शारीर, चमकदार आँखे, चौड़ा माथा और गौर वर्ण के होते हैं। मृदुभाषी और सभी से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने वाले स्वतंत्र व्यक्ति होते है। इनके ईश्वर में बहुत आस्था होती है, एवं विवाह उपरान्त जीवन में अधिक सफलता मिलती है।

२२) **श्रवण नक्षत्र:** इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों में कई विशेषताएं होती हैं। ये लोग मध्यम कद काठी परन्तु प्रभावी और आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होते है। ये लोग कभी अनावश्यक खर्च नहीं करते है, जिस कारण से लोग इन्हें कंजूस भी समझ बैठते हैं।

२३) **धनिष्ठा नक्षत्र:** धनिष्ठा नक्षत्र में जन्मा जातक सभी गुणों से समृद्ध होकर जीवन में सम्मान और प्रतिष्ठा पाता है। ये लोग काफी उर्जावान होते हैं और उन्हें खाली बैठना बिल्कुल पसंद नहीं होता। इन्हें किसी और को अपने नियंत्रण में रखना अच्छा लगता है और ये अधिकार भावना भी रखते हैं।

२४) **शतभिषा नक्षत्र:** शतभिषा नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक बहुत साहसी एवं मजबूत विचारों वाला होता है। इस नक्षत्र में जन्में लोग स्वच्छंद विचारधारा के होते है तो साझेदारी की अपेक्षा स्वतंत्र रूप से कार्य करना पसंद करते हैं। ये लोग अत्यधिक सामर्थ्य, स्थिर बुद्धि और उन्मुक्त विचारधारा के होते हैं।

२५) **पूर्वाभाद्रपद:** इस नक्षत्र में जन्में जातक सत्य और नैतिक नियमों का पालन करने वाले होते हैं। साहसी, दूसरों की मदद करने वाले, मिलनसार, मानवता में विश्वास रखने वाले, व्यवहार कुशल, दयालु और नेक दिल होने के साथ–साथ खुले विचारों वाले होते हैं। ये लोग अपने आदर्शो और सिद्धांतों पर ही आजीवन चलना पसंद करते हैं।

२६) **उत्तराभाद्रपद:** इस नक्षत्र में जन्में लोग बहुत यथार्थवादी और सत्य को समझने वाले होते हैं। व्यापार हो या नौकरी, इनका परिश्रम इन्हें हर स्थान पर सफलता प्राप्त करवाता है। त्याग भावना, स्वभाव से एक दयालु और धार्मिक प्रबृति के होते हैं। यह लोग समाज में एक धार्मिक ब्यक्ति, प्रसिद्द शास्त्र विद एवं मानव प्रेमी के रूप में प्रख्यात होते है।

२७) **रेवती नक्षत्र:** रेवती नक्षत्र में जन्मे जातक निश्चल प्रकृति के होते है। वो साहसिक कार्य और पुरुषार्थ प्रदर्शन के लिए सदा ही लालायित रहते है। परंपराओं और मान्यताओं को लेकर ये लोग रूढ़िवादी होने के बाद भी अपने व्यवहार में लचीलापन रखते हैं। इनकी शिक्षा का स्तर बहुत ऊंचा होता हैं।

नक्षत्र और रोग

वैदिक ज्योतिष में नक्षत्रों को भी शरीर के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। सभी नक्षत्र शरीर के किसी ना किसी अंग का प्रतिनिधित्व करते हैं। और नक्षत्र पीड़ित होने पर इन अंगों से संबंधित परेशानी भी व्यक्ति को हो जाती हैं। जो नक्षत्र जन्म कुंडली में पीड़ित होता है, अथवा गोचर में भी पीड़ित अवस्था में चल रहा हो, तब उससे संबंधित बीमारी व्यक्ति को होने की भी संभावना बनती है। विभिन्न नक्षत्रों के सम्भावित रोग इस प्रकार हैं–

१) **अश्विनी:** बुखार, अनिद्रा, वातविकार, बुद्धिभ्रम, मिर्गी, अपस्मार, ऐंठन, सिर पर चोट, लकवा, मलेरिया, श्वास, उदर–वृद्धि, क्षत्त आदि। सिर दर्द, ब्रेन ट्यूमर, उच्च रक्त चाप कुल मिला कर सिर से संबंधित रोग/परेशानी।

२) **भरणी:** कम्पन, तीव्र ज्वर, सर्दी–जुकाम, चर्मरोग, आलस्य, तंद्रा, शैथिल्यता, कफ विकार, हड़बड़ाहट, यौन रोग/गुप्त रोग, अंधापन, अति कामुकता, पेट संबंधित रोग आदि।

३) **कृतिका:** मियादी बुखार, मलेरिया, तीव्र ज्वर, नेत्र विकार, अतिदाह, उदरशूल, गठिया, चक्कर आना, झांइयाँ, फोड़े–फुन्सी, विस्मृति, प्लेग, अग्निदाह, अनिद्रा, गले के रोग, हैजा, चेचक, हृदरोग, रक्तचाप, अनिंद्रा तथा घुटने एवं ज़ोडों का दर्द, गर्दन में रोग, टॉनसिल्स, कफ, मुख रोग, फोडा, फुंसी, निचला जबड़ा, पाएरिया अथवा दन्त रोग, दुर्घटना में चोट आदि।

४) **रोहिणी:** सरदर्द, उन्माद, प्रलाप, बड़बड़ाना, कुक्षिशूल, ज्वर, शीत ज्वर, सूजन, पैरों में दर्द, जाँघों तथा कमर में दर्द, सर्दी जुकाम, गर्दन एवं पाँव संबंधित रोग, टॉनसिल्स, छाती में सुजन, सिर दर्द, सिर पर चोट के कारण रोग अथवा कष्ट, महिलाओ को महावारी सबंधी रोग, गुप्त रोग, जलीय रोग तथा जोड़ों का दर्द, अनियमित मासिक, मूत्र रोग आदि।

५) **मृगशिरा:** मुख रोग, सर्दी–जुकाम, खाँसी, नजला, निमोनिया, जलभय, कब्ज, डिप्थीरिया, मूत्रावरोध, ववासीर, रतिरोग, त्रिदोष, आधासीसी तथा शरीर पर चोट या घाव, पोलीपस, कण्ठ रोग, नेत्र विकार, कंधा, बाजू, रक्त विकार, बात, कप, पित्त, गुप्तांग एवं त्वचा रोग आदि।

६) **आर्द्रा:** ज्वर, अनिद्रा, दुःस्वप्न, चक्कर आना, बदनदर्द, त्रिदोष, कर्णरोग, गले की सूजन, क्षयरोग, श्वासावरोध, वात–कफ, कधा, मानसिक तनाव एवं विक्षिप्तता, वायु विकार, सर्दी–खांसी, सुखी खाँसी आदि।

७) **पुनर्वसु:** कमरदर्द, सिरदर्द, निमोनिया, प्लूटेसी, जलोदर, घेघा, खसरा, अजीर्ण, मन्दाग्नि, अपच, अस्थमा, उदरविकार, रक्तविकार, टी.बी. या क्षयरोग, स्वाँश नली में सुजन, पाचन संबंधित रोग, गुर्दा, तीव्र बुखार, छाती से संबंधित रोग, कफ, पायेरिया, हाइपेप्सिय, एंजाइम डेफिसेंसी आदि।

८) **पुष्य:** गैस्टिक, हिचकी, उल्टी, कैन्सर, पथरी, पीलिया/कामला, एग्जीमा, पायरिया, दाँतों तथा मसूढ़ों के रोग, ज्वर, शूल, फेफड़ों का कैंसर, टी.बी, अस्थमा, गैसट्रिक अल्सर, चर्बी रोग, विटामिन सी की कमी, पाचन एवं पेट संबंधित रोग, छाती में अंदरूनी चोट, मनोविकार आदि।

९) **अश्लेषा:** बदनदर्द, वातविकार, विषपीड़ा/संक्रमण, विषैले जन्तुओं द्वारा काटे जाना, पैरों में दर्द, श्वासविकार, उदरविकार, जलोदर, डिप्थीरिया, पीलिया, घबराहट, कफरोग, पाचन रोग, पिलिया, पथरी, एलर्जी, सर्दी–खाँसी, हिस्टीरिया, दंत रोग, फूड प्वाइजन, गैस से संबंधित रोग आदि।

१०) **मघा:** सिरदर्द, शरीर में दर्द, ज्वर, स्पन्दन/कम्पन, पीठदर्द, हैजा, पागलनपन, ऊपरी हवा, भूत–पिशाच पीड़ा, वायुरोग, दिमागसनक जाना, मूर्च्छा, संक्रमण, मनोरोग, हृदय रोग, रीढ़ या मेरुदंड संबंधित रोग, गुर्दा रोग, मिर्गी या मुर्छा रोग, वहम आदि।

११) **पू.फाल्गुनी:** खांसी, नजला, पसली चलना, हृदय रोग, गर्भपात, नाड़ी–पीड़ा, रक्ताल्पता, रक्तचाप, अतिसार, पैरों में पीड़ा, घुटनों में सूजन, सिर तथा शरीर में दर्द की समस्या, बी.पी., स्पाइनल (रीढ़) कोर्ड संबंधित रोग, पसलियों में दर्द, स्त्री या पुरुष के जननांगो में पीड़ा, थैलेसिमियाँ, हाईड्रेमिया आदि।

१२) **उ.फाल्गुनी:** शरीर में दर्द, मस्से, पित्त–ज्वर, अस्थिभंग, अस्थिरोग, पागलपन, यकृत के रोग–विकार, वातविकार, मियादी बुखार, गले के रोग, प्लेग, मूर्च्छा, चोट, कंधों में कष्ट, पीठ दर्द, सिर दर्द, त्वचा रोग, नेत्र रोग, उच्च रक्त चाप, मानसिक उग्रता, हृदय रोग, एसिडिटी, रीढ़ की हड्डी संबंधित रोग, अमोयेबिक डिसेंट्री, सुखा रोग, हैजा, अतिसार रोग, अपेंडिसाइटिस आदि।

१३) **हस्त:** उदरशूल, मंदाग्नी, उदरविकार, प्रस्वेद, टाँग का दर्द, वायु विकार, अफारा, भगन्दर, टाइफाइड, हैजा, अमीवायसिस, दस्त, हिस्टीरिया, मूत्र रोग, पेट के कीड़े, आंतों में दर्द, श्वासविकार, डिसेंट्री, त्वचा रोग, अतिसार, सुखा रोग, विटामिन बी की कमी, मियादी

बुखार, हाथों या बाजुओं में शक्ति हीनता, पथरी, मधुमेह, किडनी दोष, फेफड़ों से संबंधित रोग आदि।

१४) **चित्रा:** अल्सर, तीक्ष्णपीड़ा, खुजली, उत्तेजना/आवेश, कृमि, मूत्रविकार, गुरदे की पथरी, घमौरियाँ, सिरदर्द, कामुकता,कीड़े–मकोड़े मच्छरों द्वारा काटे जाने से होने वाले रोग/संक्रमण, पित्त दोष, शीघ्र क्रोधित होना, गर्भाशय विकार, दिमागी बुखार, पोलियुरिया, गैस्ट्रिक, हर्निया, शुगर (डायिटीज्), किडनी रोग, आदि।

१५) **स्वाती:** ज्वर, एग्जीमा, दाद, त्वचा के विकार, घाव, वायुविकार, पेट दर्द, कब्ज, गठिया, सफेद दाग या कोढ़, टाँगों का कापना, अण्डकोष, गर्भाशय रोग एवं किडनी विकार, बहुमूत्र रोग, अपेंडिसाइटिस, पोलियुरिया, पथरी, एग्ज़िमा, ल्यूकोडर्मा, छाती और पीठ के रोग आदि।

१६) **विशाखा:** मधुमेह, चिड़चिड़ापन, चक्कर आना, हिस्टीरिया, कुक्षीशूल, बदनदर्द, वातव्याधि, फोड़ा, मूत्रविकार, पथरी, पीलिया, अग्न्याशय–पित्ताशय के विकार, जननेन्द्रिय में विकार, किडनी, त्वचा रोग, रक्तचाप, हृदय पीड़ा, गुर्दे में पीड़ा, पाचन रोग, श्वेत प्रदर, पौरुष ग्रन्थी वृद्धि, शुक्राणु न्युनता, गुप्त रोग, भय, मासिकधर्म में अनियमितता, पाइल्स आदि।

१७) **अनुराधा:** रक्ताल्पता, कब्ज, नजला, वायु तथा कफ के रोग, सिरदर्द, सन्निपात, संक्रामक रोग, तीव्र ज्वर, मासिक धर्म में अनियमितता, नाक से खून आना, कफ, पाइल्स, एनिमिक, पेट रोग, गठिया, वात–पित्त जनित दीर्घकालीन रोग, दुर्घटना में चोट, मलाशय रोग, जननांग संबंधी रोग आदि।

१८) **ज्येष्ठा:** पित्तविकार, शरीर में कम्पन/कम्पवात, चित्त में व्याकुलता ऐंग्जाइटी, लिकोरिया, कमर व जाँघों का दर्द, रक्तस्राव, बवासीर, गुप्त रोग, आँतों के रोग, ट्यूमर, वात रोग, अतिकामुकता, कंधों में दर्द, रक्त विकार, दाद–खुजली, बबासीर, गर्भाशय रोग, पाइल्स, फिस्तुला आदि।

१९) **मूल:** सन्निपात, रक्तचाप, पेटदर्द, मुँह के विकार, दंत रोग, अस्थिरोग, सन्धिवात, कटिवात, स्पॉटलाइटिस, सर्वाइकल, स्लिपडिस्क, गठिया/अर्थराइटिस, कार्टराईज्ड का घिस जाना, नेत्ररोग, नितम्ब रोग, नाड़ी दौर्बल्य, हृदरोग, इंसोम्निया, पक्षाघात, गर्भाशय रोग, कमर, जांघो एवं घुटनो में दर्द, गैस, क्रोध–उत्तेजना, त्वचा रोग फोडा–फुंसी आदि।

२०) **पूर्वाषाढा:** विक्षिप्तता, गठिया, सन्धिवात, अस्थिक्षय, अल्सर, त्रिदोष विकार, घुटनों में सूजन, शीत ज्वर, सिर दर्द, धातुक्षय, प्रमेह, गुप्तरोग, लेप्रोसी, फेफड़ों में रोग, डायबटीज, सर्दी कफ, रक्त दोष, मूत्राशय, पथरी, धातु क्षीणता, चर्बी रोग, लीवर रोग आदि।

२१) **उत्तराषाढा:** लेप्रोसी, लकवा (पैरालिसिस), पित्त विकार, सिर दर्द, हृदय रोग, अतिसार, रीढ़ की हड्डी में रोग, उच्च रक्त चाप, जलीय रोग, अपचन, चर्म रोग, नेत्र रोग, टाइफाइड, नसों के रोग, कटिशूल, उदरशूल, गठिया, सन्धिवात, फुफ्फुस के वीमारी, वातज्वर, वातविकार, बदगियत/विवर्णता, कब्ज आदि।

२२) **श्रवण:** श्वेत प्रदर रोग, एक्ज़ीमा, एलर्जी, मंदाग्नि, कमर दर्द, स्नायु दौर्बल्य, पथरी, पिलिया, पाचन दौर्बल्य, नेत्र विकार, अनिंद्रा, उन्माद रोग, कैल्शियम की कमी, रक्त विकार, सर्दी–कफ, वातशूल, अतिसार, डायरिया, मूत्रकृच्छ, संग्रहणी, गैस्ट्राइटिस, त्वचाविकार, चर्मरोग, कुष्ठ, पित्त, शीतरोग, क्षयरोग आदि।

२३) **धनिष्ठा:** कफविकार, लंगड़ापन, सूजन, फोड़ा, ज्वरकम्प, पैरों में चोट, सैप्टिक, सोराइसिस, अस्थिभंग, हृदरोग, रक्तचाप, मिर्गी, विष–विकार, घुटनों एवं जोड़ों में दर्द, मासिक धर्म में अनियमितता, सर्दी, एसिडिटी, सुखी खाँसी, बलगम, पेट–विकार, दाँतों के रोग, नेत्र विकार, स्नायु दौर्बल्य, चिड़्चिडापन, पीलिया, पथरी एवं गुप्त रोग, रक्त विकार, लीवर संबंधित रोग आदि।

२४) **शतभिषा:** मतिभ्रम, पीलिया, गैस्ट्रिक, पथरी, जोड़ों का दर्द, खाज–खुजली, चर्म रोग, पक्षाघात, सन्निपात, वातविकार, बुखार, कोढ़, अनिद्रा, गठिया, रक्तचाप, फ्रैक्चर, हृदयशूल, साँस फूलना, उच्चाटन, अवसाद आदि।

२५) **पू.भाद्रपद:** सिरदर्द, बेचैनी/व्याकुलता, ज्वर, उल्टी, मनोरोग, अवसाद, विभ्रम, घबराहट, पीलिया, कामला, उदर विकार, सूजन, हर्निया, ट्यूमर, गैस्ट्रिक, अल्सर, हर्नियाँ, मस्तिष्क एवं नेत्र पीड़ा, हृदय रोग, घुटनों एवं पाँव में सुजन, शारीरिक स्थुलता, पथरी, मुर्छा, हिस्टिरिया आदि।

२६) **उ.भाद्रपद:** वातरोग, अतिसार, सिरदर्द, बदनदर्द, दाँतों के रोग, उदरवायु, टी.बी., जलोदर, कब्ज, गठिया, पाचनशक्ति में विकार, पक्षाघात, पाईल्स, दुर्बलता, पथरी, पसीना आना, चर्म रोग, अनियमित रक्त चाप, मेरु दण्ड रोग, दंत क्षय आदि।

२७) **रेवती:** चित्तभ्रम, शिथिलता, बहरापन या ऊँचा सुनना, थकान, पैरों में सूजन, कार्टलाइज, मनोरोग, चिंता, कमरदर्द, वातविकार, अल्सर, नाड़ी कंपन, कफ, दाद–खुजली, चर्म रोग, खाँसी, कर्ण शूल, उदर विकार, नशे की लत के कारण बिमारी, अम्लपित्त, एलर्जी, अनिन्द्रा आदि।

नक्षत्रानुसार रोग भोग काल

अश्विनी नक्षत्र में व्याधि होने से १ दिन, भरणी, आद्रा, मूल व पू.भाद्रपद नक्षत्र में व्याधि होने से मृत्यु, कृत्तिका – ९ दिन, रोहिणी = ३ दिन, मृगशिरा = ५ दिन, पुनर्वसु व् पुष्य = ७ दिन,

अश्लेशा = ९ दिन, मघा = १ महीना, पू.फाल्गुनी, स्वाति व श्रवण = २ महीना, चित्रा व् उ.फाल्गुनी = १५दिन, हस्त = ७ दिन, विशाखा, रेवती व् उ.षडा = २० दिन, अनुराधा व् शतभिषा = १० दिन एवं जेष्ठा, धनिष्ठा, पू.षडा व् उ.भाद्रपद नक्षत्र में व्याधि होने से १५ दिन तक बीमार रहने का संभावना रहती है। दिन विशेष में (रविबार – ७ दिन, सोमबार– ९दिन, मंगलबार– १० दिन, बुधबार– ३ दिन, गुरुबार– १२ दिन, शुक्रबार– ३ से ७ दिन एवं शनिबार में १४ दिन तक रोग भोग काल होता है)।

- **ज्वरादि सांघातिक दोष:** अश्लेशा, शतभिषा, आद्रा, स्वाति, मूल, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वषडा, पूर्वभाद्रपद नक्षत्र शनि मंगल व् रविबार षष्ठी, नवमी व् चतुर्दशी तिथि के संयोग में ज्वरादि व्याधि होता है और जातक की तारा व् चन्द्रशुद्धि ना हो तो जातक की मृत्यु निश्चित होती है।

नक्षत्रो से शिक्षा एवं कार्य

- **अश्विनी:** विद्युत से संबंधित कार्य, रसायन, इंजीनियरिंग, गणित, ललित कला, शिल्प, जीवविज्ञान एवं वनस्पति से जुड़ी शिक्षा। रेडियोलॉजी, फोटोग्राफी, अंतरिक्ष शिक्षा, घोड़ों से जुड़े पेशे, खेल, औषधियां, वनस्पति व्यापार, कृषि, मरम्मत, आभूषण, विज्ञापन आदि।
- **भरणी:** कंप्यूटर, रसायन और सिविल इंजीनियरिंग से जुड़ी शिक्षा, औषधि, बिजली, कला, गृह विज्ञान, लेखांकन, वाणिज्य, बैंकिंग, विदेशी भाषाओं की शिक्षा, मांस, तंबाकू, जमाखोरी, कॉफी, चाय, शवगृह, बच्चों से संबंधित कार्य, अंतिम संस्कार आदि।
- **कृतिका:** साहित्य, ज्योतिष, प्रकाशन, चिकित्सा विषय जैसे आंख, नाक, गला या दंत, औषधि, रसायन और सिविल इंजीनियरिंग, विमानन, सर्जरी, संगीत, गायन, अग्नि से संबंधित कार्य, धारदार वस्तुओं का निर्माण, वकील, डॉक्टर, लोहार आदि।
- **रोहिणी:** नेत्र और दंत चिकित्सा, पशु चिकित्सा, औषधि, पाक कला, इवेंट प्रबंधन, भूविज्ञान, अध्ययन, त्वचाविज्ञान, इंटीरियर्स, टाइल्स, वाहन, ठेला, पायलट, योग, फिटनेस, कृषि, कैटरिंग, कला, गायन, संगीत, रचनात्मक कार्य, जल से जुड़े विषय।
- **मृगशिरा:** विधि अध्ययन, वस्त्र उद्योग, विद्युत और ध्वनि, मशीनरी, बोन मैरो, हड्डी, आंख, दंत और शल्य चिकित्सा से जुड़े विषय, फिल्म निर्माण, भवन निर्माण, इत्र, फैशन वस्त्र, जल संबंधी वस्तुएं, विज्ञापन, खगोलशास्त्र, पर्यटन, लेखांकन आदि।

- **आर्दा:** इलेक्ट्रिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, रेडियोलॉजी, फोटोग्राफी, परमाणु से संबंधित विषय, वैज्ञानिक, रबर, कृषि और परिवहन से जुड़े विषय, पर्यटन, पत्रकारिता, चिकित्सक, मंत्र, ज्योतिष, लेखन, शिक्षण, दवाएं, न्यायाधीश, विद्युत उपकरण, पुलिस, सेना, कंप्यूटर, सर्जरी, तकनीकी कार्य आदि।
- **पुनर्वसु:** दर्शन, साहित्य, वाणिज्य, राजनीति, व्यवसायिक और वित्तीय प्रबंधन, खाद्य सामग्री, तेल, चित्रण, अभिनय, तकनीकी क्षेत्र, व्यापार, पंडिताई, अधिवक्ता, आयात–निर्यात, बीमा, ज्योतिष आदि।
- **पुष्य:** पेट्रोलियम, भूविज्ञान, वाणिज्य, अर्थशास्त्र, गणित, जल से जुड़े विषय, खाद्य सामग्री, पानी और दूध, तैराकी, धार्मिक कार्य, परामर्श, बाल देखभाल, कैटरिंग, राजनीति, शासक, शिक्षक, कृषि संबंधित विषय।
- **आश्लेषा:** वेद, तर्कशास्त्र, विधि शिक्षा, गणित, पत्रकारिता, जल से जुड़े विषय, औषधि, सेल्स प्रबंधन, मार्केटिंग, सिविल इंजीनियरिंग, परिवहन या पर्यटन से संबंधित विषय, विष, सिगरेट, शराब, तंबाकू, पेट्रोलियम, ठग पंडित, विधि, दवाएं, तंत्र–मंत्र, जंगली जानवर, राजनीति, मनोविज्ञान आदि।
- **मघा:** अंतरिक्ष विज्ञान, रेडियोलॉजी, औषधि से संबंधित विषय, आयुर्वेद, शल्य चिकित्सा, इतिहास, उच्च प्रबंधन, बड़े सरकारी अधिकारी, पारा विज्ञान, वकील, महत्वपूर्ण जज, वेयरहाउस, शेयर ब्रोकर, नेता, वक्ता, पुरातत्व आदि।
- **पूर्वफाल्गुनी:** रसायन, कृषि, पशु चिकित्सा, कंप्यूटर इंजीनियरिंग, बिजनेस प्रबंधन, स्त्री रोग विशेषज्ञ, रेडियोलॉजी, चिकित्सा शिक्षा, नृत्य–संगीत, कला, हस्तशिल्प, रुई, कपास, प्लास्टिक सर्जरी, महिलाओं से संबंधित वस्त्र, रत्न, विवाह संबंधी कार्य आदि।
- **उत्तर फाल्गुनी:** भूविज्ञान, रसायन, पर्यटन, विद्युत इंजीनियर, हृदय रोग विशेषज्ञ, शल्य चिकित्सा, पशु चिकित्सा से संबंधित शिक्षा, हड्डी रोग विशेषज्ञ, अस्पताल प्रबंधन, सरकारी नौकरी, रिफाइनरी, चैरिटेबल कार्य, खेल और कला, परामर्श, पुजारी, अंडरवर्ल्ड, दान कार्य आदि।
- **हस्त:** वस्त्र, मनोचिकित्सक, रसायन, जल विज्ञान, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ, माइनिंग इंजीनियरिंग, फॉरेंसिक चिकित्सा, वेनेरियोलॉजी, दंत चिकित्सक, अस्पताल प्रबंधन, व्यापार, खाद्य सामग्री, बड़े वाहन, हाथियों की ट्रेनिंग, प्रकाशन, प्रिंटिंग, स्वास्थ्य संबंधी, हास्य कलाकार, लेखक, उपन्यासकार, रेडियो जॉकी, टेलीविजन आदि।
- **चित्रा:** सिविल इंजीनियरिंग, सर्जन, आयुर्वेद की शिक्षा, औषधि, कृषि विज्ञान, मत्स्य उत्पादन से संबंधित शिक्षा, पर्यावरण से संबंधित शिक्षा, साहित्य, विधि शिक्षा, बहुमूल्य रत्न, रंग, पेंट्स, लेखन, सजावट के सामान, फैशन उद्योग, गहने, मॉडल, सौंदर्य प्रसाधन,

वास्तुकला, ग्राफिक आर्टिस्ट, मशीनरी, बुनाई–कड़ाई, प्लास्टिक सर्जन, कलाकार आदि ।

- **स्वाती:** रेडियोलॉजी, अंतरिक्ष विज्ञान, खगोल विज्ञान, पुस्तकालय प्रबंधन, उच्च स्तरीय शल्य चिकित्सा से संबंधित शिक्षा, स्त्री रोग विशेषज्ञ, नशे से संबंधित विषय, त्वचा विज्ञान, प्रसव विज्ञान, पक्षी–जानवर, एयर कंडीशनर, गायक, संगीत वाद्य, दालें, सामाजिक कार्य, समाचार रीडर, तकनीक, कंप्यूटर आदि ।
- **विशाखा:** फूल, फल, रुई, बीज, तेल, शराब, कला, वक्ता, नेता, खेल, धर्म, नृत्य, सैनिक, राजनीति, दर्शन, विधि शिक्षा, बैंकिंग, रेडियोलॉजी, आर्किटेक्ट की शिक्षा, होमियोपैथी से संबंधित शिक्षा, कपड़ा उद्योग, बी.एस.सी., इंजीनियरिंग शिक्षा, शल्य चिकित्सा से संबंधित शिक्षा आदि ।
- **अनुराधा:** औद्योगिक, पेट्रोलियम, सिविल और कृषि से जुड़े इंजीनियरिंग विषय, विधि शिक्षा, पैथोलॉजी, राजनीति, ज्योतिष, किसी धार्मिक संस्था में उच्च पद, सिनेमा से संबंधित, फोटोग्राफर, श्रमिक, उद्योग, विज्ञान, गणित, डेटा विशेषज्ञ, नुमेरोलॉजी, साहसिक कार्य, खनन संबंधित आदि ।
- **ज्येष्ठा:** गणित, पत्रकारिता, प्रचार, साहित्य, चिकित्सक, आयुर्वेद और औषधि से संबंधित शिक्षा, शल्य चिकित्सा से संबंधित विषय, पर्यावरण संबंधी शिक्षा, लेखांकन, सी.ए. और इंजीनियरिंग से जुड़े विषय, पुलिस, सशस्त्र बल, राजनीति, नौसेना, रेडियो–टेलीविजन, सरकारी अधिकारी, टीवी होस्ट, वक्ता, पटाखे, काला जादू, जासूसी, शोधकर्ता, सर्जन आदि ।
- **मूल:** फोटोग्राफी, इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स तथा कंप्यूटर से संबंधित शिक्षा, सिविल इंजीनियरिंग, वाणिज्य से संबंधित शिक्षा, रसायन विज्ञान, इतिहास, औषधि, दंत चिकित्सक, दवाएं, मनोविज्ञान, तंत्र, शरीर विज्ञान, खगोल विज्ञान, सर्जरी, सुरक्षा, अध्ययन आदि ।
- **पूर्वाषाढ़:** डेयरी फार्मिंग, वस्त्र संबंधी शिक्षा, प्लास्टिक, रसायन इंजीनियरिंग, गणित, दूरभाष, लेखांकन, मोती, शंख, जलयान संबंधी, नौसेना, फूलों की खेती, मछली पालन, लेखन, कविता, खेल, नुकीली वस्तुएं, फैशन, हेयर स्टाइलिस्ट आदि ।
- **उत्तराषाढ़ा:** चिकित्सा, रसायन विज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र, इंजीनियरिंग, कंप्यूटर, कला, दंत चिकित्सा, नेतृत्व, कुश्ती, खेल, परिवहन से संबंधित, ज्योतिष, सरकारी सेवा, विधि, सैनिक, सुरक्षा कार्य आदि ।
- **श्रवण:** वस्त्र, रसायन विज्ञान, जल अभियांत्रिकी, मनोचिकित्सा, औषधि, सर्जरी, हृदरोग विशेषज्ञ, एनस्थीसिया, हाइड्रोलिक्स से संबंधित शिक्षा, वक्तृत्व, स्क्रिप्ट लेखन, बौद्धिक

कार्य, होटल, अस्पताल, धार्मिक संस्थान, छात्र, हास्य कलाकार, भाषाविद्, साहसिक कार्य आदि।

- **धनिष्ठा:** यांत्रिक और सिविल इंजीनियरिंग, वास्तुकला, भौतिकी, साहित्य, नर्सिंग, वस्त्र उद्योग, अस्पताल प्रबंधन, बैंक प्रबंधन, ऋण, मुद्रा विनिमय, वित्त, विधि, प्रबंधन, रत्न, मूल्यवान धातुएं, संगीत बैंड, मनोरंजन, कला, कवि, ज्योतिष आदि।
- **शतभिषा:** रेडियोलॉजी, एक्स–रे, स्त्री रोग, दंत रोग, औषधि, माइक्रोलॉजी, इलेक्ट्रॉनिक्स, तकनीकी शिक्षा, रडार संबंधित शिक्षा, कृषि से जुड़ी शिक्षा, चिकित्सा, दवाएं, तैराकी, ड्राई क्लीनिंग, जेल, पुलिस, चिड़ियाघर, भविष्यवक्ता, लेखन, शराब, सर्जन आदि।
- **पूर्वाभाद्रपद:** प्रशासनिक शिक्षा, दर्शनशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय कानून, व्यापार प्रबंधन, बैंकिंग, रेडियोलॉजी, इलेक्ट्रोलॉजी, औषधि से संबंधित शिक्षा, कला की शिक्षा, भेड़, बकरी, तस्करी, मृत्यु से जुड़े विषय, असामाजिक कार्य, आतंकवाद, काला जादू, पेट्रोल, मोटर स्पोर्ट्स आदि।
- **उत्तराभाद्रपद:** रिफाइनरी तकनीकी शिक्षा, इंजीनियरिंग से जुड़े विषय जैसे सिविल, इलेक्ट्रॉनिक, भूविज्ञान, वस्त्र उद्योग, समुद्री शिक्षा, वाणिज्य, व्यापार प्रबंधन, चिकित्सा, चैरिटेबल ट्रस्ट, योग, ध्यान, तंत्र–मंत्र, दान–पुण्य, अस्त्र–शस्त्र, फार्मेसी, अग्नि संबंधित, रात्री पहरेदार आदि।
- **रेवती:** गणित, पत्रकारिता, विज्ञापन से संबंधित शिक्षा, इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रॉनिक्स, रसायन, सिविल, पॉलिमर, औषधि विशेषज्ञ, ललित कला, छपाई तकनीक, जल, नमक, कला, रत्न, ज्योतिष, ट्रैफिक अधिकारी, इत्र, घड़ियां आदि।

नक्षत्रो का शारीरिक अंगो पर प्रभाव

अश्विनी, भरणी व् कृत्तिका नक्षत्रो का ज्यादा प्रभाव मानव शरीर में सिर, दिमाग, ललाट, आंखों प; रोहिणी, मृगशिरा व् आद्रा नक्षत्रो का प्रभाव मुख, गले, कंठ, गर्दन तथा चेहरे पर ज्यादा पड़ता है। पुनर्वसु, पुष्य व् अश्लेशा नक्षत्रो का प्रभाव कान, कंधे, फेफड़े, पेट व् अंतो प; मघा, पु.फाल्गुनी नक्षत्रो का ह्रदय, स्तन, पीठ व् रीढ़ की हड्डी पर ज्यादा पड़ता है। उ.फाल्गुनी व् हस्त नक्षत्रो का बड़ी आंत, यकृत, तिल्ली व् पेट पर; चित्र, स्वाति व् विशाखा नक्षत्रो का पेडू, गुर्दे, मूत्राशय, कमर व् बस्ति पर; अनुराधा, जेष्ठ, मूल व् पूर्वषाढा नक्षत्रो का गुप्तांग/जननांग, गुदा, नितम्ब, अंडकोष व् धमनी पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है। उत्तरषाढा, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रो का जांघ, घुटने, चर्म, घुटने की हड्डी पर; शतभिषा, पु.भाद्रपद, उ.भाद्रपद व् रेवती नक्षत्रो का पिंडली, पाँव, एड़ी, पंजो, तलबो व् टखनो पर ज्यादा प्रभाव पड़ता है।

जन्म नक्षत्र से नक्षत्र पुरुष विचार

जन्म नक्षत्र से किसी जातक के नक्षत्र पुरुष विचार करने के लिए जन्म नक्षत्र से प्रारम्भ करके १, १, ३, १, १, ४, ३, ५, १, ४, ३ नक्षत्रों को सारणी के अनुसार स्थापित करना पड़ता है। जिन नक्षत्रों पर पाप प्रभाव, क्रूर दृष्टि, नीच–शत्रु ग्रह होगा उन्ही नक्षत्रों के अंगो पर चोट व अन्य निशान उस ग्रह की दशा अन्तर्दशा में मिलने क असंभावना रहता है।

मुख	–	जन्म नक्षत्र	दायाँ पैर	–	३
वाम नेत्र	–	१	छाती (बायीं)	–	५
माथा	–	३	गला (वाम हिस्सा)	–	१
छाती (दायीं)	–	१	वाम हाथ	–	४
गला (दक्षिण भाग)	–	१	दायाँ पैर	–	३
दायाँ हाथ	–	४			

शरीर पर नक्षत्रों का स्थान

नक्षत्रों को शरीर पर विभाजित करने का वर्गीकरण बहुत ही उपयोगी होता है, क्योकि सभी नक्षत्र भगवान विष्णु के शरीर में भिन्न–भिन्न प्रकार से निवास करते हैं। इसी के आधार पर ही सभी २७ नक्षत्र हमारे शरीर के विभिन्न अंगो पर अपना प्रभाव डालते है। चिकित्सा ज्योतिष में पीड़ित नक्षत्रों के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है की जातक को किस स्थान पर रोग की सम्भावना है।

जब इन्ह नक्षत्रो के ऊपर कोई पाप ग्रह अपना प्रभाव डालता है, तब उस नक्षत्र स्थित शरीर के अंग पर कोई चोट लगने का खतरा रहता है। अथवा तत्सम्वन्धित अंगो पर कोई बीमारी हो सकता है। हलाकि नक्षत्रों को शरीरांगो पर विभाजित करने में विद्वानों में एक से अधिक मत रहे है। इनमें से सबसे ज्यादा प्रचलित दो मत बताया जा रहा है।

१. पाराशरीय मत:

नक्षत्र पुरुष गणना में शास्त्रीय मत के साथ साथ पराशरीय मत भी प्रचलित है, इसलिए पराशरीय मत का भी उल्लेख किया जा रहा है।

नक्षत्र	शरीरांग	नक्षत्र	शरीरांग
१. अश्विनी	सिर	१५. स्वाति	पेट
२. भरणी	माथा	१६. विशाखा	नाभि
३. कृतिका	भौंहें	१७. अनुराधा	कमर
४. रोहिणी	आँखें	१८. ज्येष्ठा	जांघ
५. मृगशिरा	नाक	१९. मूल	नितम्ब
६. आर्द्रा	कान	२०. पूर्वा षाढा	लिंग
७. पुनर्वसु	गाल	२१. उत्तरा षाढा	अंडकोष
८. पुष्य	होंठ	२२. श्रवण	पेडू
९. आश्लेषा	ठुड्डी	२३. धनिष्ठा	जंघा
१०. मघा	गला	२४. शतभिषा	घुटने
११. पू.फाल्गुनी	कंधे	२५. पूर्वा भाद्रपद	पिंडली
१२. उ.फाल्गुनी	हृदय	२६. उत्तरा भाद्रपद	टखने
१३. हस्त	बगलें	२७. रेवती	पैर
१४. चित्रा	छाती		

- ज्येष्ठा नक्षत्र को जांघों के उपरी हिस्से अर्थात कमर के निचे के आधे भाग में व धनिष्ठा को शेष जांघें समझना चाहिए।

२. शास्त्रीय मत से नक्षत्र पुरुष का विचार:

नक्षत्र – शरीरांग
अश्विनी – दोनों घुटने
भरणी – सिर
कृतिका – कटिप्रदेश
रोहिणी – दोनों टांगे
मृगशिरा – दोनों नेत्र
आर्द्रा – बाल
पुनर्वसु – अंगुलियाँ
पुष्य – मुख
आश्लेषा – नख
मघा – नाक
पू.फाल्गुनी – गुप्तांग
उ.फाल्गुनी – गुप्तांग
हस्त – दोनों हाथ
चित्रा – मस्तक
स्वाति – दांत
विशाखा – दोनों भुजाएं
अनुराधा – हृदय, वक्षस्थल
ज्येष्ठा – जिव्हा
मूल – दोनों पैर
पूर्वाषाढा – दोनों जांघें
उत्तरषाढा – दोनों जांघें

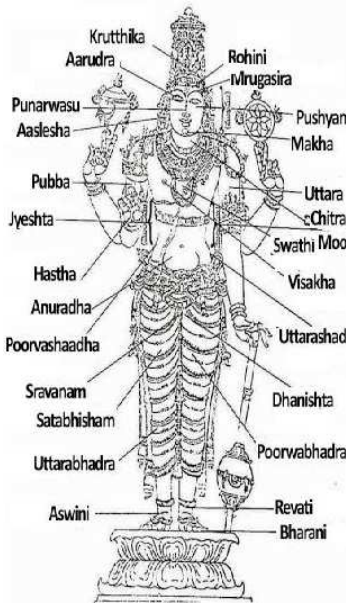

श्रवण – दोनों कान
धनिष्ठा – पीठ
शतभिषा – ठोड़ी के दोनों पार्श्व,
पूर्वा भाद्रपद – बगल
उत्तरा भाद्रपद – बगल,
रेवती – दोनों कांख

====✂====

पंचम अध्याय

राशि तत्व

भारतीय ज्योतिष में राशि चक्र का उपयोग मानव जीवन पर प्रभाव डालने वाले विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए किया जाता है। यह न केवल आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति में मदद करता है बल्कि व्यक्ति के जीवन में भविष्यवाणी करने का एक विशेष तरीका भी प्रदान करता है। जिनमें प्रत्येक राशि का संबंध विशेष गुण, स्वभाव और जीवन के विभिन्न पहलुओं से होता है। क्यौकी प्रत्येक राशि अपने आप मे विशेष गुणों को समाहित किए हुए है, जिसे सभी मानव अपनी राशि के अनुसार प्राप्त करते है।

राशि और राशिचक्र

राशि और राशिचक्र को समझने के लिए नक्षत्रों को समझना आवश्यक है, क्योकि राशि नक्षत्रों से ही बनते हैं। ब्रह्मांड में तारों के अनेक समूह है, जो महाकाश में अलग-अलग आकृतियो के रूप में दिखाई देता है, तारों के इन्हीं एक-एक समूह को नक्षत्र कहा जाता है।

वैदिक ज्योतिष में राशि और राशिचक्र निर्धारण के लिए ३६० डिग्री का एक आभाषीय पथ निर्धारित किया गया है, जिसे भचक्र कहते हैं। ३६० डिग्री की इस आभाषीय पथ में पड़ने वाले नक्षत्रो की कुल संख्या २७ होती है। इन्ह २७ नक्षत्र को ही १२ भागो में भाग करके एक एक राशि का निर्धारण किया गया है । २७ नक्षत्रो को ३६० डिग्री के भचक्र में विभाजित करने से प्रत्येक भाग १३ डिग्री २० मिनट का होता है।

इस तरह प्रत्येक नक्षत्र १३ डिग्री २० मिनट का होता है। ३६० के भचक्र को समान १२ अंश में बिभाजित करने के कारण प्रत्येक राशि ३० डिग्री के होती है। और इसी १२ अलग-

अलग राशियों के समूह को ही राशि चक्र कहा जाता है। कोई भी ग्रह जब इन राशियों में होता है तो वह अधिकतम ३० अंश तक ही भ्रमण कर सकता है। जब किसी जातक की जन्मकुंडली बनाई जाती है तो प्रत्येक ग्रह ० से ३० अंश के बीच ही होता है।

राशिचक्र में सबसे पहला नक्षत्र अश्विनी नक्षत्र होते है; इसके बाद है भरणी फिर कृतिका इस प्रकार क्रमवार २७ नक्षत्र आते हैं। पहले दो नक्षत्र हैं अश्विनी और भरणी हैं जिनसे पहली राशि यानी मेष का निर्माण होता हैं, इसी क्रम में शेष नक्षत्र भी राशियों का निर्माण होता हैं।

प्रत्येक राशि की अपनी एक आकृति और विशिष्टता होती है, और इसी आकृति के आधार पर ही प्रत्येक राशि का नाम भी रखा गया है। जन्म के समय इन राशियों में सूर्य और चंद्रमा का प्रक्षेपण जन्म राशि के लिए निर्णायक कारक होती है। क्यौकी हर व्यक्ति का जन्म इन्हीं में से किसी न किसी एक राशि में होता है।

प्रत्येक राशि विशिष्ट गुणों, तत्वों और शासक ग्रहों से जुड़ा होता है। इन राशियों में ग्रहों की स्थिति, साथ ही बारह ज्योतिषीय घरों में उनकी स्थिति, प्रभावों का विश्लेषण करके ज्योतिष फलादेश किया जाता हैं।

❖ नक्षत्र के संयोग से बनने वाली १२ राशियों के नाम इस प्रकार है:

१.मेष २.वृष ३.मिथुन ४.कर्क ५. सिंह ६.कन्या ७.तुला ८.वृश्चिक ९.धनु १०.मकर ११.कुम्भ एवं १२.मीन राशि। भचक्र में मेष, सिंह, धनु पूर्व में; वृष कन्या, मकर दक्षिण में; मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम में और कर्क, वृश्चिक और मीन राशि उत्तर में स्थित हैं।

राशि का प्रमुख या शासक ग्रहों को राशि स्वामी भी कहा जाता है। जो उस विशेष राशि को अपनी विशेषताओं का प्रदान करते हुए राशि को नियंत्रित करता है। जैसे कि मेष राशि का प्रमुख ग्रह मंगल है, जो साहस, ऊर्जा और प्रतिस्पर्धा का प्रतीक है। वृषभ राशि का प्रमुख ग्रह शुक्र है, जो सौंदर्य, प्रेम और धन का प्रतीक है। इसी प्रकार, अन्य राशियों के भी प्रमुख ग्रह होते हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य और चंद्रमा को एक-एक राशि का स्वामित्व प्राप्त है। जबकि मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ग्रह को दो-दो राशि का स्वामित्व मिला है। मंगल मेष और वृश्चिक राशि पर शासन करता है। शुक्र वृषभ और तुला राशि पर शासन करता है। बुध मिथुन और कन्या राशि पर शासन करता है, और कर्क ही चंद्रमा द्वारा शासित एकमात्र राशि है। सूर्य सिंह राशि पर शासन करता है, और बृहस्पति धनु और मीन राशि का स्वामी ग्रह है। एवं मकर और कुंभ राशि पर शनि का शासन होता है।

राशि स्वामी के स्वभाव व विशेषता का पूरा असर जातक के व्यक्तित्व पर भी पड़ता है। इसलिए किसी भी व्यक्ति के स्वभाव, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य और गुण व दोष का अंदाजा

उसकी राशि के बारे में जानकर लगाया जा सकता है। राशियां भी दो तरह से देखी जाती हैं एक सूर्य राशि और दूसरा चंद्र राशि।

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
मंगल	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध

राशि स्वामी चार्ट

तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
शुक्र	मंगल	गुरु	शनि	शनि	गुरु

वैदिक ज्योतिष में चंद्र राशि का ज्यादा महत्व दिया जाता है, सभी गणना एवं भविष्य कथन चंद्र राशि के आधार पर ही होती है। जबकि पाश्चात्य ज्योतिष में सूर्य आधारित राशि को महत्वपूर्ण माना जाता है। जन्म के समय चंद्रमा आकाश मंडल में जिस राशि में उदित होता है, वहीं राशि चंद्र राशि होती है। एवं सूर्य जिस राशि में स्थित होता है वह सूर्य राशि होती है।

❖ पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार जन्म तिथि के अनुसार राशि:

पाश्चात्य ज्योतिष के अनुसार, जन्म तिथि के आधार पर राशि का निर्धारण किया जाता है। यह तिथियाँ सामान्यतः मानक होती हैं, लेकिन साल के आधार पर इन तिथियों में कुछ भिन्नता हो सकती है। यहां पर उन राशियों की सूची दी गई है जो जन्म तिथि के आधार पर निर्धारित होती हैं:

मेष: २१ मार्च – १९ अप्रैल	**तुला:** २३ सितंबर – २२ अक्टूबर
वृषभ: २० अप्रैल – २० मई	**वृश्चिक:** २३ अक्टूबर – २१ नवंबर
मिथुन: २१ मई – २० जून	**धनु:** २२ नवंबर – २१ दिसंबर
कर्क: २१ जून – २२ जुलाई	**मकर:** २२ दिसंबर – १९ जनवरी
सिंह: २३ जुलाई – २२ अगस्त	**कुम्भ:** २० जनवरी – १८ फरवरी
कन्या: २३अगस्त – २२ सितंबर	**मीन:** १९ फरवरी – २० मार्च

सूर्य राशियां जन्म के समय सूर्य की स्थिति को दर्शाती हैं। सूर्य राशि बाहरी व्यक्तित्व, सामाजिक प्रतिष्ठा और जीवन के महत्वपूर्ण लक्ष्यों को दर्शाती है। सूर्य राशि का निर्धारण जन्मतिथि के आधार पर किया जाता है, लेकिन इसमें जन्मसमय और स्थान की आवश्यकता नहीं होती है। अपर पक्षे चन्द्र राशि जो मुख्य राशि है चंद्रमा राशि व्यक्ति की भावनाओं, मनोदशा और आंतरिक जीवन को दर्शाती है। सूर्य और चन्द्र राशि के अतिरिक्त भारतीय ज्योतिष में लग्न राशि और नाम राशि का भी उपयोग किया जाता है।

राशि तत्व

लग्न राशि या उदय राशि वह राशि होती है, जो व्यक्ति के जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर उदय हो रही होती है। यह राशि व्यक्ति के शारीरिक स्वरूप, स्वास्थ्य, और जीवन के मुख्य पहलुओं को दर्शाती है। एवं लग्न राशि का निर्धारण जन्मतिथि, जन्मसमय, और जन्मस्थान के आधार पर किया जाता है और इसे जानने के लिए सटीक समय का ज्ञान होना बहुत जरूरी होता है।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांत अनुसार, व्यक्ति के जन्म समय चंद्रमा जिस राशि में भ्रमणशील रहता है, वही उस व्यक्ति की जन्मकालीन राशि अथवा चंद्र राशि होती है। अधिकांशतः भारतीय ज्योतिष के संदर्भ में जहां भी राशि शब्द का उल्लेख किया जाता है, उसका अर्थ हमेशा चन्द्र राशि से ही होता है।

पाश्चात्य ज्योतिष में सूर्य की स्थिति से राशि का निर्धारण व्यवस्था भारतीय ज्योतिष में चन्द्र राशि की अपेक्षा अत्यन्त स्थूल है। पृथ्वी का निकटतम ग्रह होने के कारण चन्द्रमा मानव मस्तिष्क पर सर्वाधिक प्रभाव डालता है, अतः चन्द्र राशि से ग्रहों के फलादेश को जानने की भारतीय प्रक्रिया विज्ञान सम्मत है और सूक्ष्म है, इसलिए चन्द्र राशि की गणना सूर्य राशि की अपेक्षा उत्तम माना जाता है।

राशिचक्र का अंशात्मक मान

ज्योतिष शास्त्रानुसार १३° २०' का एक नक्षत्र होता है, जिसमे ३° २०' के चार चरण होते हैं। जिस समय से नक्षत्र शुरू हुआ है उस समय से लेकर उसके समाप्ती तक समय के चार भाग करने से चरण का ज्ञान प्राप्त होता है। ३६०° डिग्री के राशि चक्र में कुल १२ राशि होते है, जिसमे हर एक राशि का मान ३०° का होता है। एवं पुरे भचक्र को २७ नक्षत्रो से भाग करने पर इसका मान १३° २०' का होता है। इस प्रकार गाणितिक विधि से एक राशि में ३ नक्षत्रो के कुल ९ चरण होते है। किसी भी ग्रह की डिग्री या अंश देखकर उसके नक्षत्र और चरण का पता लगाया जा सकता है।

राशिचक्र का संज्ञा, दिशा और अंशात्मक मान चार्ट

राशि	संज्ञा	नक्षत्र	चरण	मान	राशि मान
मेष	धातु कारक, पूर्व दिशा के अधिपति	अश्विनी भरणी कृतिका	४ ४ १	१३°२०′ १३°२०′ ३°२०′	० –३० °
वृषभ	मूल कारक, दक्षिण दिशा के अधिपति	कृतिका रोहिणी मृगशिरा	३ ४ २	१०° १३°२०′ ६°४०′	३०° – ६०°
मिथुन	जीव कारक, पश्चिम दिशा के अधिपति	मृगशिरा आद्रा पुनर्वसु	२ ४ ३	६°४०′ १३°२०′ १०°	६०°–९०°
कर्क	धातु कारक, उत्तर दिशा के अधिपति	पुनर्वसु पुष्य अश्लेषा	१ ४ ४	३°२०′ १३°२०′ १३°२०′	९०°–१२०°
सिंह	मूल कारक, पूर्व दिशा के अधिपति	मघा पू.फा. उ. फा.	४ ४ १	१३°२०′ १३°२०′ ३°२०′	१२०°–१५०°
कन्या	जीव कारक, दक्षिण दिशा के अधिपति	उ.फा. हस्त चित्रा	३ ४ २	१०° १३°२०′ ६°४०′	१५०°–१८०°
तुला	धातु कारक, पश्चिम दिशा के अधिपति	चित्रा स्वाति विशाखा	२ ४ ३	६°४०′ १३°२०′ १०°	१८०°–२१०°
वृश्चिक	मूल कारक, उत्तर दिशा के अधिपति	विशाखा अनुराधा ज्येष्ठा	१ ४ ४	३°२०′ १३°२०′ १३°२०′	२१०°–२४०°

धनु	जीव कारक, पूर्व दिशा के अधिपति	मूल पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा	४ ४ १	१३°२०′ १३°२०′ ३°२०′	२४०°–२७०°
मकर	धातु कारक, दक्षिण दिशा के अधिपति	उत्तराषाढ़ा श्रवण घनिष्ट	३ ४ २	१०° १३°२०′ ६°४०′	२७०°–३००°
कुम्भ	मूल कारक, पश्चिम दिशा के अधिपति	घनिष्ट शतभिषा पू.भा.	२ ४ ३	६°४०′ १३°२०′ १०°	३००°–३३०°
मीन	जीव कारक, उत्तर दिशा के अधिपति	पू.भा. उ.भा. रेवती	१ ४ ४	३°२०′ १३°२०′ १३°२०′	३३०°– ३६०°

राशियों की संख्याएँ

मेष: १, वृष: २, मिथुन: ३, कर्क: ४, सिंह: ५, कन्या: ६, तुला: ७, वृश्चिक: ८, धनु: ९, मकर: १०, कुम्भ: ११, मीन: १२ एवं दूसरी मत से मेष: १–१२, वृष: १३–२४, मिथुन: २५–३६, कर्क: ३७–४८, सिंह: ४९–६०, कन्या: ६१–७२, तुला: ७३–८४, वृश्चिक: ८५–९६, धनु: ९७–१०८, मकर: १०९–१२०, कुम्भ: १२१–१३२, मीन: १३३–१४४

❖ विशेष: अगर किसी करण जातक की जन्मकुंडली या सही जन्म तारीख ज्ञात न होतो ऐसे स्थिति में, प्रश्नकर्त्ता के माध्यम से १ – १२ अंक के मध्ये अथवा १ – १४४ अंक के मध्य एक अंक निर्द्दिष्ट करके, उस अंक विशिष्ट राशि कोलाग्न मानकर द्वादश स्थान में सूर्यादि नव ग्रह को स्थित करके राशि व् भावो की कारकत्व के अनुसार फल कथन किया जा सकता है।

द्वादश राशि की त्रिकोणस्थान

- ✓ **मेष राशि की त्रिकोण:** धनु, मेष व् सिंहराशि।
- ✓ **कर्क राशि की त्रिकोण**: मीन, कर्क व् वृश्चिक राशि।
- ✓ **तुला राशि की त्रिकोण:** मिथुन, तुला व् कुम्भ राशि।

✓ **मकर राशि की त्रिकोण:** कन्या, मकर व् वृष राशि।

वारह राशियों के नाम, आकृति एवं चिहं

हिंदी/संस्कृत	English	आकृति	चिन्ह
१) मेष	Arise	मेढ़े की आकृति	♈
२) वृषभ	Taurus	बैल की आकृति	♉
३) मिथुन	Gemini	स्त्री पुरुष का जोड़ा	♊
४) कर्क	Cancer	केकड़ा की आकृति	♋
५) सिंह	Leo	शेर की आकृति	♌
६) कन्या	Virgo	*युवती नारी*	♍
७) तुला	Libra	पुरुष के हाथ में तराजू	♎
८) वृश्चिक	Scorpio	बिच्छू की आकृति	♏
९) धनु	Sagittarius	हाथ में धनुष ताने हुए	♐
१०) मकर	Capricorn	मगरमच्छ के समान	♑
११) कुंभ	Aquarius	पुरुष के सिर के ऊपर घड़ा	♒
१२) मीन	Pisces	दो मछलियों का जोड़ा	♓

द्वादश राशियों के मन्त्र

राशि	वीज मन्त्र	इष्ट देव मन्त्र
मेष	ॐ ऐं क्लीं सौः	ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः
वृषभ	ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं	ॐ गोपालाय उत्तरध्वजाय नमः
मिथुन	ॐ श्रीं ऐं सौः	ॐ क्लीं कृष्णाय नमः
कर्क	ॐ ऐं क्लीं श्रीं।	ॐ हिरण्यगर्भाय अव्यक्तरुपिणे नमः
सिंह	ॐ ह्रीं श्रीं सौः	ॐ क्लीं ब्रह्मणे जगदाधाराय नमः
कन्या	ॐ श्रीं ऐं सौः	ॐ नमः पीं पीताम्बराय नमः
तुला	ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं	ॐ तत्वनिरञ्जनाय नमः
वृश्चिक	ॐ ऐं क्लीं सौः	ॐ नारायणाय सुरसिंघाय नमः
धनु	ॐ ह्रीं क्लीं सौः	ॐ श्रीं देवकृष्णाय उर्ध्वदन्ताय नमः
मकर	ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः	ॐ श्रीं वत्सलाय नमः
कुम्भ	ॐ ह्रीं ऐं क्लीं श्रीं	ॐ श्रीं उपेन्द्राय अच्युताय नमः
मीन	ॐ ह्रीं क्लीं सौः	ॐ आं क्लीं उध्दृताय नमः

द्वादश राशियों की अन्य नाम

- **मेष:** प्रथम, क्रिय, अजवंत
- **वृष:** शुक्रभ, तावुरी, ओक्ष, वृषभ, सौरभेय
- **मिथुन:** नृयुग्म, जितुम, वोध, यमल
- **कर्क:** कुलीर, चान्द्र, कर्की, निचली
- **सिंह:** लेय, कंठीरव, हरि, मृगेंद्र
- **कन्या:** पाथोन, पाथेय, यष्टी, अवला, तन्वी, कुमारी, वधु, नारी, प्रमदा
- **तुला:** युक, वणिक, सप्तम, तौली
- **वृश्चिक:** कौर्पी (कौर्प), अष्ठम, कौज, अली
- **धनु:** चाप, हय, कोदंड, तौक्षिक
- **मकर:** दशम, आकोकर (अकोरार), नक्र, तुणीर
- **कुम्भ:** हृद्रोग, घट
- **मीन:** अन्त्यभ, अन्त्यज, झष, शफरी, अंतिम, रिक, पृथुरोमनिमिष

जन्म लग्न और जन्म राशि क्या होती है ?

पृथ्वी अपने अक्ष पर २४ घंटे में एक बार पश्चिम से पूरब घूमती है। इस कारण से सभी ग्रह नक्षत्र व राशियां २४ घंटे में एक बार पूरब से पश्चिम दिशा में घूमती हुई प्रतीत होती है। इस प्रक्रिया में सभी राशियां और तारे २४ घंटे में एक बार पूर्वी क्षितिज पर उदित और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होते हुए नज़र आते हैं। यही कारण है कि एक निश्चित बिन्दु और काल में राशिचक्र में एक विशेष राशि पूर्वी क्षितिज पर उदित होती है। जब कोई व्यक्ति जन्म लेता है उस समय उस अक्षांश और देशांतर में जो राशि पूर्व दिशा में उदित होती है, वह राशि व्यक्ति का जन्म लग्न या लग्न राशि कहलाता है। जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में स्थित होता है उस राशि को जन्म राशि या चन्द्र राशि के नाम से जाना जाता है।

नाम राशि क्या होती है?

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार किसी व्यक्ति के नाम का पहला अक्षर जातक के स्वभाव–चरित्र, पसंद–नापसंद, हाव-भाव आदि के बारे में बहुत कुछ बताता है। इसीलिए ज्योतिष गणना में जातक के बहुल प्रचलित नाम के (अगर एकाधिक नाम हो) पहला अक्षर से राशि निर्धारित

करके कुछ बिशेष परिस्थिति में गणना किया जाता है। नाम के पहला अक्षर से निर्धारित किया गया राशि को ही नाम राशि कहते है। जन्म राशि एवं नाम राशि इन दोनों का अपनाअलग अलग महत्व माना गया है।

- **कहां नाम राशि का प्रयोग करना चाहिए ?**

ज्योतिष शास्त्र में जन्म राशि और नाम राशि के उपयोग के लिये अलग–अलग स्थान बताए गए हैं। क्यौकी ज्योतिष का उपयोग न केवल व्यक्तिगत जीवन में, बल्कि करियर, स्वास्थ्य, विवाह, और अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों में भी किया जाता है। जन्म विवरण न होने की स्थिति में अगर जन्मकुंडली नही बना है, तो सर्वत्र नाम राशि का प्रयोग किया जा सकता है।

✓ **अन्यथा कुछ विशेष स्तिथि में जैसे:** किसी देश या ग्राम में निवास करते समय, भूमि या भवन की रजिस्ट्रीकरण के समय, नौकर रखते समय, युद्ध, कोर्ट–कचहरी, न्यायालयाधीन मामलों में, किसी से व्यवसायिक या मित्रता का सम्बन्ध बनाने विषयक विचार में नाम राशि का उपयोग करना चाहिए। विवाह, मांगलिक कार्य, यात्रा, ग्रह गोचर, गणना का विचार करते समय जन्म राशि से ही विचार करना चाहिए। नामराशि से जन्म राशि अधिक सूक्ष्म व प्रभावी होती है, अतः जन्म राशि को प्रधानता देना चाहिए।

नाम की पहला अक्षर से राशि

मेष अ, आ, ल	**वृषभ** उ, ऊ, इ, ए, व	**मिथुन** क, घ, छ	**कर्क** ड, ह
सिंह म, ट	**कन्या** ठ, प, ब, ण	**तुला** र, त	**वृश्चिक** न, य
धनु ध, ढ, फ, ड़, ढ़	**मकर** ख, ज	**कुम्भ** ग, श, ष, स	**मीन** च, झ, थ, द

नामाक्षर ग्रह वर्गेश्वर रूप में

अ वर्ग	अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः	सूर्य
क वर्ग	क, ख, ग, घ, ड.	मंगल
च वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ	शुक्र
ट वर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण	बुध
त वर्ग	त, थ, द, ध, न	गुरु
प वर्ग	प, फ, ब, भ, म	शनि
य वर्ग	य, र, ल, व, श, स, ष, ह, क्ष, त्र, ज्ञ	चन्द्र

नामकरण ज्ञातव्य

नवजातक वच्चे की नामकरण शास्त्रोक्त विधि पूर्वक करनी चाहिए। नाम ही मनुष्य की यश-कीर्ति, सौभाग्य, व्यवहार और सुख के लिए प्रयुक्त होता है। जन्म के समय चंद्रमा जिस राशि और नक्षत्र में होता है, उस नक्षत्र के चरणाक्षर के आधार पर बच्चे का नाम रखना अति उत्तम माना जाता है। क्यौकी चंद्रमा के उस नक्षत्र चरण और राशि के आधार पर ही बच्चे की जन्म राशि तय होती है, जो जीवन भर के लिए प्रभावी रहती है।

लड़के का नाम विषम अक्षर ३, ५, ७ अक्षर वाला नहीं होना चाहिए। नाम के प्रारंभ में घोषाक्षर वर्ण का तीसरा, चौथा, पांचवा अक्षर और ह अर्थात् ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, न, ब, भ, म, ह और बाद में य, र, ल, व होना उत्तम होता है। कुलक्रमागत नाम अर्थात् पिता आदि के नाम का उत्तरार्ध पुत्र के नाम का उत्तरार्ध होना श्रेष्ठ होता है।

व्यावहारिक नाम दो, चार या छह अक्षर का उत्तम होता है। यश एवं मान–प्रतिष्ठा की इच्छा रखने वाले का नाम दो अक्षर का, ब्रह्मचर्य तप–पुष्टि की कामना से चार अक्षर का नाम श्रेष्ठ होता है। कन्या का नाम विषम अक्षरों का और कोमल, श्रुतिमधुर, मनोहर, मांगलिक एवं धार्मिक होना शुभ होता है। परन्तु नक्षत्र, नदी, वृक्ष, पक्षी, सर्प, सेवक संबंधी एवं भयंकर संज्ञक नाम नहीं रखना चाहिए।

राशियों की अंग, क्रूरादि व् ज्योतिर्लिंग

राशि	दिवसादि	क्रूरादि	अंग	ज्योतिर्लिंग
मेष	दिन	क्रूर	मस्तक	रामेश्वरम
वृषभ	रात्र	सौम्य	मुख, कंठ	सोमनाथ
मिथुन	दिन	क्रूर	हाथ	नागेश्वर
कर्क	रात्र	सौम्य	हृदय	ओंकारेश्वर
सिंह	दिन	क्रूर	पेट	वैद्यनाथ
कन्या	रात्र	सौम्य	कटी	मल्लिकार्जुन
तुला	दिन	क्रूर	बस्ति	महाकालेश्वर
वृश्चिक	रात्र	सौम्य	लिंग	घृष्णेश्वर
धनु	दिन	क्रूर	जंघा	विश्वनाथ
मकर	रात्र	सौम्य	घुटना	भीमाशंकर
कुम्भ	दिन	क्रूर	पिंडली	केदारनाथ
मीन	रात्र	सौम्य	पैर	त्र्यंबकेश्वर

नाम से गण निरूपण

नाम की अक्षर संख्या को द्विगुण एवं मात्राओं को चार गुण करके योग फल को तिन अंक के दोवारा भाग (विभाजित) करके अवशिष्ट अंक १ = देवगन, २= मनुष्य गण, एवं ० – राक्षस गण समझना चाहिए।

राशियो का वर्गीकरण

तत्वों के आधार पर राशि:– वैदिक ज्योतिष में जल, अग्नि, वायु और पृथ्वी यह चार तत्व के आधार राशियों को चार भागों में बांटा गया है। कर्क, वृश्चिक और मीन जल तत्व की राशि होती है। जल राशि के जातक भावनात्मक एवं संवेदनशील होते हैं और इनकी स्मृति शक्ति तीक्ष्ण होती है और अपने प्रियजनों के लिए की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। मेष, सिंह और धनु अग्नि तत्व की राशि होती है। इस राशि के जातक भावुक, गतिशील और मनमौजी होते हैं और इन्हें जल्दी ही ग़ुस्सा आ जाता है। परन्तु जातक साहसी, ऊर्जावान और आदर्शवादी होते हैं। मिथुन, तुला और कुंभ वायु तत्व की राशि है। इस राशि के जातक बुद्धिजीवी, मिलनसार, विचारक, और विश्लेषक होते हैं। वायु राशि के जातकों को पुस्तक पढ़ने में आनंद आता है। एवं वृषभ, कन्या और मकर पृथ्वी तत्व की राशि होती है। पृथ्वी तत्व राशि के जातक ज़मीन से जुड़े हुए, व्यवहारिक और विश्वास योग्य होते हैं। एवं जातकों को भौतिक चीज़ों से ज्यादा लगाव होता है।

राशियों का लिंग:– ज्योतिष शास्त्रों में व्यावहारिक लिंग के आधार पर भी राशियों को विभाजित किया है। मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुम्भ पुरुष लिंग राशियाँ होती है अर्थात इन्ह राशियों की प्रकृति पुरुषों जैसा है। एवं वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियाँ स्त्री प्रकृति की होती हैं।

विषमादि राशि:– ज्योतिष शास्त्रानुसार मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ विषम राशि है। एवं बृष, कर्क, कन्या, बृश्चिक, मकर और मीन सम राशि है। विषम राशि क्रूर राशि भी कहते प्रकृतिर होते हैं। एवं सम राशि सौमय प्रकृतिर होते हैं।

क्रूर सौम्य राशि:– ज्योतिः शास्त्रानुसार मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुम्भ यह सभी पुरुष और विषम राशियां क्रूर संज्ञक होती है। एवं सभी स्त्री रशिया वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन सौम्य राशि कहलाता है।

कलात्मक व् तकनिकी राशियाँ:– कर्क, वृषभ, तुला राशि कलात्मक, धनु, मीन, मिथुन, कन्या राशियाँ अर्ध तकनीकी एवं सिंह, मेष, वृश्चिक, मकर व् कुम्भ राशियाँ तकनिकी राशि होती है।

राशि तत्व

चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशि:– ज्योतिष शास्त्रों में सभी वारह राशियों को स्वभाव एवं प्रकृति के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया गया है। मेष, कर्क, तुला व मकर राशि चर राशि कहलाती हैं और वृषभ, सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ राशि स्थिर राशि होती हैं। जबकि मिथुन, कन्या, धनु व मीन राशियाँ द्विस्वाभाव राशि होती हैं। चर राशियाँ जीवन में अस्थिरता को दर्शाती हैं, चर का शाब्दिक अर्थ ही गतिमान है। इस राशि के जातक स्वभाव से चंचल और व्यक्तित्व से आकर्षक होते हैं। इसके विपरीत स्थिर राशियाँ अपने नाम के के अनुरूप स्थिर होती हैं, इन राशि के जातकों में आलस का भाव देखा जा सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात स्थिर राशि वाले लोग कोई भी कार्य जल्दबाज़ी में नहीं करते हैं। वहीं द्विस्वभाव की राशियों में चर और स्थिर दोनों राशियों के गुण होते हैं। रोगों की दृष्टि से सभी चर रशि साध्य, स्थिर राशि असाध्य एवं द्विस्वभाव राशिया कष्टसाध्य होते है।

- ✓ **चर राशि विशेष:**– चर राशि जातक को आगे की सोच, उत्साह और कुछ नया करने की ताकत देती है। इस कारण से, वे सेल्समैन, सलाहकार, व्यापारी, विपणन अधिकारी, चिकित्सा प्रतिनिधि आदि जैसे संबंधित नौकरियों जुड़े होने का ज्यादा संभावना रहता हैं।
- ✓ **स्थिर राशि विशेष:**– स्थिर राशि लोगों को प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्रयास करते रहने और अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहने की मानसिकता देने के कारण वे शोध कार्य में सफल होते हैं।
- ✓ **द्विस्वभाव राशि विशेष:**– यदि राशि द्विस्वभाव हो तो व्यक्ति निर्णय लेने में हिचकिचाता है। कई अलग–अलग कार्य एक ही समय पर शुरू और पूरे नहीं किये जा सकते। इस वजह से काम में उनकी सफलता कम होती है। इसलिए उन्हें ऊंचे पद पर काम करके आगे बढ़ने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

राशियों की दिशाएं:– मेषादि द्वादश राशि क्रमशः क्रिया वृत्ति परिभ्रमण के द्वारा दक्षिणावर्त्त पूर्वादि दिक के अधिपति होते है। जैसे: मेष, सिंह, धनु पूर्व दिशा के; वृषभ, कन्या, मकर दक्षिण दिशा के; मिथुन, तुला, कुम्भ पश्चिम दिशा के एवं कर्क, वृश्चिक और मीन राशि उत्तर दिशा के अधिपति होते है।

राशियों का दिग्बल:– सभी द्विपद राशियाँ (मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध व कुम्भ) लग्न या पूर्व दिशा में, चतुष्पद राशियाँ (मेष, वृष, सिंह, धनु का उत्तरार्ध व मकर का पूर्वार्ध) दशम या दक्षिण दिशा में, वृश्चिक राशि सप्तम भाव या पश्चिम दिशा में व जलचर राशियाँ (कर्क, मीन) उत्तर दिशा में चतुर्थ भाव में बली होती हैं अर्थात उक्त स्थानों पर इन्हें पूर्ण दिग्बल प्राप्त होता है। केन्द्र भावों में जलचर राशियों को छोड़कर कीट राशि (वृश्चिक) सन्ध्या व प्रातः समय में, द्विपद राशियाँ दिन में व चतुष्पद राशियाँ रात्रि में बली होती है।

राशियों के स्वभाव, लिंग–वर्ण, और पद चक्र

राशि	स्वभाव	तत्व	लिंग	वर्ण	पद
मेष	चर	अग्नि	पुरुष	क्षत्रिय	चतुष्पद
वृषभ	स्थिर	पृथ्वी	स्त्री	वैश्य	चतुष्पद
मिथुन	दिस्वभाव	वायु	पुरुष	शुद्र	द्विपद
कर्क	चर	जल	स्त्री	व्राह्मण	बहुपद
सिंह	स्थिर	अग्नि	पुरुष	क्षत्रिय	चतुष्पद
कन्या	दिस्वभाव	पृथ्वी	स्त्री	वैश्य	द्विपद
तुला	चर	वायु	पुरुष	शुद्र	द्विपद
वृश्चिक	स्थिर	जल	स्त्री	व्राह्मण	बहुपद
धनु	दिस्वभाव	अग्नि	पुरुष	क्षत्रिय	द्विपद
मकर	चर	पृथ्वी	स्त्री	वैश्य	चतुष्पद
कुम्भ	स्थिर	वायु	पुरुष	शुद्र	चतुष्पद
मीन	दिस्वभाव	जल	स्त्री	व्राह्मण	अपद

राशियों की त्रिगुनादि:– ज्योतिष शास्त्रानुसार मेष, वृष, मिथुन और कर्क राशि राजस प्रकृति की; सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक राशियां तमस एवं अंतिम चार रशिया धनु, मकर, कुंभ और मीन सत्व गुणी राशियां होती है।

राशियों के वर्ण:– राशियों की प्रकृति और स्वभाव को देखते हुए सभी वारह राशियों को चार वर्ण में भाग किया गया है। जैसे: कर्क, वृश्चिक, मीन ब्राह्मण वर्ण की रशिया होती है। मेष, सिंह, धनु क्षत्रिय वर्ण की; वृषभ, कन्या और मकर वैश्य वर्ण एवं मिथुन, तुला, कुम्भ शुद्र वर्ण की रशिया होती है। व्राह्मण वर्ण की राशि वाले व्यक्ति अत्यधिक कल्पनाशील, सदैव अतीत में जीने वाला, मदद करने वाला, दूसरों की सेवा करने वाला विद्वान होते है। क्षत्रिय राशि की व्यक्ति स्वतंत्र, योद्धा, रचनात्मक, आक्रामक, ऊर्जावान, लड़ाकू, उत्साही, कर्तव्यपरायण होने को दर्शाता है। वैश्य वर्ण वाले व्यक्ति भौतिकवादी, स्थिर, धनोन्मुख, व्यापारिक सोच वाला, स्थिति उन्मुख, आलोचनात्मक व् पूर्णतावादी होते है। एवं शुद्र वर्ण के व्यक्ति भ्रमित, द्वैत बुद्धि वाला, बुद्धिमान, ज्ञानी, जिज्ञासु, मददगार, दूसरों की सेवा करने वाला एवं समाज सुधारक होने का दर्शाता है।

निर्बीज व सबीज राशि:– कर्क, वृश्चिक का उत्तरार्ध, मकर, कुम्भ एवं मीन यह राशियाँ सबीज अर्थात बहु सन्तति प्रदाता या अंकुरयुक्त होते हैं। मिथुन, सिंह, कन्या, धनु यह निर्वीज राशियाँ होती हैं। मेष, वृष व तुला का पूर्वार्ध कम सन्तान राशियाँ हैं। तुला का उत्तरार्ध व वृश्चिक का

पूर्वार्ध निर्बीज अर्थात उतपत्ति क्षमता से रहित होते है। सबीज राशियों में बहुसन्तति, वृद्धि व सौभाग्य तथा निर्बीज राशि या लग्न में असफलता या कार्यनाश एवं सन्तानोत्पादन में अक्षमता होती है।

द्वादश राशियों की वीर्य, शव्द, वंध्यादि व् विषमादि

राशि	शव्द	विषमादि	वीर्य	वंध्यादि
मेष	अतिरव	विषम	समवीर्य	अल्प फलदायी
वृषभ	अतिरव	सम	मध्यवीर्य	माध्यम फलदायी
मिथुन	सरव	विषम	निर्वीर्य	माध्यम फलदायी
कर्क	नीरव	सम	मध्यवीर्य	फलदायी
सिंह	अतिरव	विषम	अतिवीर्य	अल्प फलदायी
कन्या	सरव	सम	मध्यवीर्य	अल्प फलदायी
तुला	सरव	विषम	मध्यवीर्य	अल्प फलदायी
वृश्चिक	नीरव	सम	समवीर्य	फलदायी
धनु	सरव	विषम	समवीर्य	अल्प फलदायी
मकर	अतिरव	सम	समवीर्य	अल्प फलदायी
कुम्भ	सरव	विषम	समवीर्य	माध्यम फलदायी
मीन	नीरव	सम	समवीर्य	फलदायी

मनुष्य, पशु, कीट एवं जलचर राशिः– द्विपद राशि- मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध, कुंभ राशि द्विपद अर्थात मनुष्य राशि कहलाता है। मेष, वृषभ, सिंह, धनु का उत्तरार्ध, मकर का पूर्वार्ध चतुष्पद अर्थात पशु राशियां कहलाता है। मकर का उत्तरार्ध और मीन राशि को जलचर राशि एवं कर्क और वृश्चिक राशि को कीट या सरीसृप राशि माना जाता है। जिस राशि का जैसा स्वरूप होता है वैसे ही उनका स्वभाव होता है। जन्म कुंडली में भाव, दिशा एवं काल बल को जानने में इनका विशेष उपयोग होता है।

शीर्षो व् पृष्ठोदय राशियां:– आकाश मंडल में पूर्व क्षितिज के तरफ जो राशि अपनी शिर के वल पर उदित होता है उन्हें, शिर + उदय = शिरोदय अर्थात शीर्षोदय राशि कहा जाता है। और जो राशियाँ उदय होते समय अपने पृष्ठ भाग से उदित होती हैं उन्हें पृष्ठ + उदय = पृष्ठोदय राशि कहते हैं। अर्थात पूर्वीय क्षितिज पर उदय के समय इनका पृष्ठभाग पहले उदित होता है। एवं सिर और पृष्ठ भाग से उदित होने वाले राशि को उभयोदय राशि कहा जाता हैं।

- **शीर्षोदय राशि** = सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुम्भ।
- **पृष्ठोदय राशि** = मेष, वृष, कर्क, धनु, कुम्भ।

- **उभयोदय राशि** = मिथुन एवं मीन।

शीर्षोदय, पृष्ठोदय और उभयोदय राशि का प्रयोग राशि बल और दशा बल जानने में उपयोगी है। शीर्षोदय राशियां दिन में बलवान होती है तथा मिथुन सहित 'पृष्ठोदय' राशियां रात्रि में बलवान होती है। एवं मीन राशि गोधूलि बेला में बलवान होती है। प्रश्न कुंडली में लग्न में शीर्षोदय राशि होने से कार्यसिद्धि शीघ्र होती।

लग्न में पृष्ठोदय राशि उदय होती है तब काम विलम्ब से बनता है या फिर कार्य की हानि होती है। एवं लग्न में उभयोदय राशि की उदय होती है तब शुभ ग्रह की संयोग से शीघ्र कार्यसिद्धि शीघ्र होती है और यदि अशुभ ग्रह की संयोग से कार्यसिद्धि विलम्ब से होती है। शीर्षोदय राशियाँ मूलत शुभ और पृष्ठोदय राशियाँ सामान्यतः अशुभ होती हैं। मीन राशि सदैव मिश्रित या मध्यम फलद होती है।

इसके अतिरिक्त, पृष्ठोदय राशियाँ उत्तरार्द्ध में और शीर्षोदय राशियाँ पूर्वार्ध में विशेष फलप्रद हैं, उभयोदय राशि मध्य में फलप्रद होती है। अर्थात् पृष्ठोदय राशिस्थ ग्रह सम्पूर्ण दशा के अंत में, शीर्षोदय स्थित ग्रह आदि में तथा उभयोदय मध्य में फलप्रद होते हैं। ग्रहों की दशा विचार काल में भी अगर ग्रह शीर्षोदय राशि में स्थित है तो यह विशेष रूप से दशा के पूर्वार्ध में अधिक फल देता है। यदि पृष्ठोदय है तो यह विशेष रूप से दशा के अंतिम भाग में अधिक फल देता है, यदि उभयोदय है तो यह दशा के माध्यम से फल देता है।

राशि वल

जन्म कुंडली में जो राशि अपनी स्वामी ग्रह से युक्त या दृष्ट हो अथवा बुध और गुरु ग्रहों से युख या दृष्ट हो तो वो राशि वली होती है। अन्य ग्रहों से युख या दृष्ट होने से मध्यावली एवं अपने राशि स्वामी एवं वुध और गुरु ये तीनो ग्रहों से दृष्ट होने से पूर्ण वली होता है। और यदि अपने राशि स्वामी अथवा बुध, गुरु किसी भी ग्रहों से युक्त या दृष्ट ना हो तो बलहीन होता है। कीट राशियों जलचर राशियों से बली है, जलचर से चतुष्पद राशियाँ, चतुष्पद राशियों से द्विपद राशियाँ तथा वनचर राशि उत्तोरोत्तर बली होते है।

राशियों का वर्ण

मेष राशि का स्वरूप रक्तवर्ण, वृष का श्वेत, मिथुन का तोते के समान हरित, कर्क का पाटल (गुलाबी), सिंह का धूम्र, कन्या का पाण्डु (गौर), तुला का चितकबरा, वृश्चिक का कृष्ण वर्ण, धनु का पीत, मकर का पिङ्ग, कुम्भ का बभ्रु (नेवले) के सदृश और मीन का स्वच्छ वर्ण है।

राशियों के अंग,रंग, संज्ञा और निवास चक्र

राशि	त्रिगुणादि	ह्रस्वादी	रंग	निवास स्थान
मेष	रजोगुणी	ह्रस्व	लाल	खनिज पदार्थ, रत्न, धातु, भूमि
वृषभ	रजोगुणी	ह्रस्व	श्वेत	जंगल, मैदान, खेत, गोशाला
मिथुन	तमोगुणी	सम	हरा	रतिगृह, बाग, उद्यान, नाट्यगृह, जुया
कर्क	सतोगुणी	सम	पाटल	तालाब, झील, प्याऊ पानी, कुंये
सिंह	सतोगुणी	दीर्घ	पांडूरंग	गुफा, वन, पर्वत, घन जंगल
कन्या	तमोगुणी	दीर्घ	विविध	स्त्री मनोरंजन स्थल, मैदान, वैश्यालय
तुला	रजोगुणी	दीर्घ	नीला	धन स्थान, बाजार, व्यापार केंद्र
वृश्चिक	रजोगुणी	दीर्घ	सुवर्ण	पत्थर, जहर, सर्प, कीटयो के विल
धनु	सतोगुणी	सम	पिंगल	अस्तवल, घुड़साल, शास्यशाला
मकर	तमोगुणी	सम	कबरा	नदी, नाला, जलाशय, झील, वन
कुम्भ	तमोगुणी	ह्रस्व	बभ्रुक	घड़ा, कलश, जलपात्र
मीन	सतोगुणी	ह्रस्व	मलिन	समुद्र, नदी, झील, तालाब

राशि दृष्ठि निर्णय

ज्योतिष फल कथन में सूक्ष्मता एवं सठीकता लाने के लिए, जैसे ग्रहों की दृष्ठि को प्राधान्य दिया जाता है, ऐसे ही राशि दृष्ठि को भी प्राधान्य देना चाहिए, हालाँकि राशियों की स्वतंत्र दृष्टियां नहीं होती हैं। राशियाँ स्वतंत्र रूप से अपनी दृष्टि द्वारा किसी अन्य भाव, राशि, ग्रह आदि को प्रभवित नहीं करतीं है । वे केवल अपनी राशि में स्थित ग्रहों आदि के प्रभाव को दुसरे स्थानों पर स्थानांतरित करती हैं। अतः ग्रह विहीन राशि की कोई दृष्टि नहीं हो सकती ! राशि दृष्ठि को समझने के लिए सबसे पहले अभिमुख एवं पार्श्वराशि के बारे में जानना होगा, क्यौकी सभी राशि ही अपनी अभिमुख एवं पार्श्वराशि में स्थित ग्रहों के तरफ दृष्ठि प्रदान करते है।

किसी भी चरराशि से गणना करके प्रति अष्ठम राशि, स्थिर राशि से गणना करके प्रति षष्ठ राशि और द्विस्वभाव राशि से गणना करके प्रति सप्तम राशि अभिमुख राशि होते है। एवं चर राशि से गणना करके प्रति पंचम व् एकादश राशि, स्थिर राशि से गणना करके प्रति तृतीय व् नवम राशि और द्विस्वभाव राशि से गणना करके प्रति चतुर्थ व् दशम राशि पार्श्वराशि होते है ।अर्थात चर राशि अपने पड़ोसी राशि को छोड़कर बाकी सभी स्थिर राशियों को, स्थिर राशि अपनी पड़ोसी राशि को छोड़कर बाकी सभी चर राशियों को तथा द्विस्वभाव राशि स्वयं को

छोड़कर बाकी सभी द्विस्वभाव राशियों को देखती है। उपरोक्त आधार पर प्रत्येक राशि किस किस राशि को देखती है, उसका एक तालिका निचे दिया जा रहा है।

राशि दृष्ठित अभिमुख और पर्श्वराशि

राशि	दृष्ठित राशि	राशि	दृष्ठित राशि
मेषः	सिंह, वृश्चिक तथा कुम्भ	**तुलाः**	कुम्भ, बृषभ तथा सिंह
बृषभः	कर्क, तुला तथा मकर	**वृश्चिकः**	मकर, मेष तथा तुला
मिथुनः	कन्या, धनु तथा मीन	**धनुः**	मीन, मिथुन तथा कन्या
कर्कः	वृश्चिक, कुम्भ तथा बृषभ	**मकरः**	बृषभ, सिंह तथा वृश्चिक
सिंहः	तुला, मकर तथा मेष	**कुम्भः**	मेष, कर्क तथा तुला
कन्याः	धनु, मीन तथा मिथुन	**मीनः**	मिथुन, कन्या तथा धनु

राशियों के होरा द्रेक्षान द्वादशांश और त्रिशांश

विषम राशियों में पहले सूर्य की, फिर चन्द्रमा की होरा होती है तथा सम राशियों में पहले चन्द्रमा की, फिर सूर्य की होरा बीतती है। राशि के दश अंश तक उसी राशि का द्रेष्काण होता है और उस राशि के स्वामी ही उस द्रेष्काण के स्वामी होते हैं। ग्यारह से बीसवें अंश तक उस राशि से पाँचवीं राशि का द्रेष्काण होता है और उसके स्वामी ही उस द्रेष्काण के स्वामी होते हैं। इसी प्रकार अन्तिम दश अंश (अर्थात् २१ से ३० वें अंश तक) उस राशि से नवम राशि का द्रेष्काण होता है और उसी के स्वामी उस द्रेष्काण के स्वामी होते हैं।

विषम राशियों में पहले पाँच अंश तक मङ्गल, फिर पाँच अंश तक शनि, फिर आठ अंश तक बृहस्पति, फिर सात अंश तक बुध और अन्तिम पाँच अंश तक शुक्र त्रिंशांशेश कहे गये हैं। सम राशियों में इसके विपरीत क्रम से पहले पाँच अंश तक शुक्र, फिर सात अंश तक बुध, फिर आठ अंश तक बृहस्पति, फिर पाँच अंश तक शनि और अन्तिम पाँच अंश तक मङ्गल त्रिंशांशेश होते हैं।

मेष आदि राशियों के नवमांश मेष, मकर, तुला और कर्क से प्रारम्भ होते हैं, जैसे:- मेष, सिंह, धनु के मेष से; वृष, कन्या, मकर के मकर से; मिथुन, तुला और कुम्भ के तुला से तथा कर्क, वृश्चिक और मीन के नवमांश कर्क से चलते हैं। किसी भी राशि का अपना ही नवांश वर्गोत्तम कहलाता है। चर राशियों में प्रथम, स्थिर राशियों में पंचम एवं द्विस्वभाव वाली राशियों की नवम नवांश ही अपना होता है। ढाई अंश के द्वादशांश होते हैं, जो अपनी राशि से प्रारम्भ होकर अन्तिम राशि पर पूरे होते हैं और उन-उन राशियों के स्वामी ही उन द्वादशांशों के स्वामी होते हैं।

कालपुरुष के अंग और राशि

कालपुरुष की परिकल्पना भारतीय ज्योतिष में मिलती है, जिसमें समस्त राशिचक्र को मनुष्य के शरीर के समतुल्य वर्णित किया जाता है। वैदिक संहिताओं में विराट पुरुष से संबंधित कई संदर्भ प्राप्त होते हैं। ऋग्वेद का पुरुष सूक्त इसी उदात्त विचारधारा का दिग्दर्शन है। संपूर्ण सृष्टि और सृष्टि में व्याप्त समस्त स्थावर व जङ्गम पदार्थों की उत्पत्ति का मूल कारण इसी विराट पुरुष को माना गया है। कालपुरुष के शरीर के अवयव, मानव शरीर के अवयव के समानांतर माने गये है। राशि चक्र को कालपुरुष का शरीर कहा जाता है, इसलिए प्रत्येक राशि शरीर के अंगों का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे; मेष– मस्तिष्क, वृषभ– कंठ, मिथुन– फेफड़े, कर्क– हृदय, सिंह– पेट, कन्या– आंते, तुला– वस्ति, वृश्चिक– लिंग, धनु– जंघा, मकर– घुटने, कुम्भ– पिडली, मीन– पैर।

❖ राशियों का शारीर पर प्रभाव:

- **मेष:** रंग, सिर कपाल, माथा और मस्तिष्क, बाल, पिट्यूटरी ग्रंथियां।
- **वृषभ:** चेहरा और उसके अंग, चेहरे की हड्डियाँ, ऊपरी गर्दन और उसकी हड्डियाँ, ग्रसिका, स्वरयंत्र, अनुमस्तिष्क, श्वासनली, ग्रीवा क्षेत्र और ग्रीवा हड्डियाँ, टॉन्सिल।
- **मिथुन:** गर्दन के निचले हिस्से, कंधे, भुजाएं, कान, हाथ, कंधे और कॉलर बोन, थायरॉयड ग्रंथि, श्वसन और तंत्रिका तंत्र।
- **कर्क:** पसलियाँ, हृदय, छाती, फेफड़े और स्तन।
- **सिंह:** ऊपरी पेट, आमाशय, यकृत, पित्ताशय, अग्न्याशय, प्लीहा, बृहदान्त्र, डायाफ्राम, रीढ़ और मेरुरज्जु, गर्भावस्था।
- **कन्या:** कमर, नाभि, पेट के निचले हिस्से, गुर्दे, छोटी आंत, बड़ी आंत का ऊपरी हिस्सा, आंतों का कार्य, अपेंडिक्स।
- **तुला:** पेल्विक करधनी, कटि क्षेत्र, मूत्राशय, बड़ी आंत का निचला भाग, आंतरिक यौन अंग जैसे अंडाशय, गर्भाशय, गर्भाशय ग्रीवा, अंडकोष और प्रोस्टेट ग्रंथि।
- **वृश्चिक:** अंडकोश और गुदा, बाहरी यौन अंग, उत्सर्जन अंग, श्रोणि हड्डियां।
- **धनु:** जांघें, बायां पैर, जांघ की हड्डियां, अस्थि मज्जा, कूल्हे, कूल्हे के जोड़ और धमनी प्रणाली।
- **मकर:** घुटने और घुटनों की टोपियां, जोड़ एवं हड्डियां।
- **कुंभ:** पैरों के निचले हिस्से, पैरों में दर्द, रक्त की कम उत्पादकता की समस्या।
- **मीन:** बायीं आंख, लसीका तंत्र और पैर।

राशियो के साथ रंगों का संबंध

ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार, प्रत्येक राशि का एक बिशिष्ट रंगों के उपर अपना अधिकार होता है, और उस रंग को उस राशि के लिए शुभ माना जाता है। इन रंगों को पहनने से, घर की सजावट में इस्तेमाल करने से या अन्य किसी भी तरह से अपने आस-पास रखने से उस राशि के लोगों को शुभता प्राप्त होने की मान्यता है।

राशियो के अनुकूल रंग

मेष = लाल, पीला, नारंगी	**तुला** = सफेद, नीला, हरा
वृषभ = सफेद, गुलाबी, नीला	**वृश्चिक** = लाल, पीला, नारंगी
मिथुन = हरा, नीला, पीला	**धनु** = पीला, नारंगी, सुनहरा
कर्क = सफेद, हरा, नीला	**मकर** = नीला, काला, गहरा हरा
सिंह = पीला, सुनहरा, लाल	**कुंभ** = नीला, काला, गहरा हरा
कन्या = हरा, नीला, सफेद	**मीन** = पीला, सुनहरा, गेरुया

द्वादश राशियो की कारकत्व

मेष राशि :– इस राशि का स्वामी मंगल है, तथा यह राशि पूर्व दिशा का अधिपति है। यह राशि पुरुष-जाति, लाल–पीले वर्ग, वर्ण कांतिहीन, क्षत्रिय वर्ण, अग्नि तत्व वाली, चर संज्ञक, बलवान, दिवा वली, अरुण वर्ण, विषम, क्रूर, तप्तदेह, ह्रस्व, अतिरव, मेष शाला, पर्वत, गुहा, चौरस्थान, अग्नि संनिवेस्तिथ स्थान, रत्नादिस्थान, धातुर आकर, पृष्ठोदय, वस्त्र, कम्वल, मसूर, गोधूम, शालवृक्ष, यव, औशधियों, समान अंगों वाली, अल्प सन्ततिवान तथा पित्त प्रकृति कारक है।

वृषभ राशि:– इस राशि का स्वामी शुक्र है, तथा यह दक्षिण दिशा का अधिपति है। यह राशि स्त्री जाति, श्वेत वर्ण, कान्तिहीन, वैश्य वर्ण, भूमि तत्व वाली, सौम्य, रात्रि, सम, पृत्वी तत्व, युग्म, स्थिर संज्ञक, वन, पर्वत, कृषि भूमि, चतुष्पद, पृष्ठदयशील, वस्त्र, कुसुम, गोधूम, शालिधान्य, गाय, महिष, शिथिल शरीर, शुभकारक तथा महाशब्दकारी है। इसका स्वभाव स्वार्थी, सांसारिक कार्यों में दक्षता तथा बुद्धिमत्ता से काम लेने का है। एवं वृषभ राशि को अर्द्ध जलराशि भी कहा जाता है।

मिथुन राशि:– इस राशि का स्वामी बुध है। पश्चिम दिशा का अधिपति है। यह राशि पुरुष जाति, द्विपदी, त्रिदोषविशिष्ठ, हरित वर्ण, धान्य, शरद ऋतु द्रव्य लता गुल्म, कार्पस, नर्त्तक, गायक, शिल्प व्यवसायी, स्त्रीसानिध्य, जुआ, रतिक्रीडा, चिकनी, शूद्र वर्ण, पश्चिम, वायु तत्व वाली, ऊष्ण, महाशब्दकारी, मध्यम संतति वाली, क्रूर, सम, द्विस्वभाव, दिवाधिपति, शिथिल तथा विषमोदयी है।

कर्क राशि:– इस राशि का स्वामी चंद्रमा है। यह उत्तर दिशा का अधिपति है। यह राशि स्त्री जाति, रक्त धवल मिश्रित (पाटल) वर्ण, चर, जलचारी, सौम्य तथा कफ प्रकृति वाली, धान्यक्षेत्र, जलाशय, आइल, नदीतीर, देवस्थान, वालुकामय स्थान, आंगन, रम्यस्थान, स्निग्ध शरीर, हीनरव, दृढ़ शरीर, कफ प्रकृति, कोद्रव, कदली, दूर्वा, फल, बहुसंतान एवं चरण रात्रिबली है। इसका स्वभाव लज्जाशील, सांसारिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना तथा समय के अनुसार चलना है।

सिंह राशि: इस राशि का स्वामी सूर्य है। यह पूर्व दिशा का अधिपति है। यह राशि पुरुष जाति, पीत वर्ण, विषम, स्तिर, दिवा वली, क्षत्रिय वर्ण, पित्त प्रकृति, वन, गुहा, दुर्गम स्थान, पर्वत, शिकारी, अग्निस्थान, चतुष्पाद, तुष, धान्यरस, गुड़, अग्नि तत्व वाली, ऊष्ण स्वभाव, पुष्ट शरीर, यात्राप्रिय, अल्प सन्तानविद् तथा निर्जल है।

कन्या राशि: इस राशि का स्वामी बुध है एवं यह दक्षिण दिशा का अधिपति है। यह राशि स्त्री जाति, पिंगल(विचित्र) वर्ण, द्विपद, अर्द्धरव, भूमिचर, घास, स्त्री सानिध्य, रति क्रीड़ा, शिल्पस्थान, अतसीपुष्प, कलाय, वायु तथा शीत प्रकृति, सौम्य, सम, युग्म, द्विस्वभाव विशिष्ठ, पृथ्वी तत्व वाली, रात्रिबली तथा अल्प सन्तति वाली है।

तुला राशि: इस राशि का स्वामी शुक्र है। यह पश्चिम दिशा का अधिपति है। यह राशि पुरुष जाति, श्याम वर्ण, चर संज्ञक, शूद्र वर्ण, वायु तत्व वाली, त्रिदोष प्रकृति, अल्प स्त्रीसंग, द्विपद, शुर, शिथिल व् स्निग्धशरीर, शव्दबिहीन, दिनबली, रास्ता, बाजार, शस्यक्षेत्र, वणिक, धनाढ्य, उच्चभूमि, मासकलाई, गोधूम, यव, सर्षप, क्रूर स्वभाव, शीर्षोदयी, विषम, चर, अल्प सन्ततिवान तथा पादजल राशि है।

वृश्चिक राशि: इस राशि का स्वामी मंगल है। यह उत्तर दिशा का अधिपति है। यह राशि स्त्री जाति, शुभ वर्ण, कफ प्रकृति, हीनरव, कफप्रकृति, कीट, सरीसृप, मलयुक्त स्थान, विषस्थान, प्रस्तरमय, गर्त्त, इक्षु, लौह, ब्राह्मण वर्ण, रात्रिबली, बहु सन्ततिवान, सम, स्थिर तथा अर्द्धजल तत्व वाली है। इसका स्वभाव स्पष्टवादी, निर्मल, दृढ़ प्रतिज्ञ, हठी तथा दम्भी है।

धनु राशि: इस राशि का स्वामी गुरु है। यह पूर्व दिशा का अधिपति है। यह राशि पुरुष जाति, स्वर्ण (पिंगल)वर्ण, द्विस्वभाव, विषम, क्षत्रिय वर्ण, दिनबली, अतिरव, अल्प स्त्रिसंग, पूर्वभाग

द्विपद, समतल भूमि, पक्षी, अश्व, शुर, अस्त्रधारी, युद्धक्षेत्र, रथ, हवनकुंड, नमक, अम्वर, टिल, धान, मूल, पित्त प्रकृति, अग्नि तत्व वाली, अल्प सन्ततिवान, दृढ़ शरीर तथा अर्द्धजल तत्व वाली राशि है। इसका स्वभाव करुणामय, मर्यादाशील तथा अधिकार प्रिय है।

मकर राशि: इस राशि का स्वामी शनि है। यह दक्षिण दिशा का अधिपति है। यह राशि स्त्री जाति, पिंगल वर्ण, रात्रिबली, वैश्य वर्ण, चर, सम, पृथ्वी तत्व वाली, अर्द्धरव, वायु प्रकृति, पुर्वार्धे चतुष्पाद, जलाशय समीप स्थान, नाला, नर्दमा, वन, तरु, गुल्म, इक्षु, स्वर्ण, लौह, शिथिल शरीर तथा वात प्रकृति वाली है। इसका स्वभाव उच्च स्थिति का अभिलाषी है।

कुंभ राशि: इस राशि का स्वामी शनि है। यह पश्चिम दिशा का अधिपति है। यह राशि पुरुष जाति, स्त्रीसंग प्रिय, त्रिदोष, दृढ़ अंग, स्निग्ध शारीर, विचित्र वर्ण, वायु तत्व वाली, शूद्र वर्ण, स्थि, विषम, ऊष्ण स्वभाव, अर्द्धजल, मध्यम संतान वाली, शीर्षोदय, पक्षी, शस्य क्षेत्र, गन्दगी स्थान, शराव, जुया, वेश्यालय, पाशा खेला, फुल, चित्र, क्रूर तथा दिनबली है। इसका स्वभाव शांत, विचारशील, धार्मिक तथा नवीन वस्तुओं का आविष्कारकर्ता है।

मीन राशि: इस राशि का स्वामी गुरु है। यह उत्तर दिशा का अधिपति है। यह राशि स्त्री जाति, कफ प्रकृति, पिंगल वर्ण, सम, मलिन वर्ण, युग्म, जल तत्व वाली, ब्राह्मण वर्ण, अति स्त्री संग प्रिय, पदहीन, पुण्यस्थान, नदी, जलाशय, माणिक्य, रौप्य, स्नेहद्रव्य, मत्स्य, कफ प्रकृति तथा रात्रिबली है। यह पूर्ण रूप से जल राशि है, इसका स्वभाव दयालु, दानी तथा श्रेष्ठ है।

राशियों के अनुसार स्वभाव और व्यकित्य

मेष राशि:– मेष राशि के जातक नेतृत्व गुणों से परिपूर्ण होते हैं और हमेशा पहल करने के लिए तत्पर रहते हैं। इनकी निर्भीकता और स्वतंत्रता इन्हें विशेष बनाती है। मेष का स्वामी मंगल ग्रह, पराक्रम और उत्साह का प्रतीक है, जिससे ये जीवन में साहस से आगे बढ़ते हैं। यह लोग आकर्षक, कलात्मक और निडर होते हैं। इनके स्वभाव में गुस्सा होता है, लेकिन ये जल्दी मान भी जाते हैं। अग्नि तत्व की राशि होने के कारण इनकी पाचन शक्ति अच्छी होती है, फिर भी एसिडिटी से प्रभावित हो सकते हैं। इनकी घूमने–फिरने की प्रवृत्ति और तेज स्मरण शक्ति होती है। ये परोपकारी, साहसी और रचनात्मक होते हैं, जो सभी का दिल जीत लेते हैं। मेष राशि की महिलाएं व्यवसायिक क्षेत्र में सक्रिय रहना पसंद करती हैं और कला के प्रति आकर्षित होती हैं।

वृषभ राशि:– वृषभ राशि के लोग सहनशील और धैर्यवान होते हैं, जो स्थिरता के साथ कार्य करते हैं। उनका स्वभाव ठंडा होता है और वे निर्णय लेने में संकोच कर सकते हैं। सामान्यतः ये कलात्मक होते हैं और भौतिक चीजों की ओर अधिक आकर्षित रहते हैं। वृषभ राशि के जातक आमतौर पर देखने में सुंदर होते हैं और व्यवहार में रसिकता के साथ दिखावे को पसंद करते हैं। वे संघर्षशील और स्वाभिमानी होते हैं, जिनके अच्छे मित्र और गुरु होते हैं। छोटे–छोटे कामों पर लंबे समय तक विचार करते हैं और सुखद जीवन जीते हैं। ये लोग बैंकिंग, भवन–निर्माण और कला से जुड़े व्यवसायों में सफल होते हैं। महिलाएं अच्छी गृहणी बनती हैं और नई चीजों के अध्ययन में रुचि रखती हैं। वृषभ राशि के लोग सच्चे होते हैं और अनुशासन का पालन करना पसंद करते हैं।

मिथुन राशि:– मिथुन राशि के लोग स्थिरता पसंद नहीं करते और द्विस्वभाव के कारण निर्णय लेने में कठिनाई महसूस करते हैं। ये कलात्मक और पढ़ाई में कुशल होते हैं, अक्सर लेखक या कवि बनते हैं। इनकी सोच सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होती है और ये बातचीत में चतुर होते हैं। इनका व्यक्तित्व मधुर, दयालु और बुद्धिमान होता है। वे अक्सर लंबे कद और आकर्षक चेहरे के होते हैं। मिथुन राशि के जातक चंचल और सामाजिक होते हैं, लेकिन कभी–कभी साहस की कमी भी महसूस करते हैं। ये नौकरी को प्राथमिकता देते हैं और आर्थिक मामलों में सफल हो सकते हैं। घरेलू और व्यावसायिक तनाव के कारण चिंतित रहते हैं, फिर भी संकट में अपने हितों की रक्षा करते हैं। इनका जीवन परिवर्तन और भ्रमण से भरा होता है, और इन्हें अनिंद्रा और पेट की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क राशि:– कर्क राशि के व्यक्ति भावुक और चंचल होते हैं, जिनमें संयम की कमी होती है। ये कफ प्रवृत्ति के होते हैं और धार्मिकता में रुचि रखते हैं। जलीय वस्तुओं को पसंद करने वाले कर्क जातक आमतौर पर सुंदर और आकर्षक होते हैं, जिनका व्यवहार मिलनसार और

कल्पनाशील होता है। कला, संगीत और साहित्य में उनकी गहरी रुचि होती है। ये लोग परिस्थितियों के अनुसार ढल जाते हैं, ईमानदार और दयालु होते हैं। यदि चंद्रमा शुभ हो, तो वे बुद्धिमान और संवेदनशील होते हैं, लेकिन अशुभ स्थिति में चिड़चिड़े बन सकते हैं। कर्क जातक दूसरों की भावनाओं को जल्दी समझ लेते हैं, लेकिन तुलना करने पर नाराज हो जाते हैं और कभी-कभी जिद्दी भी हो सकते हैं। उनकी कल्पनाशक्ति प्रबल होती है और आय के साधन एक से अधिक होते हैं।

सिंह राशि:- सिंह राशि के लोग जल्दी गुस्सा हो जाते हैं, लेकिन फिर जल्दी शांत भी हो जाते हैं। पित्त प्रवृत्ति के कारण इनकी पाचन शक्ति अच्छी होती है। ये नेतृत्व करने में सक्षम होते हैं और आमतौर पर एक जगह टिक कर काम करते हैं। उनका स्वाभिमान और प्रभावशाली व्यक्तित्व होता है, और वे बड़े कामों से डरते नहीं हैं। सिंह जातक अक्सर सरकारी पदों या उच्च स्तर की जिम्मेदारियों में होते हैं। उनका शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है, और वे उधमी, कर्मठ, स्वतंत्र विचार वाले होते हैं। इन्हें खाने-पीने का शौक होता है और वे अक्सर यात्रा करते हैं। वे छोटी-छोटी बातों को नजरअंदाज करते हैं, लेकिन बड़े कार्यों में तत्पर रहते हैं। उच्च भिलाषा के चलते ये खर्च करने में पीछे नहीं रहते। सिंह राशि की कन्याएं आकर्षक और स्वास्थ्य से भरपूर होती हैं।

कन्या राशि:- कन्या राशि के जातक समझदा, धैर्यवान और शांत स्वभाव के होते हैं। कठिन परिस्थितियों में ये घबराते नहीं हैं। इनकी सोच में सकारात्मकता और नकारात्मकता दोनों होती हैं, और ये अकाउंटेंट, बैंकिंग, ट्रेडिंग, अध्यापन और ज्योतिष में रुचि रखते हैं। कन्या जातक अपनी वाणी और वाक् शक्ति में कुशल होते हैं। वे प्रियभाषी, सहायक, लज्जाशील और नीति के अनुसार काम करने वाले होते हैं। ये लोग कल्पनाशील और संवेदनशील होते हैं, लेकिन स्थिरता में कमी के कारण एक ही विषय पर ज्यादा समय नहीं बिता पाते है। संगीत, कला और साहित्य में इनकी विशेष रुचि होती है। पढ़ने-लिखने का उन्हें बहुत शौक होता है, लेकिन आलस्य के कारण कभी-कभी काम में देरी कर देते हैं।

तुला राशि:- तुला राशि के जातक सौम्य, भावुक और घूमने-फिरने के शौकीन होते हैं। हालांकि, वे एक जगह टिक नहीं पाते और निर्णय लेने में कुछ कमजोर होते हैं। इनकी कला और सुंदरता के प्रति रुचि होती है और ये न्यायप्रिय भी होते हैं। तुला जातक आमतौर पर मध्यम या लंबे कद के, सुंदर और हंसमुख होते हैं। ये नए मित्र बनाने में कुशल होते हैं और संगीत, कला और नाट्य के प्रति आकर्षित रहते हैं। चंद्र-शुक्र के शुभ प्रभाव से उनकी मानसिक और कल्पनाशक्ति प्रबल होती है, लेकिन ध्यान बनाए रखना मुश्किल होता है। ये लोग जीवन में संतुलन पसंद करते हैं, अच्छे बिजनेसमैन होते हैं और यात्रा से लाभ उठाते हैं। तुला के जातक

प्यार में पूरी तरह खो जाते हैं और अनुशासन का पालन करना पसंद करते हैं। वे सही निर्णय लेने में माहिर होते हैं और बेवजह की बहसों से दूर रहते हैं।

वृश्चिक राशि:– वृश्चिक राशि के जातक स्थिर प्रवृत्ति के होते हैं और बदला लेने में पीछे नहीं हटते है। इनके अन्दर प्रतिशोध की भावना ज्यादा होती है। यह जिद्दी, परिश्रमी, ईमानदार और साहसी होते हैं, और अपने निर्णय खुद लेते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के कारण ये जो सोचते हैं, वही करते हैं। वृश्चिक जातकों को अनुसंधान, पुलिस, साधना और खाना बनाने का काम पसंद होता है। वे गहराई में जाकर चीजों को समझते हैं और सही समय पर अपने ज्ञान का उपयोग करते हैं। यदि मंगल शुभ हो, तो ये उत्साही, परोपकारी, और स्पष्टवादी होते हैं। इनकी आय का साधन निजी मेहनत से होता है और वे जल्दी उत्तेजित हो जाते हैं, लेकिन सच्चाई के लिए स्वार्थ का बलिदान देने में पीछे नहीं हटते है। ये केमिस्ट, वकील और इंजीनियरिंग में सफल होते हैं, और हर कार्य को गंभीरता से लेते हैं। वृश्चिक जातक गहरे रहस्य छुपा सकते हैं और उनके मन की बात समझना कठिन होता है।

धनु राशि:– धनु राशि के व्यक्ति ज्ञानी और समझदार होते हैं, लेकिन जल्दी गुस्सा करते हैं। ये लोग धार्मिक और परोपकारी होते हैं, और निर्णय लेने से पहले नकारात्मक और सकारात्मक पहलुओं पर विचार करते हैं। धनु जातक अध्यापक, धर्म प्रचारक, वकील और पुस्तक व्यवसाय में सफल होते हैं। इनमें दूरदर्शिता होती है और वे हमेशा भलाई के लिए तत्पर रहते हैं। जब ये क्रोधित होते हैं, तो जल्दी मान भी जाते हैं। अगर गुरु और बुध की स्थिति शुभ हो, तो वे सौम्य, सरल और दयालु होते हैं। इनकी बौद्धिक क्षमता और कार्य करने की तीव्रता भी प्रभावशाली होती है। द्विस्वभाव के कारण ये जल्दी निर्णय नहीं ले पाते, लेकिन जब गुस्सा करते हैं, तो लंबे समय तक बेचैन रहते हैं। धनु जातक आशावादी और धार्मिक होते हैं, स्वतंत्रता पसंद करते हैं, और अपने पार्टनर के प्रति रोमांटिक होते हैं एवं उन्हें खर्च करने का भी शौक होता है।

मकर राशि:– मकर राशि के जातक शांत, धैर्यवान और सहनशील होते हैं, लेकिन इनमें लोभ की प्रवृत्ति भी होती है। ये गहन विचार करने वाले और क्षमाशील होते हैं, साथ ही अच्छे व्यापारी भी होते हैं। हालांकि, चर राशि के कारण एक जगह टिक कर कार्य करना मुश्किल होता है। इनका व्यवहार ईमानदार होता है, और वे भली–बुरी बातों को पहचानने में सक्षम होते हैं। आमतौर पर ये लोग एकांतप्रिय और गंभीर होते हैं, तथा तपस्या को पसंद करते हैं। अगर बुध और शुक्र की स्थिति शुभ हो, तो ये महत्वपूर्ण निर्णय गहन विचार के बाद लेते हैं। मकर जातक विनयशील, व्यवहार–कुशल और तर्कशील होते हैं। वे मित्रता स्थापित करने में सावधानी बरतते हैं, लेकिन अपने विरोधियों के प्रति क्षमा करना उनके लिए कठिन होता है। स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहना इनकी भलाई के लिए जरूरी है। ये लोग जो भी काम करते हैं, उसे पूरा करने में लगे

रहते हैं और अनुशासन से कार्य करते हैं, लेकिन जिद्दी भी होते हैं। आर्थिक मामलों में समझदारी और सूझ–बूझ से कदम बढ़ाते हैं।

कुम्भ राशि:– कुम्भ राशि के जातक शांत, कल्पनाशील और विचारों में खोए रहते हैं। ये दयावान, निस्वार्थ और स्वतंत्रता के प्रति प्रेमी होते हैं, साथ ही देश–विदेश घूमने के शौकीन भी। इनका झुकाव सेल्स, कानून या न्याय की ओर होता है, लेकिन आर्थिक संघर्ष का सामना करते हैं। कभी–कभी ये दिखावे और आडंबर में भी पड़ जाते हैं। उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली और मिलनसार होता है, और वे बुद्धिमान, साधन–सम्पन्न तथा गंभीर प्रकृति के होते हैं। ये दूसरों के प्रति दयाभाव रखते हैं और परोपकार में तत्पर रहते हैं। कुम्भ जातक उद्योगी और मेहनती होते हैं, इनमें प्रबंधकीय योग्यता होती है। ये महत्वाकांक्षी होते हैं और जीवन में उच्च स्थिति पाने के लिए कई बाधाओं का सामना करते हैं। इनके अंदर कलात्मकता होती है, और ये अक्सर विद्रोही विचारों के साथ हटकर सोचते हैं। भावुकता भी इनमें पाई जाती है, जिससे ये जल्दी प्रभावित होते हैं।

मीन राशि:– मीन राशि के जातक गंभीर, बुद्धिमान और धार्मिक होते हैं। उन्हें साहित्य और कला में गहरी रुचि होती है और वे जल के निकट रहना पसंद करते हैं। ये कलाकार, अध्यापक और ज्योतिषी के रूप में सफल होते हैं। इनकी सोच में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू होते हैं। ये शांतिप्रिय, विवेकी और धार्मिक पुस्तकों में रुचि रखने वाले होते हैं, लेकिन कभी–कभी निर्णय लेने में असमर्थ भी हो सकते हैं। मीन राशि वाले जातक परोपकारी, सत्यप्रिय और उच्चाकांक्षी होते हैं। उनकी स्वाभिमान और प्रतिष्ठा का ख्याल रहता है, ये दूसरों के प्रति सहायक और विश्वसनीय होते हैं, और किसी भी परिस्थिति में खुद को ढालने की क्षमता रखते हैं। इनका झुकाव समाज सुधारक और अध्यापन के कार्यों की ओर होता है, और वे आदर्शवादी होते हैं। मीन राशि के जातक स्वभाव से दयालु होते हैं, जिससे लोग उन्हें पसंद करते हैं। ये बुद्धिजीवियों के बीच रहना पसंद करते हैं और हर परिस्थिति को आसानी से सुलझाने की क्षमता रखते हैं।

राशियों से रोग विचार

- **मेष**: मेष राशि शरीर के सबसे ऊपरी भाग का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए मस्तिष्क रोग, सिरदर्द, लकवा, मिर्गी, नेत्र रोग, मुख रोग, मानसिक तनाव, उन्माद और अनिद्रा जैसी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। चेचक, कोमा, मुर्छा, सूजन, चोट और दुर्घटना होने का भी संभावना रहता है।
- **वृष:** वृषभ राशि का स्थान आंख, नाक, श्वास नली के भाग में माना गया है। कान, थायरॉइड ग्लैंड, टॉन्सिल, पायरिया, लकवा, जीभ के रोग, पाइल्स, फिस्टुल, टॉन्सिल्स,

गुंगापन, डिप्थेरिया, मासिक धर्म में अनियमितता, स्वाँस रोग, गर्दन रोग (सरवाइकल), श्वासनली, आंख, नाक और गले से संबंधित रोग की आशंका रहती है।

- **मिथुन:** मिथुन राशि हाथों का प्रतिनिधित्व करती है। जीव, मज्जा, रक्त विकार और चर्म रोग, श्वास और फुफ्फुस की रोग होने की आशंका रहती है। सिरदर्द व रक्तचाप संबंधी बीमारियों, नर्व सिस्टम, थाइराइड, रीढ़ संबंधित रोग, स्वर ग्रंथि रोग, भुजा एवं कंधों में कष्ट, नाड़ी रोग, गर्भाशय, स्वाँस नली से संबंधित रोग, किडनी से जुड़ी समस्या हो सकता है।
- **कर्क:** कर्क राशि शरीर के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से हृदय का प्रतिनिधित्व करता है। कर्क राशि पीड़ित होने के कारण रक्त विकार, स्तन कैंसर, चेचक, हृदरोग, गर्भाशय रोग, दिमागी रोग, नेत्र विकार, अपचन, बलगम, जलोदर रोग, हिस्टेरिया, हाइपोकोंड्रिया, पौलिया, पित्त रोग, कार्सिनोमा पेट व पाचन–तंत्र से जुड़े रोग होने की आशंका रहती है।
- **सिंह:** सिंह राशि पेट का प्रतिनिधित्व करता है। इस राशि के कारण पेट से संबंधित समस्याएं और वायु विकार हो सकता है। मेद वृद्धि, उदर शूल, लीवर समन्धित रोग, डायबीटीज, दिल से जुड़े समस्या होने की आशंका रहती है। चक्कर आना, मुर्छा रोग, रक्त की कमी, कोलेस्ट्रोल, मानसिक रोग इसके अलावा रीढ़ की हड्डी से जुड़ी बीमारी या चोट लगने का भी खतरा रहता है।
- **कन्या:** कन्या राशि का कमर से संबंध होता है। इस राशि के कारण आमाशय के रोग, अपच, मन्दाग्नि, अपेन्डिक्स, कब्ज, कमर और शरीर दर्द की समस्या हो सकती है। हड्डी, मांसपेशियों, पेट का निचला भाग, पाचन अंगों में गडबड़ी, बड़ी आँत, पीलिया, आंत्र–ज्वर, हैजा, अपेंडिसाइटिस, डाईरिया, फेफड़ो से संबंधित रोग होने की आशंका रहती है।
- **तुला:** तुला राशि की वजह से मूत्राशय के रोग, मधुमेह, प्रदर एवं अत्यधिक पेशाब की समस्या हो सकती है। हर्निया, किडनी, यूट्रस, गुर्दे, गर्भाशय, अग्न्याशय, पीठ का नीचला भाग, आंत से लेकर जांघ तक शरीर के विभिन्न हिस्सों से संबंधित रोगों के होने की आशंका रहती है। इसके अलावा अस्थमा, फ्लू, एलर्जी, पीठ दर्द, कमर दर्द और हड्डियों से जुड़े वीमारी, मूत्र संबंधी रोग, पोलियुरिया, गठिया, फंगस रोग, चर्मरोग, रक्त संबंधी रोग, रतौंधी इत्यादि भी हो सकते हैं।
- **वृश्चिक:** वृश्चिक राशि गुप्तांग का प्रतिनिधित्व करती है। इस राशि के कारण गुप्तरोग, मोटापा, भगंदर, बबासीर, एडस और गुप्त रोग से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं। पाइल्स, फिस्टुला, रेक्टम (गुदा द्वार), ब्लाडर–स्टोन, अनियमित मासिक, नितम्ब रोग, यकृत में पथरी, अण्डकोष एवं फफून्दी सक्रमण, पाचन संबंधी रोग, अवसाद, अनिद्रा, प्रजनन, मूत्र, रक्त संबंधी रोगों के होने की आशंका रहती है।

- **धनु:** धनु राशि के कारण यकृत रोग या लीवर से जुड़ी समस्या, रक्त दोष, हड्डी टूटने और मज्जा रोग हो सकती है। गठिया रोग, साइटिका, नशों की लत लगना, कॉलर–बोन फ्रैक्चर, पेल्विक ऑपेरेशन, जाँघों में कष्ट, नितंब, कूल्हे, जांघों, नर्वस सिस्टम, त्वचा व लिवर के रोग होने की आशंका रहती है।
- **मकर:** मकर राशि की वजह से वातरोग, चर्मरोग, शीतरोग और रक्तचाप की समस्या हो सकती है। हृदय रोग, पैरों की हड्डी टूटना या गंभीर चोट, बाल झडना, चर्म रोग, जोड़ों का दर्द, ऐडी एवं घुटनों से संबंधित परेशानी, पेट, गुर्दा रोग, मस्तिक रोग, गठिया रोग, रक्त संबंधी रोग, नाखून से संबंधित रोग होने की आशंका रहती है।
- **कुंभ:** कुंभ राशि की वजह से मानसिक रोग, शरीर में गांठ, गर्मी, जलोदर, ऐंठन, वाम कंधा, कान एवं आँख आदि में समस्या हो सकती है। मोतियाबिंद, थाइरॉइड, पैरॉथाइरॉइड, टॉक्सिमिया–कॉलोन, ब्लड सर्कुलेशन से जुड़े रोगों के साथ–साथ कैंसर, संक्रमण जनित रोग, गले संबंधी इन्फेक्शन, नर्वस सिस्टम से जुड़े रोग और पैरों में कष्ट फ्रैक्चर होने की आशंका रहती है।
- **मीन:** मीन राशि के कारण व्यक्ति को एलर्जी, गठिया, चर्मरोग और रक्त विकार की समस्या होने की आशंका रहती है। आंख संबंधी रोगों, फेफड़े की समस्या, अस्थमा, पेट की बीमारी, अल्सर, पैरों की उंगलियों से जुड़े रोग, जोड़ों का दर्द, ट्यूमर, ऐड़ी, तलवा, अंगूठे से संबंधित रोग, कब्ज़, जलोदर, पीलिया, सिरॉसिस, हॉइपो इनसुलिनिस्म, हर्नियाँ आदि रोग होने की संभावना रहती है।

राशियों के अनुसार जीविकाए

मेष राशि:– इस राशि वालों के लिए भूमि, अग्नि, सेना, पुलिस, सशस्त्र बल, शस्त्र विधुत विभाग में सफलता प्राप्त होती है। इसके अलाभा जातक खिलाड़ी, व्यापारिक संगठन के नेता, अत्यधिक अधिकार वाले कुख्यात और शक्तिशाली लोग, शराब का व्यवसाय, दंत चिकित्सक, न्यायिक कार्य, उपकरण, मशीनरी/हार्डवेयर, मैकेनिक, उद्योग, कृषि, औषधियाँ, रसायन, सर्जन, जुआ, शेयर मार्किट, बागवानी, आविष्कारक, वास्तुकला, धातु कार्य, उर्वरक विक्रेता, इंजीनियर, कसाई, सट्टेबाजी, लॉटरी, वैज्ञानिक, शल्य चिकित्सक, दंकारखाना कर्मचारी, वकील, वक्ता, अभिनेता (नाटक), अग्निशमन दल, प्रबंधक, निदेशक, मजिस्ट्रेट आदि से संबंधित नौकरियों को दर्शाता है। बैंक, जीवन विमा, स्वस्थ केंद्र, शिक्षा प्रतिष्ठान, विद्युत् विभाग, बिल्डिंग क्रय–विक्रय, नर्सरी, कानूनी मामले, इवेंट मैनेजमेंट, चिकित्सा, फार्मेसी, पशम, पत्थर, लकड़ी, सुगंध द्रव्य, रासायनिक द्रव्य, प्रकाशना आदि क्षेत्रों में आसानी से सफल हो सकते हैं।

वृषभ राशि:– इस राशि वालों को कपड़ा, सोना–चांदी रत्न, घर के सजावट से जुड़े कार्य करना चाहिए । सेना में इंजीनियर, वाणिज्यिक इकाई, वित्त प्रबंधक, लेखाकार, बैंक, साहूकार, विलासिता की वस्तुओं का व्यवसाय, सिविल सेवक, खाद्यान्न, फल, बागवानी, पशुपालन, वेश्यालय, होटल, मूर्तिकार, जौहरी, बिल्डर/निर्माता, प्रॉपर्टी डीलर, ललित कला, गायक, कैशियर, फाइनेंसर, फैशन आइटम, सौंदर्य प्रसाधन, आभूषण, संगीतकार, वादक, कृषि, सिनेमा, मॉडल, थिएटर, वाहन, मानसिक गतिविधियों सहित बौद्धिक क्षेत्र, विज्ञापन जगत, ग्लैमर की दुनिया, फिल्म निर्माण, निर्देशन और अभिनय के साथ लेखन, मार्केटिंग, सफेद वस्तुओं के व्यापार, हीरा उद्योग, बैंकिंग, संगीत, हवाई यात्रा से संबंधित कार्य, ब्यूटी पार्लर, रेल, टेलीफोन, बंदरगाह, जीवन विमा, अस्त्र कारखाना, इंजीनियरिंग, वस्त्र, इट, सुरकी, सीमेंट, मत्स्य, मिटटी, मनोहारी द्रव्य, चिकित्सा आदि उत्तम रहता हैं।

मिथुन राशि:– इस राशि के लोग अध्यापक, प्रध्यापक, कवि, संगीतकार, प्रवचनकर्ता, ज्योतिषी, गणितज्ञ जिओलॉजी, अकाउंटनट, होटल मैनेजमेंट, शिक्षा, चिकित्सक, आयकर विभाग, स्वास्थ्य, इंजीनियरिंग, कागज, सूदखोर, खनिज द्रव्य, इमारती, फाइनेंस, बैंकिंग के विषय चुन सकते हैं। शिक्षक, प्रवक्ता, लेखक, इंजीनियर, अंतरिक्ष अनुसंधान, सचिव, टेलीफोन ऑपरेटर, आयात–निर्यात, सूती वस्त्र उद्योग, रत्न, पत्रकारिता, प्रेस और प्रकाशन, ट्रैवल एजेंट, वाणिज्यिक यात्री, हवाई यात्रा, वायु सेना, समुद्र, शिपिंग, डाकिया, टिप्पणीकार/आलोचक, डॉक्टर, मानसिक गतिविधि से जुड़े बौद्धिक कार्य कर सकते है। दुभाषिया, भाषाविद, अनुवादक, कानून, व्यवसाय, लेखाकार, लेखा परीक्षक, संचार संबंधी कार्य जैसे डाक, रेलवे, परिवहन, शेयर बाजार, कमोडिटी, सोना–चांदी के बिजनेस, वकालत, सेल्स, जीवन बीमाआदि के बहुत अच्छे समीक्षक हो सकते हैं।

कर्क राशि:– इस राशि वाले को जल, दूध, कला, चांदी, चावल, शकर प्लास्टिक, अनाज, लकड़ी, तार, फिल्मों, आधुनिक उपकरण, बच्चों के खिलोने, फायनेंस कंपनियों में निवेश करना लाभदायी होता है । नेतृत्व, खेल, नौसेना, जल परिवहन, बंदरगाह, मछली, समुद्री उत्पाद, नाविक, मोती, बैंकर, डॉक्टर, वकील, न्यायाधीश, व्यापारी, नर्स, केरोसिन, कोयला, पेट्रोल, भूमि संबंधी कार्य, जलापूर्ति, सिंचाई, सेल्समैन, एजेंट, ज्योतिषी, क्लर्क, धागा, स्याही, कागज, रसायन, हथियार, विस्फोटक, हस्तशिल्प, वस्त्र उद्योग, खाद्य प्रबंधक, होटल नर्सिंग, संगीत, नृत्य, अभिनय, शस्त्र/विज्ञान, हस्तकला, शिल्पकला, लेखन, निर्देशन, नाटक, गायन एवं रचनात्मक कार्यों, सूचना अधिकारी, रिसैप्शनिस्ट, लेखक, लाइब्रेरियन, ड्रैस डिजाइनर, ट्यूटर, सलाहकार, ट्रैवल एजैंट, करियर कौंसलर, आयात–निर्यातकर्ता, प्रकाशक, काव्य सृजक, पत्रकार, शिक्षा, आयकर, आवगारी, बैंक, हिसाव दफ्तर, प्रकाशना, मत्स्य चाष, मदिरा, उल, आमदनी–रफ्तानी व्यवसाय इत्यादि क्षेत्रों में सफलता मिलता हैं।

सिंह राशि:– इस राशि का जातक प्रकाशन, एडवाइजर, ज्योतिष, इंजीनियर, चिकित्सक, सेना और राजनीती में ज्यादा सफल होते हैं। जौहरी, रत्न, सोना, शिक्षक, तकनीकी और वैज्ञानिक सेवाएं, पेशेवर खिलाड़ी, अभिनेता/अभिनेत्री, कला में प्रसिद्धि, कूटनीति, अनुसंधान, भूविज्ञान, होटल, भोजन, कृषि, वन, मवेशी, कोयला, पत्थर, संगमरमर, पशुपालन, वित्त, बीज विक्रेता, चमड़े की वस्तुओं का निर्माता और एंटीबायोटिक मैडीसिन के निर्माता, स्कूल व कॉलेज प्रबन्धक, मैनेजमैंट कंसलटैंट, फार्मासिस्ट, पुलिश, सामरिक विभाग, कानून, क्लर्क, शिक्षा दफ्तर, लकड़ी, सुरकी, इट, लोहा, अभ्र, तुलों, ट्रांसपोर्ट, निदेशक, प्रशासक, निवेश व्यवसाय, स्टॉक एक्सचेंज, आभूषण, वन अधिकारी, सिनेमा, टी.वी., डॉक्टर, चिकित्सा, रसायन, सामाजिक कार्यकर्ता जैसे क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होता है। इसके अलावा इस राशि के लोग तर्क शास्त्री एवं अच्छे वकील भी हो सकते हैं।

कन्या राशि:– इस राशि वालों को शिक्षण संस्थान, औषधियों, केमिकल, फर्टीलाइजर्स, चमड़े से बने सामान, खेती के उपकरणों के कार्य में बहुत सफलता प्राप्त होती है। अभिनेता, लेखक, शिक्षक, क्लर्क, आलोचक, विश्लेषक, चार्टर्ड अकाउंटेंट, वाहनों से संबंधित कार्य, दंत चिकित्सक, ललित कला, रत्न, सोना, बौद्धिक कार्य, जौहरी, कला उद्योग, व्यवसाय प्रबंधन, गणित, नर्स, सांख्यिकीविद्, गायक, प्रकाशन, लेखन, सम्पादन, शिक्षा, बैंक, आयकर, बंदरगाह, फरेस्ट, अदालत, पुस्तक प्रकाशना, वस्त्र, खनिज द्रव्य, मनोहारी द्रव्य, ज्योतिष आदि क्षेत्र में सफलता मिलती हैं। अध्यापक, दुकानदार, सचिव, डाक विभाग, बस, टैक्सी, स्टेनोग्राफर, दुभाषिया, अनुवादक, पुस्तकालय, रेडियो, टीवी, समाचार पत्र, मुद्रणालय, संपादक, डॉक्टर, जासूस, कैशियर, ऑडिटर, लाइब्रेरि, इन्वैस्टमैंट प्रबंधक, रीटेल शॉप, जनरल स्टोर, स्किन केयर, एकाऊंट्स, एग्जीक्यूटिव, बुक बाइन्डर, बैंककर्मी, इवैंट आयोजक, सेल्समैन, लेखाकार, बीमा दलाल आदि भी होते हैं।

तुला राशि:– इस राशि के जातक प्रापर्टी, भवन निर्माण, लोहे का कार्य, वाहन आदि से अच्छा धन प्राप्ति होती है। होटल प्रबन्धक, मीडिया प्लानर, सर्जन, इंटीरियर डैकोरेटर, फोटोग्राफर, मैरिज ब्यूरो संचालक, टी.वी. एंकर, पर्यटन प्रबंधक, वकालत, रसायन के जानकार, द्रव पदार्थों के विक्रेता, विद्युत इन्जीनियर, ट्रांसपोर्ट, नेवी, रंगसाज, संगीतकार, पार्श्व गायक, मूर्ति निर्माता आदि का कार्य करते हैं। इस राशि के लोगों को वैमानिक, सलाहकार, ब्यूटीशियन, सिनेमा अभिनेता और निर्देशक, ललित कला, फल, पशु, खाद्यान्न, सोना, रत्न, जौहरी, न्यायाधीश, न्याय और कानूनी व्यवस्था, अदालत, वकील, मुकदमा, मध्यस्थता कार्य, चिकित्सा, रबर, अंतरिक्ष, शिक्षक, परिवहन, कपड़ा उद्योग, लौहा, सीमेंट, स्टील, केमिकल, चमड़े, फर्टीलाइजर्स, इस्पात, कोयला, तेल, स्वास्थ्य, खनिज, वन, नृतत्व, भूतत्व, शुल्क, बंदरगाह, तुलों, रेशम, मनोहर द्रव्य, वस्त्र, वैद्युतिक सामग्री, सॉलिसिटर, प्रबंधन सलाहकार, राजनयिक, जनसंपर्क अधिकारी, मॉडलिंग, चाय–कॉफी, रेस्तरां, फर्नीचर, पोशाक, दवाई के क्षेत्रो से लाभ होता है।

वृश्चिक राशि:– इस राशि वालों को जमीन, मकान, दुकान, खेती, सीमेंट, रत्नों, खनिजों, मेडिकल के उपकरण, पूजन सामग्री, कागज, वस्त्र में निवेश से लाभ मिलता है। इस राशि के जातक कला के क्षेत्र में प्रतिष्ठित, सरकार और राजनयिक, अनाज व्यापार, औद्योगिक उद्यम, आविष्कारक, रसायनज्ञ, अनुसंधान, वैज्ञानिक, चिकित्सा, सर्जरी, डॉक्टर, महिलाओं से संबंधित, लोहा और इस्पात, भंडारण, बंदरगाह, गुप्त या अदृश्य कार्य, अदालतें और वकील भी होते है। रेल, डाक, शिक्षा, बैंक, शुल्क, कोयला, तुला, मत्स्य, मदिरा, मटर पाट्र्स, सैन्य अधिकारी, प्रॉपर्टी डीलर, जासूस, सर्जन, मैडिकल शॉप, प्रोफैशनल खिलाड़ी, हैल्थ वर्कर, सिक्योरिटी सर्विस जैसे कार्य में सफलता मिलता हैं। दार्शनिक, ज्योतिषी, गुप्तचर, जादूगर, नर्स, कवि, भूगोलवेत्ता, तांत्रिक, नाई, दंत चिकित्सक, मैकेनिक, सेना व पुलिस विभाग, बीमा एजेंट, रेलवे, ट्रामकर्मी आदि से संबंधित नौकरियों को इंगित करता है।

धनु राशि:– इस राशि के लोगों को आभूषणों, रत्नों, सोना, अनाज, कपास, चांदी, शकर, चावल, औषधियों, सौंदर्य सामग्री, दूध से बने पदार्थ, पशुओं का व्यापार करने एवं उसमें निवेश करने से लाभ मिलता है। बैंक, जीवन विमा, कारखाना, पुलिश, आफिसर, दवाई, रसायन, वस्त्र, लकड़ी, पत्थर, नगर निर्माण विभाग, ठेकेदार तथा विदेशी व्यापार सम्बन्धित कार्यों में सफलता अर्जित करते हैं। मंत्री, सेना कमांडर, प्रवक्ता, शिक्षक, प्रोफेसर, प्रकाशक, दार्शनिक, सलाहकार, सिविल इंजीनियर, पार्षद, आविष्कारक, पुजारी, पशुचिकित्सक, पशुपालन, घुड़सवार, वकील, पेशेवर खिलाड़ी, मिशनरी, स्वतंत्रता सेनानी, फाइनेंसर, साहित्य संस्थाओं के अधिकारी, धर्मगुरू पद, वेब डिजाइनर, संगठन प्रबंधक, आर्किटैक्ट, व्यवसायी, संपादक, राजनीतिज्ञ, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, प्रौफेसर, न्यायाधीश, होटल प्रबंधक, प्रशासक आदि से संबंधित कार्य को दर्शाता है।

मकर राशि:– इस राशि के लोगों को लोहा, इस्पात, सभी प्रकार के तेल, खाद्य सामग्री, इलेक्ट्रॉनिक्स सामान, यंत्र, खनिज पदार्थ, खेती उपकरण, वाहन, चिकित्सा के उपकरण, वस्त्र, इत्र, सेंट, स्टील, सौन्दर्य सामग्री, ग्लेमर वर्ल्ड, फिल्म्स, नाटकों, सार्वजनिक संस्थाएं, चमड़े सम्बन्धी कार्य–व्यवसाय में विशेष उन्नति करते हैं। वास्तुकार, कुटीर उद्योग, इंजीनियर, तख़्ता, रसायन, दंत चिकित्सक, किसान, गहन ध्यान, बागवानी उपकरण, जलीय उत्पाद, सिविल सेवक, बैंक, बंदरगाह, चमड़ा, चाय, चिरुनी, वैद्युतिक, टैक्नीशियन, वैज्ञानिक, शोधकर्ता, विदेशी भाषा अनुवादक, फोटोग्राफी, कंप्यूटर प्रोग्रामर, डिटैक्टिव, फैक्ट्री मालिक, उत्पादन प्रबंधन, कृषि, खेत, खनन, भूविज्ञान, सचिव, चमड़ा या चमड़े के उत्पाद, पुराने जहाज, प्राचीन वस्तुएं आदि से संबंधित कार्य में उन्नति करते हैं।

कुंभ राशि:– इस राशि के लोगों को लोहा, इस्पात, केबल, तेल, सभी प्रकार के खाद्य सामग्री, इलेक्ट्रॉनिक्स सामान, यंत्र, मेडिकल के उपकरण, फिल्म्स, नाटकों आदि में निवेश करने से लाभ होता है। ज्योतिषी, पुरातत्वविद्, खगोलशास्त्री, वैज्ञानिक, इंजीनियर, आविष्कारक, कंप्यूटर

प्रोग्रामर, बौद्धिक मानसिक गतिविधियां, स्थानीय निकाय, समाजशास्त्री, पायलट, चोरी, इलेक्ट्रीशियन, प्रचारक/प्रसारक, रेडियोग्राफर, अग्निशमन, भट्टियां, रक्षात्मक हथियार, शारीरिक श्रम, वकालत, न्यायधीश, प्रशासन, कम्प्यूटर हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, ऐनिमेशन, अध्ययन, लेखन, राजनैतिक प्रबंधन, अर्थशास्त्री, मोटरपार्ट्स से संबंधित कार्य, अध्यात्मिक, रेल, शिक्षा, बंदरगाह, सामरिक विभाग, लकड़ी, पत्थर, ताम्र, ठकेदारी, कानून व्यवसाय, एनजीओ, समाज सेवा, तकनीकी, कानूनी, सामाजिक कार्यकर्त्ता, विद्युत विभाग कार्यकर्ता, परमाणु ऊर्जा, ऑटोमोबाइल, हवाई जहाज, टीवी, यांत्रिक आविष्कारकों, ज्योतिषियों, चिकित्सा उपकरण आदि से संबंधित कार्यों में आसानी से सफलता मिलती है।

मीन राशि:– इस राशि के लोगों को आभूषणों, रत्नों, सोना, अनाज, कपास, चांदी, शकर, चावल, औषधियों, सौंदर्य सामग्री, दूध से बने पदार्थ, पशुओं का व्यापार करने एवं इन चीजों में निवेश करने से लाभ होता है। अध्यापन, सोने के व्यवसाय, आध्यात्म, राजनीति, प्रबंधन, मुद्रा क्रय–विक्रय, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कूटनीतिक सलाहकार, राजदूत, पुजारी, लेखक, अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय, नाविक, कलाकार, अभिनेता/अभिनेत्री, आयात–निर्यात, नौसेना, जल आपूर्ति कार्य, अस्पताल, नर्सिंग होम, पशुचिकित्सक, हथियार, जेल कर्मचारी, फोटोग्राफी, नशीले पदार्थ, रेस्तरां, शिक्षक, पुलिश, सैन्य विभाग, आयकर बैंक, जीवन बिमा, मत्स्य, खनिज और जलीय वस्तु, कॉफी हाउस इत्यादि भेत्रों में आसानी से सफलता अर्जित कर सकते हैं। डॉक्टर, नर्स, भिक्षु, जेलर, सेनेटोरियम कर्मचारी, सिनेमा, टी.वी. निर्देशक, संवादिक्, कोरियोग्राफर, सामाजिक कार्यकर्ता, संग्रहालय, पुस्तकालय, संगीत, कवि, ट्रैवल एजेंट, तेल, समुद्री तट रक्षक आदि से संबंधित कार्य को दर्शाता है।

राशियों के अनुसार सेक्स

राशि चक्र जीवन में बहुत महत्व रखता है। जिस तरह राशियों के ग्रह-नक्षत्रों का जातको के स्वभाव व व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है, ठीक उसी तरह यह सेक्स लाइफ को भी प्रभावित करते हैं। राशियों की अध्यन से किसी जातक के स्वभाव, पर्सनैलिटी, करियर और भविष्य के वारे में ही नही सेक्स लाइफ के बारे में भी बहुत कुछ जाना जा सकता है। मनुष्य के जीवनकाल में सेक्स का अहम् स्थान होता है चाहे वह स्त्री हो या फिर पुरुष। राशि चक्र के अनुसार पता लगाया जा सकता हैं कि यौन संबंध बनाते वक्त जातककिन सेक्स बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। राशियों की मनोदशा को जानकर वैवाहिक जीवन और सेक्सुअल लाइफ को बेहतर बनाया जा सकता हैं।

राशि तत्व

मेष राशि:– मेष राशि वाले काफी कामुक स्वभाव के होते हैं। संभोग के लिए काफी जल्दी उत्तेजित भी होते हैं। मेष राशि की महिलाएं सेक्स के दौरान कुछ अलग करना ज्यादा पसंद करती हैं। इनके माथा और मुख काफी संवेदनशील होने के कारण इन जगहों पर चुंबन लेने से वो सेक्स के प्रति काफी जल्दी उत्तेजित हो जाती हैं। इस राशि के महिलाओ को डॉगी स्टाइल में सेक्स करना काफी पसंद होता है। क्योंकि डॉगी स्टाइल में सेक्स करने के दौरान पॉर्टनर द्वारा कस के पुश करना इनको काफी अच्छा लगता है।

वृषभ राशि:– वृषभ राशि वाले जातकसंभोग के दौरान सेक्स की चरम सीमा तक काफी देर से पहुंचते हैं। इन्हें संभोग से पहले फोरप्ले व ओरल सेक्स पसंद होता है। चुंबन में ये काफी एक्सपर्ट होते हैं। वृषभ राशि वाली महिलाए स्वभाव से बहुत ही रोमांटिक होती है। एवं इस राशि की महिलाएं ज्यादा कामुक मानी जाती हैं। संभोग के दौरान इस राशि की महिलाएं सेक्स की चरम सीमा तक काफी देर से पहुँचती हैं। वृषभ राशि वाली महिलाओं की गर्दन सेक्स के प्रति काफी संवेदनशील होती है। रोमांटिक सॉन्ग और लो लाइट में स्पून स्टाइल में खड़े होकर सेक्स करना ज्यादा पसंद करती हैं।

मिथुन राशि:– मिथुन राशि वाले जातक संभोग के दौरान पार्टनर से बातें करना बहुत पसंद करते है। ये हमेशा संभोग के लिए तैयार रहते हैं। चरमसीमा तक पहुंचने में भी ये काफी माहिर होते हैं। इन्हें उत्तेजित करना भी काफी आसान होता है। मिथुन राशि वाली महिलाओं के हाथ काफी संवेदनशील होती हैं। उनकी उंगलियों, हथेली, हाथ पर चुंबन लेने से वो सेक्स के प्रति आसानी से उत्तेजित हो उजाती हैं। इस राशि की महिलाए बैठकर एक दूसरे के टांगों के बीच में आकर यानी गेट डाउन पोजीशन शारीरिक संमंध करना काफी पसंद करती हैं।

कर्क राशि:– कर्क राशि वाले लोग बहुत ज्यादा भावुक एवं मानसिक तौर पर संवेदनशील होने की वजह से यौन क्रियाओं का सुख उठाने में पीछे रह जाते हैं। ये अपने पार्टनर की संतुष्टि से ज्यादा अपनी संतुष्टि पर ध्यान देते हैं। कर्क राशि वाली महिलाएं आसानी से सेक्स के प्रति उत्तेजित नहीं होतीं। एवं कर्क राशि की महिलाएं स्वभाव से बहुत इमोशनल भी होती हैं। सेक्स के प्रति सबसे संवेदनशील भाग उनके वक्ष होते हैं। अपने पार्टनर के ऊपर आकर संभोग करना उन्हें ज्यादा अच्छा लगता है।

सिंह राशि:– सिंह राशि वाले संभोग के समय काफी ऊर्जावान होते हैं। कई बार संभोग के दौरान ये इतने ज्यादा उत्तेजित हो जाते हैं, कि इन्हें किसी भी बात का खयाल नहीं रहता है। सिंह राशि वाली महिलाओं की पीठ सेक्स के प्रति सबसे संवेदनशील जगह होती है। उनकी पीठ और फिर उनके हिप्स पर स्पर्श उन्हें सेक्स की चरम सीमा तक पहुंचाता है। कई बार संभोग के दौरान ये ज्यादा उत्तेजित हो जाने के कारण अपने पार्टनर को खुद पर हावी नहीं होने

देते हैं। इस राशि की महिलाएं सेक्स के दौरान थोड़ा आक्रामक होना ज्यादा पसंद करती हैं। इन राशियों की महिलाओं को 69 पोजीशन पर सेक्स करना बेहद पसंद है। प्राइवेट पार्ट को दबाना, बैक पोर्सन पर मारना और योनि को दबाना जैसी क्रियाएं इनको बहुत पछंद आती है।

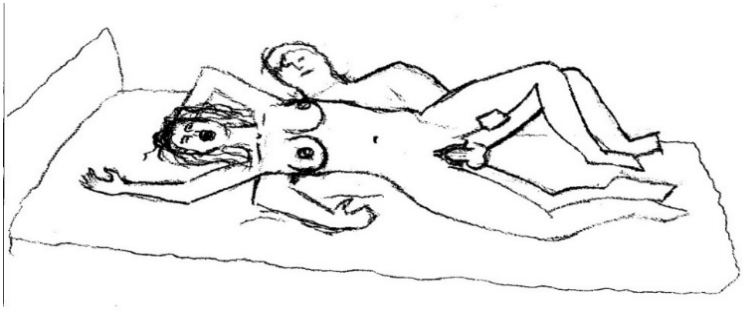

कन्या राशि:– कन्या राशि वाले अपने अंदर सेक्स के प्रति चाहत को जल्दी दर्शाते नहीं हैं। इनके अंदर सेक्स की भूख काफी होती है, लिहाजा फोरसेक्स या ओरल सेक्स में ज्यादा समय नष्ट नहीं करते है। कन्या राशि की महिलाएं अपने अंदर सेक्स के प्रति चाहत को जल्दी दर्शाती नहीं हैं। इनके अंदर सेक्स की भूख काफी होती है। उनका पेट सेक्स के प्रति सबसे संवेदनशील भाग होता है। कन्या राशि की महिलाएं सेक्स के दौरान चुम्वन करना काफी पसंद होता है। इसी के साथ इन्हें पैरों को फैलाकर अपने पार्टनर को करीब लाकर संभोग करना भी पसंद आता है।

तुला राशि:– तुला राशि वाले अपने पार्टनर को हमेशा संतुष्ट करते हैं। ये अपने पार्टनर की इच्छा पर ही संभोग के लिए आगे बढ़ते हैं। ये आसानी से आकर्षित हो जाते हैं, लिहाजा यौन क्रिया की चरमसीमा तक पहुंचने में इन्हें दिक्कत नहीं होती है। तुला राशि वाली महिलाओं की पीठ का निचला हिस्सा काफी संवेदनशील होता है। हिप्स के ठीक ऊपर के भाग में स्पर्श करने से जल्दी उत्तेजना पैदा होती है। इस राशि की महिलाएं लेटकर सेक्स करना अधिक पसंद करती हैं। इनकी सबसे फेवरेट पोजीशन शोल्डर के बल लेटकर सेक्स करना होता है।

वृश्चिक राशि:– वृश्चिक राशि वालों के अंदर संभोग के प्रति भूख बहुत ज्यादा होती है। इनके पार्टनर अपनी सेक्स लाइफ को लेकर काफी परेशान रहते हैं। वृश्चिक राशि वाली महिलाओं योनि सेक्स के लिए सबसे ज्यादा संवेदनशील होती है। धीरे–धीरे स्पर्श एवं मसाज से वो बहुत जल्द उत्तेजित हो उठती हैं। इस राशि की महिलाओं को नए नए तरीकों से सेक्स या संभोग करना काफी पसंद होता है। इस राशि की महिलाएं गोदी स्टाइल में सेक्स करना बहुत पसंद करती है।

धनु राशि:– धनु राशि वाले काफी उत्साहवर्धक होते हैं। यौन जीवन को खुलकर जीने वाले होते हैं और बहुत जल्द सेक्स के लिए तैयार भी हो जाते हैं। इन्हें चुंबन या फोरप्ले ज्यादा पसंद नहीं होता। सीधे संभोग में इन्हें ज्यादा मजा आता है। धनु राशि वाली महिलाएं लंबे समय तक फोरप्ले पसंद करती हैं। उनके जांघ पर स्पर्श करने से वो काफी तेजी से उत्तेजित हो जाती हैं। इस राशि की महिलाएं काउगर्ल स्टाइल में लेटकर बैक पोर्सन को उठाकर सेक्स करना ज्यादा पसंद करती है।

मकर राशि:– मकर राशि वाले लोग सेक्स लाइफ में काफी सावधानीपूर्वक चलते हैं। ये सही व्यक्ति से ही यौन संबंध स्थापित करते हैं। ओरल सेक्स इन्हें काफी पसंद होता है। मकर राशि वाली महिलाओं के पैर सबसे ज्यादा संवेदनशील होते हैं। पैर के किसी भी भाग पर स्पर्श और चुंबन से वो जल्द उत्तेजित हो उठती हैं। इस राशि की महिलाओं को संभोग की 69 पोजीशन और टेबल सेक्स ज्यादा पछंद करती है।

कुंभ राशि:– कुंभ राशि वाले सेक्स लाइफ में प्रयोग करना पसंद करते हैं। संभोग के दौरान बाते करना पसंद नहीं करते। ये अपने पार्टनर की संतुष्टि से ज्यादा अपनी संतुष्टि पर ध्यान देते हैं। कुंभ राशि वाली महिलाओं की कोहनी और कंधे पर छोटा सा स्पर्श उन्हें उत्तेजित कर देता है। इस राशि की महिलाएं शैंपेन पोजीशन में सेक्स करना ज्यादा पसंद करती हैं। इसलिए वह सेक्स के दौरान कुर्सी का प्रयोग करती हैं।

मीन राशि:– मीन राशि वाले अपने पार्टनर की भावनाओं को समझने में काफी आगे रहते हैं। इन्हें अलग–अलग तरह की क्रियाओं में संभोग करना पसंद होता है। मीन राशि वाली महिलाओं के पैर के निचले हिस्से संवेदनशील होता है। सेक्स के दौरान इस राशि की लडकियों को आंखों में आंखें डालकर देखना अच्छा लगता है। लो लाइट और स्लो म्यूजिक उल्टे होकर पार्टनर के साथ सेक्स करना पसंद करती हैं। मीन राशि की महिलाएं काफी रोमांटिक होती हैं, सेक्स के दौरान पार्टनर के अंगों के साथ खेलने की आदत होती है।

====✂====

षष्ट अध्याय

भाव तत्व

आकाश मण्डल में बारह राशियों के आधार पर जन्म कुंडली के बारह विशेष भाव होते है, जिन्हें एकसाथ में द्वाद्वश भाव कहते हैं। प्रत्येक भाव ३० अंश का होता है, इस प्रकार द्वादश भावों का विस्तार ३६० अंश तक होता है। कुंडली में पहला भाव लग्न भाव होता है, लग्न या प्रथम भाव जन्म के समय उदित राशि को माना जाता है।

उसके बाद शेष ११ भावों का अनुक्रम एक भाव संधि से दूसरी भाव संधि तक होता है। जन्मपत्री के इन्हीं द्वादश भावों में १२ राशियां और ९ ग्रह स्थित होते है। जिस भाव में जो राशि होती है उसका स्वामी उस भाव का भावेश कहलाता है। हर भाव में भिन्न राशि आती है लेकिन हर भाव का कारक निश्चित होता है।

- ✓ **द्वादश भावो का नामः**– १.प्रथम भाव (लग्न) २.द्वितीय भाव (धन) ३.तृतीय भाव (सहज) ४.चतुर्थ भाव (बंधू) ५.पंचम भाव (विद्या) ६. षष्ठ भाव (शत्रु) ७. सप्तम भाव (जाया) ८.अष्ठम भाव (मृत्यु) ९.नवम भाव (भाग्य) १०.दशम भाव (कर्म) ११.एकादश भाव (आय) एवं १२.द्वादश भाव (व्यय)।

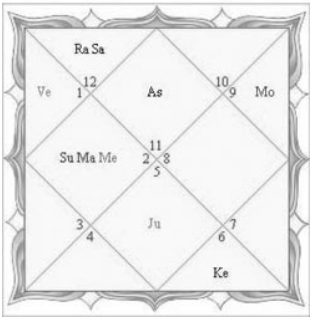

वैदिक ज्योतिष में मनुष्य के संपूर्ण जीवन को कुंडली के इन द्वादश भावों में विभाजित किया गया है। इसलिए प्रत्येक भाव मनुष्य जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। क्यौकी यह बारह भाव जीवन के किसी ना किसी क्षेत्र से समन्धित होते हैं एवं जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।

कुण्डली में कुछ भाव अच्छे तो कुछ भाव बुरे भी होते हैं। इन भावों पर जैसे ही ग्रहों का प्रभाव पड़ता है उसका असर जीवन के उस विशेष क्षेत्र में देखने को मिलता है जिससे उनका संबंध होता है। भाव में ग्रहों की स्थिति मजबूत होने से जीवन में सकारात्मक परिणामों की प्राप्ति होती है।

जबकि इसके विपरीत यदि किसी भाव में ग्रहों की स्थिति कमज़ोर होती है तो जातकों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कुंडली में केंद भाव सवसे बलवान, पणफर भाव मध्यवली एवं अपोक्लिम भाव सवसे हीनबली होता है। केंद्र स्थान को विष्णुः स्थान एवं त्रिकोण भाव को लक्ष्मी स्थान कहा जाता है, हालाकी सप्तम केंद्र मारक भाव भी होता है।

लग्न विवेक

पूर्वी क्षितिज पर उदित राशि ही "लग्न" कहलाती है, "लग्न" का शाब्दिक अर्थ होता है लगा हुआ। भचक्र के ३६० अंश यानि वृत्त अर्थात द्वादश राशि क्रमशः एक के बाद एक पूर्वी क्षितिज पर उदय होती है। हर २४ घंटे (६० घटी) में यह क्रम पूरा होकर पुनः प्रारंभ होता रहता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की दिशा में २३ घंटे, ५६ मिनट ४.०९१ सेकंड में एक परिक्रमा करती है। इसी परिक्रमा के कारण सम्पूर्ण आकाश में स्थित तारों और राशियों का उदय पूर्वी क्षितिज पर प्रतीत होता है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर २३ अंश २६ कला (२६ से ३० कला तक) झुकी हुई रहती है। इस कारण पृथ्वी के सभी क्षेत्र की अक्षांश समान नहीं है, और द्वादश राशि की उदय भी सभी क्षेत्र में समान दृष्ट नहीं होता है, जिस कारण लग्नमान भी समान नहीं होता है। निरक्ष देश यानि शून्य अक्षांश अर्थात भूमध्य रेखा पर लग्नो के उदय काल यानि राशियो के उदय मान मे अल्प ही अंतर होता है।

परन्तु जैसे ही उत्तर की ओर बढ़ते है; मेष, वृषभ, मिथुन, मकर, कुम्भ व् मीन इन छः लग्नो का उदय मान कम होता जाता है और शेष छः लग्नो का उदय मान बढ़ता जाता है। एवं दक्षिण की ओर इसका विपरीत अर्थात कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु राशि का उदय मान कम होता है। इसी तरह, उत्तर अक्षांश के लग्न सारणी से दक्षिण अक्षांश के लग्न को स्पष्ट करने के लिए गणना का तरीका विपरीत होता है।

❖ **भूमध्य रेखा (विषवत रेखा) पर स्थित स्थानों पर विभिन्न राशियों का उदय मान:**

- ✓ मेष, कन्या, तुला, मीन का उदय मान: ४ घटी ३९ पल।
- ✓ वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ का उदय मान: ४ घटी ५९ पल १० विपल।
- ✓ मिथुन, कर्क, धनु, मकर का उदय मान: ५ घटी २१ पल ५० विपल।

प्रत्येक नक्षत्र अहोरात्र मध्य (माध्यम सावन मान ५९/५०/१० विपल = १ नक्षत्र अहोरात्र अर्थात नक्षत्रमान ६० दंड होता है) द्वादश राशि क्रमश पूर्व क्षितिजों में संलग्न होने के कारण द्वादश लग्न होता है। राशि की आदि विन्दु से अंत विन्दु तक जितने समय क्षितिज संलग्न होता है उसको लगन्मान कहा जाता है।

किसी निर्धारित समय पर पूर्व दिशा में क्षितिज पर जहां सूर्योदय होता है, वहां जो राशि उस समय उदय हो रही होती है, वह राशि लग्न कहलाती है। एक राशि लगभग दो घंटे तक लग्न में रहती है, चौबीस घंटों में बारह राशियाँ पृथ्वी का एक चक्कर लगा लेती हैं, और बारी बारी क्षितिज पर उदित होती रहती हैं। जिस राशि में सूर्य स्थित होता है, सूर्योदय के समय वही राशि क्षितिज पर उदय होती है।

किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय पूर्वी दिशा में जो राशि उदयमान होती है, उसे ही लग्न राशि कहा जाता है। सूर्योदय काल में सूर्य जिस राशि की जितने अंश में अवस्थान करता है, तत्कालीन उस राशि की उसी अंश लग्न होता है। यह ३० अंश से वियोग (घटाकर) जो अंश अवशिष्ट रहता है वो गम्यांश होता है।

इसी गम्यांश काल के साथ पर पर लग्नमान योग करके दिन के इष्ट समय का लग्न निर्धारित किया जाता है। सूर्यादय काल में सूर्य जिस राशि के जितने अंश में होते है उसका सप्तम राशि की उतना ही अंश सूर्यास्त काल में गम्यांश होता है। सूर्यास्त राशि की गम्यांश के साथ पर पर लग्नमान योग करके रात की इष्ट समय का लग्न निर्धारण किया जाता है।

भावों का वर्गीकरण

१. **केंद्र भाव:** लग्न, चतुर्थ, सप्तम व् दशम भाव (१,४,७,१०) को केंद्र अथवा कंटक भाव कहलाते है। वैदिक ज्योतिष में केन्द्र भाव को सबसे शुभ भाव माना जाता है और इनके स्वामी हमेशा शुभ होते है। शुभ भाव होने के साथ–साथ केन्द्र भाव जीवन के अधिकांश क्षेत्र को दायरे में लेता है। इनमें दसवाँ भाव करियर और व्यवसाय का भाव होता है। जबकि सातवां भाव वैवाहिक जीवन को दर्शाता है और चौथा भाव माँ और आनंद का भाव है। वहीं प्रथम भाव व्यक्ति के स्वभाव को बताता है। जन्म कुंडली में केंद व त्रिकोण के स्वामियों की परस्पर दृष्टि, युति व स्थान परिवर्तन से उत्तम राजयोग का निर्माण होता है।

२. **त्रिकोण भाव:** कुंडली में लग्न, पंचम व् नवम भाव (१,५,९) को त्रिकोण भाव कहलाते है। वैदिक ज्योतिष में त्रिकोण भाव को भी शुभ व् पुण्य भाव माना जाता है, इसलिए त्रिकोण भावो का स्वामी चाहे सौम्य हो या क्रूर वह शुभ फल ही देता है। त्रिकोण भाव में आने वाले प्रथम भाव स्वयं का भाव होता है। वहीं पंचम भाव जातक की कलात्मक शैली को दर्शाता है, जबकि नवम भाव सामूहिकता का परिचय देता है।

३. **त्रि–षडाय भाव:** तृतीय, षष्ठ व् एकादश भाव (३,६,११) को त्रि–षडाय भाव कहते है। सामान्यतः इन्ह भावो के स्वामी अशुभ होते है। परन्तु यदि स्व राशि में बेठे है तो शुभ और यदि इन भावो के स्वामी निर्बल है तो अशुभ होते है।

४. **सम भाव:** द्वितीय व द्वादस भाव (२,१२) सम भाव होता है, अर्थात न शुभ न अशुभ। इन भावो के स्वामी शुभ भाव या शुभ भाव के स्वामी के साथ बेठे है तो शुभ। अशुभ भाव या अशुभ भाव स्वामी के साथ है तो अशुभ फल देता है।

५. **त्रिक भाव (दुःस्थान):** षष्ठ, अष्टम व् द्वादश भाव (६,८,१२) को त्रिक भाव या दुःस्थान अथवा दुष्ट–स्थान कहा जाता है। अष्टम भाव त्रिक भावों में सर्वाधिक अशुभ स्थान माना गया है। त्रिक भाव व्यक्ति जीवन में संघर्ष, पीड़ा एवं बाधाओ को दर्शाता है। इन भावो के स्वामी सदैव अशुभ होते हैं व सामान्य परिस्थिति में ये भाव सदैव अशुभ प्रभाव ही देते हैं। कुछ विशेष मामलो में त्रिक भावों के स्वामी अपने ही भाव में, या इनमें से किसी भाव में, स्थित होकर बिना परिश्रम के (लॅटरी, सट्टा, जुआ, गड़े धन, वसीयत आदि द्वारा) राजयेाग से भी अधिक धन–समृद्धि व यश प्रदान करते हैं। त्रिक भावों के स्वामी, लग्नेश से शत्रुता रखते हैं तो ये भी मारकेश का कार्य कर जातक को अशुभ परिणाम देते हैं। जब लग्नेश त्रिक भाव में स्थित हो तथा पाप प्रभाव (युति/दृष्टि द्वारा) में हो तो अवयोग का निर्माण करते है । इससे जातक अप्रसिद्ध, निर्बल, अल्पायु, दीन–हीन, दुष्टों द्वारा अपमानित, कुपित, चंचल आदि स्थिति वाला होता है।

६. **उपचय भाव:** तृतीय, षष्ठ, दशम व् एकादश (३,६,१०,११) भावों को एक साथ उपचय कहते हैं। यह भाव, भाव के कारकत्व में वृद्धि करते हैं। यदि इन भाव में अशुभ ग्रह मंगल, शनि, राहु और सूर्य विराजमान हों तो जातकों के लिए यह अच्छा माना जाता है। ये ग्रह इन भावों में नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं।

७. **मारक स्थान(भाव):** कुंडली में द्वितीय और सप्तम (२,७) भाव मारक कहलाते हैं। मारक भाव के कारण जातक अपने जीवन में धन संचय, अपने साथी की सहायता में अपनी उर्झा को खर्च करता है।

८. **अपोक्लिम भाव**: कुंडली में तृतीय, षष्ट, नवम व् द्वादश (३,६,९,१२) भाव को अपोक्लिम कहते है।

९. **पणफर भाव:** कुंडली में द्वितीय, पंचम, अष्टम व् एकादश (२,५,८,११) भाव को पणफर कहते है।

१०. **चतुरस्र भाव:** कुंडली में चतुर्थ व् अष्टम (४,८) भाव को एक साथ में चतुरस्र भाव कहा जाता है।

त्रिकोण विशेष

वैदिक जन्म कुंडली में कुल ४ त्रिकोण बनते है, जो मानव जीवन के चार पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष) को सिद्ध करते है। इन्ह कोणों का नाम चारो पुरुषार्थो के नाम पर ही रखा गया है, जैसे: १) प्रथम त्रिकोण धर्म त्रिकोण २) दूसरा त्रिकोण अर्थ त्रिकोण, ३) तीसरा त्रिकोण काम त्रिकोण एवं ४) चतुर्थ त्रिकोण मोक्ष त्रिकोण है।

- **धर्म त्रिकोण:** लग्न, पंचम, नवम (१,५,९) ये तीन भाव धर्म त्रिकोण होता है। ये सभी त्रिकोण में मुख्य है क्यौकी बिना धर्म के जीवन ही नहीं है धर्म से ही सम्पूर्ण जगत है।
- **अर्थ त्रिकोण:** द्वितीय, षष्ठम, दशम (२,६,१०) ये तीनों भाव अर्थ त्रिकोण है। मनुष्य संसार में आने के बाद से ही जीवन की हर जरूरतों को पूरा करने के लिए अर्थ की आवश्यकता होती हैं बिना अर्थ के गृहस्थ धर्म का पालन अच्छे से नहीं कर सकते हैं।
- **काम त्रिकोण:** तृतीय, सप्तम, एकादश (३,७,११) ये तीन भाव काम त्रिकोण है। काम का एक अर्थ भोग भी कहा जाता है, व्यक्ति गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है और कामसुख भोगता है।
- **मोक्ष त्रिकोण:** कुंडली में चतुर्थ, अष्ठम और द्वादश (४,८,१२)यह तिन भाव से मोक्ष त्रिकोण बनता है। कुंडली इन्ह भावो का संवंध अध्यात्मिकता से होती है, मोक्ष की प्राप्ति में इन्ह भावो का महत्वपूर्ण स्थान होती है। व्यक्ति सभी आश्रमों का पालन करने के बाद स्वयं अपने मोक्ष के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

❖ कुंडली में त्रिकोण भावो से फलित गणना कैसे करे?

धर्म त्रिकोण में शुभ ग्रह का होना, शुभ ग्रहों की दृष्टि होना, तीनों त्रिकोण के स्वामी केंद्र या त्रिकोण में होना अथवा शुभ ग्रहों से युति होने से जातक धार्मिक, विनम्र व ज्ञानी होता है।धर्म त्रिकोण में अग्नि तत्व राशि शुभ व बलवान मानी जाती है। अर्थ त्रिकोण में भूमि तत्व राशि शुभ व बलवान होती है। तथा इस त्रिकोण सूर्य व मंगल बलवान होकर बैठे हो या अर्थ त्रिकोण के स्वामी केंद्र या त्रिकोण में हो शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो जातक के पास बहुत ही धन होता है और वह राज्य का भी सुख भोगता है।

काम त्रिकोण में शुभ ग्रह शुक्र, चंद्र का होना या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो अथवा केंद्र या त्रिकोण में होने से जातक गृहस्थ जीवन सुखमय व्यतीत करते हैं। काम त्रिकोण में वायु तत्व राशि शुभ होता है। एवं मोक्ष त्रिकोण में वैराग्य ग्रहों का होना अच्छा माना जाता है, तथा मोक्ष त्रिकोण में जल राशि शुभ होती है।

काम त्रिकोण में मोक्ष त्रिकोण ग्रहों का प्रभाव होने से व्यक्ति के अंदर काम वासना कम होती है, जातक का मन अध्यात्मिक ज्यादा होती है। और यदि मोक्ष त्रिकोण में काम त्रिकोण के ग्रहों का प्रभाव ज्यादा हो तो व्यक्ति के अंदर बुढ़ापे में भी काम वासना अधिक होगी, जातक जीवन भर भोग विलासिअत में लिप्त रहता है। ऐसे ही सभी त्रिकोण का विचार करना चाहिए, जैसे धर्म त्रिकोण के ग्रहों का प्रभाव अर्थ त्रिकोण में हो तो व्यक्ति सदैव समाज की सेवा में धर्म कार्यों में अधिक व्यय करता है।

द्वादश भावो के विविध नाम

भाव	मूल नाम	अन्य नाम
प्रथम भाव	लग्न	विलग्न, होरा, कल्प, उदय, तनु, जन्म, प्रथम
द्वितीय भाव	धन	कुटुम्ब, अर्थ, संपत्ति, भुक्ति, वाक, द्वितीय
तृतीय भाव	सहज	पराक्रम, सहोदर, धैर्य, तृतीय, अनुज(भ्राता)
चतुर्थ भाव	बन्धु	सुख, मातृ, मित्र, पाताल, वृद्धि, चतुर्थ
पंचम भाव	विद्या	सुत, देव, बुद्धि, संतान, पंचम
षष्ठ भाव	शत्रु	रिपु, रोग, भय, क्षत, ऋण, षष्ठ
सप्तम भाव	जाया	पति/पत्नी, जामित्र, काम, सप्तम
अष्टम भाव	मृत्यु	रन्ध्र, आयु, अष्टम
नवम भाव	भाग्य	धर्म, शुभ, नवम
दशम भाव	कर्म	मान, पद, दशम
एकादश भाव	आय	लाभ, एकादश
द्वादश भाव	व्यय	द्वादश

भावेश परिचय

भाव विशेष में स्थित राशि का स्वामी ग्रह ही उस भाव का स्वामी या भावेश होता है। भावेश, लग्न या अपने भाव से किस स्थान पर है ? इसका फलादेश में बहुत ही महत्त्व होता है। फिर यह देखा जाता है कि भावेश किस राशि में है ? किस ग्रह से युक्त या दृष्ट है ? उदय/अस्त, वक्री/मार्गी, संधि, चर, अतिचर इत्यादि विभिन्न स्थितियों पर आधारित भावेश का बलाबल और अपने भाव को भावेश कीतना सहयोग दे रहा है, इस बात का विचार करके कुंडली फलादेश किया जाता है।

i. प्रथम भाव के स्वामी को लग्नेश कहलाता है।
ii. द्वितीय भाव के स्वामी को धनेश/द्वितीयेश कहलाता है।
iii. तृतीय भाव के स्वामी को सहजेश/तृतीयेश कहलाता है।
iv. चतुर्थ भाव के स्वामी को सुखेश/चतुर्थेश कहलाता है।
v. पंचम भाव के स्वामी को सुतेश/पंचमेश कहलाता है।
vi. षष्ठ भाव के स्वामी को रोगेश/षष्ठेश कहलाता है।
vii. सप्तम भाव के स्वामी को जायेश/सप्तमेश कहलाता है।
viii. अष्टम भाव के स्वामी को रन्ध्रेश/अष्टमेश कहलाता है।

ix. नवम भाव के स्वामी को भाग्येश/नवमेश कहलाता है।

x. दशम भाव के स्वामी को कर्मेश/दशमेश कहलाता है।

xi. एकादश भाव के स्वामी को आयेश/एकादशेश कहलाता है।

xii. द्वादश भाव के स्वामी को व्ययेश/द्वादशेश कहलाता है।

भाव वल

जिस भाव में शुभ राशि हो और शुभ ग्रह अवस्थित हो या देखता हो उस भाव का बल बड़ता है। जिस भाव में उस भाव का अधिपति अवस्थित हो, या दृष्टि हो उस भाव का भी वल बड़ता है। ६, ८, १२ इन्ह अशुभ भावो का स्वामी जिस भाव में स्थित होता है उस भाव का बल घटता है। इसी प्रकार जिन भावो में अशुभ राशि हो, और अशुभ या क्रूर ग्रहों अवस्थित हो या दृष्टि पड़ता है या भाव का स्वामी अस्त हो तो उस भाव का बल घटता है। रिक्त भाव से गह युक्त भाव तथा ग्रह युक्त भाव से अधिक ग्रहों से युक्त भाव ज्यादा बली होता है। सौम्य ग्रहों से युक्त या दृष्ट भाव तथा शुभ मध्य में पड़ने वाला भाव बली होता है। चर राशि से अपेक्षा स्थिर राशि तथा स्थिर राशि अपेक्षा द्विस्वभाव वाली राशि में बेठी ग्रह अधिक बल देते है। द्विपद, जलचर, कीट और पशु – ये राशियाँ क्रमश: केन्द्र में बली होती हैं, अर्थात् द्विपद राशि लग्न में, जलचर राशि चतुर्थ में, कीट राशि सातवें में और पशु राशि दसवें भाव में बलवान् माने गये हैं।

ग्रहों का शुभ फल दायक भाव

- **सूर्य:** प्रथम, द्वितीय, पंचम, नवम, दशम व् एकादश भाव।
- **चन्द्रमा:** प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, दशम व् एकादश भाव।
- **मंगल:** तृतीय, षष्ठ, अष्ठम व् दशम भाव।
- **बुध:** प्रथम, तृतीय, दशम व् एकादश भाव।
- **गुरु:** द्वितीय, पंचम, नवम व् एकादश भाव।
- **शुक्र:** प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम व् एकादश भाव।
- **शनि:** तृतीय, षष्ठ, अष्ठम व् एकादश भाव।
- **राहू:** द्वितीय, अष्ठम व् द्वादश भाव।
- **केतु:** षष्ठ, अष्ठम व् द्वादश भाव।

कुंडली में कारक ग्रह

ज्योतिष गणना में कारक ग्रह का बहुत ही महत्त्व होता है। इसलिए बारह भाव और भावेश की बलवत्ता और उस पर पड़ने वाली अन्य ग्रहों की युति और दृष्टि के साथ साथ कारक ग्रहों का भी विचार किया जाता है। क्यौकी भाव, भावेश और कारक इन तीनों के संयुक्त प्रभाव के फलस्वरूप भाव फल निश्चित होता है।

जैसे:– माता के लिए चंद्र और चतुर्थ भाव, पिता के लिए सूर्य और नवम, संतान के लिए गुरु और पंचम भाव, पत्नी के लिए शुक्र और सप्तम भाव तथा छोटे भाई–बहनों के लिए मंगल और तृतीय भाव, वाहनों के लिए शुक्र तथा चतुर्थ भाव, भू–संपति के लिए मंगल और चतुर्थ भाव, शिक्षा के लिए बुध तथा पंचम भाव का विवेचन किया जाता है।

❖ **कारक ग्रह दो प्रकार के होते हैं– १) स्थिर कारक और २) चर कारक।**

स्थिर कारक:– स्थिर कारक का अर्थ यह है कि किसी भी लग्न की कुण्डली हो और कोई भी राशि जातक की हो स्थिर कारक में कोई अन्तर नहीं आता है अर्थात् स्थिर कारक ग्रह अंशादि सापेक्ष नहीं है। जैसेःपितृ कारक ग्रह सूर्य, मातृकारक ग्रह वह है जो चन्द्रमा और शुक्र में बलवान सिद्ध होता है। इसी प्रकार मंगल ग्रह से बहन, साला, छोटे भाई का विचार किया जाता है। बुध ग्रह से चाची, गुरु से संतान आदि तत्समान जनों का विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त बारह भावों के भी कारक होते है, जैसे:– लग्न अथवा प्रथम भाव का कारक सूर्य होते है। द्वितीय भाव का गुरु, तृतीय भाव का मंगल, चतुर्थ भाव का चंद्रमा, पंचम भाव का गुरु, छठे भाव का मंगल, सप्तम भाव का शुक्र, अष्टम भाव का शनि, नवम भाव का गुरु, दशम भाव का बुध, एकादश भाव का गुरु और द्वादश भाव का कारक शनि माना गया है।

चर कारक:– चर कारक ग्रह वह हैं जो जातकों के कुण्डलियों में उनके ग्रहांशों के आधार पर निर्णित होते हैं। अलग–अलग कुण्डलियों में ग्रह के अंशादि अलग–अलग होते हैं इसलिए ये कारक ग्रह भी स्थिर न होकर बदलते रहते हैं। जैसेः जन्म कुंडली में जिस ग्रह का अंश सबसे अधिक होता है, वह आत्मकारक कहलाते हैं। उससे कम अंशादि वाला ग्रह अमात्य कारक अर्थात् मंत्री, उससे कम अंशादि वाला ग्रह भातृ कारक, उससे कम अंश वाला ग्रह मातृकारक, उससे कम अंश वाला ग्रह पितृकारक, उससे न्यून अंश वाला ग्रह पुत्र कारक, उससे कम अंश वाला ग्रह ज्ञाति कारक और उससे भी कम अंश वाला ग्रह दारा कारक होता है।

बिशेष:– कुछ विद्वान मातृ कारक और पुत्र कारक ग्रह एक ही मानते हैं, एवं राहु को भी चर कारक निर्णय में स्थान देते हैं। परन्तु राहु के कारक विचार में राहु के अंश को ३० डिग्री में से घटाकर समझना चाहिए क्योंकि राहु की गति सदैव उल्टा होती है।

मारक ग्रह

कुंडली में मारक ग्रह समस्या और संघर्ष पैदा करते हैं एवं मारक ग्रहों की दशा में व्यक्ति की मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट होता है। हालाकी सभी लग्नों के लिए अलग अलग ग्रहों मारक होती है। जैसे: मेष लग्न के लिए शुक्र, बुध और शनि, वृष लग्न के लिए बृहस्पति और मंगल, मिथुन लग्न के लिए शनि, मंगल और चन्द्र, कर्क लग्न के लिए शुक्र और शनि, सिंह लग्न के लिए शनि और बुध, कन्या लग्न के लिए मंगल और चन्द्र, तुला के लिए बृहस्पति और मंगल मारक होता है। वृश्चिक लग्न के लिए बुध और शुक्र, धनु लग्न के लिए बुध, शुक्र और शनि, मकर लग्न के लिए चन्द्र और सूर्य, कुम्भ लग्न के लिए सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति एवं मीन लग्न के लिए शुक्र और शनि साधारणत मारक ग्रह होता है।

- ✓ **बिशेष:** सूर्य और चन्द्रमा स्वयं एवं बलवान गुरु मारक नहीं होता है एवं मारक ग्रहों की दशा या महादशा होने से ही किसी का मृत्यु नहीं होती है।

बाधक ग्रह

बाधक ग्रह वे ग्रह होते हैं जो किसी व्यक्ति के जीवन में बाधाएं पैदा करते हैं। ये बाधाएं आर्थिक, मानसिक, शारीरिक या अन्य किसी तरह का भी हो सकती हैं। बाधक ग्रहों की दशा या छठे या आठवें ग्रहों के साथ इनकी अंतर्दशा चलने पर जातक को मरण तुल्य कष्ट या कठिन बाधाओ का सामना करना पड़ सकता है। अलग अलग लग्नों के लिए अलग–अलग ग्रह बाधक होते हैं। जन्म लग्न चर राशि में होने से एकादश भाव का स्वामी, स्थिर लग्न में नवम भाव का स्वामी एवं द्वि–स्वभाव राशि जन्म लग्न होने से सप्तम भाव का स्वामी ग्रह बाधकेश होता है।

बाधक ग्रहों की तालिका

लग्न	बाधक ग्रह	लग्न	बाधक ग्रह
मेष	शनि	तुला	सूर्य
वृष	शनि	वृश्चिक	चन्द्र
मिथुन	गुरु	धनु	बुध
कर्क	शुक्र	मकर	मंगल
सिंह	मंगल	कुम्भ	शुक्र
कन्या	गुरु	मीन	बुध

जन्म कुंडली के बाधक ग्रह व्यक्ति के जीवन में कई तरह की समस्याएं पैदा कर सकते हैं। बाधक ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति के स्वास्थ्य, धन, संबंधों और करियर पर पड़ता है। बाधक ग्रह जब जन्म कुंडली के शुभ ग्रहों के साथ मिलते हैं तब उनकी शुभता में कमी भी कर सकते हैं

। बाधक ग्रह सबसे ज्यादा अशुभ तब होते हैं जब वह द्वितीय, सप्तम या अष्टम भाव के स्वामी के साथ स्थित होते हैं। बाधक स्थान के स्वामी ग्रह और उससे संबंधित ग्रह की दशा अवधि के दौरान रोग, संकट आदि होते हैं या वह जिन भावों में स्थित हैं वहाँ के कारकत्वों में कमी करते है।

भावों की दिशाए

भाव	**दिशा** कारक	**भाव**	**दिशा** कारक
लग्न	पूर्व दिशा के कारक	सप्तम	पश्चिम दिशा के कारक
द्वितीय	पूर्व–उत्तर दिशा	अष्ठम	पश्चिम व प.द. दिशा
तृतीय	उत्तर व उ.पू. दिशा	नवम	दक्षिण व द.प. दिशा
चतुर्थ	उत्तर दिशा के कारक	दशम	दक्षिण दिशा के कारक
पंचम	उत्तर व उ.प. दिशा	एकादश	दक्षिण व द.पू. दिशा
षष्ठ	पश्चिम व प.उ. दिशा	द्वादश	पूर्व व पू.द. दिशा

फलादेश के सामान्य नियम

जन्म कुंडली सठीकता के साथ फलादेश करने के लिए ग्रह स्थिति का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण होता है। पहले यह देखना चाहिए किस भाव में कौन सा ग्रह अवस्थित है। ग्रह मित्र राशि में स्थित है या शत्रु राशि में स्थित है, ग्रह अपनी उच्च, नीच, मूल त्रिकोण या स्वराशि में है, यह देखना चाहिए। जन्म कुंडली में ग्रह किसी तरह के योग में शामिल है या नहीं, दुसरे किसी ग्रहों से संबंध बना रहा है या नही जिस ग्रहों से संबंध बना रहा है वह शुभ हैं या अशुभ हैं यह देखना चाहिए।

जन्मकुंडली के सटीक विश्लेषण के लिए विभिन्न ग्रहों के बलों के मूल्यांकन भी करना चाहिए। यदि ग्रह बली है, तो वह अपने कारकत्व तथा जिस भाव का स्वामी है और जिन भावों को दृष्ट करता है, उन्ह भावो से संबंधित शुभ फल देगा। यदि ग्रह दुर्बल है तो अपने कारकत्व और जिस भाव का वह स्वामी है उस भाव से संबंधित शुभ फल नहीं दे पाएगा।

कुंडली में ग्रहों का वर्गोत्तम होना, उच्च राशिस्थ होना, मूल त्रिकोणस्थ होना, स्व राशिस्थ होना, मित्र राशिस्थ होना बलवान माना गया है, जिसके कारण वे अपने शुभ फल देने में सक्षम होते हैं। एवं कोई ग्रह अस्तंगत या नीचस्थ होना, त्रिक भावों में स्थित होना, पापकर्तरी योग में होना, अति शत्रु राशि में स्थित अथवा अशुभ षष्टयांश में होना निर्बल माना जाता हैं।

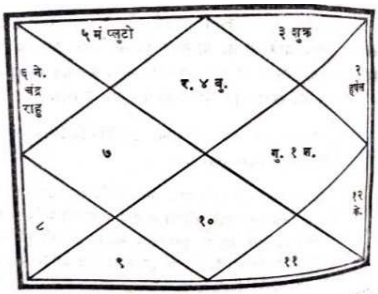

परन्तु उपरोक्त स्थिति में भी ग्रह यदि केन्द्रोश या त्रिकोणेश से संबंध बनाये तो भी शुभ फल प्रदाता होता है। लग्न की स्थिति के अनुसार ग्रहों की शुभता–अशुभता व बलाबल भी बदलता है। जैसे सिंह लग्न के लिए शनि अशुभ मगर तुला लग्न के लिए अतिशुभ होता है। जन्म कुंडली में सूर्य और चन्द्रमा एक राशि में होने से चन्द्र निष्फला होती है। तृतीय व् षष्ठ भाव में पाप ग्रह रहने से शुभ फल देते है। चतुर्थ भाव में शुक्र वालवान होने से जातक के घर में बहु लोग रहते है, शुक्र बलवान होने से जातक महिलाओ की दृष्टि ज्यादा आकर्षण करने में बहुत माहिर होते है। बलवान चंद्रमा से नारी सुरूपा एवं दुर्बल चन्द्रमा से नारी कुरूपा होती है।

मार्गी व् वक्री २ पाप ग्रह लग्न के द्वितीय और द्वादश स्थान में रहता है अर्थात मार्गी पाप ग्रह द्वादश में एवं वक्री पाप ग्रह द्वितीय में है तो कर्त्तरी दोष लगता है, इस योग में मृत्यु, दरिद्रता एवं शोक प्राप्ति होते है। कुंडली में किसी भी विषय की गहराईयों से विचार करने के लिए मूल कारक भाव के साथ साथ सहयोगी भावो का भी विचार करना चाहिए, निचे तालिकाओ में कुछ विषयों का उल्लेख किया जा रहा है।

कुछ प्रमुख विषय के लिए विचार्य भाव

विषय	मूल भाव	सहयोगी भाव
आयु	लग्न भाव	तृतीय व् अष्टम भाव
रोग	षष्ट भाव	अष्टम व् द्वादश भाव
रोगों से मुक्ति	एकादश भाव	लग्न व् पंचम भाव
अपारेशन	अष्टम भाव	षष्ट व् द्वादश भाव
दुर्घटना	अष्टम भाव	लग्न, षष्ट व् द्वादश भाव
आध्यात्मिकता	नवम भाव	लग्न व् द्वादश भाव
शिक्षा	पंचम भाव	लग्न व् एकादश भाव
उच्च शिक्षा	चतुर्थ भाव	नवम व् एकादश भाव
शिक्षा में वाधा	चतुर्थ भाव	तृतीय, अष्टम व् द्वादश भाव
ऋण (कर्ज़)	षष्ट भाव	द्वितीय, सप्तम व् एकादश
आयकर	दशम भाव	सप्तम, अष्टम व् द्वादश भाव
कर्म	दशम भाव	द्वितीय, षष्ट व् एकादश
नौकरी में प्रमोशन	षष्ट भाव	द्वितीय, दशम व् एकादश

नौकरी में ट्रान्सफर	षष्ट भाव	तृतीय, दशम व् द्वादश भाव
घर वाहनादि, संपत्ति	चतुर्थ भाव	द्वितीय, एकादश व् द्वादश
संपत्ति विक्रय	दशम भाव	तृतीय व् पंचम भाव
किरायदार	षष्ट भाव	चतुर्थ व् एकादश भाव
संपत्ति पुनर्प्राप्ति	एकादश भाव	चतुर्थ व् षष्ट भाव
विवाह	सप्तम भाव	द्वितीय व् एकादश भाव
विवाहित जीवन	एकादश भाव	द्वितीय, पंचम व् सप्तम भाव
स्वामी स्त्री पुनर्मिलन	एकादश भाव	द्वितीय व् सप्तम भाव
प्रेम विवाह	पंचम भाव	द्वितीय, सप्तम व् एकादश
द्वितीय विवाह	द्वितीय भाव	सप्तम व् एकादश भाव
संतान	पंचम भाव	द्वितीय व् एकादश भाव
दूर यात्रा	नवम भाव	तृतीय व् द्वादश भाव
विदेश यात्रा	द्वादश भाव	तृतीय व् नवम भाव
रोग मुक्ति	लग्न भाव	चतुर्थ, द्वितीय व् एकादश
मामला मोकद्दमा	षष्ट भाव	तृतीय व् एकादश भाव
प्रतियोगिता मूलक परीक्षा	षष्ट भाव	चतुर्थ व् एकादश भाव
लाटरी	तृतीय भाव	अष्टम व् एकादश भाव
अर्थ	द्वितीय भाव	षष्ट, दशम व् एकादश भाव
स्त्री सुख	सप्तम भाव	द्वितीय, पंचम व् द्वादश भाव
मृत्यु/ दुर्घटना	अष्टम भाव	लग्न, द्वितीय, सप्तम, षष्ट व् द्द्वादाश भाव

❖ ग्रहों का शुभ अशुभ निरूपण का कुछ महत्वपूर्ण सूत्र:

- ✓ जो ग्रह उच्च, या अपने मित्र ग्रह की राशि में हो – वे शुभ फलदायक होता है। इसके विपरीत नीच राशि में या अपने शत्रु की राशि में ग्रह अशुभफल दायक होता है।
- ✓ जो ग्रह अपनी स्वराशि पर दृष्टि डालता है, अथवा जो ग्रह लग्नेश का मित्र हो वह शुभ फल देता है।
- ✓ जो ग्रह अपने मित्र ग्रहों के साथ या मध्य हो वह भी शुभ फलदायक होता है।
- ✓ जो ग्रह अपनी नीच राशि से उच्च राशि की ओर भ्रमण करे और वक्री न हो तो शुभ फल देता है।
- ✓ त्रिकोण भावों (५, ९) के स्वामी सदा शुभ फल देते हैं।

- ✓ क्रूर भावों (३, ६, ११) के स्वामी सदा अशुभ फल देते हैं।
- ✓ उपाच्य भावों (१, ३, ६, १०, ११) में ग्रह के कारकत्वत में वृद्धि होती है।
- ✓ दुष्ट स्थानों (६, ८, १२) में ग्रह अशुभ फल देते हैं।
- ✓ शुभ ग्रह केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभफल देते हैं, एवं पाप ग्रह केन्द्र में अशुभ फल देते हैं।
- ✓ शुक्ल पक्ष का चन्द्र शुभफलदायक और कृष्ण पक्ष का चंद्र अशुभफलदायक होता है ।

द्वादश भावो में ग्रहों का प्रभाव

प्रथम (लग्न) भाव में ग्रहों का प्रभाव:– लग्न भाव व्यक्ति की शारीरिक संरचना, मानसिक स्थिति, व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और जीवन की दिशा को प्रभावित करता है। यह व्यक्ति के चरित्र, स्वास्थ्य, और उसकी बाहरी दुनिया में उपस्थिति का निर्धारण करता है। प्रथम भाव में स्थित ग्रह व्यक्ति की सामान्य जीवन शैली, उसकी सोच, और उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के उपर अपना प्रभाव देता है।

- **सूर्य:** सूर्य का लग्न भाव में होना व्यक्ति के आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और आंतरिक शक्ति को बढ़ाता है। यह व्यक्ति को दूसरों के सामने अपनी पहचान बनाने और अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। ऐसे व्यक्ति स्वाभाविक रूप से आकर्षक होते हैं और उन्हें सम्मान प्राप्त होता है, सूर्य आत्ममुग्धता और अहंकार भी देता है।
- **चंद्रमा:** चंद्रमा पहले भाव में स्थित होने से व्यक्ति की मानसिक स्थिति, भावना और संवेदनशीलता पर प्रभाव डालता है। ऐसे लोग अत्यधिक संवेदनशील, भावुक और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखने वाले होते हैं। यह व्यक्ति के चेहरे पर चमक और आकर्षण देता है, अशुभ स्तिथि कभी–कभी मूड स्विंग्स और मानसिक अस्थिरता भी देता है। ऐसे व्यक्तियों को परिवार और प्रियजनों से गहरी जुड़ाव की आवश्यकता होती है।
- **मंगल:** मंगल का प्रभाव पहले भाव में व्यक्ति को शारीरिक रूप से मजबूत, उत्साही और साहसी बनाता है। यह व्यक्ति को ऊर्जा और सक्रियता देता है, और जीवन के कठिन कार्यों में सफलता पाने के लिए प्रेरित करता है। हालांकि, कभी–कभी मंगल का प्रभाव क्रोध और आक्रामकता भी ला सकता है, जिससे रिश्तों में समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसे व्यक्ति अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हैं और हमेशा आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं।

- **बुध:** बुध का प्रभाव पहले भाव में व्यक्ति को तेज बुद्धि, संवाद कौशल और संवाद में दक्षता प्रदान करता है। ऐसे व्यक्ति मानसिक रूप से तेज होते हैं, और वे अच्छे लेखक, वक्ता या व्यापारी बन सकते हैं। बुध के प्रभाव से व्यक्ति का व्यक्तित्व चंचल और लचीला हो सकता है, लेकिन कभी–कभी निर्णय लेने में असमर्थता भी हो सकती है।
- **गुरु (बृहस्पति):** बृहस्पति का प्रभाव पहले भाव में व्यक्ति को अच्छाई, ज्ञान और आंतरिक शांति प्रदान करता है। यह व्यक्ति को बुद्धिमान, दयालु और जीवन में मार्गदर्शन देने वाला बनाता है। ऐसे लोग आमतौर पर दूसरों के प्रति सहायक होते हैं और उन्हें समाज में आदर मिलता है। गुरु का प्रभाव व्यक्ति को उच्च आदर्शों और नैतिकता की ओर मार्गदर्शन करता है। कभी–कभी यह व्यक्ति को अत्यधिक आस्थावान और आत्म निरीक्षण में भी डुबो सकता है।
- **शुक्र:** लग्न भाव में शुक्र ग्रह का प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व, आकर्षण और सामाजिक जीवन पर महत्वपूर्ण होता है। यह व्यक्ति को आकर्षक, सुंदर और संतुलित बनाता है। ऐसे लोग समाज में लोकप्रिय होते हैं और उनकी शारीरिक संरचना भी आकर्षक होती है। हालांकि, यदि शुक्र कमजोर हो तो रिश्तों में समस्याएं और आर्थिक कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं।
- **शनि:** शनि का प्रभाव पहले भाव में व्यक्ति को मेहनत, जिम्मेदारी और अनुशासन का महत्व सिखाता है। ऐसे व्यक्ति जीवन में संघर्ष करते हुए सफलता प्राप्त करते हैं, लेकिन इसमें समय लगता है। शनि के प्रभाव से व्यक्ति का व्यक्तित्व गंभीर और परिपक्व होता है, लेकिन कभी–कभी यह व्यक्ति को उदासीन और चिंतित भी बना सकता है। शनि ऐसे व्यक्ति को जीवन के प्रति संजीदगी और धैर्य का पाठ पढ़ाता है।
- **राहू:** राहू का प्रभाव पहले भाव में व्यक्ति को असामान्य और अजीब व्यक्तित्व प्रदान करता है। ऐसे व्यक्ति समाज से थोड़ा अलग होते हैं और उनकी सोच पारंपरिक से हटकर होती है। राहू के प्रभाव से व्यक्ति के जीवन में भ्रम, अनिश्चितता और अत्यधिक इच्छाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। कभी–कभी यह व्यक्ति को सफलता की दिशा में भटकने या झूठे अहंकार में भी डाल सकता है।
- **केतु:** केतु का प्रभाव पहले भाव में व्यक्ति को एक रहस्यमय और आत्ममग्न व्यक्तित्व प्रदान करता है। ऐसे लोग अक्सर ध्यान, साधना, और आत्मविकास में रुचि रखते हैं। केतु के प्रभाव से व्यक्ति में नकारात्मकता और भ्रम भी हो सकता है, जिससे व्यक्ति अपने आप से ही दूर हो सकता है। यह व्यक्ति को सांसारिक इच्छाओं से परे मानसिक शांति की ओर भी मार्गदर्शन कर सकता है।

दूसरे भाव में ग्रहों का प्रभाव:– दूसरा भाव व्यक्ति की संपत्ति, धन, परिवार, वाणी, और उसके सामाजिक संबंधों को दर्शाता है। यह व्यक्ति के भौतिक संसाधनों, मानसिक दृष्टिकोण और बोलने के तरीके को प्रभावित करता है। दूसरे भाव में बैठे हुए ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, वाणी और रिश्तों पर सीधे पड़ता है।

- **सूर्य:** सूर्य का प्रभाव व्यक्ति को आर्थिक मामलों में शक्ति और प्रभाव प्रदान करता है। ये व्यक्ति आत्मविश्वासी होते हैं और परिवार में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। हालांकि अशुभ सूर्य कभी–कभी अहंकार और कठोर वाणी ला सकता है, जो पारिवारिक रिश्तों में समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है।
- **चंद्रमा:** दुसरे भाव में चंद्रमा का प्रभाव व्यक्ति की संवेदनशीलता और परिवारिक रिश्तों पर गहरा असर डालता है। ये व्यक्ति परिवार के प्रति भावनात्मक रूप से जुड़े होते हैं, और उनकी वाणी में कोमलता होती है, लेकिन कभी–कभी यह व्यक्ति को आर्थिक मामलों में अस्थिर बना सकता है।
- **मंगल:** मंगल के प्रभाव से व्यक्ति आर्थिक मामलों में मेहनत और संघर्ष के साथ सफलता प्राप्त करता है। ये लोग जोश और उत्साह से भरे होते हैं, लेकिन कभी–कभी खर्चीला या जल्दबाजी में निर्णय लेने वाले होते हैं, जिससे आर्थिक नुकसान का सामना करते है।
- **बुध:** बुध के प्रभाव से व्यक्ति की वाणी और आर्थिक बुद्धिमत्ता बढ़ती है। ये लोग अच्छे संचारक होते हैं और धन से संबंधित योजनाओं में चतुराई दिखाते हैं।
- **बृहस्पति (गुरु):** बृहस्पति का प्रभाव व्यक्ति को समृद्धि, बुद्धिमत्ता और लाभ प्रदान करता है। यह व्यक्ति को आस्थावान और दयालु बनाता है, जिससे आर्थिक समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन मिलता है और पारिवारिक मामलों में सम्मान प्राप्त होता है।
- **शुक्र:** शुक्र का प्रभाव आर्थिक स्थिति, पारिवारिक जीवन और आहार आदतों पर पड़ता है। यह समृद्धि, ऐश्वर्य और सौंदर्य को लाता है, लेकिन कमजोर शुक्र पारिवारिक कलह और वित्तीय कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकता है।
- **शनि:** शनि का प्रभाव व्यक्ति को कड़ी मेहनत और अनुशासन से संपत्ति और धन प्राप्त करने का संकेत देता है। शनि के प्रभाव से व्यक्ति का आर्थिक दृष्टिकोण व्यावहारिक और स्थिर होता है, लेकिन इसमें समय लगता है।
- **राहू:** राहू का प्रभाव व्यक्ति को असामान्य और अव्यवस्थित तरीके से धन कमाने के लिए प्रेरित करता है। राहू के प्रभाव से व्यक्ति को आर्थिक मामलों में भ्रम हो सकता है, लेकिन इसके बावजूद वे नए तरीके से धन अर्जित करने में सफल हो सकते हैं। धन भावस्थ राहू धोखा और गुमराह करने का भी कारण बन सकता है।

- **केतु:** केतु का प्रभाव व्यक्ति को भौतिक संपत्ति से दूर रहने और आध्यात्मिक समृद्धि की ओर मार्गदर्शन करता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति को धन कमाने में कठिनाई हो सकती है, और यह आर्थिक अस्थिरता और असमंजस ला सकता है।

तीसरे भाव में ग्रहों का प्रभाव:– तीसरा भाव से व्यक्ति के मानसिक दृष्टिकोण, आत्मविश्वास, साहस, और भाई–बहनों के साथ संबंधों को दर्शाता है। इसके अलावा, यह भाव संवाद, शारीरिक क्षमताओं और छोटी यात्राओं से भी संबंधित है। तीसरे भाव में ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति के साहस, सोचने की शक्ति, और दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने की क्षमता पर पड़ता है।

- **सूर्य:** सूर्य का प्रभाव व्यक्ति को साहस, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता प्रदान करता है। व्यक्ति अपने भाई–बहनों के प्रति स्नेही होता है और परिवार में एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। हालांकि, सूर्य कभी–कभी व्यक्ति को अत्यधिक अहंकारी भी बना सकता है और रिश्तों में तनाव उत्पन्न कर सकता है, खासकर भाई–बहनों के साथ।
- **चंद्रमा:** चंद्रमा का प्रभाव व्यक्ति को संवेदनशील और भावुक बनाता है। ये व्यक्ति भावनाओं को व्यक्त करने में संकोच नहीं करते और भाई–बहनों के साथ गहरे रिश्ते रखते हैं। चंद्रमा का प्रभाव व्यक्ति को दयालु और समझदार बनाता है, जातक छोटी यात्राओं और संवाद में निपुण होता है। लेकिन अशुभ चन्द्रमा मानसिक अस्थिरता और मूड स्विंग्स का सामना भी करवाता है एवं अनिर्णय और भ्रम भी उत्पन्न कर सकता है।
- **मंगल:** मंगल का प्रभाव व्यक्ति को साहसिक, उत्साही और प्रतिस्पर्धी बनाता है। ये व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित होते हैं और जल्दी से निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। लेकिन कभी–कभी यह व्यक्ति को आक्रामक और जल्दबाजी में निर्णय लेने वाला बना सकता है, जिससे रिश्तों और कार्यों में तनाव हो सकता है।
- **बुध:** बुध का प्रभाव तीसरे भाव में व्यक्ति को तेज बुद्धि, संवाद की कला और लेखन में दक्षता प्रदान करता है। ये लोग अच्छे संवादक होते हैं और मानसिक कार्यों में सफल रहते हैं। हालांकि, अशुभ बुध व्यक्ति को चंचल बना सकता है।
- **बृहस्पति (गुरु):** बृहस्पति का प्रभाव तीसरे भाव में व्यक्ति को साहस और धैर्य प्रदान करता है। यह व्यक्ति को जीवन में ऊंचे लक्ष्यों की ओर प्रेरित करता है और भाई–बहनों के साथ अच्छे संबंध बनाता है। गुरु का प्रभाव व्यक्ति को धार्मिक और नैतिक दृष्टिकोण से मार्गदर्शन करता है और उसे दूसरों को सिखाने और साझा करने की क्षमता देता है।
- **शुक्र:** शुक्र का प्रभाव तीसरे भाव में व्यक्ति की संचार क्षमता और भाई–बहनों के साथ रिश्तों पर गहरा असर डालता है। यह व्यक्ति को आकर्षक और अच्छे संबंध बनाने में

मदद करता है। शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति को कला, संगीत या साहित्य में रुचि और सफलता मिलती है। लेकिन यदि शुक्र कमजोर हो तो मानसिक तनाव और छोटी यात्रा में असुविधा होती है।

- **शनि:** शनि का प्रभाव व्यक्ति को कड़ी मेहनत और जिम्मेदारी के साथ साहस और दृढ़ता प्रदान करता है। ऐसे लोग जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहते हैं, लेकिन उन्हें परिणामों में थोड़ी देर लग सकती है। शनि का प्रभाव व्यक्ति को धीमे लेकिन स्थिर प्रगति की ओर मार्गदर्शन करता है। कभी–कभी यह व्यक्ति को अत्यधिक गंभीर और चिंतित बना सकता है, जिससे रिश्तों में दूरी उत्पन्न हो सकती है।
- **राहू:** राहू का प्रभाव तीसरे भाव में व्यक्ति को साहसिक और अनूठा बना सकता है। ये लोग समाज से अलग या नए विचारों के होते हैं और हमेशा कुछ नया करने की कोशिश करते हैं। राहू के प्रभाव से व्यक्ति को जोखिम उठाने और साहसी निर्णय लेने की प्रवृत्ति हो सकती है, लेकिन यह भ्रम और अनावश्यक तनाव का कारण भी बनता है, जिससे भाई–बहनों के साथ रिश्तों में समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- **केतु:** केतु का प्रभाव व्यक्ति को मानसिक रूप से विश्लेषणात्मक और आंतरिक दृष्टिकोण से प्रभावित करता है। यह व्यक्ति बाहरी दुनिया से कम जुड़ता है और समाज से संवाद करने में कम रुचि रखता है। केतु के प्रभाव से व्यक्ति में भ्रम और अव्यवस्था हो सकती है, लेकिन यह ध्यान और आत्मचिंतन की ओर प्रेरित कर सकता है, जिससे जीवन के गहरे अर्थ को समझने में मदद मिलती है।

चतुर्थ भाव में ग्रहों का प्रभाव:– चतुर्थ भाव व्यक्ति के घर, माता, मानसिक शांति, शिक्षा, और संपत्ति से संबंधित होता है। यह भाव व्यक्ति के मानसिक संतुलन, पारिवारिक जीवन और जीवन के आरामदायक पहलुओं को प्रभावित करता है। चतुर्थ भाव में स्थित ग्रह का प्रभाव व्यक्ति के परिवारिक संबंधों, मानसिक स्थिति और आंतरिक सुख–शांति पर पड़ता है।

- **सूर्य:** सूर्य का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति को घर और परिवार में प्रतिष्ठा और सम्मान प्रदान करता है। ऐसे लोग परिवार के मामलों में एक मजबूत और केंद्रित भूमिका निभाते हैं, और उन्हें अपने घर में सत्ता और नियंत्रण का अहसास होता है। हालांकि अशुभ सूर्य पारिवारिक तनाव और विवाद उत्पन्न करबाता हैं।
- **चंद्रमा:** चंद्रमा का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति की मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन पर गहरा असर डालता है। ऐसे लोग अपने परिवार के प्रति अत्यधिक संवेदनशील और भावुक होते हैं। चंद्रमा के प्रभाव से घर में स्नेह और गर्मजोशी बनी रहती है। लेकिन अशुभ चन्द्रमा जातक को अस्थिर भी बना सकता है, जिससे परिवार में तनाव उत्पन्न हो सकता है।

- **मंगल:** मंगल का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति को साहसिक और सक्रिय बनाता है। ऐसे लोग अपने परिवार की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध होते हैं। मंगल का प्रभाव व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत बना सकता है, लेकिन यह कभी-कभी आक्रामकता और विवाद का कारण भी बन सकता है, जिससे पारिवारिक संघर्ष हो सकते हैं।
- **बुध:** बुध का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति को मानसिक स्पष्टता और बुद्धिमत्ता प्रदान करता है। ऐसे लोग अपने परिवार के मामलों में तार्किक और समझदारी से फैसले लेते हैं और घर में शिक्षा और ज्ञान को बढ़ावा देते हैं।
- **गुरु (बृहस्पति):** बृहस्पति का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति को समृद्धि, आनंद और सौहार्द का अनुभव कराता है। यह व्यक्ति को मानसिक शांति और आंतरिक संतोष प्रदान करता है, और परिवार में धर्म, शिक्षा और अच्छे आचार-व्यवहार को बढ़ावा देता है। गुरु के प्रभाव से व्यक्ति दयालु, समझदार और अच्छा मार्गदर्शक बनता है।
- **शुक्र:** शुक्र का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति के घर, परिवार और मानसिक शांति पर गहरा प्रभाव डालता है। यह व्यक्ति को कला, संगीत, और सांस्कृतिक गतिविधियों में रुचि प्रदान करता है, और घर में शांति और सुंदरता का माहौल बनाता है। शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति को माता-पिता, विशेष रूप से माँ के साथ अच्छे संबंध और प्रेमपूर्ण वातावरण मिलता है।
- **शनि:** शनि का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति को कड़ी मेहनत, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना प्रदान करता है। ऐसे लोग अपने परिवार के प्रति समर्पित होते हैं, लेकिन कभी-कभी शनि के प्रभाव से वे परिवार से अलग-थलग भी महसूस कर सकते हैं, जिससे घरेलू जीवन में नकारात्मकता आ सकती है।
- **राहू:** राहू का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति को मानसिक अस्थिरता और भ्रम का सामना कराता है। ये लोग कभी-कभी परिवार से भटक सकते हैं और मानसिक शांति की कमी महसूस कर सकते हैं। राहू के प्रभाव से व्यक्ति को परिवार के मामलों में अप्रत्याशित और असामान्य परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे भ्रम और जटिलताएँ उत्पन्न हो सकती हैं। हालांकि, यदि व्यक्ति सही दिशा में काम करता है, तो राहू उसे समृद्धि और लाभ की ओर भी मार्गदर्शन कर सकता है।
- **केतु:** केतु का प्रभाव चतुर्थ भाव में व्यक्ति को आंतरिक शांति और आत्मनिरीक्षण की ओर प्रेरित करता है। ऐसे लोग पारंपरिक घर और परिवार के मान्यताओं से अलग हो सकते हैं। केतु का प्रभाव व्यक्ति को मानसिक अस्थिरता और भ्रम का सामना करा सकता है, जिससे घरेलू जीवन में असंतुलन उत्पन्न हो सकता है। हालांकि, यह व्यक्ति को आत्मचिंतन

और आंतरिक शांति की ओर भी मार्गदर्शन करता है, जिससे उसे जीवन के गहरे अर्थ को समझने में मदद मिल सकती है।

पंचम भाव में ग्रहों का प्रभाव:– पंचम भाव व्यक्ति की रचनात्मकता, ज्ञान, प्रेम जीवन, बच्चों और मनोरंजन से संबंधित होता है। यह भाव व्यक्ति के आनंद, सुख, और आत्म–अभिव्यक्ति से जुड़ा होता है, जो उसकी इच्छाओं और भावनाओं को दिखाता है। पंचम भाव में ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति की रचनात्मक शक्ति, आत्मविश्वास, और प्रेम जीवन पर असर डालता है।

- **सूर्य:** सूर्य का प्रभाव पंचम भाव में व्यक्ति को रचनात्मकता, नेतृत्व क्षमता, और आत्म–विश्वास प्रदान करता है। यह व्यक्ति को अपनी विशेषताओं को उजागर करने और अपनी क्षमताओं को साबित करने के लिए प्रेरित करता है। सूर्य के प्रभाव से व्यक्ति को प्रेम जीवन में भी गरिमा और आदर्श का अनुसरण करने की प्रवृत्ति होती है। हालांकि अशूभ सूर्य का प्रभाव व्यक्ति को अहंकारी और आत्मकेंद्रित भी बना सकता है, जो रिश्तों में तनाव उत्पन्न कर सकता है।
- **चंद्रमा:** चंद्रमा का प्रभाव व्यक्ति को संवेदनशील, भावुक और रचनात्मक बनाता है। वे कला और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आकर्षित होते हैं और उनका प्रेम जीवन अत्यधिक रोमांटिक होता है। बच्चों के साथ गहरे भावनात्मक संबंध होते हैं, लेकिन कभी–कभी मानसिक अस्थिरता और भ्रम भी हो सकता है, जो रचनात्मकता में रुकावट डाल सकता है।
- **मंगल:** मंगल का प्रभाव साहस, ऊर्जा और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाता है। यह व्यक्ति को अपनी रचनात्मकता को चुनौतीपूर्ण तरीके से प्रकट करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन प्रेम जीवन में उत्तेजना और संघर्ष उत्पन्न कर सकता है। बच्चों के प्रति उत्साही होने के बावजूद कभी–कभी अत्यधिक दबाव भी बन सकता है।
- **बुध:** बुध बुद्धिमत्ता, संवाद कला और रचनात्मकता से जुड़ा होता है। व्यक्ति अपनी सोच को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है और साहित्य, कला, आदि में रुचि रखता है। प्रेम जीवन संवाद और समझदारी पर आधारित होता है, अशुभ स्थिति में यह चंचलता और अनिश्चितता उत्पन्न कर सकता है, जिससे रिश्तों में जटिलता आ सकती है।
- **गुरु (बृहस्पति):** बृहस्पति का प्रभाव आध्यात्मिक ज्ञान, शिक्षा और रचनात्मकता में वृद्धि करता है। यह व्यक्ति को प्रेम और बच्चों के प्रति उदार और समझदार बनाता है। प्रेम जीवन आदर्शवादी और दयालु होता है, लेकिन कभी–कभी यह व्यक्ति को अत्यधिक आदर्शवादी बना सकता है, जिससे व्यावहारिक जीवन में समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- **शुक्र:** शुक्र प्रेम, रचनात्मकता और आनंद के प्रतीक हैं। यह व्यक्ति को प्रेम संबंधों में सुख और संतोष प्रदान करता है, और कला, संगीत, साहित्य में रुचि होती है। बच्चों के साथ

भी सुखमय संबंध बनते हैं। लेकिन अगर शुक्र कमजोर हो तो प्रेम संबंधों या संतान से जुड़ी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।

- **शनि:** शनि का प्रभाव अनुशासन, समर्पण और मेहनत से सफलता प्राप्त करने का संकेत देता है। व्यक्ति अपनी रचनात्मकता और प्रेम जीवन में स्थिरता और धैर्य रखता है। हालांकि, यह व्यक्ति को अधिक गंभीर और चिंतित बना सकता है, जिससे प्रेम जीवन में उदासी और दूरियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।
- **राहू:** राहू का प्रभाव प्रेम और रचनात्मकता में असामान्य और अप्रत्याशित तरीके से कार्य करता है। यह व्यक्ति को समाज की पारंपरिक मान्यताओं से हटकर कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है, लेकिन कभी-कभी यह भ्रम और अस्थिरता उत्पन्न कर सकता है। बच्चों के प्रति अजनबी या असमंजस की भावना हो सकती है।
- **केतु:** केतु का प्रभाव व्यक्ति को आत्म-विश्लेषण और मानसिक शांति की ओर प्रेरित करता है। यह व्यक्ति को अपनी भावनाओं से कुछ हद तक दूर कर देता है, जिससे प्रेम जीवन और रचनात्मक कार्यों में गहरे मानसिक या आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं। कभी-कभी परिवार या बच्चों से दूरी हो सकती है, लेकिन आत्मनिरीक्षण से व्यक्ति संतुलित और सशक्त बनता है।

षष्ट भाव में ग्रहों का प्रभाव:- षष्ट भाव व्यक्ति के स्वास्थ्य, सेवा, शत्रु, कर्ज़ और संघर्ष से संबंधित होता है। यह भाव किसी व्यक्ति की शारीरिक स्थिति, मानसिक संतुलन और जीवन में आने वाली बाधाओं और चुनौतियों को दर्शाता है। इस भाव में ग्रहों का प्रभाव स्वास्थ्य, संघर्षों से निपटने की क्षमता, कर्ज और शत्रुओं से संबंधित मुद्दों पर प्रभाव डालता है।

- **सूर्य:** सूर्य छठे भाव में व्यक्ति को शारीरिक रूप से मजबूत और मानसिक रूप से दृढ़ बनाता है। यह व्यक्ति को कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करने की क्षमता देता है। लेकिन कभी-कभी यह आक्रामक और गुस्सैल बना सकता है, जिससे शत्रुओं से संघर्ष बढ़ सकता है और कर्ज से संबंधित मामलों में संवेदनशीलता उत्पन्न हो सकती है।
- **चंद्रमा:** चंद्रमा का प्रभाव मानसिक तनाव और शारीरिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म देता है। यह मूड स्विंग्स और चिंता का कारण बन सकता है और शत्रुओं से प्रभावित कर सकता है। दुर्बल चंद्रमा के प्रभाव से व्यक्ति कर्ज के मामलों में मानसिक अस्थिरता का सामना कर सकता है।
- **मंगल:** मंगल का प्रभाव शारीरिक ताकत और साहस प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति शारीरिक चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहता है। मंगल शत्रुओं से मुकाबला करने के लिए दृढ़ बनाता है।

- **बुध:** बुध मानसिक चुस्ती और तर्कशक्ति प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति कर्ज और संघर्षों से संबंधित मामलों में समझदारी से काम करता है। यह शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाए रखता है, एवं संघर्षों का समाधान बुद्धिमत्ता से करता है।
- **गुरु (बृहस्पति):** बृहस्पति छठे भाव में कर्ज, शत्रुओं और संघर्षों से उबरने की क्षमता प्रदान करता है। यह मानसिक शांति और संतुलन लाता है, जिससे व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों से उबरता है एवं गुरु के प्रभाव से शत्रुओं से संघर्ष में विजय प्राप्त होती है।
- **शुक्र:** शुक्र मानसिक शांति और स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। यह व्यक्ति को शत्रुओं से निपटने के लिए बुद्धिमानी और कूटनीतिक क्षमता देता है। शुक्र छोटे रोगों से जल्दी उबरने में मदद करता है, लेकिन अशुभ होने पर यह स्वास्थ्य समस्याएं और मानसिक तनाव उत्पन्न कर सकता है।
- **शनि:** शनि कड़ी मेहनत, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति शारीरिक रूप से मजबूत और मानसिक रूप से संतुलित रहता है। अशुभ स्थिति में यह मानसिक तनाव उत्पन्न कर सकता है एवं शत्रुओं से संघर्ष में कठिनाइयाँ ला सकती हैं, लेकिन धीरे–धीरे व्यक्ति विजयी होता है।
- **राहू:** राहू मानसिक और शारीरिक अस्थिरता का कारण बन सकता है। यह तनाव, चिंता और स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता बढ़ा सकता है। राहू शत्रुओं से अप्रत्याशित समस्याओं का सामना करवा सकता है।
- **केतु:** केतु का प्रभाव मानसिक तनाव और शारीरिक समस्याओं से मुक्ति की ओर मार्गदर्शन करता है। यह व्यक्ति को शत्रुओं से दूर रखने की कोशिश करता है और कर्ज व संघर्षों के प्रति एक अलग दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित करता है।

सप्तम भाव में ग्रहों का प्रभाव:– सप्तम भाव व्यक्तिगत संबंधों, विवाह, साझेदारी, संघर्षों, व्यवसाय और विदेश यात्रा से संबंधित होता है। यह भाव किसी व्यक्ति के जीवन में साझेदारी, विवाह, व्यापारिक रिश्तों और अन्य लोगों के साथ तालमेल को दर्शाता है।

- **सूर्य:** सूर्य का प्रभाव व्यक्ति को रिश्तों में नेतृत्व और सम्मान की भावना प्रदान करता है। जिससे वह अपने जीवनसाथी के साथ मजबूत और प्रभावशाली संबंध बना सकता है। हालांकि, इसका अत्यधिक अहंकार और स्वाभिमान रिश्तों में तनाव और संघर्ष का कारण बन सकता है।
- **चंद्रमा:** चंद्रमा का प्रभाव व्यक्ति को भावनात्मक और संवेदनशील रिश्तों की ओर आकर्षित करता है। यह गहरे भावनात्मक संबंध और समर्पण को बढ़ावा देता है, लेकिन

अशुभ स्थिति में व्यक्ति की अस्थिर प्रकृति रिश्तों में अनिश्चितता और तनाव पैदा कर सकती है।

- **मंगल:** मंगल का प्रभाव रिश्तों में संघर्ष और चुनौती उत्पन्न करता है, जिससे व्यक्ति साहस और आत्मविश्वास के साथ विवादों का सामना करता है। एवं अधिकारवादी रवैया रिश्तों में तनाव बढ़ाता है।
- **बुध:** बुध का प्रभाव तर्कशीलता और संवाद क्षमता को बढ़ाता है, जिससे व्यक्ति अपने साथी से अच्छे संवाद स्थापित करता है। हालांकि अशुभ बुध के प्रभाव से व्यक्ति चंचल और परिवर्तनशील हो सकता है, जिससे रिश्तों में अस्थिरता और भ्रम उत्पन्न हो सकता है।
- **गुरु (बृहस्पति):** बृहस्पति का प्रभाव आदर्शवाद, दया और समर्पण लाता है, जिससे व्यक्ति अपने रिश्तों में सामंजस्य और संतुलन बनाए रखता है। हालांकि, कभी–कभी अत्यधिक आदर्शवाद वास्तविकता से मेल नहीं खाता, जिससे निराशा हो सकती है।
- **शुक्र:** शुक्र का प्रभाव आकर्षण, प्रेम और साझेदारी में सफलता लाता है, खासकर कला और सौंदर्य के क्षेत्रों में। यह व्यक्ति को सामंजस्यपूर्ण और सुखी साझेदारी का अनुभव कराता है, लेकिन कमजोर शुक्र रिश्तों में समस्याएं और तनाव उत्पन्न कर सकता है।
- **शनि:** शनि का प्रभाव जिम्मेदारी और दीर्घकालिक दृष्टिकोण लाता है, जिससे व्यक्ति अपने रिश्तों में समर्पण से काम करता है। हालांकि, कभी–कभी यह व्यक्ति को अत्यधिक गंभीर और कठोर बना सकता है, जिससे भावनात्मक दूरी उत्पन्न हो सकती है।
- **राहू:** राहू का प्रभाव रिश्तों में असामान्य, अप्रत्याशित और भ्रमित करने वाले अनुभव लाता है। यह निरंतर बदलाव और चुनौती का सामना कराता है, जिससे व्यक्ति भ्रमित हो सकता है। राहू के प्रभाव से साझेदारी में अप्रत्याशित लाभ या हानि हो सकती है।
- **केतु:** केतु का प्रभाव रिश्तों से हटने की प्रवृत्ति पैदा करता है। व्यक्ति कभी–कभी भावनात्मक दूरी बनाए रखता है और आत्मनिरीक्षण में अधिक समय बिताता है। केतु के प्रभाव से रिश्तों में अनिश्चितता, भ्रम या अलगाव हो सकता है। लेकिन यह आध्यात्मिकता और आत्म–विश्लेषण की ओर भी प्रेरित करता है।

अष्टम भाव में ग्रहों का प्रभाव:– अष्टम भाव व्यक्ति के गहरे परिवर्तन, मृत्यु, विरासत, गुप्त कार्यों, संवेदनाएँ और मनोवैज्ञानिक पहलुओं से संबंधित होता है। यह भाव जीवन के गहरे और रहस्यमय पहलुओं को दर्शाता है। इस भाव में ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति की मानसिक स्थिति, आंतरिक परिवर्तन, वसीयत, धन और जीवन के अंतिम क्षणों से संबंधित समस्याओं पर पड़ता है।

- **सूर्य:** सूर्य का प्रभाव व्यक्ति को आंतरिक शक्ति, आत्म-समझ, और साहस प्रदान करता है। लेकिन अत्यधिक अहंकार के कारण मानसिक संकट उत्पन्न हो सकता है।
- **चंद्रमा:** चंद्रमा का प्रभाव व्यक्ति को मानसिक उतार-चढ़ाव और भावनात्मक संकट से निपटने में मदद करता है। अशुभ स्थिति में मानसिक अस्थिरता, जल से फाड़ा और भ्रम उत्पन्न कर सकता है।
- **मंगल:** मंगल का प्रभाव व्यक्ति को साहस और शक्ति प्रदान करता है, जिससे वह मानसिक तनाव और शारीरिक कष्ट का सामना कर सकता है। यह जीवन के जटिल मुद्दों को हल करने के लिए संघर्ष और दृढ़ता देता है, अशुभ स्तिति में अचानक चोट, दुर्घटना विघ्न उत्पन्न हो सकता है।
- **बुध:** बुध का प्रभाव व्यक्ति को गहरे विश्लेषणात्मक विचार और मानसिक स्पष्टता देता है। यह मानसिक उलझनों और रहस्यों को सुलझाने की क्षमता प्रदान करता है। अशुभ स्थिति में यह भ्रमित कर सकता है, जिससे मानसिक स्थिति अस्थिर हो सकती है।
- **गुरु (बृहस्पति):** बृहस्पति का प्रभाव व्यक्ति को मानसिक शांति और आंतरिक विकास की ओर मार्गदर्शन करता है। यह व्यक्ति को जीवन के गहरे रहस्यों और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करता है।
- **शुक्र:** शुक्र का प्रभाव व्यक्ति को गहरे बदलाव और आध्यात्मिक उन्नति की ओर आकर्षित करता है। यह व्यक्ति को मानसिक परिपक्वता और आर्थिक लाभ दिलाता है, लेकिन कमजोर शुक्र मानसिक तनाव और पारिवारिक समस्याओं का कारण बन सकता है।
- **शनि:** शनि का प्रभाव व्यक्ति को मानसिक और शारीरिक कष्टों से निपटने के लिए धैर्य और अनुशासन प्रदान करता है एवं दीर्घायु जीवन देता है। लेकिन अशुभ स्थिति में मानसिक थकान और नकारात्मक सोच उत्पन्न करता है।
- **राहू:** राहू का प्रभाव व्यक्ति को जीवन के गहरे और रहस्यमय पहलुओं की ओर आकर्षित करता है। यह व्यक्ति को मानसिक और भौतिक परिवर्तन की ओर प्रेरित करता है। लेकिन भ्रम और अस्थिरता के कारण व्यक्ति गलत तरीके से जीवन के गहरे पहलुओं को समझ सकता है।
- **केतु:** केतु का प्रभाव व्यक्ति को आत्मविश्लेषण और आंतरिक शांति की ओर प्रेरित करता है। यह व्यक्ति को मानसिक संकटों से बाहर निकलने और जीवन के गहरे पहलुओं से मुक्त होने की क्षमता देता है। अशुभ स्थिति में मानसिक भ्रम उत्पन्न करता है, जिससे जीवन की वास्तविकता को समझने में कठिनाई हो सकती है।

नवम भाव में ग्रहों का प्रभाव: नवम भाव व्यक्ति के धर्म, आध्यात्मिकता, विदेश यात्रा, गुरु, शिक्षा और भाग्य से संबंधित होता है। यह भाव जीवन के उच्च लक्ष्यों, ज्ञान की खोज और धार्मिक या आध्यात्मिक दिशा को दर्शाता है।

- **सूर्य:** व्यक्ति को आदर्शवादी दृष्टिकोण, उच्च उद्देश्य, और आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करता है। यह यात्रा, शिक्षा और गुरु के मार्गदर्शन से सकारात्मक अनुभव देता है।
- **चंद्रमा:** आंतरिक शांति और संतुलन की ओर प्रेरित करता है, धार्मिक गतिविधियों में रुचि बढ़ाता है। अशुभ स्थिति में अति संवेदनशीलता और अस्थिरता का कारण बनता है।
- **मंगल:** साहस और उत्साह से धर्म, दर्शन और उच्च शिक्षा की ओर प्रेरित करता है, साथ ही विदेश यात्रा और गुरु के साथ अध्ययन को पप्रसस्त करता है। अशुभ स्तिति में जातक के मन में आक्रामकता भी उत्पन्न कर सकता है।
- **बुध:** ज्ञान और तर्कशक्ति की ओर प्रेरित करता है, धार्मिक और आध्यात्मिक मुद्दों पर गहरे विचार को प्रसस्त करता है, लेकिन कभी–कभी अत्यधिक व्यावहारिक बनाता है।
- **गुरु (बृहस्पति):** धर्म, दर्शन और आध्यात्मिकता के प्रति गहरी आस्था और समझ प्रदान करता है, विदेश यात्रा और धार्मिक यात्रा से लाभ मिलता है।
- **शुक्र:** उच्च शिक्षा, यात्रा और कला में सफलता प्रदान करता है। जीवन में संतुलन और आनंद लाता है, लेकिन कमजोर स्थिति में भ्रम और समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं।
- **शनि:** गंभीरता और जिम्मेदारी से धर्म और शिक्षा की ओर प्रेरित करता है, जीवन यात्रा में कठिनाइयों का सामना करने के लिए धैर्य और संयम की शिक्षा देता है।
- **राहू:** अप्रत्याशित आकर्षण और अनिश्चितता उत्पन्न करता है एवं व्यक्ति को गलत मार्गों पर ले जा सकता है। शुभ स्थिति में जीवन के वास्तविक उद्देश्य की ओर प्रेरित करता है।
- **केतु:** आध्यात्मिक मुक्ति की ओर प्रेरित करता है, गहरी आंतरिक खोज और संतुलित सोच उत्पन्न करता है। परन्तु अशुभ स्थिति में भटकाव और असमंजस का कारण बन सकता है।

दशम भाव में ग्रहों का प्रभाव:– दशम भाव व्यक्ति के कर्म, कौशल, करियर, सामाजिक स्थिति और लोकप्रियता से संबंधित होता है। यह भाव किसी व्यक्ति के सामाजिक जीवन, पेशेवर सफलता और समाज में उसका स्थान दर्शाता है। इस भाव में ग्रहों का प्रभाव व्यक्ति के कार्य और पेशेवर जीवन पर गहरा असर डालता है।

- **सूर्य:** व्यक्ति को नेतृत्व, उच्च पेशेवर स्थिति और प्रतिष्ठा प्रदान करता है। यह आत्मविश्वास बढ़ाता है। लेकिन कभी–कभी अहंकार और दूसरों की राय नकारने की प्रवृत्ति पैदा कर सकता है।

- **चंद्रमा:** पेशेवर जीवन में संवेदनशीलता, सहानुभूति और मानसिक संतुलन लाता है। यह दूसरों के साथ अच्छे संबंध बनाने में मदद करता है। लेकिन कभी–कभी अत्यधिक संवेदनशीलता की वजह से कार्यस्थल पर दबाव अधिक महसूस हो सकता है।
- **मंगल:** साहस, ऊर्जा और संघर्ष की भावना देता है। व्यक्ति को महत्वाकांक्षी और सक्रिय बनाता है। अशुभ स्थिति में आक्रामकता के कारण कार्यस्थल पर टकराव हो सकता है।
- **बुध:** बौद्धिक क्षमता, संवाद कौशल और व्यावसायिक निर्णय लेने में मदद करता है। यह पेशेवर सफलता में चतुराई लाता है।
- **गुरु (बृहस्पति):** उच्च स्तर की सफलता, सम्मान और नैतिकता की दिशा में मार्गदर्शन करता है। यह स्थिरता और विकास की ओर प्रेरित करता है।
- **शुक्र:** पेशेवर जीवन में कला, सौंदर्य और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है। यह सफलता, सम्मान और उच्च स्थान प्राप्त करने में मदद करता हैं।
- **शनि:** कठिन परिश्रम, अनुशासन और धैर्य की दिशा में प्रेरित करता है। यह करियर में स्थिरता और जिम्मेदारी बढ़ाता है। अशुभ स्थिति में कर्म में असफ़लता और निराशा का कारण बनता है।
- **राहू:** यह पारंपरिक तरीकों से हटकर नई दिशा में अथवा असामान्य तरीकों से सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता एवं कर्म में बार बार परिवर्तन भी करवा सकता है।
- **केतु:** आत्मनिरीक्षण और निरंतर सुधार एवं एकाधिक कर्म की ओर बढ़ाता है। लेकिन कभी–कभी संसारिक लक्ष्यों के प्रति उदासीनता उत्पन्न कर सकता है, जिससे संतुलन प्राप्त करना कठिन हो सकता है।

एकादश भाव में ग्रहों का प्रभाव:– एकादश भाव मित्रता, सामाजिक, लक्ष्य की प्राप्ति, आर्थिक लाभ और इच्छाओं की पूर्ति से संबंधित है। यह भाव उन इच्छाओं और आकांक्षाओं को प्रकट करता है, जिन्हें व्यक्ति जीवन में हासिल करना चाहता है। इसमें ग्रहों का प्रभाव उस व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, मित्रों से रिश्ते, और सफलता प्राप्ति के माध्यम से आर्थिक लाभ के बारे में जानकारी प्रदान करता है।

- **सूर्य:** सामाजिक प्रतिष्ठा और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए आत्मविश्वास और प्रेरणा प्रदान करता है। हालांकि, अत्यधिक प्रभाव से व्यक्ति स्वार्थी हो सकता है और दूसरों की मदद को नज़रअंदाज़ कर सकता है।
- **चंद्रमा:** सामाजिक संबंधों और मित्रता में समझ बढ़ाता है और सहानुभूति को बढ़ावा देता है। कभी–कभी अत्यधिक संवेदनशीलता के कारण व्यक्ति दूसरों पर अधिक निर्भर हो सकता है।

- **मंगल:** इच्छाओं की प्राप्ति के लिए ऊर्जा और आक्रामकता प्रदान करता है। यह व्यक्ति को संघर्षशील और सक्रिय बनाता है। लेकिन कभी–कभी अत्यधिक प्रतिस्पर्धा से टकराव भी हो सकता है।
- **बुध:** सोचने की क्षमता, संवाद कौशल और सामाजिक नेटवर्किंग में सफलता प्रदान करता है। यह व्यक्ति को अपने संपर्कों का सही उपयोग करने में मदद करता है।
- **गुरु (बृहस्पति):** आर्थिक समृद्धि, सामाजिक विस्तार और उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद करता है। इसका प्रभाव व्यक्ति को सकारात्मक रूप से अपनी इच्छाओं को पूरा करने की दिशा में मार्गदर्शन करता है।
- **शुक्र:** मित्रों, साझेदारों और सामाजिक संपर्क के लिए मदद करता है। यह वित्तीय लाभ और सामाजिक मान्यता प्राप्त करने में मदद करता है। लेकिन शुक्र कमजोर होने पर धोखा और समस्याएं उत्पन्न होती हैं।
- **शनि:** सामाजिक स्थिति, मित्रों से लाभ और धन प्राप्ति के लिए जिम्मेदारी और धैर्य प्रदान करता है। शनि का प्रभाव व्यक्ति को दीर्घकालिक लक्ष्यों में सफलता दिलाने में मदद करता है।
- **राहू:** आकर्षक अवसरों और अप्रत्याशित परिवर्तनों के लिए प्रेरित करता है। यह व्यक्ति को असामान्य तरीकों से सफलता प्राप्त करने की दिशा में प्रोत्साहित करता है। एवं जातक को भ्रम और अनिश्चितता भी उत्पन्न कर सकता है।
- **केतु:** यह व्यक्ति को साधारण तरीकों से अपने लक्ष्यों को पूरा करने और आत्मसाक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है, हालांकि यह सामाजिक संबंधों से थोड़ी दूरी भी बना सकता है।

द्वादश भाव में ग्रहों का प्रभाव:– द्वादश भाव आध्यात्मिकता, आत्मनिरीक्षण, विनाश, अवधि का अंत, गोपनीयता और दूसरी दुनिया से जुड़ा हुआ है। यह भाव व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य, अकेलेपन, अवकाश और अंतिम मोक्ष की दिशा में उसे मार्गदर्शन प्रदान करता है।

- **सूर्य:** यह व्यक्ति को आंतरिक ऊर्जा का सही उपयोग करने, आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक जागृति की दिशा में प्रेरित करता है।
- **चंद्रमा:** यह व्यक्ति को अपनी गहरी भावनाओं, मानसिक तनाव और आत्मनिरीक्षण की ओर प्रेरित करता है। चंद्रमा की संवेदनशीलता व्यक्ति को मानसिक असंतुलन और असुरक्षा का अनुभव करवा सकती है।

- **मंगल:** मंगल का प्रभाव व्यक्ति को आंतरिक संघर्षों का सामना करने के लिए ऊर्जा और साहस प्रदान करता है। यह आध्यात्मिक शक्ति और आत्म-प्रेरणा का स्रोत बनता है।
- **बुध:** बुध का प्रभाव व्यक्ति को गहरे विचार और मानसिक स्पष्टता की ओर आकर्षित करता है। व्यक्ति को मानसिक शांति और ध्यान की ओर मार्गदर्शन करता है, अशुभ स्थिति में भ्रमित और निश्चयहीनता का भी सामना करवा सकता है।
- **गुरु (बृहस्पति):** बृहस्पति का प्रभाव आध्यात्मिक शिक्षा और आत्म-साक्षात्कार की ओर प्रेरित करता है। यह व्यक्ति को जीवन के गहरे रहस्यों को समझने और आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में मार्गदर्शन देता है।
- **शुक्र:** शुक्र व्यक्ति को मानसिक शांति, आंतरिक संतुलन और आत्म-जागरूकता की ओर प्रेरित करता है। लेकिन कमजोर शुक्र मानसिक चिंता, अकेलापन और गुप्त शत्रुओं का कारण बन सकता है।
- **शनि:** शनि का प्रभाव व्यक्ति को आध्यात्मिक परिश्रम, जीवन की कठिनाइयों और दुखों से निपटने की ओर प्रेरित करता है। यह आत्म-साक्षात्कार और कर्मों की जिम्मेदारी लेने की प्रेरणा देता है, अशुभ स्थिति में मानसिक और शारीरिक थकान एवं स्नायविक बीमारी का भी कारण बन सकता है।
- **राहू:** राहू का प्रभाव व्यक्ति को भ्रम, विकृति और अनवांछित इच्छाओं की ओर खींच सकता है। यह व्यक्ति को अपनी इच्छाओं और भ्रमों से मुक्ति पाने की कोशिश में भटकने की स्थिति में डाल सकता है, जिससे मानसिक अवसाद और भ्रामक अनुभव हो सकते हैं।
- **केतु:** केतु का प्रभाव व्यक्ति को आध्यात्मिक उन्नति, स्वतंत्रता और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करता है। यह व्यक्ति को गहरे आत्म-निरीक्षण और आंतरिक शांति की ओर मार्गदर्शन करता है। लेकिन अशुभ स्थिति में यह व्यक्ति को दुनियादारी से हटकर अत्यधिक आत्मनिष्ठ बना सकता है, जिससे वह अपने सामाजिक दायित्वों से विमुख हो सकता है।

द्वादश भावों से विचार्य विषय

ज्योतिष शास्त्र में भावों का कारकत्व एक विशेष महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो न केवल जातक की कुण्डली के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायक होता है, बल्कि उन सवालों का सही जवाब देने के लिए भी मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो जातक ज्योतिषी से पूछता है। फलादेश में किसी भी समस्या का समाधान या भविष्यवाणी के लिए, ये भाव कारक ही यह निर्धारित करते हैं कि सवाल का उत्तर कुण्डली के किस हिस्से में है।

ग्रहों और नक्षत्रों के परिणामों को ठीक से समझने के लिए भावों को एक बेहद महत्वपूर्ण घटक माना जाता है। कुण्डली में कुल बारह भाव होते हैं। और ये भाव जातक के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रकट करते हैं। इन भावों में से हर एक का एक निश्चित कार्य और क्षेत्र होता है। जैसे पहले भाव से शारीरिक रूप, तीसरे भाव से भाई–बहन, सातवें भाव से वैवाहिक जीवन आदि जुड़े होते हैं। भावों का प्रभाव जातक के जीवन के हर पहलू पर पड़ता है।

यह न केवल व्यक्तिगत जीवन को प्रभावित करता है, बल्कि परिवार, व्यवसाय, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे पहलुओं पर भी इसका गहरा असर पड़ता है। हर एक भाव का कारक ग्रह जातक के जीवन में उस क्षेत्र से संबंधित घटनाओं और परिस्थितियों को प्रेरित करता है। कुंडली में सभी द्वादश भावों का अपना–अपना विशेष कारकत्व होता है। यही कारण है कि ज्योतिषियों को भावों के कारकत्व के बारे में गहरी समझ होनी चाहिए।

- **प्रथम भाव:** जन्म कुंडली में यह सबसे प्रमुख भाव है, इस भाव को ही लग्न या तनु स्थान भी कहते है। प्रथम भाव के कारक सूर्य है, यह काल पुरुष का सिर है, तथा पूर्व दिशा है। यह भाव व्यक्ति का स्वभाव, स्वास्थ्य विशेषताएं, सौंदर्य, स्मरण शक्ति, स्वभाव, चरित्र, कद, दीर्घायु, समृद्धि, यश, मान–प्रतिष्ठा, व्यक्तित्व, उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति एवं जीवन के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाता है। इस भाव से आयु, सुख–दुःख, पितामह, प्रारंभिक जीवन, वर्तमान काल आदि का विचार भी किया जाता है। लग्न और लग्नेश की स्थिति के आधार पर जातक के शारीरिक बल का भी पता चलता है। शारीरिक आकृति, चिह्न, शील, नेतृत्व शक्ति, लक्षण, गुण, स्थान, प्रवास, तेज, आनंद, जाति–वर्ण, रुचि, पोशाक, गुणागुण, ज्ञान, आत्मनिर्भरता, स्वतंत्रकार्य, जातक का शरीर, मुख, मस्तक, केश, योग्यता, आरोग्य, मानसिक स्थिति, महत्वाकांक्षा, इच्छा, मन का चंचलपन या स्थिरता, सत्यासत्य आचरण आदि विषयों का भी विचार किया जाता है। जातक की जन्मकुंडली अथवा प्रश्नकुंडली के किसी भी सवाल के जवाब, जीवंतता, सामूहिकता, आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आत्मप्रकाश, आत्मा आदि को देखा जाता है। वात–पित्त–कफ प्रकृति, त्वचा का रंग–रूप, पूर्वज, अहंकार, मानसिकता आदि भी जाना जा सकता

है। विस्तृत रूप में इस भाव से जनस्वास्थ्य, मंत्रिमंडल की परिस्थितियों पर भी विचार किया जाता है।

❖ **द्वितीय भाव:** यह धन और परिवार का भाव है, इसे कुटुंब या धन भाव भीकहते हैं। यह काल पुरुष का मुख है, इसका कारक बृहस्पति है तथा वाणी के लिए बुध कारक है। यह भाव व्यक्ति की वित्तीय स्थिति, उसकी बोलचाल की शैली और पारिवारिक जीवन को दर्शाता है। यह भाव बैंक खाता, पारिवारिक पृष्ठभूमि, धन, नेत्र, मुख, वाणी, परिवार, ससुराल, स्वाद, मुखाकृति, शासन, भाषण शकित का द्योतक है। इसके अलावा यह भाव संसाधन, धनसंग्रह, नैतिक मूल्य और गुणों के बारे में बताता है। दूसरे भाव से कुटुंब, भोजन, ईश्वर में विश्वास, चलने का ढंग, शत्रु–मित्र, पैतृक धन, अन्न, वस्त्र, द्रव्य आदि का भी विचार किया जाता है। इस भाव से धन–संग्रह, पारिवारिक सुख, खाद्य पदार्थ, स्वर–संगीत, कला, अर्जित धन–संपत्ति, सुवर्णादि धातुओं का क्रय–विक्रय, घर की स्थिति, दाहिनी आंख, जीभ, प्रारंभिक शिक्षा आदि के बारे में जाना जाता है। सौभाग्य, लाभ–हानि, आभूषण, दृष्टि, स्मरण शक्ति, नाक, ठुड्डी, दांत, स्त्री की मृत्यु, गला, कान, मृत्यु का कारण आदि का भी पता चलता है। इस भाव से विस्तृत रूप में कैद यानी राजदंड भी देखा जाता है। राष्ट्रीय विचार में राजस्व, जनसाधारण की आर्थिक दशा, आयात एवं वाणिज्य–व्यवसाय आदि के बारे में भी इसी भाव से जाना जा सकता है। मुक्ति, वचन, मित्रता, पोशाक, गज, अश्व, कपटता, ज्येष्ठता, गुप्त शत्रु, बहुमूल्य सामग्री का संग्रह, सोना–चांदी, चल संपत्ति, नम्रता, वाकपटुता, जातक की आर्थिक स्थिति, प्रपंचिक सुख–दुःख, वक्तृत्व शक्ति, सुवर्ण–रत्नों की प्राप्ति, पूर्वाजित धन या जमीन लाभ, ऐश्वर्य, आर्थिक उन्नति या अवनति, पारिवारिक व्यवसाय, खानपान, होटल रेस्टोरेंट से संबंधित कार्य या व्यवसाय का विचार किया जाता है।

❖ **तृतीय भाव:** तीसरे भाव को सहज या पराक्रम भाव कहते हैं। यह काल पुरुष का दायां हाथ है, छोटे भाई–बहन तथा पराक्रम के लिए मंगल तथा आयु नौकरों के लिए शनि तृतीय भाव का कारक ग्रह है। यह भाव व्यक्ति की मानसिक दृढ़ता और साहसिक निर्णय, परिवर्तन, आयु, छोटी यात्राऐं, खेल, करियर में खूब यात्राएं, अच्छे वक्ता, लेखक आदि का द्योतक है। शिक्षा, परिवार, भूमि, नाटक, नृत्य, ऋण, बौद्धिक विकास, साहसी विचार, दमदार आवाज, घर के आसपास (परोसन), प्रभावी भाषण और संप्रेषण के अन्य तरीके इस भाव से देखे जाते हैं। मित्र, पसंद, घूमकर कार्य करना, बात करने की कला, मीडिया, आकर्षण, खुद में सुधार, सहयोग, साँस की नली, काम करने का साहस, गहने और माता–पिता की मृत्यु भी इस भाव से जुड़े होते हैं। शौर्य, धैर्य, गायन, योगाभ्यास, नजदीकी रिश्तों का सुख, शारीरिक शक्ति, कंधे, हाथ, दाहिना कान, सेना, सेवक, चाचा,

मामा, दमा, खांसी, श्वास और कान के रोगों का विचार इसी भाव से किया जाता है। मित्रों से संबंध, साझेदारी, संचार माध्यम, संगीत, वक्षस्थल, फेफड़े, भुजाएँ, बंधु–बांधव, रेल यात्रा, वायुयान, पत्र–पत्रिकाएँ, पत्रव्यवहार, निकटतम देशों की हलचल आदि के बारे में भी जाना जाता है। वीर्य, श्रवण, आभूषण, वस्त्र, फलमूल, नजदीकी यात्रा, अधीनस्थ व्यक्ति, कंठस्वर, माता के पितृव्य, पिता के मातुल, श्यालक की पत्नी, साहस, डर–भय, मानसिक संतुलन आदि का विचार इसी भाव से ही किया जाता है। सामर्थ्य (पराक्रम), भाई–बहन से संबंध, पड़ोसी, लेखन–प्रकाशन, महत्वाकांक्षा, छोटे भाई–बहन, नौकर का सुख–दुःख, हस्ताक्षर, मित्रता, मीठा या खट्टा पदार्थ खाने की रुचि, औषधि, इच्छा आदि का विचार इस भाव से किया जाता है।

❖ **चतुर्थ भाव:** यह भाव माता एवं आनंद का भाव है, इसे सुख भाव कहते हैं। यह काल पुरुष का मन, छाति, फेफड़ों है तथा जमीन–जायदाद के लिए मंगल, वाहन सुख के लिए शुक्र और मां के लिए चंद्रमा कारक होता है एवं यह भाव उत्तर दिशा है। यह भाव व्यक्ति की घरेलू स्थिति, मानसिक संतुलन और घर के वातावरण को दर्शाता है। घर, संपत्ति, मानसिक शांति, माता, सुख, वाहन, प्रापर्टी, जमीन–जायदाद, मन, उच्चशिक्षा, गड़ा हुआ धन, जीवन स्तर, धन, दुधारू गाय, भैंस, बकरी, सभ्य व्यवहार, वृद्धावस्था आदि का द्योतक है। माता के स्वास्थ्य, सुरक्षा की भावना, भावनात्मक शांति, पारिवारिक प्रेम, पाताल, मकान, चौपाया, मित्र, बाग–बगीचा, मामा, श्वसुर, नानी, प्रॉपर्टी, गृहस्थ जीवन के सुख का विचार भी इसी भाव से किया जाता है। मातृसुख, गृहसौख्य, पेट के रोग, मानसिक स्थिति, स्वयं का मकान, पारिवारिक स्थिति, पैतृक संपत्ति, मातृभूमि, जनता से संबंधित कार्य, कुर्सी, कुआँ, दूध, तालाब, गुप्त कोष, उदर आदि का भी पता चलता है। शिक्षण संस्थाएं, कॉलेज, स्कूल, कृषि, सर्वसाधारण की प्रसन्नता, स्थानीय राजनीति, जनता के बीच पहचान, राज्य, शाकसवजी, महौषधि, छोटे भाई की संपत्ति, मातुल पुत्र की पत्नी, पितृव्य पत्नी, संबंधी गण, पशुधन और इमारतें इस भाव से संबंधित होते हैं। जन्म समय की परिस्थिति, दत्तक पुत्र, हृदय, पति–पत्नी के कानूनी मामले, चल संपत्ति, गृह–निर्माण, माता का स्वभाव, स्थाई संपत्ति, नौकर, पूर्वजित धन, गाँव, भूमिगत लाभ, परोपकार के कार्य, मन की स्थिति, ऐश्वर्य, कीर्ति, भवन, पशु, आयु का अंतिम समय और सभी प्रकार के सुख, शिक्षकता, संपत्ति, खेत, उद्यान, कार से संबंधित कार्य इसी भाव से ही विचार किया जाता है।

❖ **पंचम भाव:** यह भाव संतान एवं ज्ञान का भाव होता है, तथा इसे पुत्र भाव भी कहते हैं। यह काल पुरुष का पेट है, संतान के लिए गुरु ग्रह तथा बुद्धि और शिक्षा के लिए बुध कारक होता है। यह भाव संतान, शिक्षा, प्रेम समंध, रोमांस और रचनात्मक कार्य से जुड़ा

होता है। यह भाव व्यक्ति की सोच, उसकी शिक्षा, जाति, लॉटरी, योगाभ्यास और भावनात्मक विचारों को दर्शाता है। व्यवसाय में बाधा, प्रेमिक–प्रेमिकाओं, पूर्व जन्म, गायन, आस्था, समाधान, परामर्श, इष्टदेव, पेट, संचित कर्म, विश्वास, गंभीरता, नीति शास्त्र, गुप्त मंत्रणा, शास्त्र ज्ञान, विचार–शक्ति, आकस्मिक धनलाभ या हानि, यश–अपयश, प्रबंधात्मक योग्यता, पूर्वजन्म की स्थिति, भविष्य ज्ञान, आध्यात्मिक रुचि, मनोरंजन, प्रेम सम्बन्ध, इच्छाशक्ति, जठराग्नि, गर्भाशय, मूत्राशय, सट्टा–लाटरी एवं शेयरों द्वारा लाभ हानि का विचार इसी भाव से किया जाता है। इसके अलावा आनंदपूर्ण सृजन, बच्चे का सुख, सफलता, निवेश, जीवन का आनंद, शिष्य, गवेषणा, सत्कर्म जैसे बिंदुओं के बारे में भी इस भाव से जाना जाता है। विद्या, बुद्धि, विवेक, विनय, देशभक्ति, पाचन शक्ति, कला, रहस्य शास्त्रों की रुचि, नौकरी परिवर्तन, पीठ, प्रशासकीय क्षमता, देवराज, पंचक देवता, राजा, पिता पुत्र समंध, पुण्य, यात्रा, पुत्र प्राप्ति, वाक्शक्ति, गर्भस्थ संतान, भीरुता, नए आविष्कार, तृतीय भ्राता, पूर्वाग्रज, भ्राता पत्नी, प्रवंध रचना, संतान सुख, कुशाग्रता, प्रशंसा योग्य कार्य, दान, जुआ, पुत्र–पुत्रियां, मानसिकता, मंत्र–ज्ञान, स्मरण शक्ति, इच्छाशक्ति, प्रतिष्ठा आदि विषयों का भी पता चलता है। वैभव, गुण, रूप–रंग, स्वभाव, विद्यायोग, यांत्रिक विद्या, शास्त्र में निपुणता, विद्वता, राज सम्मान, मंत्र सिद्धि, चातुर्यता, लेखन शक्ति, ग्रंथकर्ता, दलाली, शेयर या जोखिम भरा काम, धार्मिक जीवन, अनाथालय से संबंधित कार्य आदि का विचार पंचम भाव से किया जाता हैं।

❖ **षष्टम भाव:** इसे शत्रु भाव कहते हैं, यह काल पुरुष की बस्ती (नाभि से लेकर लिंग मूल तक का स्थान) है। इस भाव का रोगों के लिए शनि तथा मातुल पक्ष के लिए बुध एवं दुर्घटना आदि के लिए मंगल कारक होता है, तथा न्यायपालिका, जेल, अस्पताल, निम्न स्तर के कार्य को दर्शाता है। शत्रु, दुर्घटना, रोग, भय, कर्जा (ऋण), उधारी, प्रतियोगिता, मातुल पक्ष, ऑपरेशन, कलह, मुकदमा, पाप, अन्याय, अग्नि भय, विषैले जंतुओं का भय, ऋण, कारावास, शत्रुता आदि का द्योतक यह भाव होता है। यह भाव व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति, प्रतिद्वंदिता और सेवा से संबंधित परिस्थितियों को दर्शाता है। कठोर परिश्रम, व्रण, घाव (क्षत), रक्तस्राव, दाह, सर्जरी, दुश्चिन्ता, उम्र वढ़ना, कसरत नियमित कार्यक्रम के संबंध में यह भाव संकेत देता है। गंभीर बीमारी, न्यायालय, कलंक, लड़ाई–झगड़े में पैसा खर्च, मेहनत का काम, क्रोध, मद–मोह–लोभादि विकार, अंग भंग, विपत्ति, सौतेली माता, आँखों की बीमारी, स्वाद का विचार, मूत्र रोग, हृदय रोग, चोट की स्थिति, युद्ध, दुख, पापकर्म, हानि, स्व–बन्धुवर्ग व् अपन जन से विरोध, नाभि, गुदा स्थान संबंधी रोगों का विचार षष्ठम भाव से किया जाता है। लेन–देन के संबंध, मामा–मौसी का सुख, नौकर–चाकर, विघ्न–बाधा, भोजन, चाचा–चाची, अपयश, विश्वासघात, असफलता, पालतू जानवर, कोर्ट से संबंधित कार्य, आँत, उदर, सीमा विवाद, आक्रमण, सैन्य–

सामंत, शस्त्र, खेलक्षेत्र, स्नायु, माता की स्वत्व, पितृगुरु, पुत्र का संपत्ति, विमाता, शारीरिक वक्रता, शत्रु कष्ट, मुकदमेबाजी, अवसाद, जय–पराजय, भूतप्रेत, बंधन भय, विष प्रयोग, क्रूर कर्म, चोरी का भय व नुकसान, अपमान कारक प्रसंग, मातृपक्ष से सुख या दुख संबंधित विचार इसी भाव से किया जाता है।

❖ **सप्तम भाव:** यह भाव विवाह एवं पार्टनरशिप का प्रतिनिधित्व करता है। इसे जाया भाव कहते हैं, साथ ही मारक स्थान भी होता है। यह भाव विवाह, साझेदारी और दूसरों के साथ संबंधों से संबंधित होता है। यह काल पुरुष के गुप्तांग (जनेन्द्रियाँ) हैं तथा स्त्रियों के लिए गुरु और पुरुषों के लिए शुक्र कारक होता है एवं यह पश्चिम दिशा है। यह भाव जीवनसाथी, आकर्षण, अलगाव, जीवन साथी की मृत्यु, वाद विवाद, मुकदमा, कलह, यश, मान, प्रतिष्ठा और व्यापारिक रिश्तों को भी दर्शाता है। यह भाव जीवन साथी के बारे में बताता है, इस भाव से पति पत्नी, विवाह, वैवाहिक संबंध, व्यापार, साझेदारी, विदेश यात्रा, विवाह संबंधी घटनाएं, बाहरी गुप्त विषय, खोया धन, दादा, अपनी मृत्यु, कटी, भोजन की उत्तमता, चोरी से प्राप्त धन, नाच–गाना, स्त्री सुख, काम वासना, दाम्पत्य जीवन, पितामह, प्रवास, विदेश गमन, विदेशी संबंध, भाई–बहन की संतान, दैनिक आय, रिटेल स्टोर, समझौता, प्रत्यक्ष शत्रु, मूत्राशय, बवासीर और गुप्त रोगों का विचार किया जाता है। विपरीत लिंग वाले मित्र, सुंदरता, लावण्यता, विवाह सुख, जीवन साथी का स्वभाव, कोर्ट कचहरी प्रकरण में यश–अपयश, आय, पैतृक संपत्ति, ऋण, बिना प्रयास के लाभ, अभिमान, विवाहेतर संबंध आदि का ज्ञान इसी भाव से ही मिलता है। वाणिज्य, क्रय–विक्रय, व्यवहार, मूत्राशय, सार्वजनिक, नैतिकता, गुप्त रोग तथा राष्ट्रीय दृष्टिकोण से विदेशों से संबंध, युद्ध का पता इस भाव से चलता है। जामित्र, द्यून, गमन, कलत्र, संपत्ति, अस्तित्व, संपूर्ण यात्रा, स्त्री सुख, पुत्र विवाह, विषाद, भ्रमण, व्यय, दधि–क्षीर, लेनदेन, छोटे भाई का पुत्र, मातामही, सुस्थता, अस्थिरता, विवाह, यौन सुख, पार्टनर आदि विचारणीय विषय सप्तम भाव से संबंधित हैं। विषय–वासना, आमोद–प्रमोद, आंतों, जीवन साथी का रूप रंग और गुण स्वभाव, वृत्ति, प्रेम विचार का ढंग, जीवन साथी से वफादारी, भार्या या पति से सुख दुःख, आकस्मिक जीवन साथी से लाभ, व्यभिचार, परस्त्री गमन व रति, भागीदारी का धंधा, व्यापार से लाभ हानि, गुप्त धन लाभ, स्वतंत्र धंधा, मूत्राशय, अंडाशय आदि का विचार सप्तम भाव से करते हैं।

❖ **अष्टम भाव:** कुंडली में यह भाव आयु का भाव होता है। इसे रन्ध्र भाव भी कहते हैं, यह काल पुरुष का गुप्तांग हैं, तथा इस भाव का कारक ग्रह शनि है। यह भाव व्यक्ति के गहरे रहस्यों, धन के स्रोत और जीवन में बड़े परिवर्तन, गंभीर बीमारियां, ऊंचाई से गिरना, बाधाएं, निराशा और बदनामी को दर्शाता है। आयु, मृत्यु का कारण, आकस्मिक दुर्घटना,

संघर्ष, कठिनाईयां, ससुराल, जीवन साथी का धन, गुप्त विभाग, जीवन बीमा, रहस्य, छुपी हुई शक्तियाँ, गड़ा हुआ धन, दुःख, दरिद्रता, मलद्वार, दीर्घ रोग, आक्रमण, गुप्त ज्ञान, अपराध संबंधी कार्य, अंतिम संस्कार, कब्रिस्तान का काम, आध्यात्मिक कार्य आदि का अष्टम भाव द्योतक है। लॉटरी, सट्टा, पैतृक संपत्ति, गहन–शोध, अंदरूनी विषय, चोरी की आदत, रोग का कारण, वेतन, कर्ज का लेनदेन, सर्जरी, गुप्तधन की प्राप्ति, विघ्न, पुरातत्व, समुद्र द्वारा दीर्घ यात्राएं, खुद की न कमाया हुआ धन, अवसाद, अपमान, फैक्टरी से बनी वस्तुएं, श्मशान, नशा, पूर्व जन्म की जानकारी, जीवन साथी से भूमि–धनादि का लाभ, गुदा–अंडकोष आदि गुप्तेंद्रिय संबंधी रोग, पति या पत्नी की आयु, ताऊ, दास्य वर्ग एवं विषम परिस्थितियों का विचार अष्टम भाव से किया जाता है। गुप्त क्रियाएं, अनसुलझे मामले, धीमी गति के काम भी इस भाव से देखे जाते हैं। इसके अलावा दूसरे के संसाधनों का सृजन में उपयोग, जननांगों के विकार, अचानक आने वाले संकट, स्त्री धन, उत्तराधिकारी, स्वयं द्वारा अर्जित मकान, जातक की स्थिति, वियोग, सजा, लांछन आदि का विचार इसी भाव से ही किया जाता है। वाम पैर, रंध्र, रण, विनाश, बड़े बहन के लड़के, बंधू विच्छेद, दुर्भाग्य, पापकर्म, शत्रुता, कठिनाइयां, संताप और पिछले जन्म के कर्मों के अनुसार सुख और दुख, परलोक गमन आदि विचारणीय विषय आठवें भाव से ही संबंधित होते हैं। मानसिक पीड़ा, आर्थिक क्षति, भाग्य हानि, आकस्मिक धन लाभ, रिश्वत, अनैतिक लाभ, जमीन, गांव, परस्त्री से धन लाभ, कौटुम्बिक कलह, सर्पदंश, मर्यादा, अपघात, अपमृत्यु, मृत्यु समान पीड़ा, आत्महत्या, भयंकर संकट, शत्रुभय आदि का विचार अष्टम भाव से किया जाता है।

❖ **नवम भाव:** ज्योतिष में नवम भाव भाग्य, पिता एवं धर्म का बोध कराता है। इसे भाग्य या धर्म भाव कहते हैं और यह भाव आध्यात्मिकता से संबंधित होता है। यह काल पुरुष की जंघा है, पिता के लिए सूर्य तथा भाग्य के लिए बृहस्पति कारक होते हैं। यह व्यक्ति के जीवन के उद्देश्य, यात्रा, भविष्यवाणियां, स्वप्न, धार्मिक निर्णय, दैवीय सहायता और धार्मिक सोच को दर्शाता है। यह भाव पिता, धर्म, भक्ति, आस्था, निर्धनता, गुरु, उपदेश, न्याय, धार्मिक क्रिया कलाप, धार्मिक यात्राएं, उच्च शिक्षा, भाग्यदोय आदि का द्योतक है। धर्म से संबंधित विषय, समर्पण, आशीर्वाद, बौद्धिक विकास, निशर्त प्रेम, मार्गदर्शक जैसे गुणों को इस भाव से देखा जाता है। नवम भाव से पिता, भाग्य, लंबी यात्रा, विदेश यात्रा, स्नेह की भावना, अष्टसिद्धियां, तपस्या, मानसिक सोच, भाग्योदय, अंतर्दृष्टिमंत्र, इंटरनेट, उत्तम विधा, बड़े भाई, पौत्र, बहनोई, मंदिर, गुरुद्वारा आदि धार्मिक स्थान, गुरु से भक्ति, यश–कीर्ति आदि का विचार नवम भाव से किया जाता है। दार्शनिक ज्ञान, दान, देवर–भाभी के संबंधों, आध्यात्मिक प्रगति, बुद्धिमत्ता, ग्रंथ लेखन, भाई की पत्नी, दूसरा विवाह, तीर्थयात्रा, संतान का भाग्य, आध्यात्मिक स्थिति, वैराग्य, आयात–निर्यात,

सार्वजनिक जीवन, पुनर्जन्म, मंदिर–धर्मशाला आदि का निर्माण, परियोजना, मठाधीश, शिक्षक, उपदेशक, पारिवारिक व्यवसाय, न्यायालय से संबंधित कार्यों का पता नवम भाव से चलता है। शुभकार्य, अंक, प्रभाव, श्यालक, श्यालिका, देवर, दया, दीक्षा, प्रशंसा योग्य कार्य, दानशीलता, पूर्वजन्मों का संचित पुण्य, धर्म पर आस्था, ऐश्वर्य, समुद्र पर्यटन, वैदिक सामर्थ्य, ईश्वर भक्ति, गुरु उपदेश, पुण्य कर्म, मंत्र सिद्धि, धार्मिक वृत्ति, तप, उदारता, सुख समृद्धि एवं जंघा नवम भाव से विचार किया जाता हैं।

❖ **दशम भाव:** दशम भाव करियर और जीविकाए का भाव होने के करण इसे कर्म तथा यश भाव भी कहते हैं। यह काल पुरुष के घुटने हैं, इसके कारक ग्रह सूर्य, बुध, शनि हैं तथा यह दक्षिण दिशा है। यह भाव व्यक्ति के पेशेवर जीवन, उसकी महत्वाकांक्षाओं और समाज में स्थिति को दर्शाता है। कुंडली में दशम भाव से यश, अपयश, मान–सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चपद, विदेशों में निवास, अभिमान, आकाश में घूमना, पहचान, अधिकार, पिता का सुख–दुःख, प्रभुत्व, पदोन्नति, जीविका का साधन, कार्ये सिद्धि, नेतृत्व, सरकार, वर्षा, वायुयान व आकाशीय वृत्तांत, हर तरह का कर्म, पेशावर सफलताएं, कर्म कौशल, लेखन, व्यवसाय, भाषण, सफल संगठन, प्रशासन, स्किल बांटना जैसे काम देखा जाता है। पद प्रतिष्ठा, बॉस, कार्य क्षमता, शासन से लाभ, घुटनों का दर्द, सरकारी कार्य, उपाधि, धार्मिक कार्य, शुभ कार्य, कृषि कार्य दशम भाव से ही विचार किया जाता है। नौकरी, प्रशासनिक स्तर, सफलता, सार्वजनिक जीवन, कार्यसिद्धि, नेता, संसद, विदेश व्यापार, आयात–निर्यात, विद्रोह, राज आज्ञा, भूषण, निद्रा, कृषि, प्रवज्या, आगम, विज्ञान, प्रयुक्ति विद्या आदि से नवम भाव समन्धित है। सास, पुत्रों का शत्रु, मामा का पुत्र, पितृ सुख, पिता का मित्र, पैतृक व्यवसाय, आजीविका, राजनीतिक विषय, पदाधिकार, पितृ धन, दीर्घ यात्राएं, पिता का गुण स्वभाव, मानसिक स्थिति, ह्रदय, उत्कर्ष, राजानुकूलता, सत्ता अधिकारी, राज्य मान्यता, पदवी की प्राप्ति, करियर, बड़े लोगों से संबंध, नौकरी या व्यवसाय में उतार–चढ़ाव, कार्य करने की क्षमता आदि का द्योतक दशम भाव होता है।

❖ **एकादश भाव:** कुंडली में यह भाव आय और लाभ का भाव है। इस भाव को आय भाव कहते हैं तथा यह काल पुरुष की पिण्डलियाँ हैं एवं इस भाव का कारक ग्रह बृहस्पति होता है। यह भाव आय के स्त्रोत, बड़े भाई बहन, चाचा, बुआ, पुत्रवधु, जामाता, स्वास्थ्य एवं सभी कामना अभिलाषा की पूर्ति, आय, पारिवारिक सुख, गुप्त धन, समाज और लाभ से जुड़ा होता है। इस भाव से व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, मित्रता, धैर्य, विकास, आय के साधन, पैतृक संपत्ति, सोना–चांदी, उच्च पद प्राप्ति, क्रय–विक्रय, शिक्षा, शाही पुरस्कार (सम्मान), सफलता और किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि देखी जाती है। ऐश्वर्य, संपत्ति, प्रसिद्धि, मान सम्मान, अवार्ड–रिवार्ड, पिंडलियां, दान, पूर्तियां, प्रभावशाली लोगों से

आय, संस्था–समूह, विद्या प्राप्ति, सजाने की आदत, ससुर से होने वाला धन लाभ, माता का अनिष्ट, दाहिना हाथ, पूर्वजन्म, कल्याण की प्राप्तियां, शुभकामनाएं, मोटर वाहनादि के सुख, दायां कान, मांगलिक कार्य और द्वितीय पत्नी का विचार एकादश भाव से किया जाता है। भेंट–उपहार, व्यवसाय में उन्नति, रोग से मुक्ति, व्यापार वाणिज्य, बड़ी कंपनी, परराष्ट्रों से लाभ, अंतरराष्ट्रीय संबंध, संपूर्ण धन प्राप्ति, लोभ लालसा, दासता, भ्राता का भाग्य, मामा का शत्रु, पत्नी का सुख, ज्येष्ठ भ्राता, आभूषण, धन संपत्ति की प्राप्ति, पूर्व संपन्न कर्मों से भाग्योदय, सिद्धि, माता की मृत्यु, वस्त्र अलंकार, सुख, समाज में श्रेष्ठ स्थान प्राप्ति, कुटुम्ब का सुख, महत्वाकांक्षा आदि एवं किसी भी भौतिक पदार्थ का विचार एकादश भाव से किया जाता है।

❖ **द्वादश भाव:** कुंडली में यह भाव व्यय और हानि का भाव होता है। इसे व्यय भाव भी कहते हैं, यह काल पुरुष के पैर (जानु) हैं। रति सुख के लिए शुक्र तथा हॉस्पिटल खर्च आदि के लिए शनि तथा विदेश यात्रा के लिए राहु और मोक्ष के लिए केतु कारक ग्रह होते है। यह भाव त्याग, आत्मनिरीक्षण, विदेशी भूमि और गोपनीयता से संबंधित होता है। यह भाव व्यक्ति की अंतर्दृष्टि, विदेश यात्राए और मानसिक क्लेश को दर्शाता है। तथा अपव्यय, हॉस्पिटल का खर्च, रति सुख, चाचा–चाची, वैश्यावृत्ति, दान देने की क्षमता, बांई आँख, खर्च करने की प्रवृत्ति, नुकसान, मोक्ष, खुले विचार आदि का द्योतक है। इस भाव से निवेश, शापिंग मॉल, चैरेटी, आध्यात्मिकता की खोज़, दोनों पैर, गोपनीय स्थान, मुक्ति, बचाव, विकलांगता, सजा, दान, शीतलता, स्त्री सुख, ऊँचे स्थान से गिरना, पिता का धन, परस्त्री गमन, दरिद्रता, वैभव का नाश, धन हानि, व्यसन, रोग, बाया नेत्र पीड़ा, फ़िज़ूल खर्ची, स्त्री पुरुष के गुप्त सम्बन्ध, बंधन, षड्यंत्र, धोखा, पाँव के तलुवों आदि का विचार किया जाता हैं। इसके अलावा शय्या सुख, दुःख–पीड़ा, कारागार, मरणोपरांत जीव की गति, बाहरी सम्बन्धों, धैर्य, ध्यान, संन्यास, अनैतिक आचरण, आत्महत्या, मुकदमेबाजी का विचार इस भाव से किया जाता है। त्याग, असफलता, कुटुंब में तनाव, दुर्भाग्य, हस्पताल में भर्ती होना, बदनामी, भोग विलास, बायाँ कान, बाईं आँख, ऋण, लंबी यात्रा, दुर्गति, स्वप्न, निद्रा, कुटुम्भ, विरोध, मातुलानी, पितृस्वसा, नरक पतन, यातना, शत्रुता के कार्य, चोरों से संबंध, धन व्यय, दैवी आपत्तियां, दुर्घटना, मृत्यु के उपरान्त की स्थिति, पत्नी के रोग, माता का भाग्य, राजकीय संकट, राजकीय दंड, शत्रु से हानि, ऋण ग्रस्त स्थिति, शारीरिक सुख दुःख, राजविरोधी, राजदंड, दुष्ट संगति, विश्वासघात, गुप्त शत्रु, अपघात, कलह, द्रव्य व ऐश्वर्यनाश, चोरों से द्रव्य हानि, समाज मे अपमान, मुकदमें मे अपयश, धन नाश आदि का विचार द्वादश भाव से किया जाता है। द्वादश भाव में शुभ ग्रह हो तो सन्मार्ग में धन व्यय होता है, और पाप ग्रह होने से कुमार्ग में धन व्यय होता है।

भाव एवं रोग

भाव एवं रोग ज्योतिषीय अवधारणा में प्रत्येक भाव शरीर के एक विशिष्ट हिस्से और उससे संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, प्रथम भाव सिर से संबंधित रोगों जैसे सिर दर्द और मानसिक विकारों को दर्शाता है, जबकि पंचम भाव पेट और पाचन तंत्र से जुड़ी समस्याओं को दिखाता है। इस प्रणाली के अनुसार, प्रत्येक भाव के प्रभाव से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है, जो पीड़ित होने पर रोगों के रूप में प्रकट होता है।

- **प्रथम भाव (सिर से संबंधित रोग):** सिर दर्द, अधकपाली, विस्मरण (भूलने की बीमारी), मतिभ्रम, उन्नमाद, दिमागी बुखार, मिर्गी, सिर में गुल्म या गिल्टी, पागलपन, और मानसिक रोग इस भाव में आते हैं। क्यौकी ये बीमारियाँ मस्तिष्क, सिर, और दिमागी स्वास्थ्य से जुड़ी होती हैं।
- **द्वितीय भाव (नेत्र रोग, वाणी दोष, एवं गला/नाक रोग):** यहां पर नेत्र रोग (आंखों से संबंधित), वाणी दोष (गला या आवाज से संबंधित), जिह्वा एवं दंत रोग, गला और नाक के रोग जैसे गूँगापन, भ्राण क्षिर्णता, टॉन्सिल्स आदि आते हैं। इन समस्याओं से शरीर के आंतरिक अंगों और संवेदी तंत्रिका प्रणाली पर भी असर पड़ता है।
- **तृतीय भाव (कान, बाजू, कंधे, स्वाँस नली रोग):** यह भाव कान से संबंधित बहरापन, बाजू, कंधे, स्वाँस नली से संबंधित रोगों का प्रतिनिधित्व करता है। साथ ही मानसिक रोग और भोजन नलिका, स्वप्न दोष भी इस भाव से विचार्य होता हैं।
- **चतुर्थ भाव (छाती, फेफड़ा, दिल, डायफ्राम):** यह भाव छाती, फेफड़ों, वक्षस्थल और इनसे जुड़ी रक्त वाहिनियों से संबंधित रोगों को दर्शाता है। ये अंग श्वसन और रक्त संचार से जुड़े महत्वपूर्ण होते हैं।
- **पंचम भाव (पेट, अमाशय, पित्त की थैली, यकृत):** इस भाव से पेट, अमाशय, पित्त की थैली, तिल्ली, यकृत, नाभि, गर्भ और पाचन अंग जैसे अग्नाशय और पक्काशय से संबंधित रोग विचार किया जाता हैं।
- **षष्ट भाव (छोटी आँत, डायबटीज़, गुर्दा, अपेंडिक्स):** यह भाव छोटी आँत, डायबटीज़, आंत्रपेशी, अपेंडिक्स, गुर्दा, ऊपरी मूत्र प्रणाली, घाव, पागलपन, बलगम रोग (टी.बी), गिल्टियाँ, छाले, अमाशय रोग, अल्सर, हर्नियाँ जैसी समस्याओं से संबंधित है।
- **सप्तम भाव (बड़ी आँत, मूत्र नली, गर्भाशय, अंडाश):** इस भाव से बड़ी आँत, निचला मूत्र भाग, मूत्र नली, किडनी, गर्भाशय, अंडाश, टेस्टीकल्स, प्रोस्ट्रेट, ग्लॉड्स, शुक्राणु,

वेनेरियल डीजिज़, नपुंसकता, ठंडापन, बाँझपन, मासिक धर्म में अनियमितता आदि रोगों का विचार किया जाता हैं।

- **अष्टम भाव (जननांग, गुदा द्वार, स्कोरटम, पाइल्स):** यह भाव जननांग, गुदा द्वार (रेक्टम), स्कोरटम, पाइल्स, फिस्टुला, ट्यूमर, अल्सर, अण्डकोष, दीर्घकालीन रोग, मानसिक रोग जैसी समस्याओं का प्रतिनिधित्व करता है।
- **नवम भाव (कुल्हा, जांघ, नितम्ब, मोटापा):** इस भाव से कुल्हा, जांघ, जांघों की रक्त वाहिनियाँ, पछाघात, नितम्ब (हिप), मोटापा, साटिका, सुजन, ब्रॉकाईटिस जैसी समस्याओं को देखा जाता है।
- **दशम भाव (घुटने, रीढ़ की हड्डी, पीठ दर्द):** यह भाव घुटने, घुटनों के जोड़, कोमर रीढ़ की हड्डी और जुड़ी हुई नसों से संबंधित पीठ दर्द की समस्याओं को दर्शाता है।
- **एकादश भाव (पैर, बायां कान, रक्त संचार):** इस भाव से पैर (घुटनों से नीचे), बायां कान और रक्त संचार से संबंधित समस्याएं विचार किया जाता हैं।
- **द्वादश भाव (पाँव, पाँव के तलवे, मानसिक असंतुलन):** यह भाव पाँव, पाँव के तलवे, बाईं आँख, एड़ी, स्नायु व्यवस्था, अनिंद्रा, मानसिक असंतुलन और अपूर्ण अंगों से संबंधित समस्याओं को दर्शाता है।

दशमपति की स्थिति के अनुसार जीविकाएं

जीविकाएं निर्धारण में जन्म कुंडली के दशम भाव या दशमेश का विशेष महत्व होता है, क्योंकि यह व्यक्ति के कार्य क्षेत्र, करियर और प्रतिष्ठा से संबंधित है। दशमेश की विभिन्न भावों में स्थितियों का अध्ययन करके हम यह जान सकते हैं कि व्यक्ति को किस प्रकार के कार्यक्षेत्र में सफलता मिल सकती है। दशमेश या दशम पति की विभिन्न भावों में स्थितियां और उनसे संबंधित कार्यक्षेत्र का विवरण निचे दिए गये है:

- **दशमेश लग्न भाव में:** यदि दशमेश पहले भाव में हो तो व्यक्ति सरकारी सेवा में कार्यरत हो सकता है। या फिर उसका अपना स्वतंत्र व्यवसाय होगा। ऐसे व्यक्ति में नेतृत्व क्षमता और आत्मनिर्भरता होती है।
- **दशमेश द्वितीय भाव में:** यदि दशमेश दूसरे भाव में हो, तो व्यक्ति बैंकिंग, अध्यापन, वकालत, पारिवारिक व्यवसाय, होटल और रेस्तरां, आभूषण व्यवसाय, नेत्र चिकित्सा या एन्कोरिंग से संबंधित कार्य में सफल हो सकता है।

- **दशमेश तृतीय भाव में:** इस स्थिति में व्यक्ति रेलवे, परिवहन, डाक और तार सेवा, लेखन, पत्रकारिता, मुद्रण, साहसिक कार्य, गायन–वादन या नौकरी से संबंधित व्यवसाय में कार्यरत हो सकता है।
- **दशमेश चतुर्थ भाव में:** यदि दशमेश चौथे भाव में हो, तो व्यक्ति खेती–बाड़ी, नेवी, खनन, जमीन–जायदाद, वाहन उद्योग, जनसेवा, राजनीति, लोक निर्माण विभाग, जल परियोजना, आवास निर्माण, आर्किटेक्ट या सहकारी उद्यम से जुड़ा व्यवसाय कर सकता है।
- **दशमेश पंचम भाव में:** इस स्थिति में व्यक्ति शिक्षण, शेयर बाजार, आढ़त–दलाली, लाटरी, प्रबंधन, कला–कौशल, मंत्री पद, लेखन, फिल्म निर्माण आदि से संबंधित व्यवसाय में कार्य कर सकता है।
- **दशमेश षष्ट भाव में:** यदि दशमेश छठे भाव में हो; तो व्यक्ति जन स्वास्थ्य, नर्सिंग होम, अस्त्र–शस्त्र, सेना, जेल, चिकित्सा, चोरी, आपराधिक कार्य, मुकद्दमेबाजी तथा पशु व्यवसाय से संबंधित कार्य में संलग्न हो सकता है।
- **दशमेश सप्तम भाव में:** इस स्थिति में व्यक्ति विदेश सेवा, आयात–निर्यात, सहकारी उद्यम, व्यापार, यात्राएं, रिश्ते कराने का काम आदि से जुड़ा व्यवसाय या कर्म कर सकता है।
- **दशमेश अष्ठम भाव में:** यदि दशमेश आठवें भाव में हो; तो व्यक्ति बीमा, जन्म–मृत्यु विभाग, वसीयत, मृतक का अंतिम संस्कार, आपराधिक कार्य, फाइनेंस आदि से संबंधित व्यवसाय में कार्य कर सकता है।
- **दशमेश नवम भाव में:** इस स्थिति में व्यक्ति पुरोहिताई, अध्यापन, धार्मिक संस्थाएं, न्यायालय, धार्मिक साहित्य, प्रकाशन, शोध कार्य आदि से संबंधित कार्य कर सकता है।
- **दशमेश दशम भाव में:** दशमेश यदि दसवें भाव में हो; तो व्यक्ति राजकीय और प्रशासकीय सेवा, उड्डयन क्षेत्र, राजनीति, मौसम विभाग, अंतरिक्ष, पैतृक कार्य आदि से जुड़ा कर्म कर सकता है।
- **दशमेश एकादश भाव में:** इस स्थिति में व्यक्ति लोक या राज्य सभा पद, आयकर, बिक्री कर, सभी प्रकार के राजस्व, वाहन उद्योग, बड़े उद्योग आदि से संबंधित कर्म कर सकता है।
- **दशमेश द्वादश भाव में:** यदि दशमेश द्वादश भाव में हो; तो व्यक्ति कारागार, विदेश प्रवास, राजदंड आदि से संबंधित कर्म में संलग्न हो सकता है।

द्वादश लग्नों की साधारण फलादेश

मेष लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– मेष लग्न के जातक का व्यक्तित्व तेज, चंचल, बुद्धिमान, अभिमानी और वाचाल स्वभाव के होता है। कभी–कभी स्त्रियों से द्वेष और अल्प संतान वाला हो सकता है। रक्त गौर रंग, कफ प्रकृति और मंदबुद्धि होने के कारण वह कभी–कभी दुखी और नीचकर्मी भी हो सकता है। हालांकि, वह मित्रों के बीच ख्याति प्राप्त करता है और शत्रुओं को पराजित करने में सक्षम रहता है। व्यवसाय में मेष लग्न के जातक को उद्योग, कृषि और धातु से जुड़े कार्यों में सफलता मिलती है। वह शल्य चिकित्सा, सेना, पुलिस, और न्यायपालिका में भी अच्छा कर सकता है। इसके अलावा वह इंजीनियर, डॉक्टर, अग्निशमन अधिकारी, और बेकरी या मिठाई व्यापार से जुड़ सकता है।

वृषभ लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– वृषभ लग्न के जातक गौर वर्ण, मधुर भाषी और शौकीन होता है। वह उदार, रजोगुणी और ऐश्वर्यवान है और अच्छी संगति में रहना पसंद करता है। उसकी आयु लंबी होती है, वह पुत्रहीन, लंबी दांतों वाला और कुंचित केश वाला होता है। स्वजन से अपमान, मित्रों से वियोग, कलह और शस्त्राघात भी झेल सकता है, फिर भी वह यशस्वी और ऐश्वर्य से संपन्न होता है। उसका स्वभाव दृढ़ होता है और धर्म में रुचि रखता है; लेकिन कफ और वात जनित रोगों से पीड़ित भी हो सकता है। व्यापार, कृषि, जुआ और जल से उसे धन की प्राप्ति होती है। वृषभ लग्न के जातक को मुनीम, लेखापाल, धन लेन–देन, कलात्मक कार्य, रंगमंच, होटल, प्रसाधन सामग्री, परिवहन, रत्न–आभूषण, भवन निर्माण और कृषि उत्पाद से आजीविका प्राप्त होती है। वह महिला संबंधी कार्यों में भी सफल हो सकता है।

मिथुन लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– मिथुन लग्न के जातक गेहुंआ रंग और गोल चेहरे वाले होते हैं। वे हास्य रस में माहिर, गायन–वाद्य के रसिक और स्त्रियों के प्रति आकर्षित होते हैं। वे विषयासक्त, शिल्पज्ञ, चतुर, परोपकारी और गणितज्ञ होते हैं और तीर्थ यात्रा की प्रवृत्ति रखते हैं। जीवन के प्रारंभ और अंत में सुखी होते हैं, लेकिन मध्यावस्था में उन्हें दुखों का सामना करना पड़ता है। ३२ से ३५ वर्ष की आयु में उनका भाग्योदय होता है। वे स्वजन के प्रिय, दाता, भोगी, धनी और शत्रुओं को पराजित करने वाले होते हैं। उनकी वाणी मधुर होती है और वे शास्त्रार्थ और संगीत कला में माहिर होते हैं। जातक में कुछ कमियां भी हो सकती हैं; जैसे कि वे असहनशील, नीच कुटुंब में रहने वाले और भाई–बहन में कम हो सकते हैं, लेकिन शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होते हैं। मिथुन लग्न के जातक लेखक, पत्रकार, संपादक, प्रोफेसर, संचार कार्य, डाक, रेडियो और पर्यटन प्रबंधन से जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा वे वाणिज्य–व्यापार, साझेदारी, औषधि उद्योग, वस्त्र उद्योग, आयात–निर्यात, इंजीनियर, डॉक्टर और लेखाधिकारी के रूप में भी धन अर्जित कर सकते हैं।

कर्क लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– कर्क लग्न के जातक हस्वकाय, स्थूल शरीर वाले और चंचल स्वभाव के होते हैं। वे स्त्रियों के वशीभूत, प्रकृति और जलाशयों के प्रेमी होते हैं। कम उम्र की आयु में उनका भाग्योदय होता हैं। वे ब्राह्मणों और देवताओं के भक्त, दयालु और दानशील होते हैं। जातक की पत्नी कुलीन और संपन्न होती है, और वह साहसी, धैर्यवान, विदेश यात्रा करने वाली होती है। वे ईमानदार, संवेदनशील, भावुक, प्रतिभाशाली और परिश्रमी होते हैं। कर्क लग्न के जातक रचनात्मक कार्यों में सफल होते हैं। उनकी जीविका जल, परिवहन, समुद्री उत्पाद, रासायनिक द्रव्य, डेयरी, कपड़ा उद्योग, जवाहरात से जुड़ी होती है। इसके अलावा वे अभिनय, नृत्य, संगीत, नर्सिंग, चिकित्सा आदि कार्यों से भी जीविकोपार्जन कर सकते हैं।

सिंह लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– सिंह लग्न के जातक पराक्रमी, लंबे हाथ–पैरों वाले, चौड़े वक्ष और पतली कमर वाले होते हैं। उनका रंग ताम्रवर्णी होता है और स्वभाव तेज, क्रोधी एवं साहसी होता है। वे वेदांत के ज्ञाता, घुड़सवारी के प्रेमी और अस्त्र–शस्त्र चलाने में निपुण होते हैं। जातक उदार और साधु सेवा में रत रहता है और अपने जीवन के प्रारंभ और अंत में सुखी होता है। जातक का शरीर पुष्ट, मांसल और उत्साही होता है और वह रण में पराक्रमी तथा वन–पर्वत घूमने वाला होता है। उनका चेहरा आकर्षक और सिंह के समान होता है और वे धैर्यवान, गंभीर और विलास प्रिय होते हैं। उनकी जीविका स्वर्णाभूषण, कलाकृति, संगमरमर, प्रबंध व्यवस्था, सरकारी विभाग, सेना, राजनीति, उद्योग, होटल, पशु प्रजनन, कृषि और वन उत्पादों से जुड़ी होती है। इसके अलावा वे भूविज्ञान, तकनीक, अनुसंधान, खेलकूद, अभिनय आदि से भी मान– सम्मान, धन और यश प्राप्त कर सकते हैं।

कन्या लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– कन्या लग्न के जातक जिज्ञासु, श्रृंगारप्रिय और बड़े नेत्रों वाले होते हैं। उनका शरीर स्थूल और सामान्य आकार का होता है, और वे अल्प और प्रिय भाषी होते हैं। वे स्त्रियों के वशीभूत, चतुर, गणितज्ञ और भ्रमणशील स्वभाव के होते हैं। जातक दान देने में विनम्र और स्वजाति में पूज्य होते हैं, लकिन शत्रुओं के प्रति क्रोधी और द्वेषी भी हो सकते हैं। वे महिला अनुरागी, विलासी, साहसी और यश के इच्छुक और धन के प्रति लोभी होते हैं। कन्या लग्न के जातक को हिसाब–किताब, प्रबंध व्यवस्था, लेखन, पत्रकारिता, सर्वेक्षण, सांख्यिकी संग्रह, सूचना प्रसारण, अभिनय या गायन, कला, आभूषण, वाहन और व्यापार से जुड़ी जीविका प्राप्त होती है।

तुला लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– तुला लग्न के जातक सतोगुणी, गौरवर्ण और परोपकारी होते हैं। जातक की नासिका मोटी होती है, जीवन के प्रारंभ में दुःखी रहते हैं, मध्यावस्था में सुखी और अंत में सामान्य जीवन जीते हैं। जातक बुद्धिमान, पंडित और सभी कलाओं में निपुण होते हैं। वे धनी, लोकमान्य और सुकर्म से जीविका अर्जित करते हैं। जातक की पत्नी प्रिय होती है और वह गुरु और ब्राह्मण का कृतज्ञ और पूजक होता है। तुला लग्न के जातक को

न्यायाधीश, अभिभाषक, जोहरी, अभिनेता, दिग्दर्शक और निर्देशक जैसे क्षेत्रों में जीविका मिलती है। इसके अलावा वे सौंदर्य प्रसाधन, सजावट और बहुमूल्य वस्त्र विक्रय से भी धन अर्जित कर सकते हैं। फल, सब्जी और अनाज विक्रय, विमान या अंतरिक्ष कार्य, रबड़, प्लास्टिक उद्योग, वाहन चलाना और मरम्मत कार्य से भी उन्हें धन प्राप्त होता है।

वृश्चिक लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– वृश्चिक लग्न के जातक हस्वकाय, स्थूल शरीर, गोल नेत्र और चौड़ी छाती वाले होते हैं। जातक तमोगुणी स्वभाव निंदक, कपटी और पाखंडी भी होता है। जीवन के प्रारंभ में वह दुखी रहता है, मध्यावस्था में सुखी और पूर्णायु होता है। जातक धनी, आत्मविश्वासी, शूरवीर, ज्ञानी और परिवार पोषक होता है। वे पित्त से पीड़ित, परस्त्रीगामी, राजसेवक, पाप से धनी, दूसरों पर आश्रित, दानी और समृद्ध होते हैं। वृश्चिक लग्न के जातक को उद्योग, व्यापार, सुरक्षा, सेना, पुलिस, रसायन, औषधि, विज्ञान, मंत्र, तंत्र, गुप्त विद्या, कला, शासकीय कार्य, लोहा–इस्पात कार्य, कोर्ट–कचहरी, दाल–मसाले और उपभोक्ता वस्तुओं से जुड़ी जीविकाओ में सफलता मिलती है। वे जहाजरानी, समुद्री तट और स्त्रियों से संबंधित वस्तुओं का कारोबार भी लाभप्रद रूप से कर सकते हैं।

धनु लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– धनु लग्न का जातक सतोगुणी, अच्छे स्वभाव वाला और बुद्धिमान होता है। वह ऐश्वर्यशाली, कवि, लेखक और व्यापारी के रूप में प्रतिभाशाली होता है। जातक का रंग पिंगल (पीला) होता है और वह पराक्रमी, अल्प संतान वाला तथा प्रेम में वशीभूत होने वाला होता है। वह नीतिज्ञ, धनी, बुद्धिमान और लोकपूज्य भी होता है। शारीरिक रूप से उसका शरीर पुष्ट, बड़ी आँखों वाला, स्थूल अंगों वाला और उसकी नाक और कान सुंदर होते हैं। जातक कभी–कभी नीच कार्य करने की प्रवृत्ति हो सकती है और वह कभी–कभी कफ–वात और नेत्र–कान रोगों से ग्रस्त हो सकता है। धनु लग्न के जातक अध्यापन, लेखन, प्रकाशन, विधायकी, मंत्री पद, वकील, पुजारी, सेना कमांडर, चिकित्सक, इंजीनियर, खेल और ज्योतिषी जैसी विभिन्न पेशा में सफल होते हैं।

मकर लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– मकर लग्न का जातक तमोगुणी, सुंदर नेत्रों वाला व् आलसी होता है। शारीरिक रूप से उसका शरीर बहुत रोम और विस्तृत वक्ष वाला होता है, साथ ही उसे भूखा रहने की आदत होती है। वह वन और पर्वतों में घूमने वाला और संगीत में रुचिवान होता है। उसकी पत्नी सुंदर और खर्चीली होती है। धर्म के लिए प्रवासी होने के साथ, मकर लग्न का जातक साहसी, अनेक पुत्रों वाला और स्त्रियों के वशीभूत होता है। मकर लग्न के जातक द्रव्य पदार्थ, समुद्री उत्पाद, रसायन, कृषि, बागवानी उपकरणों के विक्रय से जीविका अर्जित करते हैं। इसके अलावा वह कुशल प्रबंधक, भवन निर्माता, दंत चिकित्सक, ग्रामीण और कुटीर उद्योगी, बैंक अधिकारी और संगठन कर्ता भी हो सकते हैं। कभी–कभी वे ईश्वर उपासना, ध्यान योग–समाधि या कथा वाचन से भी धन कमाते हैं।

कुम्भ लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– कुम्भ लग्न का जातक अभिमानी, द्वेषपूर्ण और गंजे सिर वाला होता है। उसका शरीर ऊँचा होता है और उसे स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। जीवन के प्रारंभ में वह दुखी, मध्यावस्था में सुखी और अंतिम अवस्था में धन, पुत्र और भूमि का भोग करता है। उसका जीवन आलसी होने के साथ ही जुएं और स्त्रियों में रत रहता है, और वह प्रवासी तथा खर्चीला स्वभाव का होता है। वह मित्रों का हितेषी, धूर्तों से द्वेष रखने वाला, परिश्रमी और स्थिर बुद्धि वाला होता है। उसका जीवन परस्त्री संबंधों, विदेश यात्रा और भाग्य में उतार–चढ़ाव से जुड़ा रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में कुम्भ लग्न के जातक विज्ञान, पुरातत्व, ज्योतिष, साहित्य और कंप्यूटर के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करते हैं। इसके अलावा वे अग्निशमन सेवा, विद्युत इंजीनियरिंग, सेना, आयुध क्षेत्र, अंतरिक्ष विज्ञान, रेडियो, दूरदर्शन, अनुसंधान, समाज सेवा, स्थानीय निकाय अधिकारी, लेखक और पायलट के रूप में भी सफल हो सकते हैं।

मीन लग्न के जातक का व्यक्तित्व:– मीन लग्न का जातक सतोगुणी, बड़े नेत्रों वाला और सामान्य शरीर वाला होता है। मीन लग्नोत्पन्न जातक रत्न और सुवर्ण से परिपूर्ण होता है। वह अल्पकामी, कृश शरीर वाला, गौर वर्ण, उदार और सोच–समझकर कार्य करने वाला होता है। उसका मुख सुंदर और आकर्षक होता है, और उसे नृत्य और गायन कला में विशेष रुचि होती है। जातक कन्या संतान वाला, अनुभवी, विश्वासी, कीर्ति युक्त और धनवान होता है। उसका शत्रु निर्बल होता है, और उसे शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता है, लेकिन कभी–कभी उसे विष के कारण मृत्यु या कष्ट का सामना भी हो सकता है। मीन लग्न के जातक जल संबंधित कार्यों में सफल होते हैं, जैसे समुद्र से आयात–निर्यात, जलाशय या बांध निर्माण और जल व पेय पदार्थों से संबंधित उद्योग। इसके अतिरिक्त वे होटल, रेस्टोरेंट, अस्पताल, आध्यात्मिक चिकित्सा, कला, अभिनय, फोटोग्राफी, और सौंदर्य प्रसाधन जैसे क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

====✂====

सप्तम अध्याय

गोचर तत्व

ग्रहों का गोचर ज्योतिषशास्त्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है, जो ग्रहों की वर्तमान स्थिति को दर्शाता है। गोचर शब्द संस्कृत में "गमन" (चलना) से लिया गया है, गोचर का शाब्दिक अर्थ होता है गमन यानी चलना अर्थात जब ग्रह अपने एक स्थान से दूसरे स्थान (राशि या भाव) में प्रवेश करता है तो उसे गोचर कहा जाता है। गोचर एक ऐसी ज्योतिषीय प्रक्रिया है, जो ग्रहों की गति और उनकी वर्तमान स्थिति को जीवन में घटित होने वाली घटनाओं से जोड़ती है। यह व्यक्ति को विभिन्न क्षेत्रों में सही समय पर निर्णय लेने, उचित उपाय करने, और जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

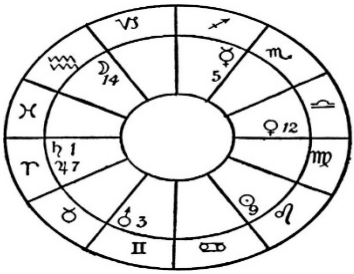

गोचर के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन के महत्वपूर्ण क्षणों को बेहतर ढंग से समझ सकता है और अपने कर्मों को इस प्रकार दिशा दे सकता है, ताकि अधिक सफलता और सुख की प्राप्ति हो सके। किसी व्यक्ति के जीवन में आने वाले उतार-चढ़ाव, घटनाएँ और संभावित बदलावों का मार्गदर्शन करता है।

गोचर के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि आकाश में स्थित ग्रहों की स्थिति, व्यक्ति के जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति से किस प्रकार प्रभावित हो रही है, और इसका जीवन पर क्या असर हो सकता है। जब ग्रह किसी विशेष राशि या भाव में गोचर करते हैं, तो उनके द्वारा वह राशि या भाव प्रभावित होता है, और इसका असर व्यक्ति की जन्म कुंडली पर भी पड़ता है। इसका प्रभाव उस समय के दौरान विभिन्न जीवन पहलुओं (जैसे: करियर, स्वास्थ्य, परिवार, और मानसिक स्थिति) पर देखा जा सकता है।

❖ गोचर का महत्व ज्योतिषशास्त्र में:-

i. **व्यक्तिगत जीवन के दिशा-निर्देश:** गोचर यह बताता है कि किसी विशेष समय में व्यक्ति के जीवन में किस प्रकार के परिवर्तन आ सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि बृहस्पति किसी शुभ स्थान पर गोचर करता है, तो यह शिक्षा, करियर, और समृद्धि में सुधार ला सकता है। वहीं, यदि शनि या राहु-केतु का गोचर नकारात्मक स्थानों पर होता है, तो यह कठिनाई, चुनौतियाँ और परीक्षा का समय हो सकता है।

ii. **समय का सही उपयोग:** ज्योतिषशास्त्र में गोचर का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि किस समय किस कार्य को करना शुभ रहेगा। उदाहरण के लिए, जब बुध का गोचर वाणिज्य और संचार के क्षेत्र में शुभ हो, तब व्यापार शुरू करना या महत्वपूर्ण बातचीत करना लाभकारी हो सकता है। इसी प्रकार, अगर शनि का गोचर किसी व्यक्ति के जन्मकुंडली के १०वें भाव में हो, तो यह करियर में उतार-चढ़ाव और संघर्ष का संकेत दे सकता है।

iii. **अशुभ गोचर और समस्याओं का समाधान:** गोचर से यह पता चलता है कि जब कोई ग्रह किसी अशुभ स्थान पर गोचर करता है, तो जीवन में किस प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं, जैसे वित्तीय संकट, स्वास्थ्य समस्याएँ, पारिवारिक विवाद या मानसिक तनाव। इस जानकारी का उपयोग करके व्यक्ति जीवन में उचित उपाय (जैसे यंत्र, मंत्र, पूजा या व्रत) कर सकता है, ताकि नकारात्मक प्रभाव को कम किया जा सके।

iv. **गोचर और भविष्यवाणी:** ज्योतिष में गोचर का उपयोग व्यक्तिगत भविष्यवाणी करने में किया जाता है। यह न केवल वर्तमान समय के प्रभाव को समझने में मदद करता है, बल्कि भविष्य में आने वाले घटनाओं का अनुमान भी प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में शनि का गोचर उसके जन्मकुंडली के ८वें भाव में हो रहा है, तो यह एक संकटपूर्ण समय का संकेत हो सकता है। इससे व्यक्ति को पहले से तैयार होने में मदद मिल सकती है।

v. **सामाजिक और पारिवारिक प्रभाव:** गोचर केवल व्यक्तिगत जीवन ही नहीं, बल्कि सामाजिक और पारिवारिक जीवन पर भी प्रभाव डालता है। जैसे, जब चंद्रमा का गोचर आपके पारिवारिक भाव (४वां भाव) में होता है, तो यह परिवार के रिश्तों और घर की स्थिति को प्रभावित कर सकता है। इसी तरह, ग्रहों के गोचर से विवाह, संतान, माता-पिता और अन्य पारिवारिक मामलों में भी परिवर्तन हो सकते हैं।

vi. **ग्रहों के गोचर के माध्यम से समय का प्रबंधन:** गोचर का अध्ययन व्यक्ति को यह समझने में मदद करता है कि कौन सा समय किसी कार्य को करने के लिए अनुकूल है और कौन सा समय सावधानी बरतने का है। इसे सही तरीके से उपयोग करके व्यक्ति अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों को बेहतर तरीके से ले सकता है।

❖ गोचर का महत्व विभिन्न संदर्भों में:-

- **स्वास्थ्य:** यदि कोई ग्रह स्वास्थ्य क्षेत्र (६वां भाव) में गोचर करता है, तो यह स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का संकेत दे सकता है। विशेष रूप से शनि या राहु का गोचर

स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जबकि बृहस्पति का गोचर स्वास्थ्य में सुधार का संकेत हो सकता है।

- **व्यवसाय और करियर:** गोचर का प्रभाव आपके करियर पर बहुत गहरा होता है। जैसे, मंगल का गोचर व्यापार या प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में नए अवसर प्रदान कर सकता है, वहीं शनि का गोचर कड़ी मेहनत और अनुशासन की आवश्यकता को दर्शाता है।
- **प्रेम और विवाह:** गोचर प्रेम, विवाह और रिश्तों पर भी असर डालता है। शुक्र और मंगल का गोचर विवाह संबंधी मामलों में अहम भूमिका निभाते हैं, जबकि राहु और केतु के गोचर से अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं।
- **आर्थिक स्थिति:** गोचर से यह भी पता चलता है कि किसी विशेष समय में व्यक्ति के वित्तीय मामलों में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं या आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। जैसे, बृहस्पति का गोचर आमतौर पर धन और समृद्धि का संकेत देता है।

प्राचीन समय से ही ज्योतिषियों ने ग्रहों की स्थिति और उनके गोचर के फल की व्याख्या की है। वेदों और पुराणों में ग्रहों के गोचर से संबंधित अनेक संदर्भ मिलते हैं, जो दर्शाते हैं कि किस प्रकार ये ग्रहीय स्थितियाँ मानव जीवन को प्रभावित करती हैं। प्राचीन भारतीय ज्योतिषी, जैसे कि वराहमिहिर और पराशर, ने गोचर फल के सिद्धांतों को स्पष्ट किया है। गोचर फल पर आधुनिक शोध का क्षेत्र भी तेजी से विकसित हो रहा है। क्योंकि यह ग्रहों की स्थिति और उनके प्रभावों को समझने में सहायक होता है। विभिन्न शोधों में यह पाया गया है, कि ग्रहों की चाल न केवल व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव डालती है, बल्कि समाज और वैश्विक घटनाओं पर भी गहरा असर डालती है।

ग्रहो के राशि भ्रमण (भोग) काल

नभोमण्डल में सूर्य से लेकर राहु-केतु तक सभी ग्रहों की अपनी गति होती है। अपनी-अपनी गति के अनुसार ही सभी ग्रह राशिचक्र में गमन करने में अलग-अलग समय लेते हैं। नव ग्रहों में चन्द्र का गोचर सबसे कम अवधि का होता है क्योंकि इसकी गति तेज है। जबकि, शनि की गति मंद होने के कारण शनि का गोचर सबसे अधिक समय का होता है। ग्रहों का राशियों में भ्रमण काल:- सूर्य का भ्रमण काल १ माह, चंद्र का सवा दो दिन, मंगल का ४५ दिन, बुध का १७ दिन, गुरू का १ वर्ष, शुक्र का २८ दिन, शनि का २-१/२ (ढ़ाई वर्ष) व् राहु-केतु ग्रहों का भ्रमण काल १-१/२ (डेढ़ वर्ष) का होता है। अर्थात ये ग्रह इतने समय में एक राशि में रहते हैं, तत्पश्चात ये अपनी राशि-परिवर्तन करते रहते हैं।

गोचर तत्व

सूर्य – ३० दिन चंद्र – सोया दो दिन मंगल – ४५ दिन	बुध – १८ दिन गुरु – १ वर्ष शुक्र – २८ दिन	शनि – २.५ वर्ष राहु – १८ महिना केतु – १८ महिना

पूरा राशि चक्र भ्रमण में सूर्य ग्रह का ३६० दिन (१२ महीना), चन्द्रमा का ३२४ दिन, मंगल का ५४० दिन, बुध का २१६ दिन, गुरु का १२ वर्ष, शुक्र का ३३६ दिन, शनि का ३० वर्ष एवं राहू व केतु ग्रहों का १८ वर्ष का समय लगबग लगता है।

ग्रहों की गति

सूर्यसिद्धांतादि शास्त्रानुसार ग्रहों का आठ प्रकार की गति बताया गया है; जैसे: १. वक्र, २. अनुवक्र, ३. कुटिल, ४. मन्द, ५. अतिमन्द, ६. सम, ७. शीघ्र और ८. अतिशीघ्र। इन्ह गतियों में से मन्द, अतिमन्द, सम, शीघ्र और अतिशीघ्र यह पञ्च गति को सरल गति कहा जाता है। एवं वक्र, अनुवक्र और कुटिल गति को वक्र गति कहा जाता है। कुंडली गणना में ग्रहों की सीधी और वक्री गति के प्रभावों पर विचार करना आवश्यक होता है।

सूर्य के आकर्षण के कारण पृथ्वी और ग्रहों की पारस्परिक गतिजनित अवस्थान से ग्रहों में समय–समय पर शीग्रगति और वक्रगति आती है। जन्म के समय जातक की कुंडली में शुभ ग्रह; जैसे: बुध, बृहस्पति और शुक्र वक्री हों, तो शुभ परिणाम प्राप्त होते हैं; और यदि पाप ग्रह शनि और मंगल वक्री स्थिति में हों तो अशुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। यह फल ग्रह के अपने कारक तथा भाव के स्वामी के कारक के अनुरूप शुभाशुभ फल देता है।

गोचर में ग्रह जिस भाव में वक्री या अतिचारी होते है, उस भाव निर्द्दिष्ठ शुभाशुभ फल क्षणस्थायी देते है। मंगल, शुक्र और शनि तीनों ग्रह वक्री या अतिचारी होकर जिस राशि में गोचर करता है, उसी राशि का फल प्रदान करता है। परन्तु बुध और गुरु ग्रह वक्री य अतिचारी होकर जिस राशि त्याग करता है, उस राशि (अर्थात पूर्व राशि) का फल प्रदान करता है, हालाँकियह मत सभी आचार्य नहीं मानते है।

ग्रहों का वक्रगति की समय

• **मंगल:** ७६ दिन • **बुध:** २१ दिन • **शुक्र:** १२ दिन	• **गुरु:** १०० दिन • **शनि:** १८४ दिन

गोचर फलादेश

ग्रहों का गोचर ज्योतिष शास्त्र में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ग्रहों के गोचर के आधार पर ही ज्योतिष विधि से फल का विश्लेषण किया जाता है। ग्रहों की गोचर से वर्तमान समय में ग्रहों की चाल और उनकी स्थिति का अध्ययन किया जाता है। गोचर का सही तरीके से अध्ययन करने के लिए एक व्यवस्थित और सटीक प्रक्रिया का पालन करना आवश्यक है।

गोचर का अध्ययन से यह समझने में मदद मिलता है कि वर्तमान समय में ग्रहों की स्थिति और उनकी गति का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ेगा। यह जन्म कुंडली के साथ तुलना करके यह निर्धारित करता है कि कौन से ग्रह कौन से भावों में हैं और वे किन ग्रहों के साथ कौन सी युति या दृष्टि बना रहे हैं। गोचर के माध्यम से यह जाना जा सकता हैं कि वर्तमान समय में कौन से ग्रह अनुकूल हैं और कौन से ग्रह चुनौतीपूर्ण है। प्रत्येक ग्रह जब जन्म राशि में पहुंचता है अथवा जन्म राशि से दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, छठे, सातवें, आठवें, नवें, दशवें, ग्यारहवें या बारहवें स्थान पर होता है, तब अपने गुण और दोषों के अनुसार फल प्रदान करता है।

ग्रहों का विभिन्न राशियों में भ्रमण का जो प्रभाव पड़ता है, उसे ही गोचर का फल या गोचर फल कहते हैं। शनि, राहु, केतु और गुरू धीमी गति वाले ग्रह होने के कारण गोचर का प्रभाव अधिक समय तक रहता है। एवं अन्य ग्रह की गति तेज होने के कारण इनका प्रभाव कम समय तक ही रहता है। गोचर विचार में सूर्य और मंगल प्रथम १० अंश के भीतर, गुरु और शुक्र १० से २० अंश के भीतर, शनि, चन्द्र राशि की शेष १० अंश में, तथा राहू, केतु व् बुध ग्रह सम्पूर्ण राशि में अपना सम्पूर्ण फल दान करते हैं।

- ✓ सूर्य, मंगल: राशि में प्रवेश के साथ तुरंत फल प्रदान करता है।
- ✓ गुरु, शुक्र: मध्य समय में फल प्रदान करता है।
- ✓ शनि, चन्द्रमा: विनिर्गमन के समय फल प्रदान करता है।
- ✓ राहू, केतु, बुध: पूरा समय ही फल प्रदान करता है।

- सूर्य किसी राशि में प्रवेश करके के ५ दि के बाद, मंगल ८ दिन के बाद, बुध ७ दिन के बाद, शुक्र ७ दिन के बाद अपना शुभाशुभ फल दान करते है। चन्द्रमा किसी राशि में रवेश के ३ दंड के बाद, राहू–केतु ३ महीनें के वाद, गुरु २ महीनों के बाद एवं शनि ६ महीनें के बाद गंतव्य राशि में अपना फाल दान करते है।

गोचर विचार कैसे करे ?

गोचर विचार करने के लिए सबसे पहले हमें व्यक्ति की जन्म कुंडली की आवश्यकता होती है। इसे आधार बनाकर ही गोचर का विश्लेषण किया जाता हैं। जन्म के समय चन्द्रमा जिस राशि में

स्थित है, उस राशि को ही लग्न मानकर वर्तमान समय में जो ग्रह जिस राशि में गोचर कर रहा है, उस ग्रह को उसी राशि में स्थापन करके गोचर फलादेश करना चाहिए।

क्योंकि चंद्र मन है और जीवन की सभी घटनाएं हमारी मनस्थिति को ही तो प्रभावित करती हैं एवं ज्योतिष शास्त्र के लगभग सभी ग्रंथ चंद्रराशि से ही गोचरफल देखने का निर्देश करते हैं। हालाँकि कुछ विद्वानों का मत है कि भावफल के निर्णय हेतु जन्म लग्न से भी ग्रहों के गोचर का विश्लेषण करना चाहिए।

अगर किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली न हो, ऐसे स्थिति में उस व्यक्ति की बहुल प्रचलित नाम के पहले अक्षर निर्द्दिष्ठ राशि को ही लग्न मानकर गोचर विचार किया जा सकता है। गोचर विचार के सहजता के कारण ग्रहों की गोचर की आधार पर जो कुंडली का निर्माण किया जाता है, उसी को ही गोचर कुंडली कहते है।

जन्म कुंडली और गोचर कुंडली में अंतर

जन्म कुंडली और गोचर कुंडली, ज्योतिष शास्त्र के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। ये दोनों ही कुंडलियां व्यक्ति के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। साधारणत: जन्म कुंडली का फल दीर्घकालीन व् स्थायी होता है, और गोचर कुंडली का फल अस्थायी और परिवर्तनशील होती है। जन्म कुंडली व्यक्ति की मूल प्रकृति को दर्शाती है, जबकि गोचर कुंडली वर्तमान समय में उस प्रकृति पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, यह दर्शाता है। दोनों कुंडली ही एक-दूसरे को पूरक हैं, इसलिए ज्योतिष गणनाओं में गोचर कुंडली का भी बहुत महत्व दिया गया है।

- **जन्म कुंडली:** जन्म कुंडली किसी व्यक्ति के जन्म समय और स्थान के आधार पर ग्रहों की स्थिति को दर्शाती है। जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति स्थायी होती है, जो व्यक्ति की मूल प्रकृति और उसकी जीवन यात्रा के बारे में एक आधारभूत जानकारी प्रदान करता है। जैसे: व्यक्ति के स्वभाव, क्षमताओं, कमजोरियों, करियर, विवाह, स्वास्थ्य आदि।
- **गोचर कुंडली:** गोचर कुंडली किसी विशेष समय पर ग्रहों की स्थिति को दर्शाती है। गोचर कुंडली में ग्रहों की चाल समय के साथ बदलती है। क्योंकि ग्रहों का एक निर्दिष्ट समय के अनुसार एक राशि से दूसरी राशि में गोचर होता रहता हैं। गोचर कुंडली के माध्यम से यह जाना जाता है कि, कोई ग्रह वर्तमान समय में आकाश में किस स्थिति में है और यह व्यक्ति के जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं। गोचर कुंडली के माध्यम से वर्तमान समय में व्यक्ति के जीवन में चल रही घटनाओं के बारे में फलादेश करने में सहजता मिलती है।

गोचर विचार के महत्वपूर्ण सूत्र

ग्रहों का गोचर विचार व् फलादेश में सठीकता लाने के लिए सबसे पहले जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति, युति, दृष्टि, भाव, और राशियों का विश्लेषण करना चाहिए। इसके लिए यह जानें कि कौन सा ग्रह किस भाव में है और किन राशियों में स्थित है। उसके पश्चात् वर्तमान समय में ग्रहों की स्थिति अर्थात गोचर को समझें कौन से ग्रह किस राशि में हैं और उनकी गति कैसी है। तत्पश्चात ग्रहों की गोचर स्थिति को जन्म कुंडली के साथ तुलनात्मक विचार करके फलादेश करनी चाहिए।

यदि किसी व्यक्ति विशेष की जन्म कुंडली में दशा/अन्तर्दशा अनुकूल हो लेकिन उस समय गोचर प्रतिकूल चल रहा हो तब दशा के अनुकूल फल सम हो जाते हैं। गोचर के शुभ फल तभी प्राप्त होगें जब कुंडली में दशा/अन्तर्दशा व गोचर दोनो ही अनुकूल चल रहा होता है। यदि कोई ग्रह जन्मकुंडली में अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होता है तो गोचर में अशुभ स्थानों पर जाने के बाद भी वे ग्रह किसी तरह की कोई हानि नहीं पहुंचाते है।

ग्रहों का गोचर फल विभिन्न ग्रहों के प्रभावों पर निर्भर करता है। जैसे, जब सूर्य या चंद्रमा की स्थिति बदलती है, तब यह व्यक्ति के मनोदशा और आत्मविश्वास पर प्रभाव डालता है। वहीं, मंगल और शुक्र जैसे ग्रह प्रेम और संबंधों में बदलाव ला सकते हैं। ज्योतिषी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि गोचर फल केवल ग्रहों की स्थिति पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह ग्रहों के आपसी संबंधों का भी परिणाम है। इसीलिए, एक कुशल ज्योतिषी को ग्रहों की चाल के साथ-साथ उनकी आपसी स्थिति का भी अध्ययन करना चाहिए।

गोचर का अध्ययन करते समय, समय का महत्व भी अत्यधिक है। ग्रहों का गोचर केवल उनके वर्तमान स्थिति पर निर्भर नहीं होता, बल्कि उनके पिछले गोचरों का भी व्यक्ति के जीवन में गहरा प्रभाव होता है। एक ग्रह यदि किसी विशेष राशि में प्रवेश करता है, तो उसके पूर्व के गोचरों के अनुभव भी उस ग्रह के प्रभाव को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, ज्योतिषी को गोचर के इतिहास को समझकर ही सही निष्कर्ष पर पहुँचने की आवश्यकता होती है। यह प्रक्रिया न केवल व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करती है, बल्कि उसे भविष्य में आने वाले बदलावों के लिए भी तैयार करती है।

- **गोचर कुंडली की फलादेश में कुछ ध्यान योग्य बाते:-**
  - ✓ किन भावों का स्वामी है ?
  - ✓ किस स्थान में बैठा हुआ है ?
  - ✓ किस वस्तु का कारक है ?
  - ✓ गोचर में किस भाव में जा रहा है ?

✓ अन्य ग्रहों के साथ कौन सी युति बना रहे हैं ?

१. जन्मकुंडली में कोई ग्रह राशि ओर भाव में भी बलवान हो और गोचर में शुभ स्थानों में हो तो अत्यधिक शुभ फल देता है। परन्तु कोई ग्रह कमजोर स्तिथि में हो या किसी क्रूर ग्रह के साथ बैठा हो या दृष्ट हो और उसपर किसी शुभ ग्रह की युति या दृष्टि न हो अथवा अशुभ स्थानों का स्वामी हो, अस्त हो तो गोचर में वह ग्रह शुभ स्थानों में होने पर भी विशेष शुभ फल नहीं देता है।

२. गोचर में किसी ग्रह का क्रूर ग्रहों से योग या दृष्टि होने से ग्रह का शुभ फल कम होता है। यदि कोई ग्रह गोचर में अस्त हो या अपनी नीच राशि या नीच नवांश में हो तो भी उस ग्रह से शुभ फल की प्राप्ति कम होती है। एवं गोचर में किसी ग्रह का शुभ ग्रह से योग होता है अथवा उसपर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ती है तो तो उस ग्रह का शुभ फल बढ़ता है और अशुभ फल कम होता है।

३. गोचर में कोई ग्रह अपनी उच्च राशि या अपनी स्वयं की राशि या अपने नवांश या उच्च नवांश में से जाता है तो उसका अच्छा फल बढ़ता है और ख़राब फल कम हो जाता है। शुभ ग्रह गोचर में जब वक्री होते हैं तो अधिक शुभ फल देते हैं। क्रूर ग्रहों के वक्री होने पर अत्यधिक अशुभ फल की प्राप्ति होता है।

४. जन्म राशि अथवा लग्न से बारहवें भाव में किसी ग्रहों का गोचर होना अत्यधिक व्यय करवाता हैं, विशेष तौर पर उस समय जब दो या तीन ग्रहों का गोचर बारहवें स्थान में होता है। शुभ ग्रह अच्छे कार्यों में जैसे की विवाह, धर्म इत्यादि में व्यय करवाते है, परन्तु क्रूर ग्रह बीमारी, कलह आदि में अधिक व्यय करवाते हैं।

५. जन्मकालीन बुध पर बृहस्पति का गोचर या दृष्टि होने से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में सुधार होती है। कुंडली के दूसरे या ग्यारहवें भाव पर गुरु की दृष्टि अथवा गोचर व्यक्ति विशेष को आर्थिक रुप से संपन्न बनाता है। जन्मकालीन सूर्य पर बृहस्पति का गोचर या उसकी दृश्टि पड़ने से भी आजीविका में पदोन्नति या वृद्धि होती है।

६. जन्म कुंडली कोई ग्रह अपनी राशि में बलवान हो और किसी शुभ स्थान में भी बैठा हो और गोचर में यदि किसी अशुभ भावों में भी जाएगा तो भी वो ग्रह अधिक बुरा फल नहीं देता है।

७. जन्मकालीन चंद्रमा से चतुर्थ या आठवें भाव पर से मंगल का गोचर व्यक्ति को रोग प्रदान करता है। चंद्रमा से दशम भाव में शनि का गोचर व्यक्ति को यात्राएँ करवाता है और उसका स्थान या व्यवसाय में परिवर्तन भी कराता है।

८. सूर्य से २,७,१२ भाव में से किसी भाव शनि और मंगल हो तो पुरुष के लिए तथा चन्द्रमा से २,७,१२ भाव में शनि और मंगल हो तो स्त्री के लिए घातक होते है।

९. यदि जन्म के समय किसी भाव पर शुभ ग्रहों की द्रष्टि या अधिक प्रभाव हो तो गोचर में क्रूर ग्रह भी उस भाव में जाते हुए अधिक बुरा फल नहीं देते है।

१०. जन्मकालीन शुक्र के ऊपर से बृहस्पति का गोचर प्रेम संबंध स्थापित अथवा जल्दी विवाह करवाता है। जन्म कुंडली के सप्तम भाव अथवा पंचम भाव/पंचमेश पर गोचर में बृहस्पति व शनि का एक साथ प्रभाव पड़ता है, तो भी विवाह का योग बनता है।

११. जन्म कुंडली में सूर्य के राशि में शनि का गोचर होने से उस भाव के कारकत्वों से संबंधित फलों में बहुत कठिनाई होता हैं। जन्मकालीन मंगल के ऊपर से शनि का गोचर व्यक्ति के जीवन में एक विशिष्ट परिवर्तन लेकर आता है। दशमेश पर से शनि का गोचर व्यवसाय संबंधी गंभीर समस्याएँ प्रदान करता है। १,२,४,८,१२ भाव में भी शनि का गोचर अत्यधिक चिन्ताएँ और समस्या प्रदान करता हैं।

गोचर फल का उपयोग

गोचर फल का महत्व भारतीय ज्योतिष में अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब ग्रह किसी विशेष राशि में गोचर करते हैं, तो वे विभिन्न भावों और स्थानों पर प्रभाव डालते हैं, जिससे व्यक्ति के जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। इसलिए, किसी भी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति और भविष्य की संभावनाओं का आकलन करते समय गोचर फल का विश्लेषण करना अनिवार्य है।

गोचर फल का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह समय के साथ आने वाले परिवर्तनों की सूचना देता है। ग्रहों की गति का अध्ययन करते समय, ज्योतिषी को यह ध्यान में रखना चाहिए कि विभिन्न ग्रहों का गोचर कैसे एक-दूसरे के साथ संपर्क करता है। जैसे कि जब गुरु का गोचर किसी शुभ भाव में होता है, तो यह व्यक्ति के लिए अच्छे अवसर ला सकता है। इसके विपरीत, जब शनि या राहु का गोचर किसी कठिन भाव में होता है, तो यह व्यक्ति के लिए चुनौतियों का सामना करने का समय हो सकता है। इस प्रकार, गोचर फल की सही व्याख्या से व्यक्ति की भविष्यवाणियों को सटीकता मिलती है।

गोचर फल विचार का महत्व केवल व्यक्तिगत जीवन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों पर भी प्रभाव डालता है। ग्रहों की चाल का अध्ययन करते समय, ज्योतिषी को यह समझना चाहिए कि गोचर फल का प्रभाव व्यक्तिगत जीवन के अलावा सामूहिक घटनाओं को भी प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, जब ग्रहों का गोचर एक विशेष राशि में होता है, तो इससे समाज में आर्थिक उतार-चढ़ाव और राजनीतिक परिवर्तन भी हो सकते हैं। इस संदर्भ में, गोचर फल की व्याख्या करना न केवल व्यक्तिगत बल्कि सामूहिक भविष्यवाणियों के लिए भी महत्वपूर्ण है।

ग्रहों का गोचर फल

❖ **सूर्य का गोचर फल:** सूर्य का गोचर आमतौर पर एक महीने का होता है। यह आत्म–सम्मान, स्वास्थ्य और नेतृत्व के गुणों पर प्रभाव डालता है। गोचर में सूर्य जन्मराशि से तृतीय, षष्ट, दशम और एकादश भाव में होने से शुभ फलदायी होता है। जन्म राशि से सूर्य जब प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम एवं द्वादश में पहुंचता है तो मानसिक अशांति, अस्वस्थता, गृह कलह, मित्रों से अनबन एवं राजकीय पक्ष की भी हानि करता है।

- **प्रथम भाव में** – सूर्य का गोचर प्रथम भाव में होने से रक्त में कमी की सम्भावना होती है। नेत्र रोग, हृदरोग, मानसिक अशांति, पित का प्रकोप, कार्य में बाधा, धन की हानि एवं सम्मान में कमी व् स्थान नाश होते है।
- **द्वितीय भाव में** – इस भाव में सूर्य की गोचर होने से धन की हानि, उदासी, सुख में कमी, असफ़लता, नेत्र विकार, मित्रो से विरोध, सिरदर्द, भय, व्यापार में नुकसान होने का संभावना रहता है।
- **तृतीय भाव में** – तृतीय भाव में सूर्य के फल बहुत ही अनुकूल होते है। जातक को धन, पुत्र, मित्र और उच्चाधिकारियों से अधिक लाभ मिलता है एवं समाज में सम्मान भी प्राप्त होता है।
- **चतुर्थ भाव में** – चतुर्थ भाव में सूर्य के गोचर होने से ज़मीन, यात्रा, माता और पत्नी से समस्या का सामना करना पड़ता है। जातक का मानसिक अशांति और मानहानि भी होते हैं।
- **पंचम भाव में** – इस भाव में सूर्य की गोचर होने से पुत्र को परेशानी, उच्चाधिकारियों से हानि और रोग व् शत्रु में वृद्धि होते है।
- **षष्ठ भाव में** –षष्ठ भाव में सूर्य के गोचर होने से रोग–शोक, शत्रु, परेशानियां आदि दूर होते हैं।
- **सप्तम भाव में** – इस भाव में सूर्य का गोचर अकारण यात्रा, पेट रोग, दीनता और वैवाहिक जीवन में कष्ट देता है। धन व् मानसम्मान में कमी एवं पेट व् सिरदर्द की समस्या आ जाती है।
- **अष्टम भाव में** – अष्ठम भाव में सूर्य का गोचर बवासीर, पत्नी से परेशानी, रोग भय, ज्वर, राज भय, अपच की समस्या पैदा करता है।

- **नवम भाव में** – नवम भाव में सूर्य का गोचर होने से दीनता, रोग, धन हानि, आपति, बाधा, झूंठा आरोप, मित्रो व् बन्धुओं से विरोध का सामना करन पड़ता है ।
- **दशम भाव में** – इस भाव में सूर्य का गोचर जातक को सफलता, विजय, सिद्धि, पदोन्नति, मान, गौरव, धन, आरोग्य, अच्छे मित्र की प्राप्ति करवाता है।
- **एकादश भाव में** – एकादश भाव में सूर्य अंक गोचर विजय, स्थान लाभ, सत्कार, पूजा, वैभव, रोगनाश, पदोन्नति, वैभव पितृ लाभ और मांगलिक कार्य का दोत्यक होता हैं।
- **द्वादश भाव में** – इस भाव में सूर्य का गोचर जातक को सदाचारी बनता है। सफलता और अच्छे कार्यो के लिए जातक को प्रेरित करता है लेकिन पेट व् नेत्र रोग का भी संभावना रहता है।

❖ **चन्द्र का गोचर फल:** चंद्रमा का गोचर लगभग ढाई दिनों का होता है। यह हमारे मन और भावनाओं पर प्रभाव डालता है। चंद्रमा का गोचर जिस भाव में होता है, वहां भावनात्मक गतिविधियाँ और मानसिक स्थिति प्रभावित होती हैं। गोचर में चन्द्रमा जन्म राशि से प्रथम, तृतीय, षष्टम, सप्तम, दशम एवं एकादश में होने से शुभ फल देने वाला होता है। एवं जन्मकालीन राशि से २, ४, ८, १२ वें भाव में अशुभ फल देता है।

- **प्रथम भाव में** – गोचर में चन्द्रमा जन्मराशि में होने से जातक को सुख, स्त्री समागम, आनंद उत्तम भोजन, शयन सुख एवं मनोहर वस्त्र की प्राप्ति होती है।
- **द्वितीय भाव में** – द्वितीय भाव में चन्द्रमा की गोचर होने से जातक का सम्मान हानि, धन हानि, मानसिक तनाव, परिवार से और हर काम में असफलता मिलती है।
- **तृतीय भाव में** – इस भाव में चन्द्रमा का गोचर से जातक को अचानक धन प्राप्ति, परिवार में सुख, नए वस्त्र, स्वस्थ शरीर, मित्र लाभ और हर तरह की सफलता मिलती है।
- **चतुर्थ भाव में** – चतुर्थ भाव में चन्द्रमा का गोचर होने से जातक को शंका, अविश्वास, चंचलता, भोजन और नींद में बाधा, स्त्री सुख में कमी, अपयश और जल से भय होता है।
- **पंचम भाव में** – इस भाव में चन्द्रमा का गोचर दीनता, रोग, यात्रा में हानि, अशांत, जलोदर एवं जातक को कामुक बनाता है।
- **षष्ठ भाव में** – इस भाव में चन्द्रमा का गोचर से जातक को धन व् सुख लाभ, शत्रु पर जीत, निरोग्गता, यश, आनंद और महिला से लाभ मिलता है।

- **सप्तम भाव में** – नवम भाव में चन्द्रमा का गोचर होने से वाहन की प्राप्ति होती है। सम्मान, सत्कार, धन, अच्छा भोजन, स्त्रीसंग और व्यापर में यश व् लाभ मिलता है ।
- **अष्टम भाव में** – इस भाव में चन्द्रमा का गोचर जातक को भय, खांसी, अपच, छाती में रोग, विवाद, मानसिक कलह, धन नाश और आकस्मिक परेशानी का सामना करना पड़ता है।
- **नवम भाव में** – नवम भाव में चन्द्रमा का गोचर से बंधन भय, मानसिक चंचलता, पेट की रोग, पुत्र से मतभेद और व्यापार में हानि होती है।
- **दशम भाव में** – इस भाव में चन्द्रमा का गोचर होने से जातक को बहुत सफलता मिलती है। हर काम आसानी से होता है, धन, मान–सम्मान, उच्चाधिकारियों से लाभ एवं उच्च पद की प्राप्ति होती है।
- **एकादश भाव में** – इस भाव चन्द्रमा का गोचर से धन लाभ, मित्र समागम, प्रसन्नता, व्यापार लाभ, पुत्र से लाभ और स्त्री सुख मिलता है।
- **द्वादश भाव में** – द्वादश भाव में चन्द्रमा की गोचर होने से जातक की धन हानि, अपघात, शारीरिक हानियां होती है।

❖ **मंगल का गोचर फल:** मंगल का गोचर लगभग डेढ़ महीने का होता है। यह ऊर्जा, साहस, और संघर्ष पर प्रभाव डालता है। मंगल का गोचर जिस भाव में होता है, वहां साहसिक कार्यों और विवादों की संभावना होती है। मंगल जन्मकालीन राशि से ३,६,११ भाव में शुभ फल देता है। शेष भावों में अशुभ फल देता है। तृतीय, षष्ट और एकादश के अलावा अन्य भावों में जब यह गोचर करता है तब बल की हानि होती है, शत्रु प्रबल होंते हैं। जातक के लिए अस्वस्थता, नौकरी एवं कारोबार में बाधा एवं अशांति का वातावरण बनता है।

- **प्रथम भाव में** – जन्म राशि में मंगल का गोचर रोग दायक जैसे: बवासीर, रक्त विकार, ज्वर, घाव, अग्नि से डर, ज़हर और अस्त्र से हानि देता है।
- **द्वतीय भाव में** –द्वितीय भाव में मंगल का गोचर पित्त रोग, अग्निभय, चोर से खतरा, राज्य से हानि, कठोर वाणी के कारण कलह और शत्रु से परेशानियाँ दिलाता है।
- **तृतीय भाव में** – इस भाव में मंगल के गोचर से धन की प्राप्ति और शत्रुनाश होती है। जातक की तर्क शक्ति प्रबल होती है, नए वस्त्र, धातु की प्राप्ति एवं प्रमुख पद मिलता है।

- **चतुर्थ भाव में** – चतुर्थ भाव में मंगल का गोचर होने से पेट के रोग, ज्वर, रक्त विकार और शत्रु वृद्धि होते हैं। धन की कमी होती है, गलत संगती से हानि, भूमि विवाद, माँ को कष्ट, भय और हिंसा के कारण जातक की हानि होती है।
- **पंचम भाव में** –इस भाव में मंगल के गोचर से शत्रु भय, रोग, क्रोध, पुत्र शोक, शत्रु शोक, स्वास्थ्य हानि और जातक से पाप कर्म होने लगते हैं।
- **षष्ठ भाव में** – षष्ठ भाव में मंगल का गोचर शुभ होता है। शत्रुओ पर विजय मिलता है, स्वस्थ में सुधार होता है और धन की प्राप्ति होता हैं।
- **सप्तम भाव में** – सप्तम भाव में मंगल का गोचर स्त्री से कलह, पेट के रोग, नेत्र विकार के कारण होते हैं।
- **अष्टम भाव में** – इस भाव में मंगल का गोचर से धन व् सम्मान में कमी और रक्तश्राव की संभावना होती है।
- **नवम भाव में** – नवम भाव में मंगल का गोचर से जातक के धन हानि, पीड़ा, दुर्बलता, धातु क्षय, धीमी क्रियाशीलता हो जाती हैं।
- **दशम भाव में** – दशम भाव में मंगल का गोचर फल मिलाजुला अर्थात शुभाशुभ फल देता हैं।
- **एकादश भाव में** – एकादश भाव में मंगल के गोचर से धन प्राप्ति और उच्च पद की प्राप्ति होती हैं।
- **द्वादश भाव में** – द्वादश भाव में मंगल का गोचर धन हानि, स्त्री से कलह और नेत्र रोग का कारक होता है।

❖ **बुध का गोचर फल:** बुध का गोचर बुद्धिमत्ता, संवाद, और व्यापार पर प्रभाव डालता है। बुध का गोचर जिस भाव में होता है, वहां संचार और व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि होती है। बुध जन्मकालीन राशि से २,४,६,८,१० और ११ वें भाव में शुभ फल देता है। अन्य भावों में बुध का गोचर शुभफलदायी नहीं होता है। स्त्री से वियोग, कुटुम्बियों से अनबन, स्वास्थ्य की हानि, आर्थिक नुकसान, कार्यों में बाधक होता है।

- **प्रथम भाव में** – इस भाव में बुध का गोचर जातक को चुगलखोरी, अपशव्द बोलने बाला, कलह प्रिय, और बेकार की यात्रायें से नुकसान करवाता हैं।
- **द्वीतीय भाव में** – द्वितीय भाव में बुध का गोचर से जातक अपमानित होता है परन्तु धन का प्राप्ति भी होता है।

- **तृतीय भाव में** – इस भाव पर बुध के गोचर से शत्रुभय होता है और जातक को दुष्टकर्म की ओर ले जाता है, परन्तु मित्र की प्राप्ति भी करवाता है।
- **चतुर्थ भाव् में** – चतुर्थ भाव में बुध का गोचर जातक को बहुत धन दिलवाता है और अपने स्वजनों की वृद्धि होती है।
- **पंचम भाव में** – इस भाव में बुध के गोचर से जातक के मन हमेशा बैचैन रहता है और पुत्र व् स्त्री से कलह करवाता है।
- **षष्ठ भाव में** – षष्ठ भाव में बुध का गोचर बहुत अच्छा फल देता हैं। जातक की सौभाग्य का उदय होता है और शत्रु पराजित होते हैं।
- **सप्तम भाव में** – सप्तम भाव में बुध का गोचर स्त्री से कलह का कारण बनता है।
- **अष्टम भाव में** – अष्ठम भाव में बुध की गोचर से पुत्र व् धन लाभ देता है एवं जातक सदा प्रसन्न रहता है।
- **नवम भाव में** – नवम भाव में बुध का गोचर हर काम में बाधा डालता हैं।
- **दशम भाव में** – दशम भाव में बुध का गोचर लाभप्रद होते हैं। जातक के लिए शत्रुनाशक, धन दायक, स्त्री व् शयन सुख प्राप्ति का कारक होता है।
- **एकादश भाव में** – इस भाव में बुध का गोचर जातक कप नानाविध लाभ देता हैं। धन, पुत्र, सुख, मित्र, वाहन, मृदु वाणी प्रदान करता है।
- **द्वादश भाव में** – द्वादश भाव में बुध का गोचर जातक को रोग, पराजय और अपमान देता है।

❖ **गुरु का गोचर फल:** गुरु (बृहस्पति) का गोचर लगभग एक वर्ष का होता है। यह ज्ञान, धर्म और समृद्धि पर प्रभाव डालता है। बृहस्पति का गोचर जिस भाव में होता है, वहां विस्तार और विकास की संभावनाएं बढता हैं। गुरू जन्मकालीन राशि से २,५,७,९ और ११ वें भाव में शुभ फल देता है। शेष भावों में गुरु का गोचर मानसिक पीड़ा, शत्रुओं से कष्ट, अस्वस्थता व धन की हानि होती है। गोचर में अशुभ होने पर बृहस्पति सम्बन्धों में कटुता, रोजी रोजगार मे उलझन और गृहस्थी में बाधक बनता है।

- **प्रथम भाव में** –प्रथम भाव में गुर का गोचर धन नाश, पदावनति, वृद्धि का नाश, विवाद व् स्थान परिवर्तन करवाता हैं।
- **द्वितीय भाव में** – इस भाव में गुरु का गोचर जाक को पर धन व् विलासिता पूर्ण जीवन दिलाता है।

- **तृतीय भाव में** – तृतीय भाव में गुरु का गोचर काम में बाधा और स्थान परिवर्तन करवाता है।
- **चतुर्थ भाव में** – चतुर्थ भाव में गुरु का गोचर होने से कलह, चिंता और पीड़ा दिलाता है।
- **पंचम भाव में** – पंचम भाव में गुरु का गोचर जातक के लिए अति शुभ होता है। पुत्र सुख, पशु धन, घर, स्त्री, सुंदर वस्त्र, आभूषण की प्राप्ति करवाता हैं।
- **षष्ठ भाव में** – षष्ठ भाव में गुरु का गोचर से दुःख और पत्नी से अनबन होती है।
- **सप्तम भाव में** – इस भाव में गुरु का गोचर रति सुख, धनलाभ, सुरुचि भोजन, उपहार प्राप्ति, और वाणी में कुशलता का वृद्धि करता हैं।
- **अष्टम भाव में** – अष्ठम भाव में गुरु का गोचर से बंधन भय, व्याधि, पीड़ा, शोक व् मृत्युतुल्य कष्ट देता है।
- **नवम भाव में** – नवम भाव में गुरु का गोचर से जातक को कुशलता, प्रमुख पद, पुत्र की सफलता, धन व् भूमि लाभ, स्त्री की प्राप्ति होती है।
- **दशम भाव में**– इस भाव में गुरु का गोचर स्थान परिवर्तन, रोग–शोक और धन हानि होता है।
- **एकादश भाव मे** – एकादश भाव में गुरु का गोचर शुभ होता हैं। जातक को धन, आरोग्य और मनोरम स्थान दिलवाता है।
- **द्वादश भाव में** – द्वादश भाव में गुर का गोचर जातक के मन में भ्रम पैदा करता है।

❖ **शुक्र का गोचर में फल:** शुक्र का गोचर जिस भाव में होता है, वहां प्रेम संबंध और सुख–सुविधाओं की वृद्धि होती है। शुक्र जन्मकालीन राशि प्रथम, द्वितीय, पंचम, अष्टम, नवम एवं एकादश भाव से गोचर करता है तब जातक को भौतिक एवं शारीरिक सुख मिलता है। गोचर में शुक्र अशुभकारी होने पर यह स्वास्थ्य एवं धन की हानि करता है। स्त्री से पीड़ा, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग, शत्रु बाधा, रोजगार में कठिनाईयां होता है।

- **प्रथम भाव में** – शुक्र का गोचर प्रथम भाव में होने से जातक को सुख, आनंद, वस्त्र, विलासी जीवन, सुंदर स्थानों का भ्रमण, सुगन्धित पदार्थ लाभ होते है एवं वैवाहिक जीवन में अपार सुख की प्राप्त होते हैं।
- **द्वितीय भाव में** – द्वितीय भाव में शुक्र का गोचर संतान, धन–धान्य, राज्य से लाभ, स्त्री के प्रति आकर्षण और परिवार के प्रति हितकारी होता हैं।

- **तृतीय भाव में** – इस भाव में शुक्र का गोचर जातक के प्रभुता, धन, सम्मान, समृधि, वस्त्र का लाभ और शत्रु का नाश करवाता हैं।
- **चतुर्थ भाव में** –चतुर्थ भाव का शुक्र का गोचर से मित्र लाभ और शक्ति की प्राप्ति होता हैं।
- **पंचम भाव में** – पंचम भाव में शुक्र का गोचर से जातक को लाभ, संतुष्ट जीवन, मित्र व् पुत्र धन की प्राप्ति करवाता है।
- **षष्ठ भाव में** –षष्ठ भाव में शुक्र का गोचर जातक को रोग और असम्मान दिलवाता है।
- **सप्तम भाव में** – इस भाव में शुक्र का गोचर सम्बन्धियों का नाश करवाता हैं।
- **अष्टम भाव में** – अष्ठम भाव में शुक्र का गोचर जातक को भवन, परिवार सुख, स्त्री की प्राप्ति करवाता है।
- **नवम भाव में** – नवम भाव में शुक्र की गोचर से धर्म, स्त्री, धन, आभूषण व् वस्त्र की प्राप्ति होती है।
- **दशम भाव में**– दशम भाव में शुक्र की गोचर से जातक को अपमानित और कलह से झुजना पड़ता है।
- **एकादश भाव में** – इस भाव में शुक्र के गोचर से जातक को मित्र, धन, अन्न, प्रसाधन सामग्री की प्राप्ति होती है।
- **द्वादश भाव में** – द्वादश भाव में शुक्र के गोचर से सामायिक धन प्राप्ति के मार्ग बन जाता है।

❖ **शनि का गोचर फल:** शनि का गोचर लगभग ढाई वर्षों का होता है। यह कर्म, अनुशासन, और चुनौतियों पर प्रभाव डालता है। शनि का गोचर जिस भाव में होता है, वहां कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। शनि जन्मकालीन राशि से ३,६,११ भाव में शुभ फल एवं शेष भावों में अशुभ फल देता है। शनि की २,१,१२ भावो के गोचर को साढ़ेसाती और ४,८ भावो के गोचर को ढ़ैया कहते हैं। शनि का अशुभ गोचर मानसिक कष्ट, आर्थिक कष्ट, रोजी–रोजगार एवं कारोबार में बाधा सहित स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

- **प्रथम भाव में** – प्रथम भाव में शनि का गोचर से जातक को अग्निभय, विवाद, वियोग, स्थान परिवर्तन, उदासी जीवन, शरीर को हानि, धन हानि, पुत्र को हानि आदि परेशानी होती है।

- **द्वितीय भाव में**– इस भाव शनि का गोचर से जातक धन, कुतुम्व और सुख की नाश होती हैं।
- **तृतीय भाव में** – तृतीय भाव में शनि का गोचर शुभ होता है। धन, नौकर, पशु, भवन, सुख, ऐश्वर्य की प्राप्ति और सभी शत्रु पराजित होते हैं।
- **चतुर्थ भाव में** –चतुर्थ भाव में शनि का गोचर मित्र, धन, पुत्र, स्त्री से वियोग करवाता हैं। एवं मन में गलत विचार बनने लगते हैं, जातक हमेशा उदास रहने लगता है।
- **पंचम भाव में** – पंचम भाव में शनि का गोचर अकारण कलह करवाता है। जातक के स्त्री और पुत्र से वियोग होने लगती हैं।
- **षष्ठ भाव में** – इस भाव में शनि का गोचर लाभकारी होता हैं। जातक के शत्रु व् रोग पराजित होते हैं एवं सांसारिक सुखो की प्राप्ति होती है।
- **सप्तम भाव में** – सप्तम भाव में शनि का गोचर से जातक को अनेक यात्रायें करनी पड़ती हैं एवं स्त्री – पुत्र से विमुक्त भी होना पड़ता हैं।
- **अष्टम भाव में** –अष्ठम भाव में शनि का गोचर से कलह व् दूरियां पनपती हैं।
- **नवम भाव में** – इस भाव में शनि के गोचर से शत्रूओ से बैर, बंधन, हानि और हृदरोग देता हैं।
- **दशम भाव में** – दशम भाव में शनि का गोचर कार्य की प्राप्ति देता है, परन्तु विद्या व् यश में कमी एवं व्यय ज्यादा करवाता हैं।
- **एकादश भाव में** – एकादश भाव में शनि के गोचर से जातक को परस्त्री व् परधन की प्राप्ति होती हैं।
- **द्वादश भाव में** – द्वादश भाव में शनि के गोचर से जातक को अत्याधिक व्याय, शोक व् शारीरिक परेशानीया का सामना करना पड़ता हैं।

❖ **राहु:** राहु छाया ग्रह होने के कारण इनके गोचर का प्रभाव अदृश्य, रहस्यमय और अचानक बदलावों से जुड़ा होता है। राहु की स्थिति से व्यक्ति की महत्वाकांक्षाएं और इच्छाएँ भी प्रभावित होती हैं। राहु का गोचर जिस भाव में होता है, वहां भ्रम, अप्रत्याशित घटनाओं और अज्ञात विषयों की संभावना होती है।

राहु जन्मकालीन राशि से ३,६,११ वें भाव में शुभ एवं शेष भावों में अशुभ फल देता है। राहू की अशुभ गोचर से अर्थहानि, शत्रुभय, कार्यहानि, रोग–शोक, प्रवास, मृत्यु और अग्निभय होता है।

❖ **केतु:** केतु का गोचर जिस भाव में होता है, वहां त्याग, मोक्ष और अतीत के कर्मों का प्रभाव होता है। केतु गोचर फल व्यक्ति के मानसिक विकास और ध्यान की गहराई में जुड़ा होता है। जब केतु किसी महत्वपूर्ण भाव से गुज़रता है, तो यह व्यक्ति को आत्म–विश्लेषण की ओर प्रेरित करता है।

केतु का अशुभ गोचर से व्यक्ति का जीवन बहुत ही चुनौतीपूर्ण हो जाता है। केतु जन्मकालीन राशि से १,२,३,४,५,७,९ और ११ वें भाव में शुभ फल एवं शेष भावों में अशुभ फल देता है। केतु की शुभ गोचर में मान–सम्मान, भोग, सुख और अर्थलाभ होता है।

ग्रह शुद्धि

✓ **सूर्यशुद्धि:** सूर्य जन्म राशि से तृतीय, षष्ठ, दशम व् एकादश भाव में शुद्ध होता है। महीनें की १३ दिन जाने के बाद द्वितीय, पंचम व् नवम भाव में भी स्थित सूर्य शुद्ध होता है।

✓ **चन्द्रशुद्धि:** जन्म राशि से प्रथम, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, दशम या एकादश भाव में स्थित चन्द्रमा शुद्ध होता है। तथा शुक्लपक्ष में द्वितीय, पंचम एवं नवम भाव में स्थित चन्द्रमा भी शुद्ध होता है। शुभ चन्द्रमा में किसी भी ग्रहों की गोचर अशुभ होने पर भी शुभफल मिलता है। एवं अशुभ चन्द्र में किसी ग्रहों का गोचर शुभ होने पर भी अशुभ फल मिलता है या शुभ फल नगण्य मिलता है।

✓ **अन्य ग्रहशुद्धि:** जन्म राशि से केतु, राहू, मंगल, शनि व् सूर्य तृतीय, षष्ठ, सप्तम व् दशमस्थ होने से शुद्ध होते है। गुरु जन्मराशि से सप्तम, नवम, द्वितीय व् पंचमस्थ होने से बुध द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्ठम, दशम व् द्वादशस्थ होने से शुद्ध होता है। शुक्र जन्मराशि से षष्ठ, सप्तम व् दशम भिन्न राशिस्थ होने से शुद्धि होता है। एवं जन्म राशि से एकादश भाव में सभी ग्रह ही शुद्ध होते है।

➢ **वामवेध चन्द्रशुधि:** जन्मराशि से द्वादश, चतुर्थ व् नवम चन्द्रमा शुक्र, शनि, मंगल, गुरु या सूर्य के सप्तमस्थ होने से वामबेध चन्द्र शुद्धि होता है जो जातक के लिए शुभ होता है। जन्मराशि से अष्ठम, पंचम व द्वितियस्थ चन्द्रमा, शुक्रादि से क्रमानुसार दशम, पंचम व् अष्ठमस्थ होने से भी शुभ होता है।

❖ **चन्द्रशुद्धि प्रशंसा:** यात्रादि सह सभी शुभ कार्य में तथा गोचर विचार में चन्द्र शुद्धि होना मंगलमय माना जाता है। अगर किसी कारण चन्द्र शुद्धि न हो हो तारा शुद्धि विचार करना चाहिए। शुक्लपक्ष में चन्द्र शुद्धि एवं कृष्णपक्ष में तारा शुद्धि फलप्रद होता है। चन्द्र और

तारा दोनों ही शुद्धि होना अतीव कल्याणप्रद माना जाता है। चन्द्रमा की गोचर काल में ताराशुद्धि होने से गोचर में चन्द्रमा अशुभ होने पर भी शुभ फल देता है।

घातचन्द्र बिशेष:

मेष राशि की प्रथम, वृषभ राशि की पंचम, मिथुन की नवम, कर्क की द्वितीय, सिंह की षष्ठ, कन्या की दशम, तुला राशि की तृतीय चन्द्रमा घात होता है। वृश्चिक राशि की सप्तम चन्द्रमा, धनु राशि की चतुर्थ, मकर राशि की अष्ठम, कुम्भ राशि की एकादश एवं मीन राशि की द्वादश चन्द्रमा घातचन्द्र होता है। घात चन्द्र में यात्रादि व् विवाह में क्लेश व् मृत्यु होती है।

चन्द्रमा की विभिन्न अवस्था

गत नक्षत्रांक को ६० अंक से गुण करके उसमे वर्तमान नक्षत्र की भुक्तदंड योग करके फिर ४ अंक से गुण करके गुणफल को ४५ अंक से भाग देने पर जो लब्ध अंक होगा उसको १२ अंक से फिर भाग करना होगा। उसके पश्चात् जो अंक शेष रहेगा उसके अनुसार चन्द्रमा का अवस्था निर्णय किया जाता है।

- ✓ **चन्द्रमा की द्वादश प्रवासादि अवस्थाए:–** १.प्रवास २.नाश ३.मृत्यु ४.जय ५.हास्य ६.रति ७.क्रीड़ीत ८.सुप्त ९.भुक्त १०.ज्वर ११.कंप एवं १२.स्त्रिरता। इन्ह द्वादश अवस्थाए में चंद्रमा अपनी नामानुसार ही फलदान करता है।

ग्रहों का बेध विशेष

गोचर विचार के फलकथन में ग्रह के वेध और विपरीत वेध का ध्यान रखना बेहद ही आवश्यक होता है। चंद्र राशि से कुछ विशेष भावों में ग्रह के गोचर के कुछ शुभ और कुछ अशुभ फल कहे गये है, बशर्ते इन का वेध ना हो रहा हो। वेध होने पर ग्रह अपने शुभ और अशुभ दोनों ही तरह के फल देने में असमर्थ होता है। शनि और सूर्य में पिता पुत्र का सम्बन्ध है यह एक दूसरे का वेध नहीं करते। इसी प्रकार चंद्र बुध भी एक दूसरे का वेध नहीं करते) तो वह ग्रह सूर्य के शुभ फल देने नहीं देता है। राहु, केतु गोचर में सूर्य की भांति ही फल देते हैं इसलिए उनके शुभ और वेध स्थान सूर्य वाले ही हैं। मतान्तर में कुछ विद्वानों का मानना है राहू, केतु शनि, मंगल की भांति फल देते है इसलिए इनका भेद शनि व् मंगल की भांति होती है।

सूर्य जन्म राशि से षष्ठ भाव में होने से शुद्ध परन्तु जन्म राशि से द्वादश भाव में किसी ग्रह होने से विद्ध (बेध) होता है। इस प्रकार जन्म राशि से दशम में सूर्य शुद्ध परन्तु चौर्थ भाव किसी ग्रह होने से विद्ध होता है। जन्म राशि से तृतीय में सूर्य शुद्ध होता है परन्तु नवम में किसी

ग्रह होने से बिद्ध होता है। सूर्य जन्म राशि से एकादश भाव में शुभ होता है परन्तु जन्म राशि पंचम भाव में ग्रह होने से बिद्ध होता है। शनि, मंगल, राहू, केतु जन्मराशि से षष्ठ, एकादश, तृतीय भाव में होने से शुभ होता है, परन्तु जन्म राशि से नवम, पंचम, द्वादश भाव में ग्रह होने पर बिद्ध होता है।

चन्द्रमा जन्म राशि से दशम, तृतीय, एकादश, प्रथम, षष्ठ, सप्तम में होने से शुद्ध होता है, परन्तु चतुर्थ, नवम, पंचम, द्वादश, द्वितीय भाव में ग्रह होने से बेध होता है। बुध जन्म राशि से द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अस्थम, दशम व् एकादश स्थान में शुभ होता है, परन्तु जन्मराशि से पंचम, तृतीय, नवम, प्रथम, अष्ठम, द्वादश भाव में ग्रह होने से बुध बिद्ध होता है। जन्म राशि से गुरु पंचम, द्वितीय, नवम, सप्तम, एकादश भाव में शुभ होता है, परन्तु चतुर्थ, द्द्वादाश, दशम, तृतीय, अष्ठम भाव में ग्रह होने से बिद्ध होता है। शुक्र जन्मराशि से प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, अष्ठम, नवम, एकादश, द्वादश भाव में शुभ होता है, परन्तु जन्मराशि से अष्ठम, सप्तम, प्रथा, दशम, नवम, पंचम, एकादश, षष्ठ, तृतीय भाब में अन्य ग्रह होने से बेध होता है।

बेध चक्र

सूर्य				
६	१०	३	११	शुभ स्थान
१२	४	९	५	बेध स्थान

मंगल, शनि, राहू, केतु			
६	११	३	शुभ स्थान
९	५	१२	बेध स्थान

चन्द्र						
१०	३	११	१	६	७	शुभ स्थान
४	९	८	५	१२	२	बेध स्थान
बुध						
२	४	६	८	१०	११	शुभ स्थान
५	३	९	१	८	१२	बेध स्थान

गुरु					
५	२	९	७	११	शुभ स्थान
४	१२	१०	३	८	बेध स्थान

शुक्र									
१	२	३	४	५	८	९	११	१२	शुभ स्थान
८	७	१	१०	९	५	११	६	३	बेध स्थान

विपरीत वेध

जिस प्रकार शुभ स्थानों के वेध स्थान हैं उसी प्रकार से अशुभ स्थानों के विपरीत वेध स्थान भी होते हैं। जैसे गोचर के शुभ फल वेध के कारण भंग हो जाते हैं। इसी प्रकार विपरीत वेध से गोचर के अशुभ प्रभाव भी निरस्त होते हैं और ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं। जब भी ग्रह जन्म राशि से अशुभ भाव मे गोचर होते हैं, और उनके साथ विपरीत वेध भाव में कोई भी और ग्रह गोचर कर रहा हो, (सूर्य और शनि, चंद्र और बुद्ध आपस में विपरीत वेध नहीं करते) तो उनके अशुभ प्रभाव निरस्त हो जाते हैं। इसलिए गोचर विचार काल में विपरीत वेध देखना भी अति आवश्यक हैं।

✓ **ग्रहों के जन्मराशि से अशुभ भाव और उनके विपरीत वेध:–**

सूर्य का अशुभ भाव: ४, ५, ९ विपरीत वेध भाव: ४/३, ५/६, ९/१०	गुरु का अशुभ भाव: ३, ४, १०, १२ विपरीत वेध भाव: ३/२, ४/५, १०/९, १२/११
चंद्रमा का अशुभ भाव: १, ४, ५, ८, ९, १२ विपरीत वेध भाव: १/२, ४/३, ५/६, ८/७, ९/१०, १२/११	शुक्र का अशुभ भाव: ६, ७, १० विपरीत वेध भाव: ६/२, ७/५, १०/९
मंगल का अशुभ भाव: ५, ९, १२ विपरीत वेध भाव: ५/३, ९/६, १२/११	शनि का अशुभ भाव: ५, ९, १२ विपरीत वेध भाव: ५/३, ९/६, १२/११
बुध का अशुभ भाव: ३, ६, ७, ९, १२ विपरीत वेध भाव: ३/२, ६/५, ७/८, ९/१०, १२/११	राहु/केतु का अशुभ भाव: ४, ५, ९ विपरीत वेध भाव: ४/३, ५/६, ९/१०

➢ बेध विचार में विचार्य:–

- १) पिता पुत्र ग्रह में परष्पर कोई बेध नहीं होता है। जैसे: सूर्य – शनि, चन्द्र–बुध।
- २) दुष्ट ग्रह विपरीत बेध क्रम में शुभ फल दायक होता है।

- ३) चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में द्वितीय, नवम, पंचम भावस्थ होने पर षष्ठ, अष्ठम व् चतुर्थस्थ बुध भिन्न दुसरे ग्रह द्वारा बिद्ध नहीं होता है।

गोचर फल और जीवन के विभिन्न पहलू

प्रेम और विवाह

प्रेम और विवाह, मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं, जो न केवल व्यक्तिगत संतोष के लिए आवश्यक हैं बल्कि सामाजिक स्थिरता और विकास में भी योगदान करते हैं। ज्योतिष के दृष्टिकोण से, इन दोनों का गहरा संबंध ग्रहों की स्थिति और चाल से होता है। जन्म कुंडली में विभिन्न ग्रहों की स्थिति और उनके गोचर फल प्रेम और विवाह के मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रेम का अनुभव और विवाह का बंधन, दोनों के लिए ग्रहों की सकारात्मक स्थिति अत्यंत आवश्यक होती है।

प्रेम की अनुभूति को समझने के लिए, शुक्र ग्रह को मुख्यतः देखा जाता है। यह आकर्षण, सौंदर्य और प्रेम का प्रतिनिधित्व करता है। जब शुक्र अपनी मजबूत स्थिति में होता है, तो व्यक्ति में प्यार के प्रति झुकाव और रोमांस की भावना प्रबल होती है। इसके विपरीत, यदि शुक्र कमजोर स्थिति में हो या अशुभ ग्रहों से प्रभावित हो, तो प्रेम संबंधों में बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। ऐसे में, प्रेम को समझने और सहायक ग्रहों की स्थिति के अनुसार उपाय करना आवश्यक हो जाता है।

विवाह का बंधन, जो प्रेम का एक अगला चरण होता है, उसकी स्थिरता और सफलतापूर्वक निभाने के लिए ज्योतिष में कई ग्रहों का विश्लेषण किया जाता है। मुख्यतः गुरु ग्रह विवाह के लिए शुभता और समर्पण का प्रतीक है। जब गुरु की स्थिति मजबूत होती है, तो विवाह संबंधी निर्णय सही और सकारात्मक होते हैं। इसके अलावा, चंद्रमा भी दांपत्य जीवन में भावनात्मक संतुलन के लिए महत्वपूर्ण होता है। यदि चंद्रमा की स्थिति संतोषजनक है, तो दांपत्य जीवन में प्रेम और समझ का माहौल बना रहता है।

ग्रहों का गोचर भी प्रेम और विवाह पर गहरा प्रभाव डालता है। जब ग्रहों का गोचर किसी विशेष राशि में होता है, तो यह व्यक्ति के प्रेम जीवन और विवाह के संभावनाओं को प्रभावित कर सकता है। जैसे, जब शुक्र और गुरु एक साथ किसी राशि में गोचर करते हैं, तो यह प्रेम और विवाह के लिए एक शुभ समय होता है। इसी प्रकार, अन्य ग्रहों का गोचर भी विवाह के लिए अनुकूल समय का संकेत कर सकता है, जिससे व्यक्ति को अपने प्रेम संबंधों को मजबूत करने और विवाह की ओर बढ़ने का अवसर मिलता है।

अंततः प्रेम और विवाह को समझने के लिए ज्योतिष का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। जन्म कुंडली और ग्रहों की स्थिति का विश्लेषण करके, एक ज्योतिषी व्यक्ति के प्रेम जीवन और विवाह के लिए संभावनाओं और चुनौतियों का आकलन कर सकता है। इस ज्ञान के माध्यम से, व्यक्ति अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला सकता है और प्रेम एवं विवाह के क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है।

करियर और व्यवसाय

करियर और व्यवसाय के क्षेत्र में ग्रहों की चाल का विशेष महत्व है। जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति और उनके गोचर का प्रभाव व्यक्ति के पेशेवर जीवन पर गहरा असर डालता है। प्रत्येक ग्रह का एक विशिष्ट गुण और प्रभाव होता है, जो व्यक्ति के करियर के विकास, चुनौतियों और सफलताओं को निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, सूर्य का स्थान व्यक्ति की आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को दर्शाता है, जबकि बुध का प्रभाव व्यापारिक कौशल और संचार क्षमता को प्रभावित करता है। इस प्रकार, कुंडली के विभिन्न ग्रहों का अध्ययन कर, हम करियर के अवसरों का सही आकलन कर सकते हैं।

जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति के आधार पर, विभिन्न करियर विकल्पों की संभावनाएँ सामने आती हैं। यदि किसी व्यक्ति के कुंडली में शुक्र और बुध की मजबूत स्थिति है, तो उसे कला, संगीत या व्यापार में सफलता मिलने की संभावना होती है। वहीं, अगर शनि की स्थिति मजबूत है, तो व्यक्ति को सरकारी नौकरी या स्थिर पेशेवर जीवन में सफलता मिल सकती है। इस प्रकार, कुंडली का गहन अध्ययन कर, हम सही करियर मार्ग का चयन कर सकते हैं, जो व्यक्ति की स्वाभाविक क्षमताओं और ग्रहों के प्रभाव के अनुकूल हो।

ग्रहों के गोचर का भी करियर पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जब ग्रह किसी विशेष राशि में गोचर करते हैं, तो उनका प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर सकारात्मक या नकारात्मक रूप से पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, जब गुरु का गोचर किसी व्यक्ति की दशम राशि में होता है, तो यह पेशेवर उन्नति के लिए शुभ माना जाता है। इसके विपरीत, राहु का गोचर कभी-कभी भ्रम और अस्थिरता का कारण बन सकता है, जिससे करियर में बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए, ग्रहों के गोचर की समयावधि और उसकी स्थिति का सही विश्लेषण करना अत्यंत आवश्यक है।

व्यवसायिक जीवन में ग्रहों के प्रभाव को समझना केवल सफलता के लिए आवश्यक नहीं है, बल्कि यह विफलताओं से बचने का भी एक महत्वपूर्ण उपाय है। कुंडली के माध्यम से व्यक्ति यह जान सकता है कि किस समय में उसे नए व्यवसाय में प्रवेश करना चाहिए या किन स्थितियों से बचना चाहिए। इसके अलावा, ग्रहों की स्थिति और गोचर के आधार पर, व्यक्ति

को अपने कार्यक्षेत्र में आवश्यक बदलाव करने का भी संकेत मिल सकता है। इस प्रकार, कुंडली का अध्ययन व्यक्ति को न केवल मार्गदर्शन करता है, बल्कि उसे आत्म–विश्लेषण और समर्पण के लिए भी प्रेरित करता है।

अंत में, करियर और व्यवसाय के क्षेत्र में ग्रहों की चाल और जन्म कुंडली का प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय है। सही ज्ञान और अनुभव के माध्यम से, ज्योतिषी अपने ग्राहकों को न केवल उनके करियर में सफलता दिला सकते हैं, बल्कि उन्हें ग्रहों के अनुकूल जीवन जीने के लिए भी प्रेरित कर सकते हैं। इसलिए, यह आवश्यक है कि ज्योतिषी ग्रहों के गोचर फल और जन्म कुंडली के विभिन्न पहलुओं का गहन अध्ययन करें, ताकि वे अपने ग्राहकों को सही और प्रभावी सलाह दे सकें।

स्वास्थ्य और कल्याण

स्वास्थ्य और कल्याण का विषय ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि यह न केवल व्यक्ति की शारीरिक स्थिति को दर्शाता है, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डालता है। ग्रहों की स्थिति और उनके गोचर का व्यक्ति के स्वास्थ्य पर सीधा प्रभाव पड़ता है। जन्म कुंडली में विभिन्न ग्रह जैसे सूर्य, चंद्रमा, मंगल और बुध का विश्लेषण करके, हम यह समझ सकते हैं कि किसी व्यक्ति को किस प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं और उनका समाधान कैसे किया जा सकता है।ज्योतिष के अनुसार, प्रत्येक ग्रह का एक विशिष्ट प्रभाव होता है जो व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है।

उदाहरण के लिए, सूर्य आत्मा और जीवन शक्ति का प्रतीक है, जबकि चंद्रमा मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। मंगल को ऊर्जा और क्रियाशीलता का ग्रह माना जाता है, और यदि यह कुंडली में एक मजबूत स्थिति में है, तो व्यक्ति में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं कम हो सकती हैं। दूसरी ओर, अगर मंगल कमजोर स्थिति में है, तो यह दुर्घटनाओं या शारीरिक समस्याओं का कारण बन सकता है।

जब ग्रहों का गोचर होता है, तो यह भी स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। गोचर के दौरान ग्रहों की स्थिति से यह पता लगाया जा सकता है कि किसी विशेष समय में व्यक्ति का स्वास्थ्य कैसे रहेगा। जैसे–जैसे ग्रह अपने मार्ग में चलते हैं, वे विभिन्न राशियों में प्रवेश करते हैं और इन राशियों के स्वामी ग्रहों के प्रभाव से व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति में परिवर्तन लाते हैं। इसीलिए, गोचर फल का अध्ययन करके हम यह जान सकते हैं कि कब विशेष सावधानियां बरतनी चाहिए या किस प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों का पालन करना चाहिए।

====✂====

अष्टम अध्याय

दशा तत्व

वैदिक ज्योतिष में दशा का अर्थ संक्षेप में समय अवधि के रूप में वर्णित किया गया है। इस अवधि को एक विशिष्ट ग्रह द्वारा शासित माना जाता है। 'दशा' शब्द का आधार एक निर्दिष्ट समय अवधि को ही समझाता है। इसलिए ज्योतिष शास्त्र में दशा शब्द का अर्थ ग्रहों की अवधि को ही दर्शाता है। दशा प्रणाली में प्रत्येक चंद्र राशि या नक्षत्र पर किसी विशेष ग्रह के प्रभाव का आकलन करने की एक विशेष व्यवस्था होती है। किसी भी व्यक्ति के जीवन में ऐसा कोई समय नहीं होता है, जो किसी ग्रहो की दशा से रहित हो, एक दशा के समाप्त होते ही दूसरी दशा शुरू हो जाती है।

दशाएं किसी व्यक्ति के जीवन भर ग्रहों के प्रभावों की भविष्यवाणी का स्पष्ट अवलोकन प्रदान करती हैं। प्रत्येक दशा एक विशिष्ट ग्रह द्वारा नियंत्रित होती है, और अन्य ग्रह उस दशा की गुणवत्ता और प्रकृति को प्रभावित करते हैं। दशा यह भी संकेत दे सकती है कि प्रत्येक ग्रह संपर्क में आने वाले अन्य ग्रहों के साथ कैसे समन्वय करता है।

ग्रहों की दशाएं व्यक्ति के जीवन में विभिन्न प्रभाव डालती हैं। व्यक्ति की जन्मकुंडली में स्थित ग्रहों की दशाओं के अनुसार व्यक्ति के जीवन की विभिन्न घटनाएं और परिणाम प्राप्त होते हैं। जब कोई ग्रह किसी व्यक्ति के जीवन में अपनी पूर्ण और अधिकतम शक्ति में होता है तब पूर्ण दशा होती है। दूसरी ओर जब किसी ग्रह की अपनी विशिष्ट दशा में कोई शक्ति नहीं होती है, तो इसे 'मुक्त दशा' कहा जाता है। इन्ह दशाओं पर शासन करने वाले नौ ग्रह ही होते हैं, जो फलादेश की सत्यता दशाओ के माध्यम से प्रकट करती है।

दशा प्रणालियों से जीवन के हर आयाम, जीवन की घटनाओं और घटना की सटीक अवधि का पता चलता है। अक्सर देखा जाता है कुंडली में कई ऐसे योग होते हैं, जिनका फल जातक भोगने से पहले ही उसे परलोक सिधारना पड़ता है।

इसका कारण यह है कि उन फलों के फलित होने का समय आने से पहले ही जातक की आयु पूरी हो चुकी होती है। इस बजाय से उस फल का अनुभव किए बिना ही जातक एक नए जीवन की शुरुआत करने चल पड़ता है। ये अधूरे कर्मफल और संचित प्रारब्ध जातक को पुनर्जन्म में प्राप्त होते हैं, यही सृष्टि के कालचक्र का विधान है।

इसी कर्म और प्रारब्ध के प्रभाव से जीव जन्म–जन्मांतर तक इस भव में भटकता रहता है, जब तक वह निष्काम कर्म के माध्यम से अपने आपको कर्म विधान से मुक्त नहीं कर लेता है। इसीलिए फलादेश की सार्थकता और काल निर्धारण विभिन्न दशा पद्धतियों से किया जाता है।

क्यौकी दशा पद्धति ज्योतिष शास्त्र में काल निर्धारण की रीढ़ होती है। इसलिये किसी जातक के भूत भविष्य वर्तमान के विवेचन हेतु, ग्रहो के फल प्राप्ति के समय या किसी योग के फल प्राप्ति समय को ज्ञात करने के लिये दशाओ का ज्ञान होना आवश्यक है।

❖ किसी व्यक्ति के जीवन में दशा का प्रभाव कई कारकों पर निर्भर करता है। जो इस प्रकार हैं:–

• **स्थिति**	• **घर**	• **संयोजक**	• **द्रष्टि**

इन पहलुओं के आधार पर ही किसी व्यक्ति के जीवन में किसी ग्रह दशाओ का सकारात्मक या नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन किया जाता है। इसलिए किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में किसी ग्रह की स्थिति अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। क्योंकि किसी ग्रह की शुभ घर में स्थिति व्यक्ति के जीवन में लाभकारी और सकारात्मक परिणाम देने वाला होता है।

जैसे: जब कोई ग्रह अपने मित्र ग्रह के घर में स्थित होता है, तब अच्छा फल देने वाला होता है। वहीं दूसरी ओर यदि कोई ग्रह अपने शत्रु के घर में स्थित होता है तो परिणाम इतने अनुकूल नहीं होते हैं और इससे व्यक्ति के जीवन में कुछ दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं।

❖ **दशाओं के प्रमुख भेद:** वैदिक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अनुसार ग्रहो के कुल बयालीस प्रकार दशाएं बताया गया हैं। ज्योतिष में दशाओं के कई प्रकार और रूप माने जाते हैं। इन्हें आम तौर पर दशा प्रणाली भी कहा जाता है।

दशाओ के १. निसर्गायु, २. पिण्डायु, ३. अंशायु, ४. नक्षत्रायु ये चार भेद प्रसिद्ध है।

- ✓ **निसर्गायु** - जिसमे ग्रहो की संख्या नियत होती है।
- ✓ **पिण्डायु** - जिसमे ग्रहो के उच्च-नीच के कारण संख्या कम-ज्यादा होती है।
- ✓ **अंशायु** - जिसमे नवांश आदि द्वारा संख्या निर्धारित होती है।
- ✓ **नक्षत्रायु** - जिसमे जन्म नक्षत्र के भुक्त भोग्य से दशा निर्धारित की होती है।

❖ शास्त्रोक्त सभी बयालीस प्रकार दशाएं के नाम इस प्रकार है:–

१.विंशोत्तरी दशा, २.अष्टोत्तरी दशा, ३.षोडशोत्तरी दशा, ४.द्वादशोत्तरी दशा, ५.पंचोत्तरी दशा, ६. शतसमा (शताब्दीका) दशा, ७.चतुरशीतिसमा दशा, ८.द्विसप्ततिसमा दशा, ९. षष्टी समा (षष्ठीयानी) दशा, १०.षडत्रिंशति समा दशा, ११.चक्र दशा, १२.कालचक्र दशा, १३.चर दशा, १४.स्थिर दशा, १५.शूल दशा, १६.लग्न केंद्रादि दशा, १७.काल दशा, १८.सुदर्शन चक्र दशा, १९.ब्रह्मग्रह दशा, २०.मण्डूक दशा, २१.वर्णद दशा, २२. राशि दशा, २३.पंचस्वर दशा, २४.नवमांशक नवदशा, २५.नवांश स्थिर दशा, २६.चतुर्विध उत्तरा दशा, २७. राश्यंशक दशा, २८.नक्षत्र दशा, २९.त्रिकोण दशा, ३०.योगार्धदशा, ३१.दृग्दशा, ३२.तारा दशा, ३३.कारकादि दशा, ३४.कारक केंद्रादि दशा, ३५. रश्मि दशा, ३६.अष्टवर्ग दशा, ३७.योगिनी दशा, ३८. अंश दशा, ३९. नैसर्गिक दशा, ४०.पिंड दशा, ४१.संध्या दशा एवं ४२.पाचक दशा।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के दशा पद्धतियो मे विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी, कालचक्र, मुद्दा, योगिनी दशा, मण्डूक दशा आदि ज्यादा प्रचलित है। इनमे भी सवसे ज्यादा विंशोत्तरी दशा ही प्रचलित है, क्योकि विंशोत्तरी दशा सबसे सरल और सटीक होते है। इसलिए ज्यादातर ज्योतिषी अपनी गणना में विंशोत्तरी दशा पद्धति ही प्रयोग में लेते है। और यह उचित भी है क्योकि यह दशा पद्धति व्यक्ति पर ग्रहों के प्रभाव की समय सीमा के बारे में जानकारी देने के लिए सर्वोत्तम पद्धति है।

यद्यपि विंशोत्तरी दशा सर्वत्र प्रचलित है, परंतु भारत देश के कुछ प्रदेशों में ज्योतिषीय सिद्ध्यांत के आधार पर अष्टोत्तरी दशाओं का भी प्रयोग होता रहता है। कुछ विद्यान ज्योतिषी गणना में सटिकता और सूक्ष्मता लाने के लिए विंशोत्तरी दशाओं के साथ साथ अष्टोत्तरी, द्वादशोतरी, मंडुका, योगिनी, कालचक्र, सुदर्शन चक्र आदि दशाओ का भी प्रयोग करते रहते है।

शास्त्रोक्त सभी दशाओ के वर्णन

१) **विंशोत्तरी दशा:** यह सबसे लोकप्रिय और सटीक दशा प्रणाली है, और व्यापक रूप से लागू भी है, विशेष रूप से ज्योतिष शास्त्र में उपयोग की जाती है। दशा की शुरुआत चंद्र की सटीक स्थिति और उसके नक्षत्र से होती है। नक्षत्रों को ९ ग्रहों में सन्निविष्ट किया जाता है जो दशा की प्रगति को दर्शाते हैं। विंशोत्तरी दशा का कुलमान १२० सौर वर्ष होते है इसलिए, इस दशा का नाम विंशोत्तरी है। इसमे दशा वर्षो की गणना संवत, सूर्य के राशि अंश कला विकला या ईसवी सन, माह तारीख घण्टा मिनिट के अनुसार साधन किया जाता है। दशाओ मे विंशोत्तरी सटीक, प्रामाणिक और पूर्णतया वैज्ञानिक नक्षत्र दशा पद्धति है।

✓ **ग्रहों की महादशा व नक्षत्र क्रम से निम्न है:**

ग्रह	महादशा वर्ष	नक्षत्र
सूर्य	०६ वर्ष	कृतिका, उतरा फाल्गुणी, उतरा आषाढा
चन्द्र	१० वर्ष	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मंगल	०७ वर्ष	मृगशिरा, चित्रा, घनिष्ठा
राहू	१८ वर्ष	आद्रा, स्वाती, शतभिषा
गुरु	१६ वर्ष	पुनर्वसु, विशाखा, पूर्व भाद्रपद
शनि	१९ वर्ष	पुष्य, अनुराध, उतरा भाद्रपद
बुध	१७ वर्ष	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
केतु	०७ वर्ष	मघा, मूला, अश्विनी
शुक्र	२० वर्ष	पूर्वा फाल्गुणी, पूर्वाषाढा, भरणी

२) **अष्टोत्तरी दशा:** दक्षिण भारत, गुजरात, पंजाब, भारत के पूर्वी, उत्तर पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्र के कुछ हिस्सों में अष्टोत्तरी दशा प्रणाली का अधिकतर व्यवहार किया जाता है। अष्टोत्तरी दशा पद्धति में जीवन चक्र १०८ वर्ष का माना गया है। इसमे केवल आठ ग्रहो की गणना की जाती है, केतु की गणना नही की जाती है। इसलिए इस दशा प्रणाली में केतु ग्रहो को दशा अवधि से बाहर रखा जाता है। अष्टोत्तरी दशा विधि में दशा काल सूर्य ६ वर्ष, चंद्रमा १५ वर्ष, मंगल ८ वर्ष, बुध १७ वर्ष, शनि १० वर्ष, बृहस्पति १९ वर्ष, राहु १२ वर्ष एवं शुक्र का दशा २१ वर्ष के होते है। जन्म कुंडली में राहु के लग्न में न होने पर, लग्न के स्वामी को किसी अन्य केंद्र या त्रिकोण में न होने पर अष्टोत्तरी दशा प्रणाली का अनुशंसा किया जाता है।

३) **षोडशोत्तरी दशा:** यदि जन्म कृष्ण पक्ष में है और लग्न चंद्र होरा में है या यदि जन्म शुक्ल पक्ष में है और लग्न सूर्य होरा में है, तो षोडशोत्तरी दशा की अनुशंसा की जाती है। इस दशा की गणना करने के लिए पुष्य नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक नक्षत्रों की संख्या की गणना करें, जो संख्या प्राप्त होगा उस संख्या को ८ से विभाजित करें, शेषफल दशा काल को दर्शाता है। इस दशा प्रणाली में, राहू ग्रह को छोड़कर सभी आठ ग्रहो दशेश होते है एवं प्रत्येक ग्रह के लिए दशा अवधि सूर्य ११ वर्ष, मंगल १२ वर्ष, बृहस्पति १३ वर्ष, शनि १४ वर्ष, केतु १५ वर्ष, चंद्रमा १६ वर्ष, बुध १७ वर्ष और शुक्र का दशा १८ वर्ष होता है।

षोडशोत्तरी दशा चक्रम

ग्रह	**वर्ष**	**नक्षत्राणि**
सूर्य	११	पुष्य, स्वाति, धनिष्ठा, रोहिणी
मंगल	१२	अश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, मृगशिरा
बृहस्पति	१३	मघा, अनुराधा, पु.भाद्रपद, आर्द्रा
शनि	१४	पू.फाल्गुनी, ज्येष्ठा, उ.भाद्रपद, पुनर्वसु
केतु	१५	उ.फाल्गुनी, मूल, रेवती
चंद्रमा	१६	हस्त, पूर्वाषाढ़ा, अश्विनी
बुध	१७	चित्रा, उ.षाढ़ा, भरणी
शुक्र	१८	स्वाति, श्रवणा, कृत्तिका

४) **द्वादशोत्तरी दशा:** शुक्र ग्रह द्वादशोत्तरी दशा योजना का स्वामी है, परन्तु दशा प्रदान करने वाले ग्रहों की सूची में शामिल नहीं होते है। इस दशा प्रणाली में सूर्य, गुरु, केतु, बुध, राहु, मंगल, शनि और चन्द्रमा दशेश होते है। दशा प्रणाली में सात अंक से दो–दो जोड़ने से ग्रहो की दशा वर्ष प्राप्त होते है, एवं विंशोत्तरी दशा के तरह ही ग्रहो का भुक्त–भोग्य निर्णय होते है। यह दशा पद्धति तब प्रशस्त मानी जाती है, जब लग्न शुक्र के नवांश या क्षेत्रों में हो, अथवा जो व्यक्ति कला, संगीत, चित्रकला, सिनेमा आदि सांस्कृतिक क्षेत्र से है। इस दशा की गणना करने के लिए जन्म नक्षत्र से रेवती नक्षत्र तक गणना करके प्राप्त संख्या को ८ से विभाजित किया जाता है एवं शेषफल संबंधित ग्रह की दशा को दर्शाता है। दशा क्रम है १– सूर्य, २– गुरु, ३– केतु, ४– बुध, ५– राहु, ६– मंगल, ७– शनि एवं ८– चन्द्र ग्रहों का दशा होता है। उपरोक्त ग्रहों की दशाएँ सूर्य ७ वर्ष, बृहस्पति ९ वर्ष, केतु ११ वर्ष, बुध १३ वर्ष, राहु १५ वर्ष, मंगल १७ वर्ष, शनि १९ वर्ष एवं चंद्रमा का २१ वर्ष मिलकर कुल ११२ वर्ष का द्वादशोत्तरी दशा होता है।

द्वादशोत्तरी दशा चक्रम

ग्रह	सूर्य	गुरु	केतु	बुध	राहु	मंगल	शनि	चन्द्र
वर्ष	०७	०९	११	१३	१५	१७	१९	२१

५) **पंचोत्तरी दशा:** जिस जातक के जन्म कर्क लग्न में और उसी के द्वादशांश में भी हो तो पंचोत्तरी दशा की अनुशंसा की जाती है। ऐसी स्थिति तभी संभव है जब कर्क राशि में लग्न ०-२ डिग्री ३०' के बीच हो। क्यौकि कर्क राशि का पहला द्वादशांश ब्रह्मांड के निर्माण को प्रतिबिंबित करने वाला क्षेत्र है, सृष्टि की जीवनदायिनी शक्तियाँ राशि चक्र के इस क्षेत्र में इतनी शक्तिशाली हैं कि विध्वंसक कारक ग्रह राहु, केतु भी निष्क्रिय हो जाते हैं। द्वादशांश को सूर्यांश भी कहा जाता है और यह उस वंश, परिवार आदि को दर्शाता है जिससे वे व्यक्ति संबंधित है। यह जातक को उसकी जन्म परिस्थितियों से विभिन्न राशियों और द्वादशांश में प्राणियों के निर्माण के लिए उभरते विभिन्न समीकरणों से जोड़ता है। पंचोत्तरी दशा १०५ वर्ष का होते है, इस दशा की गणना करने के लिए अनुराधा नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गणना करें और प्राप्त संख्या को ७ से विभाजित करें, शेषफल दशा को दर्शाता है। यह दशा राहु–केतु को छोड़कर सभी सात ग्रहो की दशाए होती है। दशा स्वामियों का क्रम १– सूर्य, २– बुध, ३– शनि, ४– मंगल, ५– शुक्र, ६– चन्द्र और ७– गुरु है। एवं ग्रहों की दशाएं १२ वर्ष, १३ वर्ष, १४ वर्ष, १५ वर्ष, १६ वर्ष, १७ वर्ष और १८ वर्ष की होती हैं।

पंचोत्तरी दशा चक्रम

ग्रह	वर्षाणि	नक्षत्राणि
सूर्य	१२	अनुराधा, शतभिषा, रोहिणी, पू.फा.
बुध	१३	ज्येष्ठा, पू.भा., मृगशिरा, उ.फा.
शनि	१४	मूल, उ.भा., आर्द्रा, हस्त
मंगल	१५	पूर्वाषाढ़ा, रेवती, पुनर्वसु, चित्रा
शुक्र	१६	उत्तराषाढ़ा, अश्विनी, पुष्य, स्वाति
चन्द्र	१७	श्रवणा, भरणी, आश्लेषा, विशाखा
गुरु	१८	घनिष्ठा, कृत्तिका, मघा

६) **शताब्दीका दशा:** शताब्दिका या शतवर्णीया दशा १०० वर्ष के होते है। जब कोई ग्रह जन्म कुंडली और नवमांश कुंडली दोनों में एक ही राशि में स्थित होता है, तो इसे वर्गोत्तम कहा जाता है। किसी जातक के कुंडली में जन्म लग्न वर्गोत्तम हो तो शताब्दीका दशा की अनुशंसा की जाती है। इस दशा विधि की गणना रेवती नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गणना

करें और प्राप्त संख्या को ७ से विभाजित करें, शेष संख्या प्रारंभिक ग्रह की दशा को दर्शाता है। दशा का क्रम इस प्रकार है; सूर्य ५ वर्ष, चंद्रमा ५ वर्ष, शुक्र १० वर्ष, बुध १० वर्ष, बृहस्पति २० वर्ष, मंगल २० वर्ष और शनि ३० वर्ष की होती हैं।

शताब्दिका दशा चक्रम

ग्रह	वर्षाणि	नक्षत्राणि
सूर्य	०५	रेवती, पुनर्वसु, चित्रा, उत्तराषाढ़ा
चंद्रमा	०५	अश्विनी, पुष्य, स्वाति, श्रवणा
शुक्र	१०	भरणी, अश्लेषा, विशाखा, घनिष्ठा
बुध	१०	कृत्तिका, मघा, अनुराधा, शतभिषा
बृहस्पति	२०	रोहिणी, पू.फाल्गुनी, ज्येष्ठा, पू.भाद्रपद
मंगल	२०	मृगशिरा, उ.फाल्गुनी, मूल, उ.भाद्रपद
शनि	३०	आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़ा

७) **चतुरशीति समा दशा:** जिस जातक के जन्म कुंडली में दशमेश दशम भाव में स्थित हो उस जातक के लिए चतुरशीति समा दशा की अनुशंसा की जाती है। कुंडली में दशम पति को पद, सम्मान और पैसा उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन माना जाता हैं। इस दशा विधि की गणना के लिए स्वाति नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनती करके प्राप्त संख्या को ७ से विभाजित करने पर जो अंक शेष रह जाता है वे अंक दशा को दर्शाता है। दशा स्वामी का क्रम सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि है। प्रत्येक दशा की अवधि १२ वर्ष के कुल ८४ वर्ष के होते है।

चतुर्शीति समा दशा (चार्ट)

दशा	वर्ष	नक्षत्राणि			
सूर्य	१२	स्वाति	श्रवणा	भरनी	अश्लेषा
चंद्रमा	१२	विशाखा	धनिष्ठा	कृतिका	मघा
मंगल	१२	अनुराधा	शतभिषा	रोहिणी	पू. फाल्गुनी
बुध	१२	ज्येष्ठा	पू. भाद्रपद	मृगशिरा	उ. फाल्गुनी
गुरु	१२	मुला	उ. भाद्रपद	आर्द्रा	हस्त
शुक्र	१२	पूर्वाषाढ़ा	रेवती	पुनर्वसु	चित्रा
शनि	१२	उत्तराषाढ़ा	अश्विनी	पुष्य	X

८) **द्विसप्तति समा दशा:** जन्म कुंडली में यदि लग्न का स्वामी सप्तम भाव में हो और सप्तमेश लग्न में हो, तो द्विसप्तति समा दशा की अनुशंसा की जाती है। द्विसप्तति समा दशा की

गणना करने के लिए मूल नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनती करें और प्राप्त संख्या को ८ से विभाजित करें, शेष संख्या प्रारंभिक दशा ग्रह को दर्शाता है। इस दशा प्रणाली में केतु ग्रह के अतिरिक्त आठों सूर्यादि ग्रह दशाधिपति होते हैं। इस दशा पद्धति में केतु कारक है और दशा का शासक है, इसलिए केतु ग्रह दशा प्रदान करने वाले ग्रहों की सूची से बाहर रखा जाता है। दशा अवधि में ग्रह प्राकृतिक क्रम के अनुसार होते है; सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और राहु। प्रत्येक ग्रह की दशा अवधि ९ वर्ष की कुल ७२ वर्ष की दशा होती है, एवं भुक्त–भोग्यादि वर्ष विंशोत्तरी दशा की समान होती है।

द्विसप्तति समा दशा चार्ट

दशा	वर्ष	नक्षत्राणि			
सूर्य	०९	मुला	रेवती	पुष्य	विशाखा
चंद्रमा	०९	पूर्वाषाढ़ा	अश्विनी	अश्लेषा	अनुराधा
मंगल	०९	उत्तराषाढ़ा	भरनी	मेघा	ज्येष्ठा
बुध	०९	श्रावणी	कृतिका	पू. फाल्गुनी	X
गुरु	०९	धनिष्ठा	रोहिणी	उ. फाल्गुनी	X
शुक्र	०९	शतभिषा	मृगशिरा	हस्त	X
शनि	०९	पू. भाद्रपद	आर्द्रा	चित्रा	X
राहु	०९	उ. भाद्रपद	पुनर्वसु	स्वाति	X

९) **षष्ठिहयनी दशा:** जिस जातक की लग्न की राशि व चन्द्र की राशि एक हो अथवा जन्म कुंडली में सूर्य ग्रह की अवस्थान लग्न में हो तो विद्यानों के दोवारा षष्ठिहयनी दशा की अनुशंसा की जाती है। इस दशा प्रणाली में जन्म नक्षत्र पहली ग्रह दशा तय करता है, एवं दशा स्वामियों का क्रम गुरु, सूर्य, मंगल, चंद्र, बुध, शुक्र, शनि और राहु है। बृहस्पति, सूर्य और मंगल की दशाएं १० वर्ष की होती हैं, तथा शेष ग्रहों की दशा अवधि ६–६ वर्ष की होती है। विभिन्न दशा स्वामी के अंतर्गत आने वाले नक्षत्रों इस प्रकार है: गुरु (अश्विनी, भरणी, कृतिका, पुनर्वसु), सूर्य (रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, उ.आषाढ़), मंगल (पुष्य, आश्लेषा, मघा, रेवती), चंद्र (पू.फाल्गुनी, उ.फाल्गुनी, हस्त), बुध (स्वाति, विशाखा, अनुराधा), शुक्र (ज्येष्ठा, मूल, प.आषाढ़), शनि (अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा) एवं राहु (शतभिषा, पू.भद्रा, उ.भद्रा)।

१०) **षटत्रिमशति दशा:** किसी जातक का जन्म दिन के समय होता है और लग्न सूर्य की होरा में उदय होता है, अथवा जन्म का समय रात का हो और लग्न चंद्रमा की होरा में हो तो षटत्रिमशत् दशा प्रणाली की अनुशंसा किया जाता है। इस दशा प्रणाली की गणना करने के लिए श्रवण नक्षत्र से जन्म नक्षत्र तक गिनें और प्राप्त संख्या को ८ से विभाजित करें,

शेषफल दशा को दर्शाता है और १ से एक अंक के वृद्धि तुल्य दशा वर्ष होता है। दशा स्वामी का क्रम एवं अवधि इस प्रकार है: चंद्रमा १ वर्ष, सूर्य २ वर्ष, बृहस्पति ३ वर्ष, मंगल ४ वर्ष, बुध ५ वर्ष, शनि ६ वर्ष, शुक्र ७ वर्ष और राहु ८ वर्ष का होता है।

षटत्रिमशति दशा चक्रम

दशा	दशा	नक्षत्राणि			
चंद्रमा	०१	श्रावणी	कृतिका	पू. फाल्गुनी	मुला
सूर्य	०२	धनिष्ठा	रोहिणी	उ. फाल्गुनी	पूर्वाषाढ़ा
गुरु	०३	शतभिषा	मृगशिरा	हस्त	उत्तराषाढ़ा
मंगल	०४	पू. भाद्रपद	आर्द्रा	चित्रा	X
बुध	०५	उ. भाद्रपद	पुनर्वसु	स्वाति	X
शनि	०६	रेवती	पुष्य	विशाखा	X
शुक्र	०७	अश्विनी	अश्लेषा	अनुराधा	X
राहु	०८	भरनी	मघा	ज्येष्ठा	X

११) **चक्र दशा:** यह एक रशयात्मिक दशा प्रणाली है, सामान्यत इसे सभी परिदृश्यों पर लागू किया जाता है। दिन, रात और संध्या एवं राशि और राशीश्वर के अनुसार ये ३ प्रकार की दशाए होती है। दिन में जन्म हो तो लग्नेश जिस राशि पर होता है उस राशि से, रात में जातक की जन्म हो तो लग्न जिस राशि पर हो उससे, और संध्या में जन्म हो तो द्वितीय भाव की राशि से सूर्यादि ग्रहो की दशाए होती है। यह राशि चक्र में १२ राशियों की दशा प्रणाली है, क्रम से प्रत्येक १२ राशि की दशा १० वर्ष की दशा होती है। इसलिए इसे चक्र दशा नाम दिया गया है, एवं दशा प्रणाली की गणना मतान्तर से दो प्रकार से की जाती है। प्रथम भावस्थ ग्रहो की और दूसरा भावो की अर्थात दशा की प्रथम गणना जन्म लग्न में बैठे ग्रहो की उसके बाद धन आदि भावो में बैठी ग्रहो की गणना की जाती है। यदि एक ही भावो में दो या तीन ग्रहो हो तो जिस ग्रहो का अधिक अंश हो पहले उसका इसके बाद उससे कम अंश वाली ग्रहो की दशा होता है। यदि अंशादि समान हो तो नैसर्गिक बल जिस ग्रहो का अधिक हो उसीका पहला दशा होती है। जिस भाव में ग्रहो है उस भाव की राशि से संख्या तुल्य वर्ष और ग्रहो की अंश परिमाण से अनुपातिक मासादि काल की गणना किया जाता है। भावो की दशा जन्मलग्न से प्रारंभ होकर प्रत्येक भावो की दश–दश दशा वर्ष होती है। सूक्ष्म फल के लिए इसी प्रकार अन्तर्दशा का भी साधन किया जाता है।

१२) **कालचक्र दशा:** यह दशा प्रणाली राशि और नक्षत्र पर आधारित होती है एवं सभी कुंडलियों के लिए लागू होती है। विद्यानों के दोवारा कालचक्र दशा प्रणाली को जीवन

की किसी विशेष घटनाओं के समय निर्धारण में प्रभावी माना जाता है। यह दशा नक्षत्र पद में चंद्र की सटीक स्थिति पर आधारित एक व्यापक दशा प्रणाली है। इस दशा पद्धति में, नक्षत्रों को सव्य (राशि चक्र), और अपसव्य (उल्टा) में वर्गीकृत किया गया है, और दो विशिष्ट राशियों को विशेष रूप से देह और जीव के रूप में माना जाता है। विभिन्न आपदाओं, दुर्भाग्य, गंभीर स्वास्थ्य संबंधी खतरों और मृत्यु के समय के सटीक भविष्यतवाणी करने के लिए इस दशा प्रणाली का उपयोग किया जाता है, परन्तु इस दशा पद्धति की सठिक गणना करना बहुत ही कठिन है।

१३) **चर दशा:** यह दशा प्रणाली लोकप्रिय दशा पद्धतियों में से एक है, और सभी परिदृश्यों पर लागू होने वाली सामान्यत फलित राशि दशा है। लग्न से १२ भाव पर्यन्त १२ राशियां होती है, इन्ही से ही चर दशा की गणना की जाती है। विषम राशियों के क्रमानुसार एवं सम राशि से बिपरीत अर्थात व्युत्क्रम से उस राशि के स्वामी पर्यन्त जिनके दशा का मान निर्धारण किया जाता है। राशि पति ग्रह अपनी राशि में होता है तो १२ वर्ष, अपनी राशि से द्वितीय भाव में हो तो १ वर्ष, दीसरे भाव में हो तो २ वर्ष, चौथे भाब में हो तो ३ वर्ष इस प्रकार एकादश भाव में हो तो १० वर्ष एवं द्वादश भाव में हो तो ११ वर्ष की दशा होती है। वृश्चिक राशि के मंगल और केतु ये दो स्वामी है एवं कुम्भ राशि के शनि तथा राहु ये दो स्वामी है। यदि दोनो स्वामी अपनी राशि में है तो दशा १२ वर्ष की होती है। यदि दोनों स्वामी भिन्न भिन्न राशि पर है तो स्वामी पर्यन्त दशा की गणना नहीं करनी चाहिए। भिन्न राशि में दोनों अलग अलग हो तो ऐसे स्थिति में जो ग्रहो वलवान हो उस ग्रहो से दशा वर्ष निर्धारण किया जाता है। इसके अलावा, यदि स्वामी अपनी उच्च राशि पर है, तो १ अंक जोड़ा जाता है, और यदि अपनी नीच राशि पर है, तो १ अंक घटाया जाता है।

१४) **स्थिर दशा:** यह एक आयु दशा है क्योकि खराब स्वास्थ्य, जीवन के दुर्घटनाऐ, मृत्यु के कारणों के समय निर्धारण करने के लिए विशेष रूप से उपयोगी है। चर, स्थिर और द्विस्वभाव राशियों के दशा काल होते हैं, जैमिनी ज्योतिष में भी यह दशा पद्धति प्रचलित है। यह स्थिर दशा ब्रह्म ग्रह आश्रित राशि से शुरू होती है, यदि शुरुआती राशि "विषम" है तो राशि चक्र दिशा क्रम में आगे बढ़ती है और यदि यह "सम" है तो उतक्रम अर्थात विपरीत दिशा में जाती है। दशा वर्ष की गणना ७, ८ और ९ वर्ष के आधार पर होता है एवं १२ राशियों के कुल ९६ वर्ष के दशा होते है। षष्ट, अष्ठम एवं द्वादश भावो के स्वामियों में जो ग्रहो वलवान होकर विषम राशि में हो उसको ही ब्रह्म ग्रह की संघ्या दिया जाता है। लग्न और सप्तम भावो में से जो भाव सबसे वलवान है उस भाव से पीछे ६ राशि के अंदर जो ग्रहो हो वो ग्रह विषम राशि में हो तो उसे ब्रह्म ग्रह कहाँ जाता है। शनि, राहु और केतु में से कोई ग्रहो अगर ब्रह्म ग्रह होता है तो उससे षष्टेश ग्रहो को ही ब्रह्म ग्रह माना जाता है। यदि कुंडली में एक से जीजादा ग्रह ब्रह्म ग्रह के श्रेणी में आता है तो जिस ग्रहो क अंश

ज्यादा हो उस ग्रहो को ही ब्रह्म ग्रहके रूप विवेचन किया जाता है। और उसके साथ राहु हो तो अलप अंश होते हुए भी उस ग्रहो को ब्रह्म ग्रह माना जाना चाहिए। कारक से अष्ठम भाव में या अष्ठमेश दोनों में जो वली होता है वो ब्रह्म ग्रह होता है।

१५) **शूल दशा:** मृत्यु का समय निर्धारित करने के लिए शूल दशा को प्राधान्य दिया जाता है। यह दशा राशि पर आधारित एक आयुर दशा प्रणाली है, क्योकि इस दशा प्रणाली के माध्यम से किसी मनुष्य की खराब स्वास्थ्य, जीवन और मृत्यु के खतरों आदि कुशलतापूर्वक विचार किया जाता है। माहेश्वर ग्रहो की राशि से निर्यान राशि को शूल राशि कहते है। लग्न और सप्तम भाव से आठवे राशि निर्यान राशि होते है। निर्यान राशि से ही शूल दशा की गणना की जाती है। इसलिए शूल दशा की गणना धन भाव या रंध्र भाव (८वें) में आने वाली राशि से होती है। दशा की अवधि स्थिर दशा की समान ही ७, ८, ९ वर्ष की होती हैं। लग्न और सप्तम भाव से विषम–सम राशि के आधार पर क्रम–उत्क्रम बिधि से आठवीं राशियों में जो वली है, वही राशि ही शूल या निर्यान राशि होती है। दोनी के स्वामियों में जो वली है वही रूद्र (माहेश्वर) ग्रह होता है रूद्रशुलान्त ही आयु होती है। इस दशा में, सबसे मजबूत मारक राशि की दशा में जातक की मृत्यु होने की संभावना होती है।

१६) **लग्न केंद्रादि दशा:** लग्न केन्द्रादि दशा एक राशि आधारित दशा प्रणाली है। दशा का प्रारंभ लग्न या सप्तम राशि में से जो मजबूत हो, उससे शुरू होती है। पहले केन्द्रस्थ राशियों की उनके वल के अनुसार ईसके बाद पणफरस्थ राशियों की अंत में अपोक्लिमस्थ राशियों की दशा उनके वल के अनुसार होती है। दशा प्रगति चर दशा की समान होती है।

१७) **काल दशा:** यह सामान्य प्रयोजन वाली फलित दशा प्रणाली है और सभी मामलों पर लागू होती है, परन्तु इस दशा पद्धति की गणना बहुत ही जटिल होती है। यदि जन्म दिन या रात में हुआ है, तो उसके पिछले घटिका को २ से गुणा किया जाना चाहिए और प्राप्त फल को १५ से विभाजित किया जाना चाहिए। और यदि जन्म संध्या के दौरान हुआ है, तो उसके पिछले घटिका को ४ से गुणा करके गुणफल को १५ से विभाजित किया जाना चाहिए। इस प्रकार प्राप्त आंकड़े को सूर्य की क्रम संख्या से गुणा करके वर्ष, महीने आदि में परिवर्तित करके अन्य ग्रहों को अपने सामान्य क्रम में स्थापन करके सभी नौ ग्रहों की काल दशा प्राप्त किया जाता है। अस्ताचलगामी सूर्य के पहले ५ घटिकाएं और उसके बाद ५ घटिकाएं और सूर्य के उदय होने से पहले और बाद में ५ घटिकाएं, यानी क्रमशः शाम को १० घटिकाएं और सुबह के समय १० घटिकाएं। इन दोनों संध्याओं की कुल अवधि २० घटिका होती है। रात्रि की २० घटिकाओं को पूर्णा तथा दिन की २० घटिकाओं को मुग्धा नाम दिया गया है। सूर्योदय के समय की संध्या को खंड और सूर्यास्त के समय की संध्या को सुधा कहा जाता है एवं ये दोनों संध्याएँ १०–१० घटिकाओं की होती हैं।

१८) **सुदर्शन चक्र दशा:** सुदर्शन चक्र दशा हमारे आने वाले समय को जानने विश्लेषण करने की कई विधियों में से एक है। इस दशा प्रणाली को ब्रह्मा जी ने संसार के कल्याण के लिए बताई है, यह एक राशि आधारित फलित दशा प्रणाली है। सुदर्शन चक्र दशा का प्रारम्भ सूर्य, चंद्र और लग्न से होती है एवं दशा नियमित क्रम में राशि चक्र दिशा में आगे बढ़ती है। सुदर्शन चक्र दशा १ वर्ष के बराबर १ भाव पर आधारित है, इससे प्रत्येक राशि को १ वर्ष का समय होता है मतलब यह दशा हर १२ साल में दोहराई जाती है। सुदर्शन चक्र दशा से भावो के माध्यम से आयु की प्रगति को आसानी से निर्धारित किया जा सकता है, जैसे:

- ✓ **प्रथम भाव में** १, १३, २५, ३७, ४९, ६१, ७३ और ८५ वर्ष की आयु दर्शायी जाती है।
- ✓ **दूसरे भाव में** २, १४, २६, ३८, ५०, ६२, ७४ और ८६ वर्ष की आयु होती है। इसी तरह सभी भावो की गणना की जाती है।

१९) **ब्रह्मग्रह दशा:** यह एक व्यापक दशा प्रणाली है एवं दशा की गणना स्थिर दशा के अंतर्गत किया जाता है। इस दशा प्रणाली में १२ राशियों की दशा ब्रह्म ग्रहाश्रित राशि से शुरू होती है। दशा की गणना विषम राशियों से आगे की तरफ और सम राशियों से विपरीत क्रम में की जाती है। यदि लग्न विषम हो तो ब्रह्म ग्रहाश्रित राशि से दशा का आरम्भ क्रमानुसार होता है, और राशियों के दशा वर्ष उस राशि से छठी राशि के स्वामी पर्यन्त संख्या होती है। एवं लग्न यदि सम राशि के होते है तो ब्रह्म ग्रहाश्रित राशि से जो सातवीं राशि है उससे विलोम राशि की दशा मानी जाती है और वर्ष संख्या पूर्ववत होती है।

२०) **मंडूक दशा:** त्रिकूट दशा को ही मंडूक दशा कहते है। यह दशा विशेष रूप से संघर्ष, कठिनाई परिस्थिति, जीवन और मृत्यु के खतरों के समय गणना करने के लिए अनुशंसा किया जाता है। लग्न और सप्तम भाव में जो वाली हो उसी से ही इस दशा प्रणाली का गणना किया जाता है। यह एक राशि आधारित दशा पद्धति है, यदि प्रारंभिक राशि विषम है तो यह राशि चक्र के दिशा में चलती है और यदि यह सम राशि है तो विपरीत दिशा में चलती है। एवं दशा पिछली राशि से गणना की गई तीसरी राशि तक बढ़ती है। दशा अवधि में स्थिर दशा के समान ही ७, ८, ९ वर्षो की दशा होती है, इस दशा पद्धति में प्रत्येक दशा अगली तीसरी राशि की होती है।

२१) **वर्णद दशा:** यह एक आयुर दशा प्रणाली है, इस दशा के माध्यम से जातक की आयु का सठीक पता लगाया जा सकता है। जन्म लग्न और होरा लग्न योग करने से, योग राशि विषम है तो वही वर्णद राशि होती है। यदि योग सम हो तो १२ राशि में से घटाने से शेष वर्णद होती है। इसी प्रकार १२ भावो की वर्णद राशि निर्णय किया जाता है। उसके पश्चात्

जन्म लग्न और होरा लग्न दोनों में जो वली हो और विषम हो तो राशि चक्र की दिशा के तरफ क्रमानुसार और यदि सम हो तो उतक्रम अर्थात राशिचक्र की विपरीत दिशा की तरफ वर्णडी दशा की गणना की जाती है। एवं राशियों का वर्ष मान चर दशा की समान होती है।

२२) **राशि दशा:** यह दशा राशि पर आधारित फलित दशा प्रणाली है। यदि प्रारंभिक राशि विषम है तो यह राशि चक्र दिशा में चलती है और यदि यह सम है तो विपरीत दिशा में चलती है। जन्म के समय दशा का संतुलन प्रारंभिक राशि में प्रारंभिक बिंदु का समाप्त भाग (डिग्री में) जब दशा अवधि से गुणा किया जाता है और ३० डिग्री से विभाजित किया जाता है, तो समाप्त दशा भाग मिलता है। उस राशि की पूर्ण दशा अवधि में से समाप्त भाग को घटाकर शेष दशा निकाली जाती है। यहां जन्म नक्षत्र (२००') का विस्तार १२ राशियों (२१६००) तक दर्शाया गया है। दशा अवधि: चर दशा के समान होती है, दशा की गणना में चंद्र के समाप्त भाग को देशांतर (डिग्री में) प्राप्त कर लग्न की डिग्री में जोड़ के प्रारंभिक राशि निर्धारित किया जाता है।

२३) **पंचस्वर दशा:** इस दशा प्रणाली की गणना करने के लिए पहले १ से ५ तक के अंको को लिखकर उनके निचे अकारादि पञ्च स्वरों (अ, इ, उ, ए, ओ) को और उनके निचे क्रमानुसारे ककारादि वर्ण (ङ), (ण), (ञ) अक्षरों को छोड़कर प्रत्येक पंक्ति में ५ वर्णो को लिखा जाता है। (ङ), (ण), (ञ) ये तीन वर्णो का उच्चारण इस चक्र में नहीं होता है। अगर किसी के नाम में कदाचित ये वर्ण होता है, तो (ङ) के लिए (ग), (ण) के लिए (न), (ञ) के लिए (ज) अक्षर प्रतिस्थापित किया जाता है। यदि किसी के नाम के पहला अक्षर संयोगाक्षर होता है तो वहां संयोगाक्षर के पहला वर्ण लिया जाना चाहिए। इस दशा प्रणाली को प्रारंभ करने के लिए, नाम के प्रथम वर्ण से मेल खाने वाला स्वर आरंभिक दशा को निर्धारित करता है एवं प्रत्येक दशा की अवधि १२ वर्ष की होती है। प्रत्येक स्वर की महा दशा में दशा स्वर से आरंभ करके एक ही क्रम में सभी पांच स्वरों की अंतर्दशा होती है। अकारादि पञ्च स्वरों के ब्रह्मा, बिष्नु, शंकर, गणेश और सूर्य यह पांच देवता होते है। निवृति, उपेक्षा, आदान, उपादान और प्रवृति यह पांच कलाएं एवं इच्छा, राग, द्वेष, अभिनिवेश और अहंकार यह पांच शक्तियाँ होती है। माया, अविधा, तामिस्र, अंधतमिस्र और मोह यह पांच चक्र तथा पृथ्वी, जल, तेज, आकाश और वायु यह पांच महाभूत एवं शव्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध यह पांच विषय पंच्चक काम के बाण होते है।

२४) **नवमांश नवदशा:** इस दशा प्रणाली का ९ प्रकार हैं, इसलिए इसे नवदशा कहा जाता है। दशा इस प्रकार के हैं: १) दशा निम्नतम डिग्री से उच्चतम डिग्री की ओर बढ़ती है, २) दशा उच्चतम डिग्री से निम्नतम ग्रहो के डिग्री की ओर बढ़ती है। ३) अगर पहले दुनो मामलों में डिग्री समान होती है, तो अगले दशा को ग्रह की नैसर्गिका बालाओं का उपयोग

किया जाता है। ४) दशा चंद्र के अवस्थान से शुरू होती है और उसके बाद राशि चक्र के अनुसार अगली राशियों के स्वामी की दशा होती है। ५) दशा ७वें भाव स्वामी के अवस्थान से शुरू होकर राशि चक्र के क्रमानुसार राशियों के स्वामी आते हैं। ६) दशा लग्नेश से प्रारंभ होती है और उसके बाद धनेश आदि। ७) दशा नवमांश लग्न स्वामी से शुरू होती है, उसके बाद राशि चक्र क्रम में दूसरे नवमांश ग्रहो की दशा होती हैं। ८) दशा जन्म लग्न की नवमांश स्वामी से गिने जाने वाले ९वें नवमांश स्वामी से शुरू होती है, उसके बाद अन्य नवमांश आते हैं। ९) दशा चंद्र से शुरू होती है और ग्रह क्रम का पालन करते हुए प्रगति करता है, अर्थात चंद्र, मंगल, वुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु और सूर्य। नवमांश नवदशा में प्रत्येक ग्रहो का दशा १२ वर्षों का कुल १०८ वर्ष होते हैं।

२५) **नवमांश स्थिर दशा:** नवमांश स्थिर दशा व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण घटनाओं और परिणामों के बारे में जानकारी प्रदान करती है, जो कि उसके कर्मों और भाग्य को निर्धारित करने में मदद करती है। इस दशा की गणना के लिए नवांश चार्ट में सभी ग्रहों की स्थिति का विश्लेषण करके नवांश चार्ट में लग्नांश और दशाओं के आधार पर नवमांश स्थिर दशा की गणना की जाती है। लग्नादि १२ भाव की प्रत्येक राशि में नवांश होते है, इन्ही की दशा को ही नवांश स्थिर दशा कहाँ जाता है। यह दशा प्रणाली दो तरीकी से पहला राशि से और दूसरा ग्रह नवांश से गणना की जाती है। और इसमें भी दो प्रकार होते है पहला चर एवं दूसरा स्थिर दशा। जिसका जन्म विषम राशि लग्न में हो उसका नवांश दशा लग्न से क्रमानुसार होती है। और जिनका जन्म सैम लग्न में होता है उनका दशा की गणना उत्क्रम अर्थात बिपरीत दिशा में होती है। एवं दशा प्रवर्तक राशियों का दशा हमेशा ९ वर्ष का ही होता है, चाहे वे राशि विषम हो या सम हो इस प्रकार सभी राशियों का कुल दशा वर्ष १०८ वर्ष का होता है।

२६) **चतुर्विधा उत्तरा दशा:** चतुर्विधा उत्तरा दशा की गणना व्यक्ति के जन्मकुंडली के आधार पर होती है, जो कि उसके जन्म के समय की विशेष स्थितियों को दर्शाती है। जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति, ग्रहों के गोचर और दशाओं के आधार पर यह उत्तरा दशा का प्रकट होना और इसका प्रभाव निर्धारित किया जाता है। "चतुर्विधा उत्तरा दशा" ज्योतिष शास्त्र में एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इसका अर्थ होता है कि व्यक्ति को चार प्रकार की प्रतिक्रिया मिलती है जब वह किसी समस्या या परेशानी का सामना करता है। इन चार प्रकार को 'उत्तरा दशा' कहा जाता है और ये निम्नलिखित हैं:

- ✓ **उत्तरा दशा:** इसमें व्यक्ति आत्मविश्वास से समस्या का सामना करता है और उसे समाधान करता है।
- ✓ **उत्तरोत्तर दशा:** इसमें व्यक्ति अधिक आत्मविश्वासी बन जाता है और समस्या का सामना करते समय उसे अधिक संयम और सही दिशा मिलती है।

- ✓ **प्रत्युत्तर दशा:** इसमें व्यक्ति को अचानक होने वाले घातक परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह उसे बिना घबराए हल कर लेता है।
- ✓ **अप्रत्युत्तर दशा:** इसमें व्यक्ति को बड़ी मुश्किल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, जिसका समाधान करना कठिन होता है।

यह चार उत्तरा दशाएं व्यक्ति के जीवन में विभिन्न परिस्थितियों और समस्याओं के साथ उसके व्यवहार की प्रतिक्रिया को दर्शाती हैं।

२७) **राश्यांशक दशा:** इस दशा की शुरुआत लग्न और लग्नेश में जो वाली हो उसके नवमांश राशि से की जाती है, उसके बाद उसी क्रम में धनेश से शुरुआत की जाती है। दशा अवधि में भाव स्फुट को २००' से विभाजित करके मिनटों में परिवर्तित किया जाता है और २००' से विभाजित किया जाता है, उसके वाद महीने और दिनों में बदलकर दशा अवधि वर्षों में प्राप्त किया जाता है। ९ नवांशों के कारण प्रत्येक भाव में अधिकतम ९ वर्ष होते हैं।

२८) **नक्षत्र दशा:** जन्म समय जन्म नक्षत्र के भभोग घटी में १२ से भाग देने से जो घट्यादि फल मिलता है, उस खंड से आरम्भ कर १२ खंडो का लग्न से १२ राशियो की दशा होती है। उक्त घटी के अनुसार भयात के घटी के तुल्य जो खंड हो, वहाँ तक लग्न से आरम्भ कर १२ राशियों के स्वामियों से आरम्भ कर क्रम – उत्क्रम गणना से दशा निर्द्धारित होती है। अथवा भभोग को १२ से भाग देने से जो लब्ध घटिका हो उसमे भयात से भाग देने से जो राश्यादि फल प्राप्त हो उसमे जन्म लग्न जोड़ देने से जो राश्यादि प्राप्त हो वहीं से विषम–सम के आधार पर स्थिर दशा के सामान ही नक्षत्र दशा का गणना किया जाता है।

२९) **त्रिकोण दशा:** यह दशा राशि पर आधारित है, त्रिकोण में राशियों से दशा प्रारम्भ होने के कारण इसे त्रिकोण दशा नाम दिया गया है। लग्न, पंचम एवं नवम राशियों जो वलवान हो वही से चर पर्याय दशा के समान त्रिकोण दशा की गणना की जाती है। यदि प्रारंभिक राशि विषम है तो यह राशि चक्र की दिशा में चलती है और यदि समराशि है तो विपरीत दिशा में चलती है। प्रत्येक राशि की अवधि राशि से उसके स्वामी तक की गिनती के आधार पर निकाली जाती है,। इसके अलावा, यदि स्वामी अपनी उच्च राशि पर है, तो १ अंक अतिरिक्त जोड़ा जाता है, और यदि वह अपनी नीच राशि पर है, तो १ अंक घटाया जाता है।

३०) **योगार्ध दशा:** यह राशि आधारित दशा प्रणाली है, दशा प्रणाली में राशियों के दशाओं का विस्तार चर और स्थिर दशाओं के कुल योग का आधा होता है। लग्न और सप्तम भाव में से जो भाव सवसे ज्यादा बलवान होती है, उसी भाव से दशा की प्रारंभ होती है। एवं स्थिर दशा की तरह, यदि प्रारंभिक राशि विषम है तो यह राशि चक्र के दिशा में चलती है और यदि यह सम राशि में है तो विपरीत दिशा में चलती है।

३१) **दृग दशा:** यह दशा आध्यात्मिक उपलब्धियों के समय निर्धारण के लिए विशेष रूप से उपयोगी राशि पर आधारित फलिता दशा प्रणाली है। आध्यात्मिक पूर्तियों/कार्यों के समय या अवधि की गणना करने के लिए यह विशेष रूप से मूल्यवान है। इस दशा प्रणाली में चर दशा की तरह, प्रत्येक राशि की अवधि राशि से उसके स्वामी तक की गिनती के आधार पर तय की जाती है। दृग दशा का प्रारम्भ नवम भाव से होता है। राशि का धर्म भाव (नवम भाव) पर दृष्टि के आधार पर दशा का क्रम में आगे बढ़ती है। इसके बाद कर्म भाव (दसवें घर) में स्थित राशि और उस पर दृष्टि डालने वाली राशि आती है। अंत में, लाभ भाव (एकादश भाव) पर दृष्टि रखने वाली राशियाँ होती है। नवम भाव को देखने वाली तीन राशियों में से पहली दशा सन्मुख राशि की होती है, उसके बाद पार्श्व–राशि की दशा होती है। यदि नवम भाव वाली राशि विंशपद राशि है, तो गिनती राशि चक्र के दिशा में आने वाली जो पार्श्व राशि होगी वे पहले होगी और बाद में दूसरा पार्श्व राशि की दशा होती है। अगर नवम भाव समापद राशि है, तो गिनती विपरीत है और उसी क्रम में जो पहला पार्श्व राशि होगी उसकी दशा पहले होगी और अंत में दूसरी पार्श्व राशि की दशा होती है। राशि, जो चर राशि से दृष्टि प्राप्त करती है, उसको पीछे की ओर गिना जाता है और राशि, जो स्थिर राशि से दृष्टि प्राप्त करती है, उसको राशि चक्र के दिशा में गिना जाता है। द्विस्वभाव वाले राशि के मामले में यदि यह विषम है, तो गिनती राशि चक्र के तरफ है और सम राशि है तो यह क्रम पीछे की ओर होता है।

३२) **तारा दशा:** यह दशा नक्षत्र आधारित सशर्त फलित दशा प्रणाली है। इस दशा प्रणाली में जन्म, सम्पद, विपद, क्षेम, प्रत्यरी, साधक, वध, मैत्र और अतिमैत्र यह ९ ताराओ की दशा होती है। इस दशा में जन्म, सम्पद आदि अपने क्रम से केन्द्र में स्थित सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहो को प्रतिस्थापित किया जाता है। इस दशा की अनुशंसा तभी की जाती है जब केंद्रों में ग्रह हों एवं केंद्र में सबसे मजबूत ग्रह से ही इस दशा प्रणाली की गणना की शुरुआत की जाती है, उसके बाद पनफर और अपोक्लिम के ग्रह आते हैं। यह दशा प्रणाली की प्रगति पिंडायु, अम्सायु दशा की तरह होती है एवं प्रत्येक ग्रह की दशा अवधि विंशोत्तरी दशा के समान ही होती है।

३३) **कारकादि (कारक) दशा:** इस दशा प्रणाली में आत्मादि सात कारकों की दशा होती है, इसलिए इस दशा प्रणाली को कारक दशा कहलाती हैं एवं यह ग्रह आधारित दशा प्रणाली है। दशा का प्रारंभ आत्मकारक ग्रहो से होती है, और उसके बाद की दशाएँ अपने क्रम में शेष कारकों की होती हैं। दशा के वर्ष की गणना ग्रहो की राशि पर्यन्त ही क्रम–उत्क्रम से होती है। जिस ग्रह की दो राशियां है उनमे जिस राशि से अधिक दशा वर्ष आवे उसी को लिया जाता है। सात कारकों के दशा वर्ष लग्न से उन–उन कारकों के दशवर्ष लग्न से उन–उन कारकों तक गिनने से जो संख्या हो उतना ही दशा वर्ष होता है। जैसे: १.आत्मकारक

२.अमात्यकारक ३.भ्रातृकारक ४.मातृकारक ५.पुत्रकारक ६.ज्ञातिकारक एवं ७.दाराकारक हैं।

३४) **कारक केंद्रादि दशा:** कारक केंद्रादि दशा प्रणाली की गणना आत्मकारक ग्रह से की जाती है, इसलिए इसे कारक केंद्रादि राशि दशा कहा जाता है। विषम–सम राशि के अनुसार क्रम–उत्क्रम से गणना होती है। दशा की गणना चर दशा की तरह, प्रत्येक राशि की अवधि राशि से उसके स्वामी तक की गिनती के आधार पर निकाली जाती है।

३५) **रश्मि दशा:** इस दशा के बारे में विस्तार पूर्वक प्रामाणिक उल्लेख न मिलने के कारण इस दशा के वारे में कुछ बताया नहीं गया है।

३६) **अष्टकवर्ग दशा:** अष्टक वर्ग दशा पद्धिति में दशाओं का प्रभाव अष्टक वर्ग बल के अनुसार होता है, इसलिए इस दशा प्रणाली को अष्टक वर्ग दशाएं भी कहा जाता है। यह दशा प्रणाली पिंडा, अम्सा और निसगायु दशा की तरह होती है। अष्टकवर्ग दशा प्रणाली एक आयुर दशा होने के कारण इस दशा प्रणाली का व्यवहार मानव जवन में मृत्यु के कारण एवं समय जानने के लिए भी प्रयोग में लिया जाता है। नक्षत्र के अनुसार ५ प्रकार की विंशोत्तरी दशा और २ प्रकार अष्टोत्तरी दशा होती है। इन सभी का फल अष्टक वर्ग के ऊपर विचार कर निर्णीत दशा को हो अष्टक वर्ग दशा कहा जाता है। ग्रहो के वल और निर्वलता के अनुसार ही दशा फल विवेचना किया जाता है, यदि ग्रहो वक्री है तो फल विपरीत होता है अर्थात वली ग्रहो में अशुभ एवं निर्वल गहो में शुभ फल की प्राप्ति होता है। यदि दशेश प्रथम द्रेष्काण में है तो दशा के प्रारम्भ में और दूसरे द्रेष्काण में होने पर दशा के मध्य भाग में एवं तीसरे द्रेष्काण पर होता है तो दशा के अंत में अपना शुभ–अशुभ फल देता है। यदि ग्रह वक्री है तो इससे विपरीत फल देता है।

३७) **योगिनी दशा:** यह बहुल प्रचलित नक्षत्र आधारित एक दशा प्रणाली है। ऐसा माना जाता है, इस दशा प्रणाली पद्धति का निर्माण स्वयं भगवान महादेव ने किए थे इसलिए इस दशा पद्धति का बहुत उच्च महत्व दिया जाता है। इस दशा पद्धति में ८ योगिनियां होती हैं:– मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा। इन्हीं ८ योगिनियों से चंद्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि, शुक्र और राहु ग्रहो को माना जाता है, और इसी आधार पर ही योगिनी दशा की गणना किया जाता है। दशा अवधि १, २, ३, ४, ५, ६, ७ और ८ वर्ष के संख्यात्मक क्रम में होती हैं। जन्म नक्षत्र में ३ जोड़कर ८ से भाग देंने पर शेष संख्या योगिनी दशा को निर्देशित करता है।

३८) **अंश दशा:** अम्सायु गणना के माध्यम से अम्सा दशा प्रणाली निर्धारित होती है। अम्सायु तब काम करता है जब लग्न मजबूत होता हो। अम्सायु गणना प्रत्येक ग्रह से जुड़ी अवधि प्रदान करती है एवं दशा क्रम अम्सा दशा द्वारा निर्धारित किया जाता है। दशा का प्रारंभ लग्न से केंद्रों में ग्रह से शुरू होने वाले ग्रह तक, उसके बाद पनाफरा में स्थित ग्रह और अंत

में अपोक्लिमास पर स्थित ग्रहो की दशा होती है। अम्सा दशा प्रणाली में महादशा के रूप में लग्न और सात ग्रहों की दशा और अंतर्दशा एक ही क्रम का पालन करती है।

३९) **निसर्ग दशा:** निसर्गायु गणना पद्धति प्रत्येक ग्रह से जुड़ी अवधि प्रदान करती है, इसीलिए निसर्ग दशा निसर्गायु गणना से जुड़ी हुई है। निसर्गायु तब काम करता है जब चंद्र मजबूत होता है, दशा का प्रारंभ चंद्रमा से करके दशा क्रम निसर्ग दशा द्वारा (केंद्र, पनफर, अपोक्लिमा सिद्धांत) निर्धारित किया जाता है।

४०) **पिण्ड दशा:** पिंडायु, अंशायु, नैसर्गिकायु और अष्टक वर्गायु पर से यह दशा पद्धति की गणना की जाती है। पिंड दशा प्रणाली पिंडायु गणना से जुड़ा है, जबकि पिंडायु गणना में प्रत्येक ग्रह द्वारा दी गई दीर्घायु की अवधि निर्धारित की जाती है। दशा प्रगति में ग्रह अपने परिणाम प्रकट करते हैं, इसलिए इस दशा प्रणाली को पिंडायु दशा में परिभाषित किया जाता है। पिण्ड दशा प्रणाली अम्सा और निसर्ग दशा के समान हैं, पिंडायु दशा तब प्रशस्त मानी जाती है जब कुंडली सूर्य मजबूत होता है, क्योकि सूर्य ग्रहो से ही पिण्ड दशा की गणना प्रारम्भ किया जाता है। महादशा के रूप में लग्न और सात ग्रहों की दशा और अंतर्दशा एक ही क्रम का पालन करती है। दशा का अवधि सूर्य एवं केंद्रों में स्थित ग्रह उसके बाद पनाफर में स्थित ग्रह और अंत में अपोक्लिम पर स्थित ग्रह से दशा क्रम: आगे चलता है।

४१) **संध्या दशा:** यह एक आयुर्दास प्रणाली होने के कारण मानव जीवन के मृत्यु के कारण, अपघात अदि विचार करने के लिए प्रशस्त माना जाता है। दशा का आरंभ लग्न की राशि से होता है, और लग्न की अगली राशि से नियमित क्रम में आगे बढ़ती है। संध्या दशा का परम आयुर्दाय मान १२० वर्ष होती है, क्योकि मनुष्यों के लिए परमायुष को विद्वानों ने १२० वर्ष माना है। इसका द्वादशांश एक आयुर्दाय होती है। संध्या दशा प्रणाली में, परम–आयुष को १२ राशियों के बीच फैलाया जाता है, जिससे प्रत्येक राशि का दशा काल परमायुष का १/१२ वां हो जाता है अर्थात प्रत्येक संध्या दशा की अवधि १० वर्ष की होती है।

४२) **पाचक दशा:** यह दशा प्रणाली संध्या दशा का ही एक घटक है। संध्या दशा प्रणाली के दशा वर्षों को ६ से गुणा करके और गुणनफल को ३१ से विभाजित करके, प्राप्त किए गए वर्ष, महीने आदि को एक तालिका में रखा जाता है। इसके बाद इनमें से आधे साल, महीने आदि अगले तीन तालिका में लिखके शेष ८ तालिका को उपरोक्त वर्षों, महीनों आदि के एक तिहाई से भरके पाचक दशा की गणना की जाती है।

दशा विशेष

वैदिक ज्योतिष शास्त्रों में ग्रहो की कई प्रकार के भिन्न भिन्न दशाएँ है, परन्तु उनमें से विंशोत्तरी दशा ही साधारण मनुष्य के लिए सबसे उपयुक्त होते है, जैसा पहले भी बताया गया है। कुछ विशेष मामलों में अन्य दशाएं जैसे: अष्टोत्तरी दशा, षोडशोत्तरी दशा, द्वादशोत्तरी दशा, पंचोत्तरी दशा, शतसमा दशा, चतुरशीतिसमा दशा, द्विसप्ततिसमा दशा, षष्टी समा दशा, षडत्रिंशति समा आदि दशाओ का अनुसरण किया जा सकता है। मूल दशा सभी कुंडली में लागू होती है, क्योंकि यह पिछले जीवन के कर्मों का फल देती है जिसे हमें वर्तमान जन्म में भुगतना पड़ता है। एक स्वाभाविक प्रश्न यह भी है कि जब विंशोत्तरी दशा सार्वभौमिक रूप से लागू है, तो ऐसी विशेष शर्तों वाली दशा की क्या आवश्यकता है ?

विशेष परिस्थितियों वाले दशाओ का उपयोग विशेष प्रयोजनों के लिए किया जाता है जैसा कि जन्म कुंडली में लागू होने वाली विशेष शर्तों का अस्तित्व जन्म के विशेष उद्देश्य या स्थिति की ओर इशारा करता हो। यह दशा उन दिव्य व्यक्तित्वों और संतों के चार्ट में स्पष्ट परिणाम देगी जो इस ग्रह पर किसी श्राप के अंतिम रूप या अंतिम सजा और मुक्ति की शर्तों को पूरा करने के लिए आए हैं। विशेष स्थिति वाली दशाओं में कुछ मानदंड होते हैं, जैसे: किसी कुंडली में दो या दो से अधिक दशाओं के मानदंड मौजूद हों। ऐसे मामले में, उपयुक्त दशा का चयन करने के लिए वरीयता क्रम का उपयोग किया जाना चाहिए।

❖ वरीयता क्रम नीचे दिया गया है:–

✓	प्रथम	:	अष्टोत्तरी दशा	✓	षष्ठ	:	चतुरशीतिसमा दशा
✓	द्वितीय	:	षोडशोत्तरी दशा	✓	सप्तम	:	द्विसप्तति सम दशा
✓	तृतीय	:	द्वादशोत्तरी दशा	✓	अष्ठम	:	षष्टी समा दशा
✓	चतुर्थ	:	पंचोत्तरी दशा	✓	नवम	:	षडत्रिंशति समा दशा
✓	पंचम	:	शताब्दिका दशा				

महर्षियों ने अलग अलग समय पर नक्षत्रों और राशियों के आधार पर इन विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इसलिए ज्योतिष शास्त्रों में बहुबिध ग्रह दशाओं का उल्लेख मिलता है। पुराकाल में कुछ महर्षियों ने काल और चक्र दशा का उल्लेख किया है, लेकिन उन्होंने काल चक्र दशा को ही सर्वोच्च माना है। ऋषियों द्वारा प्रतिपादित दशाओं के अन्य प्रकार भी हैं; जैसे चर, स्थिर, केंद्र, कारक, ब्रह्म ग्रह, शूल, योगार्ध, दीर्घ, त्रिकोण, राशि, पंचस्वर, पिंड, नौसर्गिक, अष्टवर्ग, संध्या, पाचक, तारा आदि लेकिन साधारण मानव जीवन में इन्ह दशाओ की कोई अहमियत नहीं है।

वैदिक ज्योतिष में दशाओं के आधार पर ही किसी भी भविष्यवाणी को किया जाता है, क्योंकि ग्रह का गोचर और कुंडली में कोई घटना के घटित होने अथवा ना होने की स्थिति का परीक्षण उस समय में चल रही दशाओं के आधार पर ही किया जाता है इसलिए फल कथन में ग्रह दशा महत्वपूर्ण होती है। जहां अच्छे ग्रहों की दशा जीवन में सुख समृद्धि और उन्नति के द्वार खोलती है तो वहीं अशुभ ग्रहों की दशा जीवन में समस्याओं का अंबार लगा देती है।

किसी व्यक्ति के जीवन में कब अच्छा समय आएगा और कब बुरा समय आएगा, कब वह जीवन में तरक्की करेगा और कब उसे कष्ट झेलने पड़ेंगे, यह सब कुछ दशाओं के प्रभाव के कारण ही संभव होता है। दशा के द्वारा प्रत्येक ग्रह की फल प्राप्ति का समय जाना जाता है। सभी ग्रह अपनी दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा, सूक्ष्मदशा काल मे फल देते है, दशा ही फल कथन का आधार है।

वैदिक ज्योतिष शास्त्र अनुसार ग्रहो के दशा फल दो तरह के होते है एक सामान्य और दूसरा विशिष्ट। ग्रहो की प्राकृतिक अवस्था के कारण सामान्य प्रभाव होते है और दूसरा कुण्डली मे उनकी स्थिति अनुसार विशिष्ट प्रभाव होते है। ग्रह के दशा वर्ष का प्रभाव दशा काल मे एक समान नही होता है। दशा कारक ग्रह प्रथम द्रेष्काण मे हो, तो दशा के प्रारम्भ में, द्वितीय द्रेष्काण मे हो, तो मध्य में, तथा तृतीय द्रेष्काण मे हो तो अंत मे ज्यादा प्रभावी होता है। वक्री ग्रह होने से विपरीत अर्थात तृतीय द्रेष्काण मे प्रारम्भ में, द्वितीय मे मध्य मे और प्रथम द्रेष्काण मे अंत मे प्रभावी होता है।

दशा कारक ग्रह भाव के मध्य मे होने से अपेक्षाकृत बेहतर या असाधारण परिणाम देता है। जैसे–जैसे वह भाव मध्य से दूर होता जाता है उसकी फल देने की शक्ति में कमी आती है। दशा कारक ग्रहों सर्वाष्टक वर्ग मे शुभ बिन्दुओ मे हो अथवा लग्न, दशम, एकादश भाव मे हो या स्वयं अथवा मित्र के वर्ग मे हो या उच्च राशि मे हो या शुभ भाव मे शुभ ग्रह या कारक ग्रहो के साथ हो, तब अपनी दशा में शुभ फल देता है।

और यदि ग्रह अष्टकवर्ग मे कम बिंदु युक्त हो या शत्रु या हानिकारक राशि मे हो या अस्त हो या पापग्रह से दृष्ट या युत हो या राशि अथवा भाव संधि मे हो अथवा मांदी के साथ हो तब ग्रह अपनी दशा मे अशुभ परिणाम देता है। दशा का फल विचार में ग्रह किस भाव का स्वामी है, और उसका सम्बन्ध कैसे ग्रहो से है इसका ध्यान रखकर फल प्रतिपादन किया जाता है।

दशा तत्व

ग्रह बल के अनुसार दशा का फल प्राप्त होता है। अशुभ ग्रह यदि शत्रु स्थान व राशि में हो तो विशेष अशुभता देता है। इसी प्रकार शुभ ग्रह बलवान हो तो विशेष शुभ फल देता है। परम उच्च ग्रह की दशा में श्रेष्ठ फल, उच्च ग्रह की दशा में विशेष शुभ फल, स्वराशि व मूलत्रिकोण राशि में स्थित ग्रह की दशा में प्रगति व शुभ फल मित्र राशि की दशा में शुभ फल एवं सम राशि में ग्रह की दशा में सामान्य फल प्राप्त होते हैं।

इसी प्रकार परम नीच राशि में विशेष अशुभ, नीच राशि में अशुभ एवं शत्रु राशि में कष्टदायक फल प्राप्त होते है। शुभ ग्रहों के साथ या शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट ग्रह की दशा में शुभ फल एवं पाप ग्रह के साथ या पाप ग्रहों से दृष्ट ग्रह की दशा अशुभ फल देती है।

- जो ग्रह उच्चराशि या मित्रराशि या स्वगृही हो, अथवा उच्च या शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो वह ग्रह अपनी दशा मे बहुत अच्छा फल देता है। विद्या प्राप्ति, यश प्राप्ति, नौकरी मे उन्नति होती है एवं विविध मनोरथ पूर्ण होते है। उस ग्रह की दशा मे तीर्थ यात्रा, ख्याति प्राप्ति, धनोपार्जन, भूमि लाभ, धन–धान्य की वृद्धि, सफलता की प्राप्ति होती है।
- जो ग्रह नीच या शत्रु राशि मे हो या अशुभ ग्रह से दृष्ट या युत हो, तब धनहानि, मानहानि, विच्छेद, कलह, रोग, अवनति, भय, परदेश निवास, शत्रुओ से हानि, दुराग्रह, विवाद, नाना प्रकार की विपत्तिया आदि अशुभ फल होते हैं। यदि ये ग्रह सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट हो तब बुरा फल कुछ न्यून रूप मे मिलता है।
- त्रिक स्थानों अर्थात छठे, आठवें व बारहवें भाव के स्वामी अपनी दशा में अशुभ फल प्रदान करते हैं। पाप ग्रहों की दशा में हानि, रोग व अन्य पीड़ा होती है। शत्रु क्षेत्र अर्थात शत्रु राशिगत ग्रह की दशा में जातक के कार्यो में विघ्न–बाधाएं आती हैं। वक्री तथा अस्त ग्रह की दशा में जातक को परदेश वास, रोग, पीड़ा, धनहानि तथा मान हानी का सामना करना पड़ता हैं।
- केन्द्र (लग्न, चतुर्थ, सप्तम व दशम) एवं एकादश भाव में स्थित ग्रहों का दशा शुभकारक होती है, विदेश यात्रा व भाग्य में उन्नति प्राप्त होती है। जातक को मान–सम्मान, सुख, धन की वृद्धि, यश, लाभ, उद्योग की प्राप्ति एवं कार्य सिद्धि होती है।

====✂====

नवम अध्याय

विविध तत्व

ज्योतिष शास्त्रों के विविध सुत्रादि

- जब गोचर में शनि ग्रह धनु, मकर, मीन व कन्या राशियों में गुजरता है तो भयंकर अकाल, रक्त सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहता हैं।
- किसी स्त्री की कुंडली में यदि चन्द्र वृष कन्या या सिहं राशी में स्थित हो तो स्त्री के कम पुत्र होते हैं।
- जन्म लग्न में चन्द्र व शुक्र हो तो स्त्री सौभाग्यशाली व सुखी होती है।
- किसी देश का राष्ट्राध्यक्ष सोमवार, बुध या गुरूवार को शपथ ले तो उसे प्रजा एवं राष्ट्राध्यक्ष के लिए शुभ माना जाता है।
- सप्तमेश शुभ युक्त न होकर षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में हो और नीच या अस्त हो तो जातक के विवाह में बाधा आती है।
- जब कोई ग्रह चन्द्र से १०वें, ७वें, ४थे, ओर पहले हो तो क्रमशः उत्तम, मध्यम, अधम ओर अधमाधम योग बनता है। यदि इनमें अंतिम योग बनता हो तो कुंडली के अन्य योग कमजोर होते हैं।
- जन्म कुंडली में मंगल को भूमि का मुख्य कारक माना गया है। जन्म कुंडली में चतुर्थ भाव या चतुर्थेश से मंगल का संबंध बनने पर व्यक्ति अपना घर अवश्य बनाता है। जन्म कुंडली में एकादश भाव का संबंध चतुर्थ भाव से होने पर व्यक्ति एक से अधिक मकान बनाता है।
- जन्म कुंडली में लग्नेश, चतुर्थेश व मंगल का संबंध बनने पर भूमि प्अथवा अपनी मकान का योग बनता है। जन्म कुंडली में चतुर्थ व द्वादश भाव का बली संबंध बनने पर व्यक्ति घर से दूर भूमि प्राप्त करता है या विदेश में घर बनाता है।
- जन्म कुंडली का चतुर्थ भाव प्रॉपर्टी के लिए मुख्य रुप से देखा जाता है। चतुर्थ भाव से व्यक्ति की स्वयं की बनाई हुई सम्पत्ति को देखा जाता है। जन्म कुंडली के चतुर्थ भाव पर शुभ ग्रह का प्रभाव अधिक होने पर व्यक्ति स्वयं की भूमि का योग बनाता है।
- कुंडली में सूर्य चन्द्र मंगल और लगन से गर्भाधान का विचार किया जाता है। वीर्य की अधिकता से पुरुष तथा रक्त की अधिकता से कन्या होती है। रक्त और रज का बरावर होने से नपुंसक संतान का जन्म होता है।

- जन्म से चार वर्ष के भीतर बच्चे की मृत्यु का कारण माता के कुकर्मों, चार से आठ वर्ष के बीच मृत्यु पिता के पाप कर्मों और आठ से बारह वर्ष की आयु के मध्य मृत्यु स्वयं के पूर्वजन्म के पापों के कारण होती है।
- बुध के निर्बल होने पर कुंडली में अच्छा शुक्र भी अपना प्रभाव खो देता है। क्योंकि शुक्र को लक्ष्मी माना जाता है और विष्णु की निष्क्रियता से लक्ष्मी भी अपना फल देने में असमर्थ हो जाती हैं। बुध ग्रह बुद्धि का भी कारक है, इसलिए बुध निर्बल या पीड़ित होने पर कुंडली में राहू की नकारात्मक प्रभाव व्यक्ति जीवन में गहराई से पड़ता है।
- शनि ग्रह वचनबद्धता, कार्यबद्धता और समयबद्धता का कारक ग्रह है। जन्म पत्रिका में शनि की स्थिति मजबूत ना होने पर व्यक्ति के जीवन में इन तीनो चीजों का अभाव रहता है।

ध्यान देने योग्य कुछ बातें:–

- ✓ जन्म कुंडली में राहू और केतू सदैव एक दूसरे से सप्तमस्थ अर्थात १८० अंश पर स्थित होते हैं।
- ✓ बुध सदैव सूर्य के साथ अथवा सूर्य से एक भाव आगे या पीछे ० से २८ अंश तक की दूरी पर स्थित होता है।
- ✓ शुक्र सदैव सूर्य के साथ अथवा सूर्य से दो भाव तक ० से ४८ अंश तक आगे या पीछे स्थित हो सकता है।
- ✓ एक राशि ३० अंश की होती है, एवं एक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं।
- ✓ कुण्डली में पहले भाव में जो राशि होती है, वह राशि उस जातक की लग्न कहलाती है।
- ✓ कुण्डली में चंद्र जिस राशि में होता है, वह राशि उस जातक की जन्म राशि कहलाती है।
- ✓ अमावस्या के दिन प्रायः सूर्य–चंद्र एक ही राशि में एक ही भाव में स्थित होते है।
- ✓ चन्द्र लगभग २४ घंटे तक एक ही नक्षत्र में रहता है।
- ✓ सूर्य और चंद्र सदैव सीधी गति से चलते हैं, कभी वक्री नहीं होते है एवं राहू और केतू सदैव उलटी गति से ही चलते हैं।
- ✓ मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि की गति सीधी होती है परन्तु कभी–कभी वक्री भी होते है।

नख विचार

अंगुली के अग्रभाग बहुत ज्यादा फूलने से अगर गंभुज आकृति का बन गया तो फुसफुस का संक्रमण या टीवी रोग होने का संभावना रहता है। हाथ की नख के ऊपर सफ़ेद दाग वनने से अस्थि संधि की बात निर्देश करता है। नख के ऊपर गोलावी आभा रहने से खून में अक्सीजेन की मात्र ठीक रहता है, और नील आभा रहने से ओक्सिजेन की मात्रा कम होता है एवं हार्ट फेल होने की संभावना रहता है। नख के मध्यभाग निचे के तरफ दवे हुए प्रतीत होता है तो शारीर में खून की कमी होना निर्देश करता है। नख की मध्यभाग दबें जाने से एवं नख बहुत पतला होना शारीर में आयरन की कमी निर्देश करता है।

नेत्र व भ्रू विचार

नेत्र (आंख) रक्तवर्ण, हरा या तो कमल दल की तरह होने से जातक को बहुत सम्मान मिलता है एवं धनलाभ होता है। नेत्र काले या पीला रंग की होने से पापी व् रोगी होना निर्देश करता है। आँखों की तारा अतिशय काले या पिंगला होना किसी चोट या अघात से आंखें नष्ट होने का सूचक होता है। जिनके आंख स्थूल होता है वे अच्छे परामर्शदाता होते है, वर्त्तुल होने से सुखी एवं आंख बड़ा होना भी शुभ सूचक होता है। आँखों का भ्रू दोनों अत्यंत उन्नत होने से अल्पायु, विस्तृत होने से सुखी, आपस में असमान या खंडित होने से दरिद्रता, चन्द्रमा की तरह वक्र या दीर्घ होता है, तो धनवान एवं भ्रू का मध्यभाग निम्न होना अगम्यगमन सूचक होता है।

कर्ण विचार

किसी पुरुष का कर्ण विस्तृत व् निर्म्माश होता है तो भोगशील व् धनवान, छोटा होने से कृपण होते है। कर्ण में अधिक वाल होना अल्पायु सूचक एवं कम वाल होने से जातक ज्ञानी होता है।

प्रश्न गणना विशेष

संक्षेप प्रश्न गनना में प्रश्नकर्त्ता को प्रातकाल फुल, मध्याह्न काल में फल, संध्या काल में देवता एवं रात्रिकाल में नद–नदी के नाम पूछा जाना चाहिए। एवं उसके पहला अक्षर निर्द्दिष्ठ राशि को लग्न मानकर प्रश्नचक्र से प्रश्नगनना करना चाहिए।

- **बहु प्रश्न गणना में(१म सूत्र):** पहला प्रश्न लग्न से, दूसरा प्रश्न चन्द्रराशि लग्न मानकर, तीसरा प्रश्न सूर्य स्थित राशि से, चतुर्थ प्रश्न गुरु स्थित राशि से एवं पंचम प्रश्न बुध व् शुक्र ग्रहों में जो वलबान होगा उस ग्रह स्थित राशि को लग्न मानकर गण करना चाहिए।

❖ **बहु प्रश्न गणना में(२य सूत्र):** पहला प्रश्न लग्न से, दूसरा प्रश्न चतुर्थ भाव से, तृतीय प्रश्न सप्तम भाव से, चतुर्थ प्रश्न दशम भाव से, पंचम प्रश्न पंचम भाव से, षष्ठ प्रश्न अष्ठम भाव से एवं सप्तम प्रश्न एकादश भाव से विचार करना चाहिए।

✓ **प्रश्न गणना की कुछ सूत्र:**

१. लग्न, सूर्य और चन्द्रमा यह तीनो चर राशि में या स्थिर अथवा द्विस्वभाव राशि में होने से प्रश्नफल शुभ समझना चाहिए।

२. प्रश्न कुंडली के लग्न अपनी दशम भाव के साथ अच्छा समन्ध होने पर भी प्रश्नफल शुभ समझना चाहिए।

३. प्रश्न लग्न में जितने अधिक शुभ ग्रहों की दृष्टि रहता है प्रश्न फल भी उतना ही शुभ होता है।

४. शीर्षोदय राशि में प्रश्न लग्न होने से शीघ्रकार्य सिद्ध होता है, पृष्ठोदय राशि में लग्न होने से विलंभ में एवं उभयदय राशि में लग्न होने से बहुत कष्ट से कार्य सीधी होती है।

५. दुसरे किसी शुभ ग्रह कर दृष्टि वर्जित होकर चन्द्रमा की लग्न में दृष्टि होने से प्रश्नफल शुभ होता है। परन्तु लग्नपति अथवा दशम पति शत्रु ग्रह से पीड़ित होने से प्रश्न फल अशुभ होता है।

६. नष्ट द्रव्य की गणना में प्रश्न लग्न स्थिर राशिगत होने से यह समझना चाहिए खोये हुए वस्तु अभी तक हस्तान्न्तरित अथवा विक्रय नहीं हुआ है। लग्न एवं लगनपति स्थिर राशिगत होने से एवं किसी शुभ ग्रह की दृष्टि लग्न में ना होने से खोये हुए समान विलम्ब में मिलता है।

७. वारिश समन्धे सवाल पर स्थिर लग्न में प्रश्न होने से वृष्टि(वारिश) विलम्ब में रुकेगी।

८. प्रश्न कुंडली में चतुर्थ स्थान द्वारा आत्मीय स्वज्जन की वृद्धि अर्थात उन्नति एवं दशम भाव से प्रवास गमन से जुड़े शुभाशुभ एवं सप्तम स्थान द्वारा विदेश से आगमन से जुड़े शुभाशुभ विचार करना चाहिए। तुला, कन्या, मिथुन व् कुम्भ यह चार राशि नरराशि होते है, इनमे शुभ ग्रह होने से शुभ फल होता है।

मूक प्रश्न गणना

प्रश्न की अक्षर संख्या x १०+१२ x ५+६४ करके जो संख्या होगा उसको ७ अंक से भाग करना चाहिए। अवशिष्ट भागांक १ =प्रश्नकर्त्ता जीव विषयक, २ = धातु, ३ = मूल, ४ = जीव आश्रित जीव (पशु/पक्षी आदि), ५ = जीव आश्रित धातु, ६ = जीव आश्रित मूल विषयक किसी वस्तु विशेष की चिन्तन कर रहे होते है।

यात्रा से संवंधित प्रश्न गणना

जिस समय में प्रश्न पूछा जाता है उस समय का लग्न, प्रश्नकर्त्ता के जन्मलग्न या जन्म राशि होने से अथवा राश्याधिपति या लग्नाधिपति लग्न होता है, अथवा प्रश्नकर्त्ता का जन्म राशि से प्रश्नलग्न तृतीय, षष्ठ, एकादश या दशम में हो तो यात्रा में जय होता है। प्रश्न काल में वसुमती सुदर्शना होना शुभप्रद अथवा शुभद्रव्यादि दर्शन से भी प्रश्न फल शुभप्रद होता है। जन्मनक्षत्र, जन्ममास व् अष्ठम चन्द्र में यात्रा करने से व्याधि, मृत्यु व् वन्धन भय होती है।

विदेश व्यक्ति की संवाद

- अंक (१) दक्षिण पूर्व दिशा में है, जल्दी घर आएंगे।
- अंक (२ एवं ८) नजदीकी किसी स्थानों में गए है, जल्दी आएंगे।
- अंक ३ उत्तर दिशा में है आने में विलंव होगा।
- अंक (६, ४) दक्षिण में गए है जल्दी घर आएंगे।
- अंक (५) उत्तर या पश्चिम में गये है, घर आने में विलंभ होगा।
- अंक (७) दक्षिण – पूर्व दिशा में है, घर आने में विलम्व होगा।
- अंक (९) नजदीक में है बहुत जल्दी घर आ रहे है।
- अंक (१०) पूर्व दिशा की तरफ है अभी घर नही आएंगे।

संख्याओ से प्रश्नगणना

- ✓ १ व् ३ संख्या शीघ्र प्राप्ति या अति शुभफल
- ✓ ३, ५, ७ संख्या माध्यम फल
- ✓ २, ८ संख्या कार्य नाश या अशुभ फल
- ✓ ४, ६ संख्या फल शुभ नहीं है या निष्फल

रोग समंधित गणना

रोग समन्धित प्रश्न में लग्न से रोग, चतुर्थ से दवाई, एवं सप्तम और दशम भाव से आरोग्य विचार करना चाहिए। प्रश्न लग्न में चन्द्र, द्वादश में शनि व् मंगल और चतुर्थ भाव में सूर्य होने से एवं गुरु ग्रह दुर्वल हो अथवा धनु या मिथुन राशि लग्न होता है, और सप्तम भाव पापग्रह से पीड़ित होता है तो रोगी की मृत्यु होने की संभावना ज्यादा रहती है। गुरु ग्रह की

वलावल के ऊपर लक्ष्य रखके रोगी की आयु या मृत्यु के बारे में विचार करना चाहिए क्यौकी गुरु ग्रह सदा ही जीवन रक्षक माना गया है।

१. **विधि:** प्रश्नस्त संख्याओं को द्वि गुण (२ गुना) करके उसमे १५ अंक योग करके ७ अंक से भाग करे। अवशिष्ट अंक १ = विदेश व्यक्ति की समाचार बहुत जल्दी मिलेगा, अंक २ = देशांतर में स्थित है, अंक ३ = रास्ते में स्थित है जल्दी घर आ रहे है, अंक ४ = जल्द ही आएंगे, अंक ५ = कुछ दिन बाद आएंगे, अंक ६ = वीमार है आने में देर है एवं अंक ० रहने से विदेश व्यक्ति की मृत्यु होती है।

२. **विधि:** प्रश्नस्त सभी अक्षर को द्विगुण एवं मात्राओं को चार गुण करके उभय समष्टि को योग करे एवं ८ अंक से भाग करे, भागशेष २/४/६/० होने से रोगी की मृत्यु एवं भागशेष १/३/५/७ होने से रोगी जल्द ही स्वस्थ होती है।

३. **विधि:** प्रश्न कर्त्ता को (फुल/फल/नदी/ देवता) के नाम लेने को कहिए, उसके पश्चात्, उस नाम के अक्षर के साथ ४० अंक योग करके ३ अंक से भाग देने पर १ रहने से व्यक्ति सुस्थ, २ रहने पर वहुदिन रोग भोग एवं अवशिष्ट अंक ० होने से मृत्यु होती है।

कुछ विशेष रोग

चन्द्र, मंगल = ब्लड कैंसर	चन्द्र, मंगल, राहू = कुजो रोग, कैंसर
बुध, गुरु = टिउमार	राहू शनि सूर्य से धनुषटंकार
शुक्र, शनि मंगल = ध्वजभंग रोग	चन्द्र, शुक्र = किडनी रोग, एड्स
सूर्य, केतु = श्वेतकुष्ठ	बुध, शनि = खुजली व् चर्म रोग
शनि= अकालवार्द्धाक्य	शुक्र = मधुमेह
गुरु, शनि = कुष्ठ रोग	चन्द्र= यक्षा रोग
सूर्य, शुक्र, राहू = उन्माद रोग	

शासक ग्रहों से प्रश्न विचार

जातक से कोई भी एक संख्या १ अंक से लेकर २४९ अंक के बीच से पूछिये। यदि उस नंबर का उप नक्षत्र लग्न या चन्द्र नक्षत्रेश होता है तो वह कार्य होता है। यदि नंबर का उप नक्षत्र लग्नेश या चन्द्र राशीश हो तो उस कार्य के होने में संशय होता है। यदि नंबर का उप नक्षत्र शासक ग्रहों में नहीं होता है, तो वह कार्य नहीं होता है।

❖ **शासक ग्रह निर्णय:** किसी समय जो ग्रह शासन करते हैं, वह ग्रह उस समय के शासक ग्रह कहलाते हैं। शासक ग्रह पांच प्रकार के होते हैं, जो उत्तरोत्तर बलवान होते हैं !

१. **वारेश:** सोमवार का चंद्र,, मंगलवार का मंगल, बुधवार का बुध आदि शासक ग्रह होता है।

२. **चन्द्र राशीश:** चंद्र जिस राशि में हो, उस राशि का स्वामी।

३. **चंद्र नक्षत्रेश:** चन्द्र जिस नक्षत्र में हो, उस नक्षत्र का स्वामी।

४. **लग्नेश:** उस समय उदित हो रही लग्न का स्वामी।

५. **लग्न नक्षत्रेश:** उदित लग्न जिस नक्षत्र में हो, उस नक्षत्र का स्वामी।

नित्य दशा फल

नित्य दशा गणना के लिए अभीष्ट दिन के अर्थात जिस दीन का नित्य दशा फल ज्ञात करना हो उस दिन का शुक्लादि तिथि, बार, नक्षत्र एवं जातक का जन्म नक्षत्र एक साथ योग करके ८अंक से भाग देना चाहिए। अवशिष्ट भागांक निर्दिष्ठ संख्यक ग्रहों का दशा अष्टत्तरी विधि से गणना करनी चाहिए। उपरोक्त बिधि में भागांक १ होने से सूर्य की दशा फल वित्तनाश, २= चन्द्र फल धर्म्म व् अर्थ लाभ, ३= मंगल फल अस्त्राघात, ४= बुध फल संपत्ति लाभ, ५= शनि, फल मन्दबुद्धि, ६= गुरु फल संपत्ति लाभ, ७= राहू फल बंधन भय एवं ८/० = शुक्र का दशा फल सुख वृद्धि होता है।

विशेष: नित्य दशा गणना में दशा फल हमेशा देश, काल और पात्र भेद के अनुसार ही बतलाना चाहिए। जिस तिथि के नित्य दशा गणना किया जाता है, उस तिथि उसदिन जितने समय तक है उतने समय तक ही नित्य दशा फल प्रभावित रहता है। एवं लग्न कुंडली की दशा–महादशा की शुभाशुभ के ऊपर ही नित्य दशा का फल निर्भर करता है।

गुरु पन्नो से

- **देवता प्रदक्षिणा बिधि:** स्त्री देवता = एकवार, सूर्य = साथ वार, गणेश = तिन बार, विष्णु भगवान = चार बार, शिव = अर्द्ध एवं पुष्करिणी साथ वार प्रदक्षिण करनी चाहिए। जलपूर्ण शंख हस्ते प्रदक्षिण बहुत ही शुभ माना जाता है।
- **होरा:** शुक्रपक्ष में पहले चन्द्र का होरा एवं अंत में सूर्य का होरा होता है। कृष्णपक्ष में पहले सूर्य का होरा एवं अंत में चन्द्र का होरा होता है।

- **दशा निर्णय:** जन्मचक्र में लग्नेश से राहू ग्रह केंद्र या कोण में अवस्थित हो अष्टोत्तरी की दशाएं ज्यादा फलप्रद होती है, अन्यथा विंशोत्तरी दशा ज्यादा फलप्रद होती है।
- **मन्त्र जप:** मंत्राक्षर की क्रमानुसार आवृत्ति को ही मन्त्रजप कहते है।
- **सप्त आचार:** वेदाचार, वामाचार, सिद्धांतचार, वैष्णवचार, शैवाचार, दक्षिणाचार एवं कौलाचार। इनमे सर्वश्रेष्ठ कौलाचार होता है।
- **साधना का मार्ग:** साधना का ३ मार्ग होते है; जैसे: १. वैदिक २. तांत्रिक एवं ३. मिश्रत ।
- **आकाश का गुण:** आकाश के पञ्चगुण माना जाता है, जैसे: १. काम, २. क्रोध, ३. मोह, ४. लज्जा एवं ५. शोभांच।
- **रिपु तत्व:** सनातन हिन्दू धर्म्मानुसार रिपु छह प्रकार के होते है, इसलिए इन्हें एक साथ षड़रिपु भी कंहा जाता है। १. काम, २. क्रोध, ३. लोभ, ४. मोह, ५. मद्य एवं ६. दंभ। इनमे से काम – लिंगे, क्रोध – गुह्ये, लोभ – नाभिमंडल में, मोह – हृदये, मद, मांस – कर्ण में एवं दंभ – सर्व शारीर में स्थान होता है।
- **पञ्चयज्ञ:** १. ब्रह्मयज्ञ, २. नृयज्ञ, ३. देवयज्ञ, ४. पितृयज्ञ एवं ५. प्रेतयज्ञ।
- **दशमहाविद्या:** १. काली, २. तारा, ३. छिन्नमस्ता, ४. षोडशी, ५. भुवनेश्वरी, ६. त्रिपुर भैरवी, ७. धूमावती, ८. बगलामुखी, ९. मातंगी एवं १०. कमला।
- **दशावतार:** शास्त्रोक्त विष्णु भगवन के मत्स्य, कुर्म, वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचंद्र, कृष्ण, वुद्ध एवं कल्कि यह दश अवतार है।
- **अष्टभैरव:** १. असितांग, २. रूद्र, ३. चन्ड, ४. क्रोधउन्मत्त, ५. भयंकर, ६. कपाली, ७. भीषण एवं ८. संहार।
- **अष्टदिक्पाल:** ई – शिव, पू– सूर्य, अ– वह्नी, द– यम, नै– राक्षस, प– शनि, वा– वरुण एवं उत्तर दिशा के सर्वव देवता दिकपाल होते है।
- **अष्टयोग:** १. यम, २. नियम, ३. आसन, ४. प्राणायाम, ५. प्रत्याहार, ६. ध्यान, ७. धारण एवं ८. समाधि।
- **अष्टदिक्:** ईशान – इश, पूर्व – इन्द्र, अग्निकोण – वह्नि, दक्षिण – यम, नैरित्य – निधृति, पश्चिम – वरुण, वायव्य – मारुत एवं उत्तर दिशा का अधिपति कुबेर है।
- **अष्टमूर्ति:** सर्वनाम में पृथ्वी, भव– जल, रूद्र – अग्नि, उग्र – वायु, भीम – आकाश, इशान – सूर्य, महादेव – चन्द्र एवं पशुपति – जजमान मूर्ति होते है। **शिव = मंगल, ब्रह्म = विधाता, परमात्मा = वेद एवं नारायण = पालयिता है।**

पञ्च भूतो के पञ्चगुन

- पृथ्वी: अस्थि, चर्मम, नाड़ी, लोम(वाल), मांस
- जल: जल, मूत्र, शुक्र, श्लेष्मा, रक्त
- अग्नि: क्षुधा(भूख), तृष्णा, निद्रा, भ्रम, श्रम
- वायु: निरोध, क्षेपण, संकोचन, धारण, चालन
- आकाश: राग, द्वेष, मोह, लज्जा, आलस्य

❖ **हाथ की अंगुल में तीर्थ:** अंगुली के अग्रभाग में देवतीर्थ, कनिष्ठा के मूल में कायतीर्थ, अंगुष्ठ व् तर्जनी के मध्य भाग में पितृतीर्थ, अंगुलीके मूल भाग में व्राह्म तीर्थ होते है।

❖ **१६ नाम ३२ अक्षर:** मनुष्य के हड्डी, नाड़ी, गला, हस्त, जिह्वा, कर्ण, गुह्य, और नाभिमूल में १६ नाम ३२ अक्षर होते है। ''हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे। हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे''॥

====✂====

ॐ तत सत ॐ

॥ इति वैदिक ज्योतिष सुत्रम ग्रन्थ की प्रथम खंड ॥

सफल ज्योतिषी बनने के लिए कुछ महत्वपूर्ण टिप्स

सफल ज्योतिषी बनने के लिए आपको न केवल ज्योतिष के सिद्धांतों और गणनाओं की गहरी समझ होनी चाहिए, बल्कि आपको इसे सही दिशा में उपयोग करने का तरीका भी आना चाहिए। यहां कुछ महत्वपूर्ण टिप्स दी जा रही हैं जो आपको इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में मदद कर सकती हैं:

1. ज्योतिष का गहरा अध्ययन करें:

- ज्योतिष एक व्यापक और जटिल विषय है, जिसे समझने के लिए समय और ध्यान दोनों की आवश्यकता होती है। आपको पंचांग, ग्रह–नक्षत्र, राशिफल, दशा, योग, और विभिन्न ज्योतिष शास्त्रों का गहराई से अध्ययन करना चाहिए।
- आपको न केवल परंपरागत ज्योतिष शास्त्रों की जानकारी होनी चाहिए, बल्कि उनके विभिन्न दृष्टिकोणों और पद्धतियों से भी परिचित होना चाहिए। इसके लिए आप अच्छे ज्योतिषी से मार्गदर्शन ले सकते हैं और अच्छे पुस्तकों का अध्ययन कर सकते हैं।

2. सटीकता और ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करें:

- ज्योतिष में सटीकता अत्यंत महत्वपूर्ण है। गलत भविष्यवाणी या विश्लेषण से आपकी प्रतिष्ठा को नुकसान हो सकता है। सही ग्रह–नक्षत्रों, समय और स्थान के आधार पर सही गणनाएं करने की कला में निपुणता प्राप्त करना जरूरी है।
- जितना अधिक आप अभ्यास करेंगे, उतना ही आपका ज्ञान और सटीकता बढ़ेगी। इसके लिए नियमित रूप से जन्म कुंडली का अध्ययन करें और विभिन्न ग्रहों के प्रभावों को समझने की कोशिश करें।

3. नैतिकता और ईमानदारी बनाए रखें:

- एक अच्छे ज्योतिषी के लिए सबसे महत्वपूर्ण गुण है ईमानदारी। ग्राहकों को हमेशा सही सलाह दें और उन्हें भ्रमित करने से बचें।
- आप जिस ग्रह या योग का वर्णन करें, उसके प्रभाव को सही तरीके से समझाएं, ताकि ग्राहक सच्चाई को जान सके और कोई भी गलत निर्णय न ले।

4. सामाजिक और मानसिक समझ विकसित करें:

- एक ज्योतिषी को अपने ग्राहकों की मानसिक स्थिति और भावनाओं को समझना चाहिए। कई बार व्यक्ति अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों से गुजर रहा होता है, और उसे ज्योतिष से सहारा मिल सकता है।

- आपको उनके सवालों को समझने और उनकी स्थिति के हिसाब से उपयुक्त सलाह देने की आवश्यकता होती है। इस संदर्भ में आपका संवेदनशील और सकारात्मक दृष्टिकोण बहुत महत्वपूर्ण है।

5. आध्यात्मिकता का अभ्यास करें:

- ज्योतिष केवल गणना और विज्ञान नहीं, बल्कि यह एक गहरी आध्यात्मिक प्रक्रिया भी है। एक सफल ज्योतिषी को अपने जीवन में आध्यात्मिकता का अनुसरण करना चाहिए, ताकि वह सही और उच्च ऊर्जा से जुड़ सके।
- योग, ध्यान और प्राचीन साधनाओं का अभ्यास करें, ताकि आपकी मानसिक स्थिति और अंतर्दृष्टि को और मजबूत बनाया जा सके। इससे आपको सही मार्गदर्शन और निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

6. प्रैक्टिकल अनुभव प्राप्त करें:

- सिर्फ किताबों से पढ़ाई से अधिक महत्वपूर्ण है वास्तविक जीवन के अनुभव। अपने दोस्तों और परिवार के सदस्यों की कुंडलियों का अध्ययन करें और उनकी मदद से पहले प्रैक्टिकल उदाहरणों से सीखने का प्रयास करें।
- जितना अधिक आप वास्तविक दुनिया में अभ्यास करेंगे, उतनी ही आपकी समझ और कौशल बेहतर होगी।

7. लगातार सीखते रहें:

- ज्योतिष के क्षेत्र में नई जानकारियां लगातार आती रहती हैं। इसके लिए आपको न केवल पारंपरिक पद्धतियों का अध्ययन करना चाहिए, बल्कि आधुनिक ज्योतिष के दृष्टिकोण और तकनीकों को भी सीखना चाहिए।
- यह भी जरूरी है कि आप अपनी जानकारी को नियमित रूप से अपडेट करते रहें और उन बदलावों से अवगत रहें जो इस क्षेत्र में हो रहे हैं।

8. संप्रेषण कौशल पर काम करें:

- एक अच्छा ज्योतिषी वह होता है जो अपनी बात को सरल और प्रभावी तरीके से समझा सके। आपको अपने ग्राहकों के साथ अच्छे संवाद स्थापित करने की कला सीखनी चाहिए। कभी-कभी, कुछ जटिल ज्योतिषीय अवधारणाओं को सरल और सटीक तरीके से समझाना आवश्यक होता है।
- अच्छे संप्रेषण कौशल से न केवल आपके ग्राहकों का विश्वास बढ़ेगा, बल्कि आपकी प्रतिष्ठा भी मजबूत होगी।

9. आध्यात्मिक और मानसिक संतुलन बनाए रखें:

- एक ज्योतिषी के लिए यह आवश्यक है कि वह मानसिक और आध्यात्मिक संतुलन बनाए रखें। ज्योतिषी के रूप में आपके पास दूसरों के जीवन के बारे में गहरी जानकारी हो सकती है, और यह आपको मानसिक तनाव में डाल सकता है।
- इसलिए, आपको अपने मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए और संतुलित जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए।

10. व्यावसायिकता बनाए रखें:

- एक सफल ज्योतिषी के रूप में आपके पास अच्छे व्यावसायिक कौशल भी होने चाहिए। यह न केवल आपके सेवाओं को प्रबंधित करने में मदद करेगा, बल्कि ग्राहकों के साथ आपके रिश्ते को भी मजबूत बनाएगा।
- अपनी सेवाओं के लिए उचित शुल्क निर्धारित करें, एक अच्छा कार्यस्थल बनाए रखें, और आपके द्वारा दी गई सलाह की गोपनीयता बनाए रखें।

इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए एक सफल ज्योतिषी बनने के लिए आपको न केवल ज्योतिष के सिद्धांतों को समझने की आवश्यकता है, बल्कि जीवन में सही मार्गदर्शन, संवेदनशीलता और व्यावसायिक दृष्टिकोण भी आवश्यक है।

आजकल जमाना ऑनलाइन का है इसलिए एक आकर्षक, पेशेवर और मोबाइल रिस्पॉन्सिव वेबसाइट बनाय। जिसमें जन्म कुंडली, राशिफल, ग्रह दोष और अन्य ज्योतिषीय सेवाओं के लिए ऑनलाइन बुकिंग और पेमेंट की सुविधा हो। इसके साथ ही ब्लॉग और वीडियो कंटेंट के माध्यम से ज्योतिष से संबंधित जानकारी, उपाय और दैनिक राशिफल प्रदान करें ताकि आप एक विशेषज्ञ के रूप में अपनी पहचान बना सकें।

सोशल मीडिया पर सक्रिय रहें, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों पर लाइव सेशंस और प्रचार अभियान चलाकर नए ग्राहकों को आकर्षित करें। Google Ads, फेसबुक विज्ञापन और लोकल SEO के माध्यम से अपने सेवाओं का प्रचार करें और ग्राहकों से रिव्यू और टेस्टिमोनियल्स प्राप्त करके अपनी विश्वसनीयता बढ़ाएं। ईमेल मार्केटिंग, रिफरल प्रोग्राम और वेबिनार के जरिए ग्राहकों से जुड़ें, जिससे आपकी सेवाओं को और बढ़ावा मिले।

-----XX-----

प्रशंशा मंडली

ज्योतिष शास्त्र एक अदभूत विद्या है। ये विव्या प्राचीन समय से चली आ रही है। इस विद्या से जातक का मार्ग दर्शन किया जा सकता है। ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर भविष्य में होने वाली घटनाओ का अध्ययन करते है। ज्योतिष में तिथि वार नक्षत्र योग करण मुर्हत फलित ज्योतिष आदि विषयों की जानकारी प्राप्त है। इस पुस्तक में लेखक भाई ने ज्योतिष का अद्भूत ज्ञान का वर्णन किया है। एक-एक बात पुस्तक में बहुत गहराई से समझायी गई है जो ज्योतिष सीखना चाहते उनके लिए यह पुस्तक बहुत ही लाभकारी सिद्ध होने वाली है। प्रभु की कृपा व सरस्वती माँ का आशीर्वाद हमेशा हमारे बड़े भाई लेखक श्री अनुपम मोहन्त पर बना रहें। ये हमेशा अपने जीवन में खूब तरक्की करें और ज्ञान ध्यान में हमेशा तत्पर रहे।

वाणी भूषण महासाध्वी श्री सुरुचि जी म० सा० की सुशिष्या ज्योतिष मार्तण्ड ज्योतिषाचार्य साध्वी महाप्रज्ञ। रोहतक: हरियाणा।

ज्योतिष केवल एक विज्ञान नहीं है, बल्कि यह एक कला और आध्यात्मिक साधना है। हर ज्योतिषी को यह पुस्तक जरूर पढ़नी चाहिए। यह न केवल उनकी विद्या को समृद्ध करेंगी, बल्कि उन्हें अपने ग्राहकों के साथ और बेहतर जुड़ने का अवसर प्रदान करेंगी। ज्योतिषीय उपाय, ग्रह दोष निवारण, और शुभ योगों के लाभों की जानकारी इतनी गहराई से दी गई है कि यह पुस्तकें मुझे मेरे क्लाइंट्स के लिए बेहतर समाधान प्रस्तुत करने में मदद करती हैं।

श्री मंजुला जी जैन, ज्योतिषाचार्य, हस्तरेखा, अंक विज्ञान विशेषज्ञ।
माँ कृपा ज्योतिष केंद्र: पटेल नगर, अंकपात रोड, उज्जैन- मध्य प्रदेश।

"वैदिक ज्योतिष सूत्रम" पुस्तकों में कुंडली विश्लेषण की तकनीकों के साथ-साथ ग्रह, नक्षत्र और राशियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है। वैदिक ज्योतिष सीखने के इच्छुक विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक एक अनमोल धरोहर है।

हेमंत रायना (ज्योतिष गुरु): पिपलिया, उत्तराखंड।

वैदिक ज्योतिष सुत्रम

"मैंने वैदिक ज्योतिष सूत्रम, पढ़ा इसमें ग्रहो, नक्षत्र, का बहुत ही सुन्दर वर्णन है, फलित करने का भी बहुत सुन्दर समझाया गया है। वैदिक ज्योतिष के विद्यार्थियों के लिए एक अनुपम जी की एक अनौखा प्रयास है, इसको पढ़ कर लाभ ले मेरी शुभकामनायें"।

अनिल रुहेला:
(ज्योतिष आचार्य, हस्त रेखा, अंक शास्त्र, हवन विशेषज्ञ) मोदी नगर, गाजियावाद, उत्तर प्रदेश।

आदरणीय श्री अनुपम जी द्वारा लिखित पुस्तक में ज्योतिष के हर अंग एवं विषय को आमजन को सरल भाषा में समझाने का प्रयास किया है, ज्योतिष का ज्ञान पंचांग पर आधरित होता है प्रस्तुत पुस्तक में जिसका विस्तार से वर्णन करने का प्रयास किया है और ज्योतिष के संदर्भ में ग्रहो, राशि, भाव, योग, सूत्रों आदी विषयों की काफ़ी गहराई से सटीकता एवं शोध के आधार पर विवेचना की है। जो भी व्यक्ति या ज्योतिष का विद्वार्थी इस पुस्तक को पढ़ेगा उसके ज्ञान में वृद्धि होंगी ऐशा मेरा विश्वास है, इस पुस्तक के लिए श्री महंतो जी को बहुत बहुत शुभकामनायें।

श्री मुकेश बंसल "जैन" हस्तरेखा विशेषज्ञ व् जैन ज्योतिष आचार्य। संस्थापक – श्री प्रकाश प्राच्य विधा जैन ज्योतिष संस्थान: उचाना मंडी, जींद (हरियाणा)।

"वैदिक ज्योतिष सूत्रम ने मुझे केवल ग्रहों और राशियों को समझने में मदद नहीं की, बल्कि ज्योतिष के आध्यात्मिक पहलुओं पर भी एक नई दृष्टि प्रदान की है। यह पुस्तकें एक ज्योतिषी के लिए केवल अध्ययन सामग्री नहीं, बल्कि आत्मा को जागृत करने का साधन हैं"।

डॉ. धीरज कुमार (बी. ए. एम. एस.): शंकरलाल नगर, पिपराइच, (गोरखपुर) यू.पी.।

विविध तत्व

"वैदिक ज्योविष सूत्रम्" ग्रन्थ जो श्री अनुपम द्वारा किखा गया है, निश्चय ही प्रशंशा के योग्य है। इस ग्रंथ में ज्योतिष के प्रत्येक अंग एवं विषयं को लेखक के द्वारा इतने सरल एवं सूटरीक ढंग से स्पष्ट किया गया है, कि एक ऐसा व्यक्ति जिसका इस क्षेत्र में नया पदार्पण हुआ हो, वह भी इस ग्रंथ के माध्यम से बहुत ही सरलता से ज्योतिषीय ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस ग्रंथ में विद्वान लेखक ने दशा, भाव, योग एवं सूत्रों को बहुत ही सरल भाषा में समझाया है। में समझता हूँ कि उक्त ग्रंथ निश्चय ही इस इस क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगा। मेरी शुभ कामनाएं श्री अनुपम के साथ हैं।

योगेश्वरानन्द

(संस्थापक "आस्था प्रकाशन मन्दिर" दिल्ली एवं बागपत (उ०५०) एवं मन्त्र-यन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी ५० से अधिक ग्रंथों के लेखक एवं माँ बगला उपासक)।

वैदिक ज्योतिष सूत्रम के माध्यम से मैंने केवल कुंडली का विश्लेषण करना नहीं सीखा, बल्कि हर ग्रह और उसकी ऊर्जा के गूढ़ अर्थों को भी समझा। यह पुस्तकें मेरे लिए ज्योतिषीय अध्ययन का एक नया आयाम हैं।

परिचय मिश्र (कर्मकांडी पंडित) नेहरु नगर,
कालीबाड़ी, भिलाई: छत्तीसगढ़।

आदरणीय श्री अनुपम जी द्वारा लिखित पुस्तक वैदिक ज्योतिष सूत्रम एक बहुत ही उपयोगी ग्रन्थ है। पढ कर मन बहुत ही गहराई मे पहुंच जाता है। सरल शब्द द्वार लिखी यह पुस्तक ज्योतिष प्रेमियों के लिए अमुल्य वरदान है। ऐसा लगता है कि जैसे ज्योतिष का सारा निचोड इस पुस्तक मे है। ग्रह, नक्षत्र,उपाय से लेकर कुंडली के सारे विश्लेषण स्पष्ट हो जाता है, गागर मे सागर भरने का प्रयास है।

डॉ. विजय नाथ: ज्योतिषाचार्य विशेषज्ञ वेदीक ज्योतिष, लाल किताब, हस्तरेखा व्अंक शास्त्र। ई.ए. ३७४, पानी टंकी के नजदीक (अदा कॉलोनी) प्रयाग राज, उ.प्र.।

वैदिक ज्योतिष सुत्रम

आपकी यह उत्कृष्ट ज्योतिष शास्त्र पर लिखना, आने वाले समय में एक पत्थर की लकीर साबित होगी। ज्योतिष के कठिन और गूढ़ रहस्यों को बहुत ही आसान शब्द में वर्णित किया गया है। इस भगीरथी प्रयास के लिए आप बढ़ाई के पात्र हैं। ज्योतिष शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए और ज्योतिष शास्त्र में जिनकी जिज्ञासा है, उन सभी को इस पुस्तक से बहुत ही जानकारी और सहयोग मिलेगा। मैं आपकी इस रचना की और आप के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

साभार:– हरि ओम शरण सिंह; अधिवक्ता, सुप्रीम कोर्ट, नई दिल्ली। चेम्बर:– १३८, साकेत डिस्ट्रिक्ट कोर्ट, नई दिल्ली।

"पुस्तकों का भाषा–शैली इतनी सरल और प्रभावी है कि नए विद्यार्थी भी इसे आसानी से समझ सकते हैं। वहीं, अनुभवी ज्योतिषियों के लिए यह नई दृष्टिकोण और दृष्टि प्रदान करती हैं"।

राज चक्रवर्ती:
ज्योतिष शास्त्री, ज्योतिष मार्त्तंड, पल्मिस्ट एवं एम.एस.सी.(भौतिकी)। न्यू–बैरकपोर, कोलकाता।

वैदिक ज्योतिष सूत्रम ने मेरे ज्योतिषीय अभ्यास को नई ऊंचाई दी है। इन पुस्तकों में दिए गए उपाय, कुंडली विश्लेषण की विधियां और ग्रह दोषों के समाधान इतने प्रभावी हैं कि क्लाइंट्स के साथ मेरी सटीकता और विश्वसनीयता बढ़ी है"।

परेशकुमार ठक्कर: जिनियस एस्ट्रो सोल्यूशन:
ज्योतिष आचार्य, वास्तु विशारद, न्यूमेरोलॉजिस्ट, रुद्राक्ष एवं रत्न विशेषज्ञ। ५–३११/१, सेंट पॉल चर्च के पास, रेशमा रेस्टोरेंट के बाजू वाली रॉड, दीव।

विविध तत्व

"वैदिक ज्योतिष सुत्रम पुस्तक में ग्रहों, राशियों, भावों और योगों की व्याख्या इतनी गहन और स्पष्ट है कि यह न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करती हैं, बल्कि उन्हें वास्तविक जीवन में लागू करने का कौशल भी सिखाती हैं" ।

आचार्य डॉ.ऋषिकेश देबनाथ: अध्यक्ष एवं ट्रस्टी, सार्वभौमिक आध्यात्मिक मिशन: ७ टी.एन. बिस्वास रोड, दक्षिणेश्वर कालीमंदिर गेट, कोलकाता।

"वैदिक ज्योतिष सूत्रम की एक विशेष बात यह है कि यह पुस्तकों में केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं दिया गया है, बल्कि इसे व्यावहारिक जीवन में उपयोग करने के तरीके भी बताए गए हैं"।

रवि जैन गुरूजी
(हस्त रेखा एवं कुण्डली मिलान विशेषज्ञ):
संस्थापक/राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय जैन ज्योतिषाचार्य परिषद; शिवाजी पार्क, शाहदरा, दिल्ली।

वैदिक ज्योतिष सुत्रम पुस्तकों के माध्यम से मैंने ग्रहों और राशियों की अनंत संभावनाओं को समझा है। हर अध्याय एक नई सीख प्रदान करता है। यह पुस्तकें मुझे बार–बार पढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

सुषमा शर्मा (न्यूज़ एडिटर – सीधी रफ़्तार)
७/१८२ द्वितीय फ्लोर: रमेश नगर, नई दिल्ली

वैदिक ज्योतिष सूत्रम बुक्स ने मेरी ज्योतिषीय समझ को गहराई से समृद्ध किया है। इनमें वैदिक ज्योतिष के मूल सिद्धांतों को इतनी सरलता और सटीकता के साथ प्रस्तुत किया गया है, कि जटिल विषय भी समझने में सहज हो जाता है। यह पुस्तकें हर विद्यार्थी और अनुभवी ज्योतिषी के लिए मार्गदर्शक हैं।

खुशबु मद्धेशिया: (फेंगशुई व् वास्तु परामर्शदाता)
शंकरलाल नगर, पिपराइच, (गोरखपुर) यू.पी.।

वैदिक ज्योतिष सुत्रम

हर ज्योतिषी जो अपनी विद्या को गहराई देना चाहता है, उसके लिए वैदिक ज्योतिष सूत्रम एक अनिवार्य संग्रह है। यह पुस्तकें न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि प्रेरणादायक भी हैं।

इंतेखाब आलम लोदी (स्वतंत्र पत्रकार, लेखक व् निर्देशक) ई – ६३, बीडीए कॉलोनी, कोईफिजा: भोपाल, म.प्र.।

"वैदिक ज्योतिष सूत्रम पुस्तकों की सबसे बड़ी खासियत यह है, कि ये प्राचीन ग्रंथों और सूत्रों को आधुनिक संदर्भ में बेहद व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करती हैं। हर अध्याय ज्ञान, गहराई और शोध से परिपूर्ण है"।

श्याम सुन्दर चोपड़ा: ज्योतिष, हस्तरेखाविद्, अंक ज्योतिष विशेषज्ञ: जींद, हरियाणा।

मैंने कई ज्योतिषीय पुस्तकें पढ़ी हैं, लेकिन वैदिक ज्योतिष सूत्रम ग्रन्थ में जो गहराई और स्पष्टता है, वह अद्वितीय है। इसकी भाषा सरल और सहज है, जिससे विषय को समझना आसान हो जाता है।

श्री रोहित वर्मा – ज्योतिषाचार्य
संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष: श्री हस्त रेखा शिक्षण संस्थान; ४९७, सेठीनगर कॉलोनी, उज्जैन (म. प्र.)।

यह पुस्तक न केवल शुरुआती छात्रों के लिए बल्कि अनुभवी ज्योतिषियों के लिए भी बेहद उपयोगी है। इसमें वैदिक सूत्रों की व्याख्या बहुत ही विस्तृत और प्रमाणिक रूप से दी गई है।

ज्योतिषाचार्य, वास्तुविद – संदीप जैन; संगम अंबाला कैंटराजापार्क रोड़ अंबाला कैंट हरियाणा।

मैंने श्री अनुपम द्वारा लिखित पुस्तक वैदिक ज्योतिष सूत्रम को पढा एक नया सूत्र मिला, बहुत ही ज्ञान का भंडार है। ऐसा लगता है कि इसको पढ़ने से फलित करने मे आसान होगा। विशेष कर नये ज्योतिष विद्यार्थियो को अति उपयोगी सावित होगा।

विंदु नाथ: एम. ए. (संस्कृति), ज्योतिष, वास्तु व् कर्मकांड: प्रयाग राज, उत्तर प्रदेश।

फीडबैक

"वैदिक ज्योतिष सूत्रम" ग्रन्थ के बारे में अपना विचार एवं परामर्श हमे जरुर दीजिए, इससे हमे प्रेरणा मिलेगी एवं ग्रन्थ की आनेवाले संस्करणों में आपके द्वारा दिए गए सुझावों पर विचार करेंगे। आप सकारात्मक रिव्यु देकर ५००/– तक कैश बेक अथवा कूपन कोड जित सकते है एवं वैदिक ज्योतिष की ऑनलाइन कोर्से में ३०% तक विशेष डिस्काउंट भी प्राप्त कर सकते है। अपना फीडबैक देने के लिए कृपया निचे दिए लिंक पर क्लिक करे;

Visit: www.swamijee.co.in/feedback

पंचानन ज्योतिष व् तांत्रिक कार्यालय

बदरपुर: (करीमगंज) असम, भारत।

PH: 9476907326

E-mail: panchananswamijee@gmail.com

www.swamijee.in and www.swamijee.co.in

कामाख्ये कामसम्पन्ने कामेश्वरि हरप्रिये। कामनां देहि मे नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तु ते ॥ हे कामाख्या, जो इच्छाओं को पूरी करती हैं; हे कामेश्वरि, हे हरप्रिये, मुझे सदा मेरी इच्छाएं प्रदान करें, हे कामेश्वरि, आपको मेरा नमस्कार है ॥